

RAAM LEELA · VALMIKI'S RAMAYANA

राम लीला · वाल्मीकि रामायण

ग्रंथ

The Book

शब्द वही, लीला नई

Shabd wahee, Leela nayee

—❧ Translation: Raam Leela ❧—

Every Leela that is ready to watch, with the verses it comes from: Valmiki's
Sanskrit, a poetic English translation, the Hindi as it is spoken, and the English
subtitle. The book grows as new Leelas open.

हर तैयार लीला, अपने श्लोकों के साथ: वाल्मीकि का संस्कृत, अंग्रेज़ी में काव्य-अनुवाद, बोली गई हिन्दी,
और अंग्रेज़ी उपशीर्षक।

7 kandas · 26 stories · 714 verses

CONTENTS · अनुक्रम

बालकाण्ड · Bala Kanda

धनुष The bow 1.50.1–1.73.40

अयोध्याकाण्ड · Ayodhya Kanda

दो वर; राजकुमार की स्वीकृति Two boons; the prince accepts 2.10.9–2.19.38

भाई आता है, समाचार लेकर A brother arrives with the news 2.94.1–2.113.1

अरण्यकाण्ड · Aranya Kanda

शूर्पणखा Shurpanakha 3.17.3–3.18.24

कुटी पर चौदह राक्षस The fourteen at the hut 3.18.25–3.23.25

चौदह हज़ार Fourteen thousand 3.24–3.30

विवश काम The forced errand 3.35–3.42.14

स्वर्ण मृग The golden deer 3.42.14–3.44.27

सीता और लक्ष्मण Sita and Lakshmana 3.45.1–40

द्वार पर तपस्वी The ascetic at the door 3.46.1–3.49.22

जटायु जागते हैं Jatayu wakes 3.49.23–3.51.20

जटायु गिरते हैं Jatayu falls 3.51.21–3.52.13

गिराए गए आभूषण The jewels thrown down 3.52.13–3.54.5

मरते गिद्ध का वचन The dying vulture's word 3.57.1–3.68.38

शबरी; वसन्त में बढ़ता दुख Shabari; spring sharpens the grief 3.74.1–3.75.30; 4.1.1–130

किष्किन्धाकाण्ड · Kishkindha Kanda

पर्वत पर हनुमान; आभूषण Hanuman on the hill; the jewels 4.2.1–4.7.2

पेड़ की ओट से Behind the tree 4.12.14–4.22.32

जाम्बवान का याद दिलाना; छलाँग Jambavan's reminder; the leap 4.64.1–5.1.44

सुन्दरकाण्ड · Sundara Kanda

मिल गई Found 5.30.1–5.39.14

बंधन; जलती नगरी Bound; the city burns 5.41.1–5.55.34

युद्धकाण्ड · Yuddha Kanda

सेतु The bridge 6.21.1–6.22.87

दोनों भाई गिरे; ओषधियों का पर्वत Both brothers fall; the mountain of herbs 6.73–74

रावण का पतन Ravana falls 6.101.6–6.111.104

अग्नि The fire 6.114–119

राज्याभिषेक The coronation 6.127.16–6.128.106

उत्तरकाण्ड · Uttara Kanda

धरती फटती है The earth opens 7.93.1–7.97.27

१

बालकाण्ड

Bala Kanda

1 STORY

BALA KANDA · बालकाण्ड

The bow

धनुष

—❧ Valmiki · Bala Kanda ❧—

1.50.1–1.73.40 (CrEd 1.49.1–1.72.27)

मिथिला में राजा जनक पूछते हैं कि ये दो राजकुमार कौन हैं, और शतानन्द त्रिशंकु की कथा सुनाकर विश्वामित्र का तेज बताते हैं। जनक बताते हैं कि शिव का धनुष उनके घर कैसे आया, और सीता हल की रेखा से कैसे उठीं, जिनका मूल्य केवल पराक्रम है; राम धनुष उठाते हैं और वह टूट जाता है। दशरथ आते हैं, और चारों भाइयों का विवाह मिथिला की चारों राजकुमारियों से होता है।

At Mithila, King Janaka asks who the two young princes are, and Shatananda tells them of Vishvamitra's power through the tale of Trishanku. Janaka tells how Shiva's bow came to his house and how Sita rose from the furrow, promised only to strength; Rama lifts the bow and breaks it. Dasharatha comes, and the four brothers marry the four princesses of Mithila.

१



PART 1 · भाग 1

Shiva's bow

Valmiki 1.50.1–21, 1.51.1–16, 1.57–60, 1.66.1–26 (CrEd 1.49.1–20, 1.50.1–16, 1.56–59, 1.65.1–27)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 1.50.1–16 ॥
CrEd 1.49.1–16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.50.17b-18 ॥
CrEd 1.49.17-18

जनक JANAKA

वाल्मीकि इमौ कुमारौ भद्रं ते देवतुल्यपराक्रमौ ।
गजसिंहगती वीरौ शार्दूलवृषभोपमौ ।
पद्मपत्रविशालाक्षौ खड्गतूणीधनुर्धरौ ॥

TRANSLATION *These two youths, may it be well with you,
equal to the gods in valour,
heroes who walk like elephants and lions,
like tigers, like bulls,
with long eyes like lotus petals,
bearing swords and quivers and bows,*

लीला मुनिवर, आपका कल्याण हो। देवताओं जैसे
पराक्रमी ये दो कुमार, हाथी और सिंह जैसी
चाल वाले, कमलनयन, खड्ग, तूणीर और धनुष
धारण किए,

SUBTITLE These two boys, brave as gods,
who walk like elephants and lions,
lotus-eyed,
with swords, quivers and bows...

॥ 1.50.19-20 ॥
CrEd 1.49.19-20

जनक JANAKA

वाल्मीकि यदृच्छयैव गां प्राप्तौ देवलोकाद् इवामरौ ।
कथं पद्भ्याम् इह प्राप्तौ किमर्थं कस्य वा मुने ।
वरायुधधरौ वीरौ कस्य पुत्रौ महामुने ॥

TRANSLATION *like two immortals come down to earth
from the world of the gods at their own will:
how have they come here on foot,
and why, and whose are they, O sage?
These heroes who bear fine weapons,
whose sons are they, great sage?*

लीला मानो स्वर्ग से दो देवता पृथ्वी पर उतर आए हों। ये
पैदल यहाँ कैसे आए, और किसलिए? महामुनि, ये
किसके पुत्र हैं?

SUBTITLE like gods come down from heaven.
Why have they come on foot?
Whose sons are they, great sage?

॥ 1.51.1-3 ॥
CrEd 1.50.1-3

SILENT MOMENT मौन क्षण

शतानन्द SHATANANDA

वाल्मीकि नास्ति धन्यतरो राम त्वत्तोऽन्यो भुवि कश्चन ।
गोप्ता कुशिकपुत्रस् ते येन तप्तं महत् तपः ।
श्रूयतां चाभिदास्यामि कौशिकस्य महात्मनः ।
यथाबलं यथावृत्तं तन् मे निगदतः शृणु ॥

TRANSLATION *There is no one on earth, Rama,
more blessed than you,
for your guardian is Kushika's son,
who has practised great tapas.
Listen, and I will tell you
of great-souled Kaushika,
his power and his deeds as they were:
hear me as I tell it.*

लीला राम, इस धरती पर तुमसे बढ़कर भाग्यवान कोई
नहीं। तुम्हारे रक्षक कौशिक हैं, जिन्होंने महान तप
किया है। सुनो, मैं बताता हूँ, जैसा हुआ था।

SUBTITLE Rama, no one on earth
is more blessed than you:
Kaushika guards you.
Hear what he has done.

॥ 1.57.10b–13a ॥

CrEd 1.56.10–12

condensed
from 1.57.10b–
13a

शतानन्द SHATANANDA

वाल्मीकि एतस्मिन् एव काले तु सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
त्रिशङ्कुर् इति विख्यात इक्ष्वाकु कुलनन्दनः ।
तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना यजेयम् इति राघव ।
गच्छेयं स्वशरीरेण देवानां परमां गतिम् ।
स वसिष्ठं समाहूय कथयाम् आस चिन्तितम् ।
अशक्यम् इति चाप्य् उक्तो वसिष्ठेन महात्मना ॥

TRANSLATION *At that very time there lived
one famed as Trishanku,
truthful, master of his senses,
the joy of the Ikshvaku line.
This thought arose in him, Raghava:
“I will offer sacrifice,
and in my own body go
to the highest state of the gods.”
He summoned Vasishtha
and told him what he had in mind;
and great-souled Vasishtha
told him, “It cannot be done.”*

लीला इक्ष्वाकु वंश में एक सत्यवादी राजा थे, त्रिशंकु ।
उन्होंने ठाना कि यज्ञ करके इसी शरीर से देवलोक
जाएँगे। वसिष्ठ ने कहा, यह नहीं हो सकता।

SUBTITLE Trishanku of the Ikshvaku line,
true to his word,
would reach heaven in his own body.
Vasishtha said: it cannot be.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (1.56.10–12) में है; दृश्य की पंक्ति उसका कुछ अंश छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (1.56.10–12); the scene's line leaves out part of it.

॥ 1.58.8b–10a ॥

CrEd 1.57.8–9b

condensed
from 1.58.8b–
10a

शतानन्द SHATANANDA

वाल्मीकि ऋषिपुत्रास् तु तच् छुत्वा वाक्यं घोराभिसंहितम् ।
शेषुः परमसंकुद्धाश् चण्डालत्वं गमिष्यसि ।
एवम् उक्त्वा महात्मानो विविशुस् ते स्वम् आश्रमम् ।
अथ रात्र्यां व्यतीतायां राजा चण्डालतां गतः ॥

TRANSLATION *But the sage's sons, hearing
those words of dreadful intent,
cursed him in the height of their anger:
"You shall become a chandala."
So saying, the great-souled ones
went into their own hermitage;
and when the night had passed,
the king had become a chandala.*

लीला फिर वसिष्ठ के पुत्रों ने क्रोध में उन्हें शाप दिया, तुम
चाण्डाल हो जाओगे। रात बीती, और राजा चाण्डाल
हो गए।

SUBTITLE In anger, Vasishtha's sons cursed him:
"You will become a chandala, an outcaste."
When the night had passed,
so he was.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (1.57.8–9ab) में है; दृश्य की पंक्ति उसका कुछ अंश छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (1.57.8–9ab); the scene's line leaves out part of it.

॥ 1.58.11b-14,
1.59.2 ॥

CrEd 1.57.10-12,
1.58.2

condensed
from 1.58.11b-
14, 1.59.2

शतानन्द SHATANANDA

वाल्मीकि तं दृष्ट्वा मन्त्रिणः सर्वे त्यक्त्वा चण्डालरूपिणम् ।
प्राद्रवन् सहिता राम पौरा येऽस्यानुगामिनः ।
एको हि राजा काकुत्स्थ जगाम परमात्मवान् ।
दह्यमानो दिवारात्रं विश्वामित्रं तपोधनम् ।
विश्वामित्रस् तु तं दृष्ट्वा राजानं विफलीकृतम् ।
चण्डालरूपिणं राम मुनिः कारुण्यम् आगतः ।
इक्ष्वाको स्वागतं वत्स जानामि त्वां सुधार्मिकम् ।
शरणं ते भविष्यामि मा भैषीर् नृपपुंगव ॥

TRANSLATION *Seeing him in a chandala's form,
all his ministers abandoned him,
and the townsfolk who followed him
fled together, Rama.
Alone, Kakutstha, the king,
high of spirit, went,
burning day and night,
to Vishvamisra, rich in tapas.
And Vishvamisra, seeing the king
brought to nothing, Rama,
in a chandala's form,
the sage was moved to pity.*

लीला मंत्री और प्रजा, सब उन्हें छोड़ गए। अकेले राजा
विश्वामित्र के पास गए। मुनि का मन करुणा से भर
आया। बोले, मैं तुम्हारी शरण बनूँगा, डरो मत।

SUBTITLE All his people left him.
Alone, he went to Vishvamisra:
"I will be your refuge.
Do not be afraid."

*“Welcome, son of Ikshvaku, my child;
I know you to be truly righteous.
I will be your refuge;
do not fear, bull among kings.”*

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (1.57.10–12 और 1.58.2) में है; दृश्य की पंक्ति इन श्लोकों को जोड़ती और छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (1.57.10–12 and 1.58.2); the scene's line joins and shortens these verses.

॥ 1.60.15b-20a ॥

CrEd 1.59.15-19

condensed
from 1.60.15b-
20a

शतानन्द SHATANANDA

वाल्मीकि उक्तवाक्ये मुनौ तस्मिन् सशरीरो नरेश्वरः ।
दिवं जगाम काकुत्स्थ मुनीनां पश्यतां तदा ।
देवलोकगतं दृष्ट्वा त्रिशङ्कुं पाकशासनः ।
सह सर्वैः सुरगणैर् इदं वचनम् अब्रवीत् ।
त्रिशङ्को गच्छ भूयस् त्वं नासि स्वर्गकृतालयः ।
गुरुशापहतो मूढ पत भूमिम् अवाक्शिराः ।
एवम् उक्तो महेन्द्रेण त्रिशङ्कुर् अपतत् पुनः ।
विक्रोशमानस् त्राहीति विश्वामित्रं तपोधनम् ।
तच् छुत्वा वचनं तस्य क्रोशमानस्य कौशिकः ।
रोषम् आहारयत् तीव्रं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥

TRANSLATION *As soon as the sage had spoken,
the lord of men, in his body,
went up to heaven, Kakutstha,
while the sages looked on.
Seeing Trishanku come
to the world of the gods,
the chastiser of Paka, with all
the hosts of gods, spoke these words:
“Trishanku, go back again;
you have no dwelling made in heaven.*

लीला मुनि के तप से राजा सशरीर स्वर्ग पहुँचे। इन्द्र बोले,
सिर के बल नीचे गिरो। बचाइए, पुकारते हुए वे
गिरे। तब कौशिक गरजे, ठहरो! ठहरो!

SUBTITLE By the sage's tapas he rose to heaven.
Indra: "Fall, head first!"
"Save me!" he cried.
Kaushika roared: "Stop! Stop!"

*Fool, struck down by your guru's curse,
fall to the earth head first.”
Told this by great Indra,
Trishanku fell again,
crying out, “Save me!”
to Vishvamitra, rich in tapas.
Hearing the words of the one who cried,
Kaushika was seized by fierce anger,
and he said, “Stay! Stay!”*

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (1.59.15–19) में है; दृश्य की पंक्ति इन श्लोकों को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (1.59.15–19); the scene's line shortens these verses.

॥ 1.60.20b-21,
27, 31-32a ॥

CrEd 1.59.20-21,
26, 31

condensed
from 1.60.20b-
21, 27, 31-32a

शतानन्द SHATANANDA

वाल्मीकि ऋषिमध्ये स तेजस्वी प्रजापतिर् इवापरः ।
सृजन् दक्षिणमार्गस्थान् सप्तर्षीन् अपरान् पुनः ।
नक्षत्रमालाम् अपराम् असृजत् क्रोधमूर्छितः ।
दक्षिणां दिशम् आस्थाय मुनिमध्ये महायशः ।
सशरीरस्य भद्रं वस् त्रिशङ्कोर् अस्य भूपतेः ।
आरोहणं प्रतिज्ञाय नानृतं कर्तुम् उत्सहे ।
नक्षत्राणि मुनिश्रेष्ठ तेषु ज्योतिषु जाज्वलन् ।
अवाक्शिरास् त्रिशङ्कुश् च तिष्ठत्व् अमरसंनिभः ॥

TRANSLATION *Among the sages, that blazing one,
like a second Prajapati,
created other seven sages
standing on the southern path;
and, overcome with anger, he made
another garland of stars,
there in the southern quarter,
the glorious one, among the sages.
“May it be well with you: I promised
this king, Trishanku,
he would rise in his body;
I cannot make my word false.”*

लीला दक्षिण के आकाश में उन्होंने नए सप्तर्षि और नए
तारे रच दिए। देवताओं से बोले, वचन दिया है,
झूठा नहीं करूँगा। वहीं सिर नीचे किए, त्रिशंकु
आज भी चमकते हैं।

SUBTITLE In the southern sky he made new stars.
"I gave my word.
I will not make it a lie."
There Trishanku shines, head down.

*“Best of sages, let the stars remain;
and blazing among those lights,
head down, let Trishanku stay,
shining like an immortal.”*

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (1.59.20–21, 26, 31) में है; दृश्य की पंक्ति इन श्लोकों को जोड़ती और छोटा करती है। अंतिम श्लोक विश्वामित्र को देवताओं का उत्तर है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (1.59.20–21, 26, 31); the scene's line joins and shortens these verses. The last verse is the gods' answer to Vishvamitra.

॥ 1.66.1–2 ॥
CrEd 1.65.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.66.5 ॥
CrEd 1.65.5

विश्वामित्र VISHVAMITRA

वाल्मीकि पुत्रौ दशरथस्येमौ क्षत्रियौ लोकविश्रुतौ ।
द्रष्टुकामौ धनुः श्रेष्ठं यद् एतत् त्वयि तिष्ठति ॥

TRANSLATION *These two are Dasharatha's sons,
kshatriyas famed in the world;
they wish to see the finest bow,
the one that rests with you.*

लीला ये दशरथ के पुत्र हैं, लोकविख्यात क्षत्रिय। ये वह
श्रेष्ठ धनुष देखना चाहते हैं जो आपके पास रखा है।

SUBTITLE These are Dasharatha's sons,
kshatriyas known to the world.
They wish to see
the great bow in your keeping.

॥ 1.66.6 ॥
CrEd 1.65.6

विश्वामित्र VISHVAMITRA

वाल्मीकि एतद् दर्शय भद्रं ते कृतकामौ नृपात्मजौ ।
दर्शनाद् अस्य धनुषो यथेष्टं प्रतियास्यतः ॥

TRANSLATION *Show it to them, may it be well with you;
the princes, their wish fulfilled
by the sight of this bow,
will go back as they please.*

लीला राजन्, आपका कल्याण हो, इन्हें वह धनुष
दिखाइए। उसे देखकर ये राजकुमार कृतार्थ होंगे,
और इच्छानुसार लौट जाएँगे।

SUBTITLE Show it to them, bless you.
One look at the bow,
and the princes
will go home content.

॥ 1.66.7b-8 ॥
CrEd 1.65.7b-8

जनक JANAKA

वाल्मीकि श्रूयताम् अस्य धनुषो यद् अर्थम् इह तिष्ठति ।
देवरात इति ख्यातो निमेः षष्ठो महीपतिः ।
न्यासोऽयं तस्य भगवन् हस्ते दत्तो महात्मना ॥

TRANSLATION *Hear for what purpose
this bow rests here.
There was a king famed as Devarata,
sixth in line from Nimi;
into his hands, my lord, the great-souled one
gave this bow as a trust.*

लीला भगवन्, सुनिए, यह धनुष यहाँ क्यों है। निमि से
छठे राजा देवरात के हाथों में यह धरोहर के रूप में
सौंपा गया था।

SUBTITLE Hear, holy one,
why this bow is here.
It was given in trust
to Devarata, sixth king after Nimi.

॥ 1.66.9 ॥
CrEd 1.65.9

जनक JANAKA

वाल्मीकि दक्षयज्ञवधे पूर्व धनुर् आयम्य वीर्यवान् ।
रुद्रस् तु त्रिदशान् रोषात् सलीलम् इदम् अब्रवीत् ॥

TRANSLATION *Long ago, when Daksha's sacrifice was ruined,
mighty Rudra drew this bow,
and in his anger, as if in play,
he spoke these words to the gods:*

लीला बहुत पहले, जब दक्ष का यज्ञ नष्ट हुआ, तब
पराक्रमी रुद्र ने यही धनुष तानकर, क्रोध में, मानो
खेल-खेल में देवताओं से कहा,

SUBTITLE Long ago, at Daksha's sacrifice,
mighty Rudra drew this bow
and, in anger, as if in play,
said to the gods:

॥ 1.66.10 ॥
CrEd 1.65.10

जनक JANAKA

वाल्मीकि यस्माद् भागार्थिनो भागान् नाकल्पयत मे सुराः ।
वराङ्गानि महार्हाणि धनुषा शातयामि वः ॥

TRANSLATION *"Since you, gods, set no share apart
for me, who had a right to a share,
with this bow I will strike off
your heads, so highly prized."*

लीला "देवताओ, मेरा भाग होते हुए भी तुमने मेरे लिए
भाग नहीं रखा। इस धनुष से मैं तुम्हारे बहुमूल्य
सिर काट डालूँगा।"

SUBTITLE "Gods, you gave me no share,
though a share is mine.
With this bow
I will cut off your heads."

॥ 1.66.13b-14a ॥
CrEd 1.65.14

जनक JANAKA

वाल्मीकि अथ मे कृषतः क्षेत्रं लाङ्गलाद् उत्थिता मम ।
क्षेत्रं शोधयता लब्ध्वा नाम्ना सीतेति विश्रुता ॥

TRANSLATION *Then, as I was ploughing a field,
she rose up from my plough;
I found her as I cleared the field,
and she is known by the name of Sita.*

लीला फिर, जब मैं खेत जोत रहा था, मेरे हल के पीछे से
एक कन्या उठ आई। भूमि शुद्ध करते हुए मुझे वह
मिली। वह सीता नाम से विख्यात है।

SUBTITLE Once, as I ploughed a field,
a girl rose behind my plough.
I found her in the furrow:
her name is Sita.

॥ 1.66.14b-15a ॥
CrEd 1.65.15

जनक JANAKA

वाल्मीकि भूतलाद् उत्थिता सा तु व्यवर्धत ममात्मजा ।
वीर्यशुल्केति मे कन्या स्थापितेयम् अयोनिजा ॥

TRANSLATION *Risen from the surface of the earth,
she grew up as my daughter;
and this girl, born of no womb,
I have pledged: her bride-price is strength.*

लीला धरती से उठी वह मेरी अपनी बेटी बनकर बढ़ी। यह
अयोनिजा कन्या है। मैंने इसे वीर्यशुल्का ठहराया है,
इसका मूल्य केवल पराक्रम है।

SUBTITLE Risen from the earth,
she grew up my daughter.
Born of no womb,
her bride-price is strength.

॥ 1.66.15b-17a ॥
CrEd 1.65.16-17

जनक JANAKA

वाल्मीकि भूतलाद् उत्थितां तां तु वर्धमानां ममात्मजाम् ।
वरयाम् आसुर् आगम्य राजानो मुनिपुंगव ।
तेषां वरयतां कन्यां सर्वेषां पृथिवीक्षिताम् ।
वीर्यशुल्केति भगवन् न ददामि सुताम् अहम् ॥

TRANSLATION *As she grew, my daughter,
risen from the earth,
kings came and sought her hand,
O bull among sages.
To all those lords of the earth
who sought the maiden,
I did not give my daughter, my lord,
for her bride-price is strength.*

लीला मुनिश्रेष्ठ, जब वह बड़ी होने लगी, राजा आ-आकर
उसे माँगने लगे। उन सबसे मैंने कहा, वह पराक्रम
से ही जीती जाएगी। मैं उसे यों नहीं दूँगा।

SUBTITLE As my daughter grew, great sage,
kings came to ask for her.
Her price is strength, I told them all.
I will not give her.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (1.65.16-17) में है; दृश्य की पंक्ति आधा श्लोक छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (1.65.16-17); the scene's line leaves out a half-verse.

॥ 1.66.17b–19a ॥
CrEd 1.65.18–19

जनक JANAKA

वाल्मीकि ततः सर्वे नृपतयः समेत्य मुनिपुंगव ।
मिथिलाम् अभ्युपागम्य वीर्यं जिज्ञासवस् तदा ।
तेषां जिज्ञासमानानां वीर्यं धनुर् उपाहृतम् ।
न शेकुर् ग्रहणे तस्य धनुषस् तोलनेऽपि वा ॥

TRANSLATION *Then all the kings together,
bull among sages,
came to Mithila,
wishing to test their strength.
For them, who wished to test their strength,
the bow was brought;
they could not grasp the bow,
nor even lift it.*

लीला तब सब राजा मिलकर अपना बल परखने मिथिला
आए। उनके सामने धनुष लाया गया। कोई उसे
पकड़ भी न सका, उठाना तो दूर।

SUBTITLE The kings came to Mithila
to test their strength.
Not one could grasp the bow,
or even lift it.

प्रचलित पाठ में “शैवं धनुः” (शिव का धनुष) है (1.66.18b); यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार “वीर्यं धनुः” है (1.65.19)।

The popular text reads śaivaṃ dhanur, “Shiva's bow” (1.66.18b); the Sanskrit shown follows the CrEd, vīryaṃ dhanur (1.65.19).

॥ 1.66.19b-23a ॥

CrEd 1.65.20-23

condensed
from 1.66.19b-
23a

जनक JANAKA

वाल्मीकि तेषां वीर्यवतां वीर्यम् अल्पं ज्ञात्वा महामुने ।
प्रत्याख्याता नृपतयस् तन् निबोध तपोधन ।
ततः परमकोपेन राजानो मुनिपुंगव ।
अरुन्धन् मिथिलां सर्वे वीर्यसंदेहम् आगताः ।
आत्मानम् अवधूतं ते विज्ञाय मुनिपुंगव ।
रोषेण महताविष्टाः पीडयन् मिथिलां पुरीम् ।
ततः संवत्सरे पूर्णे क्षयं यातानि सर्वशः ।
साधनानि मुनिश्रेष्ठ ततोऽहं भृशदुःखितः ॥

TRANSLATION *Knowing the strength of those strong men
to be slight, great sage,
I turned the kings away:
hear this, rich in tapas.
Then in the utmost fury,
bull among sages,
all the kings besieged Mithila,
their strength called into doubt.
Knowing themselves spurned,
bull among sages,
seized by a mighty rage,
they pressed hard on the city of Mithila.*

लीला मैंने उन्हें लौटा दिया। तब क्रोध से भरे राजाओं ने
मिथिला को घेर लिया। पूरा एक वर्ष बीता, मेरे सारे
साधन चुक गए, और मैं अत्यंत दुःखी हो गया।

SUBTITLE I turned them away.
In fury they laid siege to Mithila.
A full year passed; my means were spent,
and I was in deep distress.

*Then, when a full year had passed,
all my means were spent,
best of sages, and then
I was in deep distress.*

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (1.65.20–23) में है; दृश्य की पंक्ति इन श्लोकों को जोड़ती और छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (1.65.20–23); the scene's line joins and shortens these verses.

॥ 1.66.23b–
25a ॥

CrEd 1.65.24–25

जनक JANAKA

वाल्मीकि ततो देवगणान् सर्वान् तपसाहं प्रसादयम् ।
ददुश् च परमप्रीताश् चतुरङ्गबलं सुराः ।
ततो भग्ना नृपतयो हन्यमाना दिशो ययुः ॥

TRANSLATION *Then by tapas I won the favour
of all the hosts of gods,
and the gods, well pleased, gave me
an army of four arms.
Then the kings, broken
and cut down, fled every way.*

लीला तब मैंने तप से सब देवताओं को प्रसन्न किया, और
उन्होंने मुझे चतुरंगिणी सेना दी। राजा हारकर,
कटते-मरते, दिशाओं में भाग गए।

SUBTITLE Then by tapas I won over the gods.
They gave me a fourfold army.
The kings broke, and fled, cut down,
to every quarter.

॥ 1.66.25b-
26a ॥
CrEd 1.65.26

जनक JANAKA

वाल्मीकि तद् एतन् मुनिशार्दूल धनुः परमभास्वरम् ।
रामलक्ष्मणयोश् चापि दर्शयिष्यामि सुव्रत ॥

TRANSLATION *This is that bow, tiger among sages,
shining with surpassing light;
to Rama and to Lakshmana too
I will show it, keeper of vows.*

लीला मुनिश्रेष्ठ, यह परम तेजस्वी धनुष मैं राम और
लक्ष्मण को भी दिखाऊँगा।

SUBTITLE This blazing bow, great sage,
I will show to Rama
and to Lakshmana.

॥ 1.66.26b-c ॥
CrEd 1.65.27

जनक JANAKA

वाल्मीकि यद्य् अस्य धनुषो रामः कुर्याद् आरोपणं मुने ।
सुताम् अयोनिजां सीतां दद्यां दाशरथेर् अहम् ॥

TRANSLATION *If Rama, O sage, can string
this bow, I will give
my daughter Sita, born of no womb,
to the son of Dasharatha.*

लीला और मुनि, यदि राम इस धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा दें,
तो मैं अपनी अयोनिजा पुत्री सीता दशरथनन्दन को
दे दूँगा।

SUBTITLE And if Rama can string this bow,
I will give him Sita,
my daughter born of no womb.



The bow breaks

Valmiki 1.67.1–27 (CrEd 1.66.1–27)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 1.67.1 ॥
CrEd 1.66.1

विश्वामित्र VISHVAMITRA

वाल्मीकि धनुर् दर्शय रामाय इति होवाच पार्थिवम् ॥

TRANSLATION “*Show the bow to Rama,*”
so he said to the king.

लीला राम को धनुष दिखाइए।

SUBTITLE Show the bow
to Rama.

॥ 1.67.2 ॥
CrEd 1.66.2

जनक JANAKA

वाल्मीकि ततः स राजा जनकः सचिवान् व्यादिदेश ह ।
धनुर् आनीयतां दिव्यं गन्धमाल्यविभूषितम् ॥

TRANSLATION *Then King Janaka*
gave orders to his ministers:
“Let the divine bow be brought,
adorned with scents and garlands.”

लीला वह दिव्य धनुष, गन्ध और मालाओं से सजाकर,
यहाँ लाया जाए।

SUBTITLE Let the divine bow be brought,
garlanded and anointed.

प्रचलित पाठ में “गन्धमाल्यानुलेपितम्” (गन्ध और मालाओं से लिपा) है; यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार “गन्धमाल्यविभूषितम्” है (1.66.2)।

The popular text reads gandhamālyānulepitam, “anointed with scents and garlands”; the Sanskrit shown follows the CrEd, gandhamālyavibhūṣitam (1.66.2).

॥ 1.67.3 ॥
CrEd 1.66.3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.67.3–5 ॥
CrEd 1.66.3–5

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.67.6 ॥
CrEd 1.66.6

मन्त्री MINISTER

वाल्मीकि इदं धनुर्वरं राजन् पूजितं सर्वराजभिः ।
मिथिलाधिप राजेन्द्र दर्शनीयं यदीच्छसि ॥

TRANSLATION *King, here is this finest bow,
honoured by all kings;
lord of Mithila, king of kings,
it may be shown, if you wish.*

लीला महाराज, यह रहा श्रेष्ठ धनुष, जिसे सब राजाओं
ने पूजा है। मिथिलापति, आप चाहें तो इसे
दिखाया जाए।

SUBTITLE Here is the finest of bows, my king,
honoured by every king.
Lord of Mithila,
shall it be shown?

॥ 1.67.8 ॥
CrEd 1.66.8

जनक JANAKA

वाल्मीकि इदं धनुर्वरं ब्रह्मज् जनकैर् अभिपूजितम् ।
राजभिश् च महावीर्यैर् अशक्यं पूरितुं तदा ॥

TRANSLATION *Brahmin, this finest bow
has been honoured by the Janakas;
even kings of great might
could not draw it then.*

लीला ब्रह्मन्, इस श्रेष्ठ धनुष को जनकवंशियों ने पूजा है।
महापराक्रमी राजा भी इसे झुका न सके।

SUBTITLE The Janakas have worshipped this bow.
Kings of great might
could not bend it.

प्रचलित पाठ में “अशक्तैः पूरितम्” है; यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार “अशक्यं पूरितुम्” (खींचा न जा सका) है (1.66.8)।

The popular text reads *aśaktaiḥ pūritaṃ*, “which they were unable to draw”; the Sanskrit shown follows the CrEd, *aśakyaṃ pūrituṃ* (1.66.8).

॥ 1.67.9 ॥
CrEd 1.66.9

जनक JANAKA

वाल्मीकि नैतत् सुरगणाः सर्वे नासुरा न च राक्षसाः ।
गन्धर्वयक्षप्रवराः सकिंनरमहोरगाः ॥

TRANSLATION *Not all the hosts of gods could do it,
nor asuras, nor rakshasas,
nor the best of gandharvas and yakshas,
nor kinnaras and great serpents.*

लीला न सारे देवगण यह कर सके, न असुर, न राक्षस, न
श्रेष्ठ गन्धर्व और यक्ष, न किन्नर और महानाग ।

SUBTITLE Not the gods, nor asuras,
nor rakshasas,
nor gandharvas, yakshas or serpents
could do it.

॥ 1.67.10 ॥
CrEd 1.66.10

जनक JANAKA

वाल्मीकि क्व गतिर् मानुषाणां च धनुषोऽस्य प्रपूरणे ।
आरोपणे समायोगे वेपने तोलनेऽपि वा ॥

TRANSLATION *What chance, then, have men
of drawing this bow,
of stringing it, fitting an arrow,
of bending it, or even lifting it?*

लीला तो फिर मनुष्यों का क्या सामर्थ्य, कि इस धनुष को
खींचें, इस पर प्रत्यंचा चढ़ाएँ, बाण जोड़ें, इसे
हिलाएँ, या उठा भी सकें?

SUBTITLE What chance has a man, then,
to draw it, string it,
fit an arrow, shake it,
or even lift it?

॥ 1.67.11 ॥
CrEd 1.66.11

जनक JANAKA

वाल्मीकि तद् एतद् धनुषां श्रेष्ठम् आनीतं मुनिपुंगव ।
दर्शयैतन् महाभाग अनयो राजपुत्रयोः ॥

TRANSLATION *Here is that finest of bows,
brought here, bull among sages;
show it, most fortunate one,
to these two princes.*

लीला मुनिश्रेष्ठ, वही श्रेष्ठ धनुष यहाँ लाया गया है।
महाभाग, इसे इन दोनों राजकुमारों को दिखाइए।

SUBTITLE Here is that best of bows, great sage.
Show it
to these two princes.

॥ 1.67.12 ॥
CrEd 1.66.12

विश्वामित्र VISHVAMITRA

वाल्मीकि विश्वामित्रस् तु धर्मात्मा श्रुत्वा जनकभाषितम् ।
वत्स राम धनुः पश्य इति राघवम् अब्रवीत् ॥

TRANSLATION *And Vishvamisra, righteous of soul,
hearing what Janaka had said,
said to Raghava, "Rama, my child,
look at the bow."*

लीला वत्स राम, धनुष देखो।

SUBTITLE Rama, my child,
look at the bow.

॥ 1.67.13 ॥
CrEd 1.66.13

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.67.14 ॥
CrEd 1.66.14

राम R A M A

वाल्मीकि इदं धनुर्वरं ब्रह्मन् संस्पृशामीह पाणिना ।
यत्नवांश् च भविष्यामि तोलने पूरणेऽपि वा ॥

TRANSLATION *Brahmin, this finest bow*
I will touch here with my hand;
and I will make the effort
to lift it, or to draw it.

लीला ब्रह्मन्, मैं इस श्रेष्ठ धनुष को हाथ से छूता हूँ। और
इसे उठाने तथा खींचने का यत्न भी करूँगा।

SUBTITLE Brahmin, I will touch this bow.
And I will try
to lift it and draw it.

॥ 1.67.15a ॥
CrEd 1.66.15a

जनक J A N A K A

वाल्मीकि बाढम् इत्य् एव तं राजा मुनिश् च समभाषत ॥

TRANSLATION *“Surely,” the king*
and the sage said to him.

लीला अवश्य।

SUBTITLE Very well.

॥ 1.67.15b–16 ॥
CrEd 1.66.15c–16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.67.17–18 ॥
CrEd 1.66.17–18

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.67.19 ॥
CrEd 1.66.19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.67.20 ॥
CrEd 1.66.20

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.67.21 ॥
CrEd 1.66.21

जनक JANAKA

वाल्मीकि भगवन् दृष्टवीर्यो मे रामो दशरथात्मजः ।
अत्यद्भुतम् अचिन्त्यं च अतर्कितम् इदं मया ॥

TRANSLATION *My lord, I have seen the strength
of Rama, Dasharatha's son:
most wondrous, past all thought,
beyond what I imagined.*

लीला भगवन्, मैंने दशरथनन्दन राम का पराक्रम देख
लिया। यह अत्यंत अद्भुत है, अचिन्त्य है। मैंने कभी
इसकी कल्पना तक न की थी।

SUBTITLE Holy one, I have seen
the strength of Rama.
A wonder beyond thought:
I never dreamed of it.

॥ 1.67.22 ॥
CrEd 1.66.22

जनक JANAKA

वाल्मीकि जनकानां कुले कीर्तिम् आहरिष्यति मे सुता ।
सीता भर्तारम् आसाद्य रामं दशरथात्मजम् ॥

TRANSLATION *My daughter will bring glory
to the house of the Janakas:
Sita, who has won for her husband
Rama, Dasharatha's son.*

लीला दशरथनन्दन राम को पति पाकर मेरी पुत्री सीता
जनकवंश की कीर्ति बढ़ाएगी।

SUBTITLE With Rama for her husband,
my daughter Sita
will bring glory
to the house of the Janakas.

॥ 1.67.23 ॥
CrEd 1.66.23

जनक JANAKA

वाल्मीकि मम सत्या प्रतिज्ञा च वीर्यशुल्केति कौशिक ।
सीता प्राणैर् बहुमता देया रामाय मे सुता ॥

TRANSLATION *And my vow has proved true, Kaushika:
her bride-price was strength.
Sita, my daughter, dear to me as life,
shall be given to Rama.*

लीला कौशिक, मेरी प्रतिज्ञा सत्य हुई, वह पराक्रम से ही
जीती जानी थी। प्राणों से भी प्रिय मेरी पुत्री सीता
राम को दी जाएगी।

SUBTITLE My vow has come true:
her price was strength.
Sita, dearer than my life,
shall be given to Rama.

॥ 1.67.24–25a ॥
CrEd 1.66.24–25a

जनक JANAKA

वाल्मीकि भवतोऽनुमते ब्रह्मज् शीघ्रं गच्छन्तु मन्त्रिणः ।
मम कौशिक भद्रं ते अयोध्यां त्वरिता रथैः ।
राजानं प्रश्रितैर् वाक्यैर् आनयन्तु पुरं मम ॥

TRANSLATION *With your consent, brahmin,
let my ministers go quickly,
Kaushika, may it be well with you,
in haste to Ayodhya by chariot,
and with courteous words
bring the king to my city.*

लीला ब्रह्मन्, आपकी अनुमति हो तो मेरे मंत्री रथों पर
शीघ्र अयोध्या जाएँ, और विनम्र वचनों से राजा को
मेरी नगरी ले आएँ।

SUBTITLE With your leave, let my ministers
ride fast to Ayodhya,
and with courteous words
bring the king here.

॥ 1.67.25b-26 ॥
CrEd 1.66.25b-26

जनक JANAKA

वाल्मीकि प्रदानं वीर्यशुल्कायाः कथयन्तु च सर्वशः ।
मुनिगुप्तौ च काकुत्स्थौ कथयन्तु नृपाय वै ॥

TRANSLATION *And let them tell him all of it,
the giving of her whose price was strength;
and let them tell the king
the Kakutsthas are in the sage's care.*

लीला वे उन्हें सब बताएँ, पराक्रम से जीती गई कन्या का
दान, और यह भी कि दोनों काकुत्स्थ मुनि की रक्षा
में सकुशल हैं।

SUBTITLE Let them tell him all:
she who was won by strength is given,
and his sons are safe
in the sage's keeping.

दृश्य में “वीर्यशुल्कायाः” है; GRETIL के CrEd पाठ में “वीर्यशुल्काः” छपा है (1.66.25c)।

The scene reads vīryaśulkāyāḥ; the GRETIL CrEd e-text prints vīryaśulkāḥ (1.66.25c).

॥ 1.67.27 ॥
CrEd 1.66.27

विश्वामित्र VISHVAMITRA

वाल्मीकि कौशिकश् च तथेत्य् आह राजा चाभाष्य मन्त्रिणः ।
अयोध्यां प्रेषयाम् आस ॥

TRANSLATION *“So be it,” said Kaushika;
and the king, speaking with his ministers,
sent them to Ayodhya.*

लीला तथास्तु।

SUBTITLE So be it.

॥ 1.67.27 ॥
CrEd 1.66.27

SILENT MOMENT मौन क्षण



The wedding

Valmiki 1.69.7–19, 1.71.21–22, 1.72.4–12, 1.73.8–40 (CrEd 1.68.7–17, 1.70.21–22, 1.71.5–11, 1.72.7–27)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 1.69.7–8 ॥
CrEd 1.68.7–8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.69.9b–10a ॥
CrEd 1.68.9

जनक JANAKA

वाल्मीकि स्वागतं ते महाराज दिष्ट्या प्राप्तोऽसि राघव ।
पुत्रयोर् उभयोः प्रीतिं लप्स्यसे वीर्यनिर्जिताम् ॥

TRANSLATION *Welcome, great king;
by good fortune you have come, Raghava.
You will have joy of your two sons,
a joy their strength has won.*

लीला महाराज, आपका स्वागत है। बड़े भाग्य से आप
पधारे, राघव। अब आप अपने दोनों पुत्रों का सुख
पाएँगे, जो उन्होंने पराक्रम से जीता है।

SUBTITLE Welcome, great king!
What fortune that you have come.
You shall have the joy
your two sons won by valour.

॥ 1.69.11b-12a ॥
CrEd 1.68.11

जनक JANAKA

वाल्मीकि दिष्ट्या मे निर्जिता विघ्ना दिष्ट्या मे पूजितं कुलम् ।
राघवैः सह संबन्धाद् वीर्यश्रेष्ठैर् महात्मभिः ॥

TRANSLATION *By good fortune my obstacles are overcome;
by good fortune my house is honoured,
by this bond with the Raghavas,
great-souled, foremost in strength.*

लीला सौभाग्य से मेरे सारे विघ्न कट गए। सौभाग्य से
मेरा कुल धन्य हुआ, पराक्रमी रघुवंशियों से नाता
जो जुड़ा।

SUBTITLE My troubles are over.
My house is honoured,
joined in kinship
with the Raghus.

॥ 1.69.14b-15a ॥
CrEd 1.68.14

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि प्रतिग्रहो दातृवशः श्रुतम् एतन् मया पुरा ।
यथा वक्ष्यसि धर्मज्ञ तत् करिष्यामहे वयम् ॥

TRANSLATION *Receiving rests with the giver:
so I have heard of old.
As you shall say, knower of dharma,
so we shall do.*

लीला मैंने सदा यही सुना है, लेना देने वाले की इच्छा पर
है। धर्मज्ञ, आप जैसा कहेंगे, हम वैसा ही करेंगे।

SUBTITLE A gift is taken
as the giver wills.
As you say, knower of dharma,
so we shall do.

॥ 1.69.15b-16a ॥
CrEd 1.68.15

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.69.17b-18 ॥
CrEd 1.68.17

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 1.69.17b-18a

Rama and Lakshmana, with Vishvamitra before them, touching their father's feet is the popular text's; the CrEd has only the king rejoicing at the sight of his sons (1.68.17).

॥ 1.71.21-22 ॥
CrEd 1.70.21-22

जनक JANAKA

वाल्मीकि सीतां रामाय भद्रं ते ऊर्मिलां लक्ष्मणाय च ।
वीर्यशुल्कां मम सुतां सीतां सुरसुतोपमाम् ।
द्वितीयाम् ऊर्मिलां चैव त्रिर् वदामि न संशयः ।
ददामि परमप्रीतो वध्वौ ते रघुनन्दन ॥

TRANSLATION *Sita to Rama, may it be well with you,
and Urmila to Lakshmana:
my daughter Sita, whose price was strength,
like a daughter of the gods,
and Urmila, the second:
three times I say it, without doubt,
with the greatest joy I give you
two brides, joy of the Raghus.*

लीला सीता राम को, ऊर्मिला लक्ष्मण को। पराक्रम से
जीती, देवकन्या-सी सीता। तीन बार कहता हूँ, बड़े
हर्ष से, आपको दो बहुएँ देता हूँ।

SUBTITLE Sita to Rama,
Urmila to Lakshmana.
I say it three times:
I give you two brides.

॥ 1.72.4b-6 ॥
CrEd 1.71.5-6

विश्वामित्र VISHVAMITRA

वाल्मीकि भ्राता यवीयान् धर्मज्ञ एष राजा कुशध्वजः ।
अस्य धर्मात्मनो राजन् रूपेणाप्रतिमं भुवि ।
सुता द्वयं नरश्रेष्ठ पत्न्यर्थं वरयामहे ।
भरतस्य कुमारस्य शत्रुघ्नस्य च धीमतः ॥

TRANSLATION *Knower of dharma, here is your younger brother,
this King Kushadhvaja.
This righteous man, O king,
has two daughters unmatched in beauty on earth;
we ask for them, best of men,
to be wives
to Bharata, the prince,
and to wise Shatrughna.*

लीला आपके छोटे भाई राजा कुशध्वज की दो बेटियाँ हैं,
धरती पर जिनके रूप की बराबरी नहीं। उन्हें हम
कुमार भरत और बुद्धिमान शत्रुघ्न के लिए माँगते हैं।

SUBTITLE Your brother Kushadhvaja
has two daughters without equal.
We ask them as wives
for Bharata and Shatrughna.

॥ 1.72.10b-12 ॥
CrEd 1.71.10-11

जनक JANAKA

वाल्मीकि सट्शं कुलसंबन्धं यद् आज्ञापयथः स्वयम् ।
एवं भवतु भद्रं वः कुशध्वजसुते इमे ।
पत्न्यौ भजेतां सहितौ शत्रुघ्नभरताव् उभौ ।
एकाह्वा राजपुत्रीणां चतसृणां महामुने ।
पाणीन् गृह्णन्तु चत्वारो राजपुत्रा महाबलाः ॥

TRANSLATION *A bond between equal houses
you yourselves command;
so be it, may it be well with you:
let these, Kushadhvaja's daughters,
be wives to the two together,
to Shatrughna and to Bharata.
On a single day, great sage,
let the four mighty princes
take the hands
of the four princesses.*

लीला बराबर कुलों का नाता, आप दोनों की आज्ञा। ऐसा
ही हो, आपका कल्याण हो। एक ही दिन, चारों
राजकुमार चारों राजकुमारियों का हाथ थामें।

SUBTITLE Equal houses, as you command.
So be it.
On one day, let four princes
take four princesses by the hand.

॥ 1.73.8-9 ॥
CrEd 1.72.7c-8

SILENT MOMENT मौन क्षण

वसिष्ठ VASISHTHA

वाल्मीकि राजा दशरथो राजन् कृतकौतुकमङ्गलैः ।
पुत्रैर् नरवरश्रेष्ठ दातारम् अभिकाङ्क्षते ।
दातृप्रतिग्रहीतृभ्यां सर्वार्थाः प्रभवन्ति हि ।
स्वधर्मं प्रतिपद्यस्व कृत्वा वैवाह्यम् उत्तमम् ॥

TRANSLATION *King, best among the best of men,
King Dasharatha, with his sons,
their wedding threads and blessings done,
is waiting for the giver.
For every aim comes to pass
through the giver and the receiver;
take up your own dharma
and perform this finest of weddings.*

लीला राजन्, कंगन बाँधे अपने पुत्रों के साथ महाराज
दशरथ दाता की राह देख रहे हैं। देने और लेने वाले
से ही सब शुभ होता है। अपना धर्म निभाइए।

SUBTITLE King, Dasharatha and his sons,
wedding threads tied,
wait for the giver.
Do your dharma.

॥ 1.73.14 ॥
CrEd 1.72.13

जनक JANAKA

वाल्मीकि कः स्थितः प्रतिहारो मे कस्याज्ञा संप्रतीक्ष्यते ।
स्वगृहे को विचारोऽस्ति यथा राज्यम् इदं तव ॥

TRANSLATION *What gatekeeper stands in my way?
Whose order is awaited?
What is there to weigh in one's own house?
This kingdom is as much yours.*

लीला मेरे द्वार पर कैसा पहरा? किसकी आज्ञा की राह?
अपने ही घर में कैसा सोच-विचार? यह राज्य
आपका ही है।

SUBTITLE Who guards my door?
Whose word is awaited?
In your own home, why wait?
This kingdom is yours.

॥ 1.73.15-16 ॥
CrEd 1.72.14-15

जनक JANAKA

वाल्मीकि कृतकौतुकसर्वस्वा वेदिमूलम् उपागताः ।
मम कन्या मुनिश्रेष्ठ दीप्ता वह्नेर् इवार्चिषः ।
सज्जोऽहं त्वत्प्रतीक्षोऽस्मि वेद्याम् अस्यां प्रतिष्ठितः ।
अविघ्नं कुरुतां राजा किमर्थं हि विलम्ब्यते ॥

TRANSLATION *Their wedding threads all tied,
my daughters have come to the foot of the altar,
best of sages, shining
like flames of fire.
I am ready, I wait for you,
standing at this altar.
Let the king go ahead unhindered:
why is there delay?*

लीला मेरी कन्याएँ, कंगन बाँधे, वेदी तक आ चुकी हैं,
अग्नि की लपटों-सी दमकती। मैं वेदी पर तैयार
खड़ा आपकी राह देख रहा हूँ। देर किस बात की?

SUBTITLE My daughters are at the altar,
bright as flames of fire.
I stand ready for you.
Why the delay?

॥ 1.73.17, 25 ॥
CrEd 1.72.16

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 1.73.25

Sita set before the fire, facing Rama, is the popular text's; in the CrEd she stands at the altar with her sisters (1.72.14).

॥ 1.73.26–27a ॥
CrEd 1.72.17

जनक JANAKA

वाल्मीकि अब्रवीज् जनको राजा कौसल्यानन्दवर्धनम् ।
इयं सीता मम सुता सहधर्मचरी तव ।
प्रतीच्छ चैनां भद्रं ते पाणिं गृहीष्व पाणिना ॥

TRANSLATION *King Janaka spoke
to the joy of Kausalya:
“This is Sita, my daughter,
your partner in dharma.
Accept her, may it be well with you;
take her hand in your hand.”*

लीला यह सीता है, मेरी बेटी, तुम्हारी सहधर्मचारिणी ।
इसे स्वीकार करो, तुम्हारा कल्याण हो । इसका हाथ
अपने हाथ में लो ।

SUBTITLE This is Sita, my daughter,
your partner in dharma.
Accept her.
Take her hand in yours.

॥ 1.73.27b ॥

popular text
only · not in
the CrEd

जनक JANAKA

वाल्मीकि पतिव्रता महाभागा छायेवानुगता सदा ॥

TRANSLATION *True to her husband, most blessed,
she will follow you always, like your shadow.*

लीला यह पतिव्रता है, बड़भागिनी है । छाया की तरह सदा
तुम्हारे साथ चलेगी ।

SUBTITLE True to you, and blessed,
she will follow you always,
like your shadow.

॥ 1.73.30b-33a ॥

CrEd 1.72.18-20

condensed
from 1.73.30b-
33a

जनक JANAKA

वाल्मीकि लक्ष्मणागच्छ भद्रं ते ऊर्मिलाम् उद्यतां मया ।
प्रतीच्छ पाणिं गृहीष्व मा भूत् कालस्य पर्ययः ।
तम् एवम् उक्त्वा जनको भरतं चाभ्यभाषत ।
गृहाण पाणिं माण्डव्याः पाणिना रघुनन्दन ।
शत्रुघ्नं चापि धर्मात्मा अब्रवीज् जनकेश्वरः ।
श्रुतकीर्त्या महाबाहो पाणिं गृहीष्व पाणिना ॥

TRANSLATION “*Lakshmana, come, may it be well with you:
Urmila, whom I hold out to you,
accept her, take her hand;
let the hour not pass by.*”
*Having spoken so to him,
Janaka spoke to Bharata:
“Take Mandavi’s hand
in your hand, joy of the Raghus.”
And to Shatrughna too the righteous
lord of Janaka’s line said:
“Mighty-armed one, take
Shrutakirti’s hand in your hand.”*

लीला लक्ष्मण, आओ, तुम्हारा कल्याण हो, ऊर्मिला का
हाथ थामो। भरत, माण्डवी का हाथ थामो। शत्रुघ्न,
श्रुतकीर्ति का हाथ थामो।

SUBTITLE Lakshmana, take Urmila’s hand.
Bharata, Mandavi’s.
Shatrughna, Shrutakirti’s.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (1.72.18-20) में है; दृश्य की पंक्ति इन श्लोकों को जोड़ती और छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (1.72.18–20); the scene's line joins and shortens these verses.

॥ 1.73.33b–34a ॥

CrEd 1.72.21

जनक JANAKA

वाल्मीकि सर्वे भवन्तः सौम्याश् च सर्वे सुचरितव्रताः ।
पत्नीभिः सन्तु काकुत्स्था मा भूत् कालस्य पर्ययः ॥

TRANSLATION *All of you are gentle,
all true to your vows;
Kakutsthas, be joined with your wives;
let the hour not pass by.*

लीला तुम सब सौम्य हो, सब अपने व्रत के सच्चे हो।
काकुत्स्थो, अपनी पत्नियों के साथ रहो। शुभ घड़ी
बीत न जाए।

SUBTITLE You are gentle, all of you,
true to your vows.
Be one with your wives.
Let not the hour pass.

॥ 1.73.34b–35a ॥

CrEd 1.72.22

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.73.35b–36,
39 ॥

CrEd 1.72.23, 26

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.73.37–38 ॥

CrEd 1.72.24–25

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 1.73.40 ॥

CrEd 1.72.27

SILENT MOMENT मौन क्षण

२
अयोध्याकाण्ड
Ayodhya Kanda
2 STORIES

AYODHYA KANDA · अयोध्याकाण्ड

Two boons; the prince accepts

दो वर; राजकुमार की स्वीकृति

—❖ Valmiki · Ayodhya Kanda ❖—

2.10.9–2.19.38 (CrEd 2.10.1–2.16.59)

राम के अभिषेक से पहले की रात दशरथ कैकेयी को कोपभवन में पाते हैं, और शपथ लेते हैं कि वे जो चाहेंगी, देंगे। कैकेयी अपने पुराने दो वर माँगती हैं: भरत का अभिषेक, और राम का चौदह वर्ष के लिए दण्डकवन जाना; राजा रात भर गिड़गिड़ाते हैं, पर व्यर्थ। सुबह राम यह बात कैकेयी से सुनते हैं, और केवल उनके कहने से तुरंत मान लेते हैं।

On the eve of Rama's consecration, Dasharatha finds Kaikeyi in the chamber of anger and swears to grant whatever she wants. She claims her two old boons: Bharata crowned, and Rama sent to the Dandaka forest for fourteen years; the king pleads all night in vain. In the morning Rama hears it from Kaikeyi and accepts at once, at her word alone.

१



PART 1 · भाग 1

The chamber of anger

Valmiki 2.10.9–2.13.20 (CrEd 2.10.1–2.11.15)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 2.10.22–27 ॥
CrEd 2.10.2–5

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.10.28 ॥
CrEd 2.10.6

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि न तेऽहम् अभिजानामि क्रोधम् आत्मनि संश्रितम् ।
देवि केनाभियुक्तासि केन वासि विमानिता ॥

TRANSLATION *I do not understand this anger
that has taken hold of you.
Lady, who has wronged you?
Or who has shown you disrespect?*

लीला देवी, तुम्हारे भीतर यह क्रोध क्यों भरा है, मैं नहीं
समझ पा रहा। किसने तुम्हें सताया है? किसने
तुम्हारा अपमान किया है?

SUBTITLE I do not know this anger
you hold within you.
My queen, who has wronged you?
Who has slighted you?

प्रचलित पाठ में “केनाभिषप्तासि” (किसने तुम्हें शाप दिया) है; यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार “केनाभियुक्तासि” (किसने तुम पर वार किया) है (2.10.6)।

The popular text reads kenābhiśaptāsi, “who has cursed you”; the Sanskrit shown follows the CrEd, kenābhiyuktāsi, “who has wronged you” (2.10.6).

॥ 2.10.34–35a ॥
CrEd 2.10.11–12a

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि अहं चैव मदीयाश् च सर्वे तव वशानुगाः ।
न ते कं चिद् अभिप्रायं व्याहन्तुम् अहम् उत्सहे ।
आत्मनो जीवितेनापि ब्रूहि यन् मनसेच्छसि ॥

TRANSLATION *I myself and all who are mine
are subject to your will;
I cannot bring myself to thwart
any wish of yours,
not even at the cost of my own life:
tell me what your heart desires.*

लीला मैं और मेरे सब लोग तुम्हारे वश में हैं, तुम्हारी कोई
इच्छा मैं टाल नहीं सकता। प्राण देकर भी पूरी
करूँगा। बोलो, मन में क्या चाहती हो?

SUBTITLE I and all who are mine obey you;
no wish of yours will I refuse.
Tell me your heart's desire,
though it cost my life.

॥ 2.10.36b ॥
CrEd 2.10.12b

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि यावद् आवर्तते चक्रं तावती मे वसुंधरा ॥

TRANSLATION *As far as my wheel rolls on,
so far the earth is mine.*

लीला जहाँ तक मेरा चक्र घूमता है, वहाँ तक की सारी
पृथ्वी मेरी है।

SUBTITLE As far as the wheel of my rule turns,
so far the earth is mine.

॥ 2.11.2 ॥
CrEd 2.10.14

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि नास्मि विप्रकृता देव केन चिन् न विमानिता ।
अभिप्रायस् तु मे कश् चित् तम् इच्छामि त्वया कृतम् ॥

TRANSLATION *My lord, no one has wronged me,
no one has shown me disrespect;
but I have a certain wish,
and I want you to fulfil it.*

लीला देव, न किसी ने मुझे सताया है, न मेरा अपमान
किया है। पर मेरी एक इच्छा है, और मैं चाहती हूँ
कि आप उसे पूरी करें।

SUBTITLE No one has wronged me, my lord,
no one has slighted me.
But there is something I want,
and I want you to do it.

॥ 2.11.3 ॥
CrEd 2.10.15

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि प्रतिज्ञां प्रतिजानीष्व यदि त्वं कर्तुम् इच्छसि ।
अथ तद् व्याहरिष्यामि यद् अभिप्रार्थितं मया ॥

TRANSLATION *Make me a promise first,
if you mean to fulfil it;
then I will declare
what it is I ask.*

लीला यदि आप उसे पूरा करना चाहते हैं, तो पहले
प्रतिज्ञा कीजिए। तब मैं बताऊँगी कि मैं क्या
माँगती हूँ।

SUBTITLE Swear to it first,
if you mean to do it.
Then I will tell you
what I ask.

॥ 2.11.4 ॥
CrEd 2.10.16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.11.5 ॥
CrEd 2.10.17

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि अवलिप्ते न जानासि त्वत्तः प्रियतरो मम ।
मनुजो मनुजव्याघ्राद् रामाद् अन्यो न विद्यते ॥

TRANSLATION *Proud one, do you not know?
No one is dearer to me than you,
no man at all, but Rama,
that tiger among men.*

लीला अभिमानिनी, क्या तुम नहीं जानतीं? नरश्रेष्ठ राम
को छोड़, तुमसे बढ़कर मुझे कोई प्रिय नहीं।

SUBTITLE Proud one, do you not know?
Save Rama, tiger among men,
no one is dearer to me
than you.

प्रचलित पाठ में इसके बाद वे राम की शपथ लेते हैं (2.11.6–8); CrEd में यह नहीं है।

The popular text then has him swear by Rama (2.11.6–8); the CrEd does not.

॥ 2.11.10 ॥
CrEd 2.10.19

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि बलम् आत्मनि पश्यन्ती न मां शङ्कितुम् अर्हसि ।
करिष्यामि तव प्रीतिं सुकृतेनापि ते शपे ॥

TRANSLATION *Seeing your power over me,
you should not doubt me.
I will do what pleases you;
I swear it by my good deeds.*

लीला तुम मुझ पर अपना बल जानती हो, मुझ पर संदेह
मत करो। जो तुम्हें प्रिय है, वही करूँगा। अपने सारे
पुण्यों की शपथ खाता हूँ।

SUBTITLE You know your power over me;
do not doubt me.
I will do what pleases you.
I swear it by my good deeds.

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि यथाक्रमेण शपसि वरं मम ददासि च ।
तच् छृण्वन्तु त्रयस्त्रिंशद् देवाः सेन्द्रपुरोगमाः ।
चन्द्रादित्यौ नभश् चैव ग्रहा रात्र्यहनी दिशः ॥

TRANSLATION *As you swear, oath upon oath,
and grant me a boon,
let the thirty-three gods hear it,
with Indra at their head;
the moon and the sun, the sky,
the planets, night and day, the quarters.*

लीला आप शपथ लेकर मुझे वर दे रहे हैं, इन्द्र सहित
तैंतीस देवता यह सुनें, सूर्य और चन्द्र, आकाश,
ग्रह, रात और दिन भी।

SUBTITLE You swear, and grant my boon.
Let the thirty-three gods hear it, Indra first;
sun and moon, sky and planets,
night and day.

प्रचलित पाठ में “साग्निपुरोगमाः” (अग्नि के नेतृत्व में) है; यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार “सेन्द्रपुरोगमाः” (इन्द्र के नेतृत्व में) है (2.10.21)।

The popular text reads sāgnipurogamāḥ, “led by Agni”; the Sanskrit shown follows the CrEd, sendrapurogamāḥ, “led by Indra” (2.10.21).

॥ 2.11.16 ॥
CrEd 2.10.24

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि सत्यसंधो महातेजा धर्मज्ञः सुसमाहितः ।
वरं मम ददात्य् एष तन् मे शृण्वन्तु देवताः ॥

TRANSLATION *True to his word, of great splendour,
knowing dharma, wholly intent,
he grants me a boon:
let the deities hear me.*

लीला सत्यप्रतिज्ञ, महातेजस्वी, धर्मज्ञ ये महाराज मुझे वर
दे रहे हैं। देवता इसे सुनें।

SUBTITLE This great king, true to his word,
who knows dharma,
grants me a boon.
Let the gods hear it.

॥ 2.11.23b ॥
CrEd 2.10.26

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि वरौ यौ मे त्वया देव तदा दत्तौ महीपते ।
तौ तावद् अहम् अद्यैव वक्ष्यामि शृणु मे वचः ॥

TRANSLATION *The two boons you gave me then,
my lord, lord of the earth,
those I will claim this very day:
hear what I say.*

लीला देव, महाराज, बहुत पहले आपने मुझे जो दो
वर दिए थे, उन्हें मैं आज ही माँगती हूँ। मेरी
बात सुनिए।

SUBTITLE The two boons you gave me
long ago, my lord:
I name them now.
Hear me.

प्रचलित पाठ में पहले वे राजा को देवासुर-संग्राम की याद दिलाती हैं (2.11.18–21); CrEd में यहाँ यह नहीं है।

The popular text first has her remind him of the war of the gods and the asuras (2.11.18–21);
the CrEd does not, here.

॥ 2.11.24 ॥
CrEd 2.10.27

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि अभिषेकसमारम्भो राघवस्योपकल्पितः ।
अनेनैवाभिषेकेण भरतो मेऽभिषिच्यताम् ॥

TRANSLATION *The consecration made ready
for Raghava:
with this very consecration
let my Bharata be consecrated.*

लीला राघव के अभिषेक की जो तैयारी हुई है, उसी
अभिषेक से मेरे भरत का अभिषेक किया जाए।

SUBTITLE The consecration made ready for Rama:
with that same consecration
let my Bharata be crowned.

॥ 2.11.26 ॥
CrEd 2.10.28

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि नव पञ्च च वर्षाणि दण्डकारण्यम् आश्रितः ।
चीराजिनजटाधारी रामो भवतु तापसः ॥

TRANSLATION *For nine years and five
let Rama dwell in the Dandaka forest;
wearing bark, deerskin and matted hair,
let him live as an ascetic.*

लीला नौ और पाँच वर्ष, राम दण्डकारण्य में रहें, चीर,
मृगचर्म और जटा धारण किए तपस्वी बनकर।

SUBTITLE For nine years and five,
let Rama live in the Dandaka forest,
an ascetic
in bark, deerskin and matted hair.

॥ 2.11.27-28 ॥
CrEd 2.10.29

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि भरतो भजताम् अद्य यौवराज्यम् अकण्टकम् ।
अद्य चैव हि पश्येयं प्रयान्तं राघवं वने ॥

TRANSLATION *Let Bharata take today
the rank of heir, with no thorn in his way;
and this very day let me see
Raghava go off to the forest.*

लीला आज ही भरत निष्कण्टक युवराज-पद पाएँ। और
आज ही मैं राघव को वन जाते देखूँ।

SUBTITLE Let Bharata be made prince today,
with no rival in his way.
And today let me see Rama
leave for the forest.

॥ 2.12.4-5a ॥
CrEd 2.10.30-31

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.12.5b ॥
CrEd 2.10.31

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि अहो धिग् इति सामर्षो वाचम् उक्त्वा नराधिपः ।
मोहम् आपेदिवान् भूयः ॥

TRANSLATION *“Ah! Shame!” the lord of men
cried out in fury,
and fainted once again.*

लीला हा! धिक्कार!

SUBTITLE Ah! Shame!

॥ 2.12.6-7a ॥
CrEd 2.10.32

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.12.7b-8a ॥
CrEd 2.10.33

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि नृशंसे दुष्टचारित्रे कुलस्यास्य विनाशिनि ।
किं कृतं तव रामेण पापे पापं मयापि वा ॥

TRANSLATION *Cruel woman, wicked in your ways,
destroyer of this house,
what has Rama done to you, evil one,
or what evil have I done?*

लीला क्रूर! दुराचारिणी! इस कुल का नाश करने वाली!
पापिन, राम ने तेरा क्या अहित किया है? या मैंने?

SUBTITLE Cruel, wicked woman,
destroyer of this house!
What wrong has Rama done you, evil one?
Or I?

॥ 2.12.8b-9a ॥
CrEd 2.10.34

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि सदा ते जननी तुल्यां वृत्तिं वहति राघवः ।
तस्यैव त्वम् अनर्थाय किंनिमित्तम् इहोद्यता ॥

TRANSLATION *Raghava always bears himself to you
just as to his own mother;
why then are you set
on his ruin, of all men?*

लीला राघव ने तुझसे सदा माता जैसा व्यवहार किया है।
फिर तू उसी के अनर्थ पर क्यों उद्यत है?

SUBTITLE Rama has always treated you
as his own mother.
Why then are you bent
on his ruin?

॥ 2.12.11b–12a ॥
CrEd 2.10.37

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि कौसल्यां वा सुमित्रां वा त्यजेयम् अपि वा श्रियम् ।
जीवितं वात्मनो रामं न त्व एव पितृवत्सलम् ॥

TRANSLATION *Kausalya or Sumitra I might give up,
or my royal fortune,
or my own life; but Rama,
who loves his father, never.*

लीला मैं कौसल्या को छोड़ सकता हूँ, या सुमित्रा को, या
राजलक्ष्मी को, या अपने प्राण भी, पर पिता से प्रेम
करने वाले राम को कभी नहीं।

SUBTITLE Kausalya, Sumitra, my royal fortune,
even my own life, I could give up;
but never Rama,
who loves his father.

॥ 2.12.13b–14a ॥
CrEd 2.10.39

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि तिष्ठेल् लोको विना सूर्यं सस्यं वा सलिलं विना ।
न तु रामं विना देहे तिष्ठेत् तु मम जीवितम् ॥

TRANSLATION *The world might stand without the sun,
or the crops without water,
but without Rama the life
would not stay in my body.*

लीला सूर्य के बिना संसार टिक जाए, जल के बिना खेती
टिक जाए, पर राम के बिना मेरे प्राण इस देह में
नहीं टिकेंगे।

SUBTITLE The world might live without the sun,
the crops without water.
But without Rama,
my life will not stay in my body.

॥ 2.12.14b–15a ॥
CrEd 2.10.40

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि तद् अलं त्यज्यताम् एष निश्चयः पापनिश्चये ।
अपि ते चरणौ मूर्ध्ना स्पृशाम्य् एष प्रसीद मे ॥

TRANSLATION *Enough: let this resolve be given up,
you who are resolved on evil.
See, I touch your feet with my head:
be gracious to me.*

लीला बस करो। पाप का निश्चय करने वाली, यह निश्चय
छोड़ दो। देखो, मैं अपने सिर से तुम्हारे चरण छूता
हूँ। मुझ पर दया करो।

SUBTITLE Enough. Give up this resolve,
you who are resolved on evil.
See, I touch your feet with my head.
Have mercy on me.

॥ 2.12.15b–16 ॥
CrEd 2.10.41

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.13.3 ॥
CrEd 2.11.3

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि त्वं कथ्यसे महाराज सत्यवादी दृढव्रतः ।
मम चेमं वरं कस्माद् विधारयितुम् इच्छसि ॥

TRANSLATION *You boast, great king,
that you speak the truth, firm in your vows;
then why would you hold back
this boon of mine?*

लीला महाराज, आप तो स्वयं को सत्यवादी और दृढ़व्रती
कहते नहीं थकते। फिर मेरा यह वर क्यों रोकना
चाहते हैं?

SUBTITLE Great king, you boast
that you speak the truth
and keep your vows.
Why then hold back my boon?

॥ 2.13.14–15 ॥
CrEd 2.11.7–8

SILENT MOMENT मौन क्षण

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि न प्रभातं त्वयेच्छामि मयायं रचितोऽञ्जलिः ।
अथ वा गम्यतां शीघ्रं नाहम् इच्छामि निर्घृणाम् ।
नृशंसां कैकेयीं द्रष्टुं यत्कृते व्यसनं महत् ॥

TRANSLATION *I want no dawn from you;
see, I have joined my palms to you.
Or else, pass quickly: I do not want
to see the pitiless,
cruel Kaikeyi, for whose sake
this great disaster has come.*

लीला हे रात्रि, मैं तेरा प्रभात नहीं चाहता। देख, मैं हाथ
जोड़ता हूँ। या शीघ्र बीत जा, इस निर्दय कैकेयी
को, जिसके कारण यह महाविपत्ति आई, मैं देखना
नहीं चाहता।

SUBTITLE Night, I want no dawn from you;
see, I join my palms.
Or pass quickly. I cannot bear to see
cruel Kaikeyi, cause of this ruin.

प्रचलित पाठ में वे रात्रि को तारों से सजी कहकर उससे दया भी माँगते हैं; CrEd में यही एक श्लोक है (2.11.10)।

The popular text also has him address the night as adorned with stars and beg her pity; the CrEd gives this one verse (2.11.10).

॥ 2.13.20 ॥
CrEd 2.11.12

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि साधुवृत्तस्य दीनस्य त्वद्गतस्य गतायुषः ।
प्रसादः क्रियतां देवि भद्रे राज्ञो विशेषतः ॥

TRANSLATION *Lady, gentle one, be gracious
to one who has lived rightly, who is wretched,
who turns to you, whose life is spent,
and to the king above all.*

लीला देवी, कल्याणी, मुझ पर कृपा करो, मैंने सदा
सदाचार निभाया, मैं दीन हूँ, तुम्हारे आश्रित हूँ, मेरी
आयु बीत चली, और फिर मैं राजा हूँ।

SUBTITLE Be gracious, my queen,
to one who has lived rightly:
wretched, clinging to you, his life spent,
and a king besides.

॥ 2.13.22-23 ॥
CrEd 2.11.14-15

SILENT MOMENT मौन क्षण



At your word alone

Valmiki 2.14.1–63, 2.18.1–2.19.38 (CrEd 2.12.1–23, 2.16.1–59)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 2.14.1–13 ॥
CrEd 2.12.1–10

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.14.14 ॥
CrEd 2.12.11

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि यस् ते मन्त्रकृतः पाणिर् अग्नौ पापे मया धृतः ।
तं त्यजामि स्वजं चैव तव पुत्रं सह त्वया ॥

TRANSLATION *The hand of yours I took, evil one,
before the fire with sacred verses,
I give it up; and with you,
your son, my own son too.*

लीला पापिन, अग्नि के सामने मंत्रों के साथ मैंने तेरा जो
हाथ थामा था, उसे मैं त्यागता हूँ। और तेरे साथ तेरे
पुत्र को भी, जो मेरा ही है।

SUBTITLE Wicked one, the hand I took
before the fire, with sacred verses,
I renounce;
and your son, my own, with you.

॥ 2.14.21 ॥
CrEd 2.12.13

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि किम् इदं भाषसे राजन् वाक्यं गररुजोपमम् ।
आनाययितुम् अक्लिष्टं पुत्रं रामम् इहार्हसि ॥

TRANSLATION *King, what are these words you speak,
like the pain of poison?
You should have your son Rama
brought here without delay.*

लीला राजन्, यह विष-सा वचन क्यों बोल रहे हैं? अपने
पुत्र राम को तुरंत यहाँ बुलवाइए।

SUBTITLE King, what are these words,
painful as poison?
Send for your son Rama,
here, now.

॥ 2.14.24 ॥
CrEd 2.12.16

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि धर्मबन्धेन बद्धोऽस्मि नष्टा च मम चेतना ।
ज्येष्ठं पुत्रं प्रियं रामं द्रष्टुम् इच्छामि धार्मिकम् ॥

TRANSLATION *I am bound by the bond of dharma,
and my mind is lost.
I wish to see Rama, my eldest son,
my dear and righteous son.*

लीला मैं धर्म के बंधन में बँधा हूँ, और मेरी चेतना नष्ट हो
गई है। मैं अपने ज्येष्ठ, प्रिय, धर्मात्मा पुत्र राम को
देखना चाहता हूँ।

SUBTITLE I am bound by the bond of dharma,
and my mind is gone.
I want to see Rama,
my eldest, dear and righteous son.

॥ 2.14.60-61 ॥
CrEd 2.12.19-20

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.14.62–63 ॥
CrEd 2.12.21

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि सुमन्त्र रामं द्रक्ष्यामि शीघ्रम् आनय सुन्दरम् ॥

TRANSLATION *Sumantra, I will see Rama;
bring the handsome one quickly.*

लीला सुमन्त्र, मैं राम को देखना चाहती हूँ। उस सुन्दर
राजकुमार को शीघ्र यहाँ ले आओ।

SUBTITLE Sumantra, I would see Rama.
Bring the handsome prince
here, quickly.

प्रचलित पाठ में उनकी आज्ञा लंबी है, एक बहाने के साथ: राजा खुशी में रात भर जागे और अब सो रहे हैं (2.14.62)। CrEd में यही एक पंक्ति है (2.12.21ab)।

In the popular text her order is longer, with an excuse: the king stayed awake for joy and is asleep (2.14.62). The CrEd gives the one line (2.12.21ab).

॥ 2.14.64–66 ॥
CrEd 2.12.22–23

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.18.1–2 ॥
CrEd 2.16.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.18.3 ॥
CrEd 2.16.3

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि रामेत् उत्त्वा च वचनं बाष्पपर्याकुलेक्षणः ।
शशाक नृपतिर् दीनो नेक्षितुं नाभिभाषितुम् ॥

TRANSLATION *Saying the one word, “Rama!”,
his eyes flooded with tears,
the wretched king could not
look at him, nor speak to him.*

लीला राम!

SUBTITLE Rama!

॥ 2.18.4 ॥
CrEd 2.16.4

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.18.11 ॥
CrEd 2.16.11

राम RAMA

वाल्मीकि कच्चिन् मया नापराद्धम् अज्ञानाद् येन मे पिता ।
कुपितस् तन् ममाचक्ष्व त्वं चैवैनं प्रसादय ॥

TRANSLATION *Have I done some wrong unknowing,
for which my father
is angry? Tell me that,
and win him over yourself.*

लीला कहीं अनजाने में मुझसे कोई अपराध तो नहीं हुआ,
जिससे पिताजी रुष्ट हैं? मुझे बताइए, और आप ही
उन्हें मना दीजिए।

SUBTITLE Have I wronged my father
without knowing, that he is angry?
Tell me,
and win him back to me yourself.

राम R A M A

वाल्मीकि अहं हि वचनाद् राज्ञः पतेयम् अपि पावके ।
भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं मज्जेयम् अपि चार्णवे ।
नियुक्तो गुरुणा पित्रा नृपेण च हितेन च ॥

TRANSLATION *At the king's word I would fall
even into fire,
I would eat sharp poison,
I would even sink in the sea,
when bidden by my guru, my father,
my king and my well-wisher.*

लीला राजा के कहने पर मैं अग्नि में कूद पड़ूँ, तीखा विष
खा लूँ, समुद्र में डूब जाऊँ, यदि मेरे गुरु, पिता,
राजा और हितैषी मुझे आज्ञा दें।

SUBTITLE At the king's word I would fall into fire,
swallow sharp poison,
sink into the sea,
if my father, my teacher and king,
commanded it.

प्रचलित पाठ इस बात से शुरू होता है: “हाय देवी, आपको मुझसे ऐसा नहीं कहना चाहिए” (2.18.28); CrEd में यह नहीं है।

The popular text opens with “Alas, lady, you should not say such things to me” (2.18.28); the CrEd does not.

॥ 2.18.30 ॥
CrEd 2.16.19

राम R A M A

वाल्मीकि तद् ब्रूहि वचनं देवि राज्ञो यद् अभिकाङ्क्षितम् ।
करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर् नाभिभाषते ॥

TRANSLATION *So tell me, lady, the word
the king desires.
I will do it, I promise:
Rama does not speak twice.*

लीला इसलिए देवी, बताइए, राजा क्या चाहते हैं। मैं
वही करूँगा, यह प्रतिज्ञा करता हूँ। राम दो बार
नहीं बोलता।

SUBTITLE So tell me, lady,
what the king wants.
I will do it; I promise.
Rama does not say a thing twice.

॥ 2.18.32 ॥
CrEd 2.16.21

कैकेयी K A I K E Y I

वाल्मीकि पुरा देवासुरे युद्धे पित्रा ते मम राघव ।
रक्षितेन वरौ दत्तौ सशल्येन महारणे ॥

TRANSLATION *Long ago, in the war of gods and asuras,
Raghava, your father gave me two boons,
when I had protected him,
pierced with arrows in the great battle.*

लीला राघव, बहुत पहले देवासुर-संग्राम में, जब तुम्हारे
पिता बाणों से घायल थे, मैंने उनकी रक्षा की थी।
तब उन्होंने मुझे दो वर दिए।

SUBTITLE Long ago, Raghava,
in the war of gods and asuras,
your father lay wounded with arrows.
I saved him, and he gave me two boons.

॥ 2.18.33 ॥
CrEd 2.16.22

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि तत्र मे याचितो राजा भरतस्याभिषेचनम् ।
गमनं दण्डकारण्ये तव चाद्यैव राघव ॥

TRANSLATION *By these I have asked the king
for Bharata's consecration,
and for your going to the Dandaka forest,
Raghava, this very day.*

लीला उन्हीं वरों से मैंने राजा से भरत का अभिषेक माँगा
है, और राघव, आज ही तुम्हारा दण्डकारण्य जाना ।

SUBTITLE With them I have asked the king
for Bharata's consecration,
and for your going to the Dandaka forest,
today, Raghava.

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि यदि सत्यप्रतिज्ञं त्वं पितरं कर्तुम् इच्छसि ।
आत्मानं च नरश्रेष्ठ मम वाक्यम् इदं शृणु ।
स निदेशे पितुस् तिष्ठ यथा तेन प्रतिश्रुतम् ।
त्वयारण्यं प्रवेष्टव्यं नव वर्षाणि पञ्च च ॥

TRANSLATION *If you wish to make your father
true to his promise,
and yourself, best of men,
hear these words of mine.
Abide by your father's command,
as he has promised:
you must go into the forest
for nine years and five.*

लीला नरश्रेष्ठ, यदि तुम अपने पिता को, और स्वयं को,
सत्यप्रतिज्ञ रखना चाहते हो, तो पिता की आज्ञा में
रहो, नौ और पाँच वर्ष के लिए वन में जाओ।

SUBTITLE If you would keep your father true to
his word,
and yourself,
stand by his command:
go to the forest for nine years and five.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.16.23–24) में है; दृश्य की पंक्ति “मेरी यह बात सुनो” और “जैसा उन्होंने वचन दिया है” छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.16.23–24); the scene's line leaves out “hear what I say” and “as he has promised”.

॥ 2.18.37-38 ॥
CrEd 2.16.25-26

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि अभिषेकम् इमं त्यक्त्वा जटाचीरधरो वस ।
भरतः कोसलपुरे प्रशास्तु वसुधाम् इमाम् ॥

TRANSLATION *Give up this consecration,
and live wearing matted hair and bark;
let Bharata, in the city of Kosala,
rule over this earth.*

लीला यह अभिषेक छोड़कर जटा और चीर धारण करके
वन में रहो। भरत कोसलपुर से इस पृथ्वी पर
शासन करें।

SUBTITLE Give up this consecration.
Live in matted hair and bark.
Let Bharata rule this earth
from the city of Kosala.

॥ 2.19.1 ॥
CrEd 2.16.27

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.19.2 ॥
CrEd 2.16.28

राम R A M A

वाल्मीकि एवम् अस्तु गमिष्यामि वनं वस्तुम् अहं त्व् अतः ।
जटाचीरधरो राज्ञः प्रतिज्ञाम् अनुपालयन् ॥

TRANSLATION *So be it: I will go
from here to live in the forest,
wearing matted hair and bark,
keeping the king's promise.*

लीला ऐसा ही हो। राजा की प्रतिज्ञा का पालन करते
हुए, जटा और चीर धारण करके, मैं यहाँ से वन में
रहने जाऊँगा।

SUBTITLE So be it.
I will go from here to live in the forest,
in matted hair and bark,
keeping the king's promise.

॥ 2.19.3 ॥
CrEd 2.16.29

राम R A M A

वाल्मीकि इदं तु ज्ञातुम् इच्छामि किमर्थं मां महीपतिः ।
नाभिनन्दति दुर्धर्षो यथापुरम् अरिंदमः ॥

TRANSLATION *But this I wish to know: why
the lord of the earth,
unassailable, tamer of foes,
does not greet me with joy as before.*

लीला पर मैं यह जानना चाहता हूँ कि महाराज पहले की
तरह मेरा अभिनन्दन क्यों नहीं करते।

SUBTITLE But this I want to know:
why does the king
not greet me
as he always did?

॥ 2.19.7 ॥
CrEd 2.16.33

राम R A M A

वाल्मीकि अहं हि सीतां राज्यं च प्राणान् इष्टान् धनानि च ।
हृष्टो भ्रात्रे स्वयं दद्यां भरतायाप्रचोदितः ॥

TRANSLATION *Sita, the kingdom, my life,
all I hold dear, my wealth:
I would gladly give them myself, unasked,
to my brother Bharata.*

लीला सीता, राज्य, प्राण, सब प्रिय वस्तुएँ और धन, ये
सब मैं स्वयं, बिना कहे, प्रसन्न होकर अपने भाई
भरत को दे दूँ।

SUBTITLE Sita, the kingdom, my life,
all I love, my wealth:
I would give them gladly to my
brother Bharata,
myself, unasked.

॥ 2.19.14, 16 ॥

CrEd 2.16.40, 42

condensed
from 2.19.14, 16

कैकेयी KAIKEYI

वाल्मीकि तव त्व् अहं क्षमं मन्ये नोत्सुकस्य विलम्बनम् ।
राम तस्माद् इतः शीघ्रं वनं त्वं गन्तुम् अर्हसि ।
यावत् त्वं न वनं यातः पुराद् अस्माद् अभित्वरन् ।
पिता तावन् न ते राम स्नास्यते भोक्ष्यतेऽपि वा ॥

TRANSLATION *I do not think delay is fitting
for you, eager as you are;
so, Rama, you should go
quickly from here to the forest.
Until you have gone to the forest,
hurrying from this city,
your father, Rama, will not bathe,
nor will he eat.*

लीला राम, विलम्ब उचित नहीं। शीघ्र यहाँ से वन को
जाओ। जब तक तुम इस नगर से चले नहीं जाते,
तुम्हारे पिता न स्नान करेंगे, न भोजन।

SUBTITLE Do not delay, Rama.
Go to the forest quickly.
Until you have left this city,
your father will neither bathe nor eat.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.16.40 और 42) में है; दृश्य की पंक्ति दोनों श्लोकों को जोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.16.40 and 42); the scene's line joins the two verses.

॥ 2.19.17-18 ॥

CrEd 2.16.43-44

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.19.20 ॥
CrEd 2.16.46

राम R A M A

वाल्मीकि नाहम् अर्थपरो देवि लोकम् आवस्तुम् उत्सहे ।
विद्धि माम् ऋषिभिस् तुल्यं केवलं धर्मम् आस्थितम् ॥

TRANSLATION *Lady, I do not care to live in the world
as one devoted to gain;
know me to be like the sages,
standing on dharma alone.*

लीला देवी, मैं धन का लोभी बनकर संसार में नहीं रहना
चाहता। मुझे ऋषियों के समान, केवल धर्म में
स्थित जानिए।

SUBTITLE Lady, I do not wish
to live in the world for wealth.
Know me as one with the sages,
holding to dharma alone.

॥ 2.19.23 ॥
CrEd 2.16.49

राम R A M A

वाल्मीकि अनुक्तोऽप्य् अत्रभवता भवत्या वचनाद् अहम् ।
वने वत्स्यामि विजने वर्षाणीह चतुर्दश ॥

TRANSLATION *Even unbidden by my honoured father,
at your word alone
I will live in the empty forest
here for fourteen years.*

लीला पिताजी के कहे बिना भी, केवल आपके कहने से, मैं
चौदह वर्ष निर्जन वन में रहूँगा।

SUBTITLE Even unbidden by my father,
at your word alone,
I will live fourteen years
in the lonely forest.

॥ 2.19.24 ॥
CrEd 2.16.50

राम R A M A

वाल्मीकि न नूनं मयि कैकेयि किं चिद् आशंससे गुणम् ।
यद् राजानम् अवोचस् त्वं ममेश्वरतरा सती ॥

TRANSLATION *Surely, Kaikeyi, you see
no virtue in me at all,
since you spoke to the king,
when you have more right over me than he.*

लीला कैकेयी, निश्चय ही आप मुझमें कोई गुण नहीं
देखतीं, तभी तो आपने राजा से कहा, जबकि मुझ
पर आपका अधिकार उनसे भी बढ़कर है।

SUBTITLE Surely, Kaikeyi, you see
no good in me at all,
since you went to the king:
you, who have more power over me
than he.

॥ 2.19.25 ॥
CrEd 2.16.51

राम R A M A

वाल्मीकि यावन् मातरम् आपृच्छे सीतां चानुनयाम्य् अहम् ।
ततोऽद्यैव गमिष्यामि दण्डकानां महद् वनम् ॥

TRANSLATION *Only let me take leave of my mother
and comfort Sita;
then this very day I will go
to the great forest of the Dandakas.*

लीला बस माता से विदा ले लूँ, और सीता को समझा
लूँ। फिर आज ही मैं दण्डकों के महावन को
चला जाऊँगा।

SUBTITLE Let me only take leave of my mother,
and comfort Sita.
Then, today, I will go
to the great Dandaka forest.

॥ 2.19.27 ॥
CrEd 2.16.53

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.19.28–29 ॥
CrEd 2.16.54–55

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.19.30 ॥
CrEd 2.16.56

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.19.37-38 ॥
CrEd 2.16.57-59

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.19.27 ॥
CrEd 2.16.53

SILENT MOMENT मौन क्षण

AYODHYA KANDA · अयोध्याकाण्ड

A brother arrives with the news

भाई आता है, समाचार लेकर

—❖ Valmiki · Ayodhya Kanda ❖—

2.94.1–2.113.1 (CrEd 2.88.1–2.105.1)

चित्रकूट पर एक सेना की धूल उठती है, और अयोध्या की ध्वजा देखकर लक्ष्मण भरत को शत्रु मान बैठते हैं; राम उन्हें शांत करते हैं। भरत पैदल आते हैं, राम के चरणों में गिरते हैं और बताते हैं कि पिताजी नहीं रहे, और राम नदी पर राजा को जल देते हैं। राम पिता का वचन नहीं तोड़ते, इसलिए भरत उनके नाम पर राज करने के लिए भाई की पादुकाएँ ले जाते हैं।

At Chitrakuta an army's dust rises, and Lakshmana, seeing Ayodhya's banner, takes Bharata for an enemy; Rama calms him. Bharata comes on foot, falls at Rama's feet and tells him their father is dead, and Rama offers water to the king at the river. Rama will not break his father's word, so Bharata takes his brother's sandals to rule in his name.

१



PART 1 · भाग 1

The Kovidara banner

Valmiki 2.94.1–2.97.31 (CrEd 2.88.1–2.91.17)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 2.94.1–2 ॥
CrEd 2.88.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.94.3 ॥
CrEd 2.88.3

राम R A M A

वाल्मीकि न राज्याद् भ्रंशानं भद्रे न सुहृद्भिर् विनाभवः ।
मनो मे बाधते दृष्ट्वा रमणीयम् इमं गिरिम् ॥

TRANSLATION *Not the loss of the kingdom, good lady,
nor being parted from my friends
troubles my mind, as I look
upon this lovely mountain.*

लीला भद्रे, इस रमणीय पर्वत को देखकर न राज्य छिनने
का दुःख मेरे मन को सताता है, न सुहृदों से
बिछड़ने का।

SUBTITLE Gentle one, looking at this lovely hill,
neither the lost kingdom
nor the friends I left
trouble my mind.

॥ 2.94.15 ॥
CrEd 2.88.15

राम R A M A

वाल्मीकि यदीह शरदोऽनेकास् त्वया सार्धम् अनिन्दिते ।
लक्ष्मणेन च वत्स्यामि न मां शोकः प्रधक्ष्यति ॥

TRANSLATION *If I live here many autumns
with you, lady without blame,
and with Lakshmana,
grief will not burn me.*

लीला अनिन्दिते, यदि तुम्हारे और लक्ष्मण के साथ मैं यहाँ
अनेक शरद ऋतुएँ बिताऊँ, तो शोक मुझे कभी
नहीं जलाएगा।

SUBTITLE If I live here many autumns
with you, faultless one,
and with Lakshmana,
grief will never burn me.

॥ 2.94.17 ॥
CrEd 2.88.17

राम R A M A

वाल्मीकि अनेन वनवासेन मया प्राप्तं फलद्वयम् ।
पितुश् चानृणता धर्मे भरतस्य प्रियं तथा ॥

TRANSLATION *By this dwelling in the forest
I have gained two fruits:
freedom from debt to my father in dharma,
and what is dear to Bharata.*

लीला इस वनवास से मुझे दो फल मिले हैं, पिता
धर्म के ऋण से मुक्त हुए, और भरत को उसका
प्रिय मिला।

SUBTITLE This forest life has given me two fruits:
my father is free of his debt to dharma,
and Bharata has his joy.

॥ 2.96.3-5 ॥
CrEd 2.90.1-3

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि हन्त लक्ष्मण पश्येह सुमित्रा सुप्रजास् त्वया ।
भीमस्तनितगम्भीरस् तुमुलः श्रूयते स्वनः ।
राजा वा राजमात्रो वा मृगयाम् अटते वने ।
अन्यद् वा श्वापदं किं चित् सौमित्रे ज्ञातुम् अर्हसि ।
सर्वम् एतद् यथातत्त्वम् अचिराज् ज्ञातुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *Come, Lakshmana, look here,
you through whom Sumitra is blessed in her son:
a tumultuous sound is heard,
deep as fearful thunder.
Is it a king, or a king's man,
roaming the forest on a hunt,
or some other beast of prey?
Saumitri, you should find out.
All this, just as it is,
you should find out without delay.*

लीला लक्ष्मण, सुनो! मेघ-गर्जन-सा गम्भीर, भयंकर
कोलाहल। क्या कोई राजा या राजकुमार वन
में आखेट कर रहा है, या कोई वन्य पशु है?
पता लगाओ।

SUBTITLE Lakshmana, listen!
A roar, deep as thunder.
A king out hunting,
or some wild beast? Find out.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.90.5-6) में है; दृश्य की पंक्ति सुमित्रा की प्रशंसा और अंतिम आधा श्लोक छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.90.5-6); the scene's line leaves out the praise of Sumitra and the last half-verse.

॥ 2.96.14 ॥
CrEd 2.90.10

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि अग्निं संशमयत् आर्यः सीता च भजतां गुहाम् ।
सज्यं कुरुष्व चापं च शरांश् च कवचं तथा ॥

TRANSLATION *Let my noble brother put out the fire,
and let Sita go into the cave;
string your bow,
and make ready your arrows and your armour.*

लीला आर्य, अग्नि बुझा दीजिए! सीता गुफा में छिप
जाएँ। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाइए, बाण और कवच
धारण कीजिए!

SUBTITLE Put out the fire, noble one!
Let Sita shelter in the cave.
String your bow,
take up arrows and armour!

॥ 2.96.15 ॥
CrEd 2.90.11

राम RAMA

वाल्मीकि अङ्गावेक्षस्व सौमित्रे कस्यैतां मन्यसे चमूम् ॥

TRANSLATION *Look, Saumitri,
whose army do you take this to be?*

लीला सौमित्र, ध्यान से देखो। तुम्हारे विचार में यह
किसकी सेना है?

SUBTITLE Look closely, Saumitri.
Whose army do you think it is?

॥ 2.96.17 ॥
CrEd 2.90.13

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि संपन्नं राज्यम् इच्छंस् तु व्यक्तं प्राप्याभिषेचनम् ।
आवां हन्तुं समभ्येति कैकेय्या भरतः सुतः ॥

TRANSLATION *Plainly, having gained the consecration,
and wanting the kingdom secure,
Kaikeyi's son Bharata
comes to kill the two of us.*

लीला यह कैकेयी का पुत्र भरत है! अभिषेक पाकर अब
वह निष्कण्टक राज्य चाहता है। हम दोनों को मारने
आ रहा है।

SUBTITLE It is Bharata, Kaikeyi's son!
Crowned, he wants the kingdom whole.
He is coming to kill us both.

॥ 2.96.18 ॥
CrEd 2.90.14

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि एष वै सुमहाञ् श्रीमान् विटपी संप्रकाशते ।
विराजत्य् उद्गतस्कन्धः कोविदार ध्वजो रथे ॥

TRANSLATION *There, shining out, is a tree
very great and splendid, full of branches,
its trunk rising high: it gleams,
the Kovidara banner on the chariot.*

लीला वह देखिए, उसके रथ की ध्वजा पर ऊँचे तने वाला
विशाल कोविदार वृक्ष चमक रहा है।

SUBTITLE There it is:
the great Kovidara tree,
blazing high on the banner
of his chariot.

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि यन्निमित्तं भवान् राज्याच् च्युतो राघव शाश्वतीम् ।
संप्राप्तोऽयम् अरिर् वीर भरतो वध्य एव मे ।
भरतस्य वधे दोषं नाहं पश्यामि राघव ॥

TRANSLATION *The one for whose sake you, Raghava,
were cast out of your lasting kingdom,
that enemy, Bharata, has come, hero:
he must die at my hands.
I see no wrong, Raghava,
in killing Bharata.*

लीला राघव, जिसके कारण आप अपने सनातन राज्य
से वंचित हुए, वही शत्रु आ पहुँचा है। भरत मेरे
हाथों अवश्य मरेगा। उसके वध में मुझे कोई दोष
नहीं दिखता।

SUBTITLE The enemy who cost you your kingdom
is here, Raghava.
Bharata must die at my hands.
I see no wrong in it.

CrEd आगे कहता है: “जिन्होंने पहले अपकार किया, उन्हें त्यागने में कोई अधर्म नहीं” (2.90.19cd); प्रचलित पाठ इसे 2.96.24 में दोहराता है।

The CrEd goes on: “there is no wrong in casting off those who did harm first” (2.90.19cd); the popular text repeats it in 2.96.24.

॥ 2.96.25 ॥
CrEd 2.90.20

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि अद्य पुत्रं हतं संख्ये कैकेयी राज्यकामुका ।
मया पश्येत् सुदुःखार्ता हस्तिभग्नम् इव द्रुमम् ॥

TRANSLATION *Today let Kaikeyi, greedy for the kingdom,
see her son slain by me in battle,
stricken with bitter grief,
like a tree broken by an elephant.*

लीला आज राज्य की लोभी कैकेयी देखे कि उसका पुत्र
युद्ध में मेरे हाथों वैसे ही गिरा पड़ा है, जैसे हाथी का
तोड़ा हुआ पेड़।

SUBTITLE Today let Kaikeyi, greedy for the kingdom,
see her son felled by me in battle,
like a tree an elephant has broken.

॥ 2.97.1 ॥
CrEd 2.91.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.97.2, 13 ॥

CrEd 2.91.2-3

2.97.3-12:
popular text
only · not in
the CrEd

राम R A M A

वाल्मीकि किम् अत्र धनुषा कार्यम् असिना वा सचर्मणा ।
महेष्वासे महाप्राज्ञे भरते स्वयम् आगते ।
प्राप्तकालं यद् एषोऽस्मान् भरतो द्रष्टुम् इच्छति ।
अस्मासु मनसाप्य् एष नाहितं किं चिद् आचरेत् ॥

TRANSLATION *What use is a bow here,
or a sword with a shield,
when Bharata himself has come,
a great archer, of great wisdom?
It is fitting that Bharata
wishes to see us;
he would do nothing to harm us,
not even in his mind.*

लीला जब स्वयं भरत आया है, तब धनुष या तलवार का
क्या काम? वह हमें देखना चाहता है। वह मन से
भी हमारा अहित नहीं करेगा।

SUBTITLE What need of bow or sword,
when Bharata himself has come?
He wants to see us.
He would not harm us even in thought.

इन श्लोकों के बीच प्रचलित पाठ में 2.97.3-12 भी हैं, जो CrEd में नहीं हैं और हमारी पंक्ति में छोड़ दिए गए हैं। CrEd में यह अंश 2.91.2-3 है।

Between these verses the popular text has 2.97.3-12, not in the CrEd and left out of our line.
The CrEd has the passage as 2.91.2-3.

॥ 2.97.14 ॥
CrEd 2.91.4

राम R A M A

वाल्मीकि विप्रियं कृतपूर्वं ते भरतेन कदा न किम् ।
ईदृशं वा भयं तेऽद्य भरतं योऽत्र शङ्कसे ॥

TRANSLATION *When has Bharata ever done you
any wrong, or what wrong,
that today you feel such fear,
and suspect Bharata here?*

लीला भरत ने कभी तुम्हारा कोई अप्रिय किया है, जो
आज तुम उससे ऐसे डरते हो और उस पर संदेह
करते हो?

SUBTITLE When did Bharata ever wrong you,
that you fear him so today,
and suspect him?

॥ 2.97.17-18 ॥
CrEd 2.91.7-8

राम R A M A

वाल्मीकि यदि राज्यस्य हेतोस् त्वम् इमां वाचं प्रभाषसे ।
वक्ष्यामि भरतं दृष्ट्वा राज्यम् अस्मै प्रदीयताम् ।
उच्यमानो हि भरतो मया लक्ष्मण तत्त्वतः ।
राज्यम् अस्मै प्रयच्छेति बाढम् इत्य् एव वक्ष्यति ॥

TRANSLATION *If you speak these words
for the sake of the kingdom,
when I see Bharata I will say,
“Let the kingdom be given to him.”
For when I tell Bharata truly,
Lakshmana, “Give the kingdom to him,”
he will say only,
“Surely.”*

लीला यदि तुम राज्य के लिए ऐसा कह रहे हो, तो भरत
को देखते ही मैं कहूँगा, ‘यह राज्य इसे दे दो।’ और
वह कहेगा, ‘अवश्य।’

SUBTITLE If you say this for the kingdom,
I will tell Bharata, 'Give it to him.'
And he will say, 'Gladly.'

॥ 2.97.19 ॥
CrEd 2.91.9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.97.21–23 ॥

CrEd 2.91.10–11

2.97.20:
popular text
only · not in
the CrEd

राम R A M A

वाल्मीकि एष मन्ये महाबाहुर् इहास्मान् द्रष्टुम् आगतः ।
वनवासम् अनुध्याय गृहाय प्रतिनेष्यति ।
इमां वाप्स्य एष वैदेहीम् अत्यन्तसुखसेविनीम् ॥

TRANSLATION *I think the mighty-armed one
has come here to see us.
Thinking of our dwelling in the forest,
he will lead us back home;
or at least this Vaidehi,
who has known only great comfort.*

लीला मुझे लगता है, महाबाहु भरत हमें देखने आया है,
हमें घर लौटा ले जाने। या कम से कम सुख में पली
इस वैदेही को।

SUBTITLE I think he has come to see us,
to take us home,
or at least Vaidehi,
who has known only comfort.

इससे पहले प्रचलित पाठ में लज्जित लक्ष्मण कहते हैं, “मुझे लगता है, पिताजी स्वयं हमें देखने आए हैं” (2.97.20); यह CrEd में नहीं है और हमारी पंक्ति में छोड़ दिया गया है।

Before this, the popular text gives the ashamed Lakshmana's words, “I think our father himself has come to see us” (2.97.20), not in the CrEd and left out of our line.

॥ 2.97.25 ॥
CrEd 2.91.13

राम R A M A

वाल्मीकि स एष सुमहाकायः कम्पते वाहिनीमुखे ।
नागः शत्रुंजयो नाम वृद्धस् तातस्य धीमतः ॥

TRANSLATION *There, swaying at the head of the army,
is that huge elephant,
the one called Shatrunjaya,
the old elephant of our wise father.*

लीला और वह देखो, सेना के आगे झूमता हुआ शत्रुंजय,
हमारे बुद्धिमान पिता का बूढ़ा हाथी।

SUBTITLE And there at the head of the army
sways Shatrunjaya,
our wise father's
old elephant.

॥ 2.97.26 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

राम R A M A

वाल्मीकि न तु पश्यामि तच् छत्रं पाण्डरं लोकसत्कृतम् ।
पितुर् दिव्यं महाबाहो संशयो भवतीह मे ॥

TRANSLATION *But I do not see that umbrella,
white, honoured by the world,
our father's divine one, mighty-armed;
a doubt rises in me here.*

लीला पर पिताजी का वह दिव्य श्वेत छत्र, जिसका सारा
संसार आदर करता है, मुझे नहीं दिखता।
महाबाहो, मेरे मन में संशय उठ रहा है।

SUBTITLE But I do not see our father's
white umbrella,
honoured by all the world.
A doubt rises in me.

॥ 2.97.27-31 ॥
CrEd 2.91.14-17

SILENT MOMENT मौन क्षण



Water for the father

Valmiki 2.98.1–2.103.36 (CrEd 2.92.1–2.95.36)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 2.98.8–9 ॥
CrEd 2.92.6–7

भरत BHARATA

वाल्मीकि यावन् न चरणौ भ्रातुः पार्थिव व्यञ्जनान्वितौ ।
शिरसा धारयिष्यामि न मे शान्तिर् भविष्यति ।
यावन् न राज्ये राज्यार्हः पितृपैतामहे स्थितः ।
अभिषेकजलक्लिन्नो न मे शान्तिर् भविष्यति ॥

TRANSLATION *Until I bear on my head
my brother's feet,
marked with the signs of a king,
I shall have no peace.
Until he who is worthy of the kingdom
is set in the kingdom of our fathers,
wet with the waters of consecration,
I shall have no peace.*

लीला जब तक मैं भाई के राजचिह्नों से अंकित चरण अपने
सिर पर धारण न करूँ, जब तक वे अभिषेक-जल से
भीगे, पितृ-पितामहों के राज्य पर न बैठें, तब तक
मुझे शान्ति नहीं मिलेगी।

SUBTITLE Until I bear my brother's feet on my head,
until he sits, anointed,
on our fathers' throne,
I will have no peace.

॥ 2.99.12-13 ॥
CrEd 2.93.11-12

भरत BHARATA

वाल्मीकि यम् एवाधातुम् इच्छन्ति तापसाः सततं वने ।
तस्यासौ दृश्यते धूमः संकुलः कृष्टवर्त्मनः ।
अत्राहं पुरुषव्याघ्रं गुरुसत्कारकारिणम् ।
आर्यं द्रक्ष्यामि संहृष्टो महर्षिम् इव राघवम् ॥

TRANSLATION *That smoke is seen, thick and dense,
of the fire the ascetics
always wish to keep in the forest,
the fire whose path is black.
Here I shall see, rejoicing,
that tiger among men,
who honours his elders, my noble brother,
Raghava, like a great sage.*

लीला वह धुआँ उसी अग्नि का है जिसे तपस्वी सदा जलाए
रखते हैं। यहीं मैं अपने आर्य भाई को देखूँगा, महर्षि
के समान।

SUBTITLE That smoke is the fire
that ascetics always keep.
Here I will see my noble brother,
like a great sage.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.93.11-12) में है; दृश्य की पंक्ति कुछ शब्द छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.93.11-12); the scene's line leaves out a few words.

॥ 2.99.25-30 ॥
CrEd 2.93.24-29

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.99.31 ॥
CrEd 2.93.30

भरत BHARATA

वाल्मीकि यः संसदि प्रकृतिभिर् भवेद् युक्त उपासितुम् ।
वन्धैर् मृगैर् उपासीनः सोऽयम् आस्ते ममाग्रजः ॥

TRANSLATION *He who should be attended in the assembly
by his subjects,
sits attended by the wild beasts
of the forest: my elder brother.*

लीला जिन्हें सभा में प्रजाजनों से घिरे बैठना चाहिए
था, वही मेरे बड़े भाई यहाँ वन के पशुओं से घिरे
बैठे हैं।

SUBTITLE He should sit in the assembly
with his people round him.
My elder brother sits here
with wild beasts round him.

॥ 2.99.36 ॥
CrEd 2.93.35

भरत BHARATA

वाल्मीकि मन्निमित्तम् इदं दुःखं प्राप्तो रामः सुखोचितः ।
धिग् जीवितं नृशंसस्य मम लोकविगर्हितम् ॥

TRANSLATION *For my sake Rama, who was used to comfort,
has met this sorrow.
Shame on my life, cruel as I am,
condemned by all the world.*

लीला सुख के योग्य राम मेरे ही कारण इस दुःख में पड़े
हैं। धिक्कार है मुझ क्रूर के इस लोकनिन्दित
जीवन को!

SUBTITLE Rama, born to comfort,
has come to this sorrow because of me.
Shame on my cruel life,
which the world despises!

॥ 2.99.37 ॥
CrEd 2.93.36

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.99.38–39 ॥
CrEd 2.93.37–38

भरत BHARATA

वाल्मीकि दुःखाभितप्तो भरतो राजपुत्रो महाबलः ।
उत्तवार्येति सकृद् दीनं पुनर् नोवाच किं चन ।
बाष्पापिहितकण्ठश् च प्रेक्ष्य रामं यशस्विनम् ।
आर्येत् एवाभिसंक्रुश्य व्याहर्तुं नाशकत् ततः ॥

TRANSLATION *Burning with grief, Bharata,
the prince of great strength,
said “Noble brother!” once, piteously,
and said nothing more.
His throat choked with tears,
seeing glorious Rama,
he cried out only, “Noble brother!”
and could say no more.*

लीला आर्य!

SUBTITLE Brother...

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.93.37–38) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.93.37–38).

॥ 2.99.40–
2.100.3 ॥
CrEd 2.93.39–2.94.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.100.5 ॥
CrEd 2.94.3

राम R A M A

वाल्मीकि चिरस्य बत पश्यामि दूराद् भरतम् आगतम् ।
दुष्प्रतीकम् अरण्येऽस्मिन् किं तात वनम् आगतः ॥

TRANSLATION *After so long, alas, I see
Bharata come from afar,
hardly to be known, in this wilderness:
why have you come to the forest, dear one?*

लीला बहुत दिनों बाद तुम्हें देख रहा हूँ, भरत, इतनी दूर
से आए, ऐसे दुर्बल कि पहचान में नहीं आते। तात,
तुम वन में क्यों आए?

SUBTITLE At last I see you, Bharata, come so far,
so worn I hardly knew you.
Why have you come to the forest, dear one?

॥ 2.100.4, 8 ॥

CrEd 2.94.2, 4

condensed
from 2.100.4, 8

राम R A M A

वाल्मीकि क्व नु तेऽभूत् पिता तात यद् अरण्यं त्वम् आगतः ।
न हि त्वं जीवतस् तस्य वनम् आगन्तुम् अर्हसि ।
कच्चिद् दशरथो राजा कुशली सत्यसंगरः ।
राजसूयाश्वमेधानाम् आहर्ता धर्मनिश्चयः ॥

TRANSLATION *Where was your father, dear one,
that you have come to the forest?
While he lives, you should not
be coming to the forest.
Is King Dasharatha well,
true to his word,
who performed the Rajasuya and the
horse sacrifices,
firm in dharma?*

लीला पिताजी कहाँ हैं? उनके जीते जी तुम्हें वन में नहीं
आना चाहिए था। सत्यप्रतिज्ञ महाराज दशरथ
कुशल से तो हैं?

SUBTITLE Where is father?
While he lives,
you should not be in the forest.
Is King Dasharatha well, true to his word?

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.94.2 और 4) में है; दृश्य की पंक्ति दोनों श्लोकों को जोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.94.2 and 4); the scene's line joins the two verses.

भरत BHARATA

वाल्मीकि किं मे धर्माद् विहीनस्य राजधर्मः करिष्यति ।
शाश्वतोऽयं सदा धर्मः स्थितोऽस्मासु नरर्षभ ।
ज्येष्ठपुत्रे स्थिते राजन् न कनीयान् भवेन् नृपः ॥

TRANSLATION *What will the dharma of kings do for me,
who am fallen from dharma?
This eternal dharma, held among men,
has always held among us:
while the eldest son stands, O king,
the younger may not be king.*

लीला मुझ धर्मभ्रष्ट के लिए राजधर्म किस काम का?
हमारे कुल में यह सनातन धर्म सदा से है, ज्येष्ठ पुत्र
के रहते छोटा राजा नहीं हो सकता।

SUBTITLE What is a king's dharma to me,
who have lost dharma?
While the eldest lives,
the younger cannot be king.

॥ 2.102.5, 7 ॥
CrEd 2.95.5–6

2.102.6:
popular text
only · not in
the CrEd

भरत BHARATA

वाल्मीकि केकयस्थे च मयि तु त्वयि चारण्यम् आश्रिते ।
दिवम् आर्य गतो राजा यायजूकः सतां मतः ।
उत्तिष्ठ पुरुषव्याघ्र क्रियताम् उदकं पितुः ॥

TRANSLATION *While I was in Kekaya,
and you had gone to the forest,
the king, noble brother, went to heaven,
a great sacrificer, honoured by the good.
Rise, tiger among men;
let the water rite be done for our father.*

लीला आर्य, जब मैं केकय देश में था और आप वन में,
तब महाराज स्वर्ग सिधार गए। उठिए, पुरुषसिंह,
पिताजी को जलांजलि दीजिए।

SUBTITLE While I was in Kekaya,
and you in the forest, brother,
the king went to heaven.
Rise, and give our father water.

प्रचलित पाठ 2.102.6 और 9 में जोड़ता है कि राम के जाते ही राजा उन्हें पुकारते हुए उनके शोक में चल बसे; दोनों CrEd में नहीं हैं, और हमारी पंक्ति में छोड़ दिए गए हैं।

The popular text adds, in 2.102.6 and 9, that the king died of grief for Rama as soon as he left, calling for him; neither is in the CrEd, and both are left out of our line.

॥ 2.103.1–6 ॥
CrEd 2.95.8–12

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि किं नु तस्य मया कार्यं दुर्जतिन महात्मना ।
यो मृतो मम शोकेन न मया चापि संस्कृतः ॥

TRANSLATION *What am I to do for him now,
I, ill-born, for that great-souled one,
who died of grief for me,
and was not given his last rites by me?*

लीला मुझ अभागे पुत्र से उन महात्मा का क्या भला
हुआ? वे मेरे शोक में मरे, और मैं उनका दाह-
संस्कार भी न कर सका।

SUBTITLE What good was I to him, a worthless son?
He died of grief for me,
and I could not even
perform his last rites.

राम R A M A

वाल्मीकि निष्प्रधानाम् अनेकाग्रं नरेन्द्रेण विनाकृताम् ।
निवृत्तवनवासोऽपि नायोध्यां गन्तुम् उत्सहे ।
समाप्तवनवासं माम् अयोध्यायां परंतप ।
को नु शासिष्यति पुनस् ताते लोकान्तरं गते ॥

TRANSLATION *Without its head, its mind divided,
bereft of its lord of men:
even when my forest years are done,
I cannot bring myself to go to Ayodhya.
When my dwelling in the forest is over,
scorcher of foes, who in Ayodhya
will guide me again,
now my father has gone to the other world?*

लीला वनवास पूरा होने पर भी मैं राजा से सूनी, बिखरी
अयोध्या में जाने का साहस न कर सकूँगा। पिताजी
के परलोक चले जाने पर अब वहाँ मुझे कौन
राह दिखाएगा?

SUBTITLE Even when the exile ends,
how can I go to Ayodhya,
leaderless without its king?
With father gone, who will guide me?

॥ 2.103.13 ॥
CrEd 2.95.17

राम R A M A

वाल्मीकि पुरा प्रेक्ष्य सुवृत्तं मां पिता यान् आह सान्त्वयन् ।
वाक्यानि तानि श्रोष्यामि कुतः कर्णसुखान् अहम् ॥

TRANSLATION *The words my father once spoke,
comforting me when he saw me act rightly,
words that were sweet to the ear:
where shall I hear them now?*

लीला जब मैं अच्छा आचरण करता, तो पिताजी स्नेह से
जो वचन कहते थे, कानों को सुख देने वाले वे वचन
अब मैं कहाँ सुनूँगा?

SUBTITLE When I did well,
my father spoke to me so kindly.
Where will I hear
those words again?

॥ 2.103.15 ॥
CrEd 2.95.19

राम R A M A

वाल्मीकि सीते मृतस् ते श्वशुरः पित्रा हीनोऽसि लक्ष्मण ।
भरतो दुःखम् आचष्टे स्वर्गतं पृथिवीपतिम् ॥

TRANSLATION *Sita, your father-in-law is dead;
Lakshmana, you are left without a father.
Bharata tells this sorrow:
the lord of the earth has gone to heaven.*

लीला सीते, तुम्हारे ससुर नहीं रहे। लक्ष्मण, तुम पितृहीन
हो गए। भरत यह दुःखद समाचार लाया है,
पृथ्वीपति स्वर्ग सिधार गए।

SUBTITLE Sita, your father-in-law is dead.
Lakshmana, you have no father.
Bharata brings the news:
the king has gone to heaven.

॥ 2.103.20–21 ॥
CrEd 2.95.21–22

राम R A M A

वाल्मीकि आनयेङ्गुदिपिण्याकं चीरम् आहर चोत्तरम् ।
जलक्रियार्थं तातस्य गमिष्यामि महात्मनः ।
सीता पुरस्ताद् व्रजतु त्वम् एनाम् अभितो व्रज ।
अहं पश्चाद् गमिष्यामि गतिर् ह्य एषा सुदारुणा ॥

TRANSLATION *Bring the paste of ingudi fruit,
and fetch an upper garment of bark;
I will go to make the water offering
for my great-souled father.
Let Sita walk in front,
and you walk beside her;
I will go behind:
for this is a most cruel journey.*

लीला इंगुदी की खली और छाल का उत्तरीय ले आओ,
पिताजी की जलक्रिया के लिए। आगे सीता चलें,
फिर तुम, और सबसे पीछे मैं, यह बड़ी दारुण
यात्रा है।

SUBTITLE Bring ingudi pulp and a bark cloth
for father's water rites.
Sita first, then you, and I last:
a terrible road.

॥ 2.103.26 ॥
CrEd 2.95.27

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.103.27 ॥
CrEd 2.95.28

राम R A M A

वाल्मीकि एतत् ते राजशार्दूल विमलं तोयम् अक्षयम् ।
पितृलोकगतस्याद्य मद्दत्तम् उपतिष्ठतु ॥

TRANSLATION *Tiger among kings, this water,
pure and unfailing, given by me,
may it reach you today,
gone to the world of the fathers.*

लीला राजसिंह, मेरा दिया यह निर्मल, अक्षय जल आज
पितृलोक में आप तक पहुँचे।

SUBTITLE Tiger among kings,
may this pure, unfailing water I give
reach you today
in the world of the fathers.

॥ 2.103.30 ॥
CrEd 2.95.31

राम R A M A

वाल्मीकि इदं भुङ्क्ष्व महाराज प्रीतो यद् अशना वयम् ।
यदन्नः पुरुषो भवति तदन्नास् तस्य देवताः ॥

TRANSLATION *Eat this, great king, gladly,
this food that we eat;
for the food a man lives on
is the food of his gods.*

लीला महाराज, प्रसन्न होकर इसे ग्रहण कीजिए। यही
हमारा आहार है। मनुष्य जो खाता है, वही उसके
देवता भी खाते हैं।

SUBTITLE Eat this, great king, gladly:
it is what we eat now.
What a man eats,
his gods eat too.

॥ 2.103.31–36 ॥
CrEd 2.95.32–36

SILENT MOMENT मौन क्षण



The sandals

Valmiki 2.105.1–2.113.1 (CrEd 2.98.1–2.105.1)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 2.105.1–3 ॥
CrEd 2.98.1–3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.105.4 ॥
CrEd 2.98.4

भरत BHARATA

वाल्मीकि सान्त्विता मामिका माता दत्तं राज्यम् इदं मम ।
तद् ददामि तवैवाहं भुङ्क्व राज्यम् अकण्टकम् ॥

TRANSLATION *My mother has been comforted;
this kingdom has been given to me.
I give it to you alone:
enjoy the kingdom, free of thorns.*

लीला मेरी माता संतुष्ट की गई, और यह राज्य मुझे दिया
गया। वही राज्य मैं आपको सौंपता हूँ। इसे
निष्कण्टक भोगिए।

SUBTITLE My mother is satisfied;
the kingdom was given to me.
Now I give it to you.
Rule it, free of every thorn.

॥ 2.105.16 ॥
CrEd 2.98.16

राम R A M A

वाल्मीकि सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः ।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम् ॥

TRANSLATION *All boards end in loss,
all that rises ends in falling,
all meetings end in parting,
and life ends in death.*

लीला संचय का अन्त क्षय है, उत्थान का अन्त पतन,
संयोग का अन्त वियोग, और जीवन का अन्त मृत्यु।

SUBTITLE All that is gathered is spent;
all that rises falls.
Every meeting ends in parting,
and every life in death.

राम R A M A

वाल्मीकि स स्वस्थो भव मा शोचो यात्वा चावस तां पुरीम् ।
तथा पित्रा नियुक्तोऽसि वशिना वदतां वर ।
यत्राहम् अपि तेनैव नियुक्तः पुण्यकर्मणा ।
तत्रैवाहं करिष्यामि पितुर् आर्यस्य शासनम् ॥

TRANSLATION *Be at ease, do not grieve;
go and dwell in that city.
So were you charged by our father,
self-controlled, best of speakers.
And where I was charged
by that same doer of holy deeds,
there I will carry out
the command of our noble father.*

लीला धीरज धरो, शोक मत करो। जाओ, उस नगरी में
रहो, जैसी पिताजी ने तुम्हें आज्ञा दी है। जहाँ उन्होंने
मुझे भेजा, वहीं मैं उनकी आज्ञा पूरी करूँगा।

SUBTITLE Do not grieve; go back to the city,
as father bade you.
Where he sent me,
there I will do his bidding.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.98.37-38) में है; ई-पाठ का “वदताम् वर” यहाँ “वदतां वर” पढ़ा गया है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.98.37-38); the e-text's vadatāmv vara is read vadatām vara.

॥ 2.106.18 ॥
CrEd 2.98.56

भरत BHARATA

वाल्मीकि क्व चारण्यं क्व च क्षात्रं क्व जटाः क्व च पालनम् ।
ईदृशं व्याहतं कर्म न भवान् कर्तुम् अर्हति ॥

TRANSLATION *What has the forest to do with a kshatriya's duty,
or matted locks with guarding the realm?
A deed so self-contradicting
you should not do.*

लीला कहाँ वन और कहाँ क्षत्रिय-धर्म! कहाँ जटाएँ और
कहाँ प्रजापालन! ऐसा परस्पर-विरोधी कर्म आपको
शोभा नहीं देता।

SUBTITLE The forest, and a warrior's duty?
Matted hair, and the care of a people?
They do not go together.
This is not for you.

॥ 2.111.4 ॥
CrEd 2.103.4

वसिष्ठ VASISHTHA

वाल्मीकि स तेऽहं पितुर् आचार्यस् तव चैव परंतप ।
मम त्वं वचनं कुर्वन् नातिवर्तेः सतां गतिम् ॥

TRANSLATION *I am your father's teacher,
and yours too, scorcher of foes;
if you do as I say,
you will not stray from the path of the good.*

लीला मैं तुम्हारे पिता का आचार्य था, और तुम्हारा भी
हूँ। मेरा कहा मानोगे, तो सज्जनों के मार्ग से
नहीं हटोगे।

SUBTITLE I was your father's teacher,
and I am yours.
Do as I say, and you will not stray
from the way of the good.

॥ 2.111.11 ॥
CrEd 2.103.11

राम R A M A

वाल्मीकि स हि राजा जनयिता पिता दशरथो मम ।
आज्ञातं यन् मया तस्य न तन् मिथ्या भविष्यति ॥

TRANSLATION *For King Dasharatha, my begetter,
is my father;
what he has commanded me
shall not be made false.*

लीला राजा दशरथ मेरे जन्मदाता पिता थे। उन्हें जो वचन
मैंने दिया, वह कभी मिथ्या नहीं होगा।

SUBTITLE King Dasharatha gave me life;
he was my father.
What I promised him
will never be made false.

॥ 2.111.13-14 ॥
CrEd 2.103.13-14

भरत BHARATA

वाल्मीकि इह मे स्थण्डिले शीघ्रं कुशान् आस्तर सारथे ।
आर्यं प्रत्युपवेक्ष्यामि यावन् मे न प्रसीदति ।
अनाहारो निरालोको धनहीनो यथा द्विजः ।
शेष्ये पुरस्ताच् छालाया यावन् न प्रतियास्यति ॥

TRANSLATION *Here on this bare ground, charioteer,
quickly spread kusha grass for me;
I will sit against my noble brother
until he shows me grace.
Without food, without light,
like a brahmin robbed of his wealth,
I will lie before the hut
until he turns back.*

लीला सारथि, शीघ्र यहाँ भूमि पर कुश बिछा दो। जब तक
आर्य प्रसन्न न हों, मैं निराहार, अँधेरे में, इस कुटी के
सामने लेटा रहूँगा।

SUBTITLE Charioteer, spread kusha here, quickly.
I will lie before his hut,
without food or light,
until my brother relents.

॥ 2.111.15 ॥
CrEd 2.103.15

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि किं मां भरत कुर्वाणं तात प्रत्युपवेक्ष्यसि ।
ब्राह्मणो ह्य् एकपार्श्वेन नरान् रोद्धुम् इहार्हति ।
न तु मूर्धावसिक्तानां विधिः प्रत्युपवेशने ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल हित्वैतद् दारुणं व्रतम् ॥

TRANSLATION *What have I done, Bharata, dear one,
that you would sit against me?
A brahmin may lie on one side
and hold men back by this;
but for those anointed as kings
there is no rule of sitting against another.
Rise, tiger among men,
and give up this harsh vow.*

लीला भरत, मैंने क्या किया है कि तुम मेरे विरुद्ध अनशन
करते हो? यह ब्राह्मण की रीति है, अभिषिक्त
क्षत्रिय की नहीं। उठो, यह कठोर व्रत छोड़ो।

SUBTITLE What have I done, Bharata,
that you fast against me?
That is a brahmin's way, not a king's.
Rise; give up this harsh vow.

॥ 2.111.19 ॥
CrEd 2.103.19

भरत BHARATA

वाल्मीकि आसीनस् त्व् एव भरतः पौरजानपदं जनम् ।
उवाच सर्वतः प्रेक्ष्य किम् आर्यं नानुशासथ ॥

TRANSLATION *But Bharata, still seated,
looked all around
and said to the people of town and country:
“Why do you not counsel my noble brother?”*

लीला आप सब आर्य को समझाते क्यों नहीं?

SUBTITLE Why do none of you
speak to my brother?

॥ 2.111.20–21 ॥
CrEd 2.103.20–21

नगरवासी CITIZENS

वाल्मीकि काकुत्स्थम् अभिजानीमः सम्यग् वदति राघवः ।
एषोऽपि हि महाभागः पितुर् वचसि तिष्ठति ।
अत एव न शक्ताः स्मो व्यावर्तयितुम् अञ्जसा ॥

TRANSLATION *We know Kakutstha:
Raghava speaks rightly.
And this most fortunate one, too,
stands by his father’s word;
for that very reason we cannot
easily turn him back.*

लीला हम काकुत्स्थ को जानते हैं। राघव ठीक कहते हैं। वे
पिता के वचन पर अडिग हैं, इसीलिए हम उन्हें
लौटा नहीं सकते।

SUBTITLE We know Kakutstha:
Raghava speaks rightly.
He stands by his father’s word,
and so we cannot turn him back.

॥ 2.111.22-23 ॥
CrEd 2.103.22-23

राम R A M A

वाल्मीकि एवं निबोध वचनं सुहृदां धर्मचक्षुषाम् ।
एतच् चैवोभयं श्रुत्वा सम्यक् संपश्य राघव ।
उत्तिष्ठ त्वं महाबाहो मां च स्पृश तथोदकम् ॥

TRANSLATION *Hear, then, the words
of friends whose eye is dharma;
and having heard both sides,
see clearly, Raghava.
Rise, mighty-armed one,
and touch me, and water too.*

लीला धर्म की दृष्टि वाले इन सुहृदों की बात सुनो। दोनों
पक्ष तौलकर ठीक से विचारो, राघव। उठो,
महाबाहो, मुझे स्पर्श करो, और जल भी।

SUBTITLE Hear your friends; they see by dharma.
Weigh both sides well, Raghava.
Rise, strong-armed one;
touch me, and touch water.

॥ 2.111.24 ॥
CrEd 2.103.24

SILENT MOMENT मौन क्षण

भरत BHARATA

वाल्मीकि न याचे पितरं राज्यं नानुशासामि मातरम् ।
आर्यं परमधर्मज्ञम् अभिजानामि राघवम् ।
यदि त्व् अवश्यं वस्तव्यं कर्तव्यं च पितुर् वचः ।
अहम् एव निवत्स्यामि चतुर्दश वने समाः ॥

TRANSLATION *I do not ask my father for the kingdom,
nor do I counsel my mother;
I know Raghava, my noble brother,
to know dharma best of all.
But if one must surely dwell in the forest
and our father's word be done,
I myself will dwell
fourteen years in the forest.*

लीला मैंने पिताजी से राज्य कभी नहीं माँगा। यदि पिता के
वचन के लिए किसी को वन में रहना ही है, तो
चौदह वर्ष मैं रहूँगा।

SUBTITLE I never asked father for the kingdom.
If someone must live in the forest
for his word,
I will live there fourteen years.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.103.25-26) में है; दृश्य की पंक्ति आधा श्लोक छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.103.25-26); the scene's line leaves out a half-verse.

॥ 2.111.28 ॥
CrEd 2.103.28

राम R A M A

वाल्मीकि विक्रीतम् आहितं क्रीतं यत् पित्रा जीवता मम ।
न तल् लोपयितुं शक्यं मया वा भरतेन वा ॥

TRANSLATION *What my father, while he lived,
sold, pledged or bought,
cannot be undone,
by me or by Bharata.*

लीला मेरे पिता ने जीते जी जो बेचा, गिरवी रखा या
खरीदा, उसे न मैं मिटा सकता हूँ, न भरत।

SUBTITLE What my father sold, pledged or bought
while he lived
cannot be undone,
not by me and not by Bharata.

ऋषि SAGES

वाल्मीकि कुले जात महाप्राज्ञ महावृत्त महायशः ।
ग्राह्यं रामस्य वाक्यं ते पितरं यद्य् अवेक्षसे ।
सदानृणम् इमं रामं वयम् इच्छामहे पितुः ।
अनृणत्वाच् च कैकेय्याः स्वर्गं दशरथो गतः ॥

TRANSLATION *Born of a noble house, of great wisdom,
of great conduct, of great fame,
you must accept Rama's words,
if you have regard for your father.
We wish this Rama
to be ever free of debt to his father;
and freed of his debt to Kaikeyi,
Dasharatha has gone to heaven.*

लीला भरत, यदि तुम्हें पिता का ध्यान है, तो राम की बात
मानो। कैकेयी का ऋण चुकाकर ही दशरथ स्वर्ग
पहुँचे हैं।

SUBTITLE Bharata, if you care for your father,
accept Rama's word.
Free of his debt to Kaikeyi,
Dasharatha has reached heaven.

॥ 2.112.11-12 ॥
CrEd 2.104.11-12

भरत BHARATA

वाल्मीकि रक्षितुं सुमहद् राज्यम् अहम् एकस् तु नोत्सहे ।
पौरजानपदांश् चापि रक्तान् रञ्जयितुं तथा ।
ज्ञातयश् च हि योधाश् च मित्राणि सुहृदश् च नः ।
त्वाम् एव प्रतिकाङ्क्षन्ते पर्जन्यम् इव कर्षकाः ॥

TRANSLATION *I alone cannot bring myself
to guard so great a kingdom,
nor to keep content
the loyal people of town and country.
Our kinsmen and our warriors,
our allies and our friends,
look to you alone,
as farmers look to the rain cloud.*

लीला इतने बड़े राज्य की रक्षा मैं अकेला नहीं कर सकता।
हमारे बन्धु, योद्धा, मित्र और सुहृद आपकी वैसी ही
प्रतीक्षा करते हैं, जैसे किसान वर्षा की।

SUBTITLE I cannot guard this great kingdom alone.
Our kin and warriors, friends and allies
wait for you
as farmers wait for rain.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (2.104.11-12) में है; दृश्य की पंक्ति आधा श्लोक छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (2.104.11-12); the scene's line leaves out a half-verse.

॥ 2.112.14-15 ॥
CrEd 2.104.14-15

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.112.18 ॥
CrEd 2.104.18

राम R A M A

वाल्मीकि लक्ष्मीश् चन्द्राद् अपेयाद् वा हिमवान् वा हिमं त्यजेत् ।
अतीयात् सागरो वेलं न प्रतिज्ञाम् अहं पितुः ॥

TRANSLATION *Beauty may leave the moon,
or the Himalaya give up its snow,
the ocean may pass beyond its shore:
I will not pass beyond my father's promise.*

लीला चन्द्रमा की कान्ति चली जाए, हिमालय हिम छोड़
दे, सागर अपनी मर्यादा लाँघ जाए, पर मैं पिता की
प्रतिज्ञा नहीं तोड़ूँगा।

SUBTITLE The moon may lose its light,
the Himalaya its snow,
the ocean may cross its shore:
I will not break my father's promise.

॥ 2.112.21 ॥
CrEd 2.104.21

भरत B H A R A T A

वाल्मीकि अधिरोहार्य पादाभ्यां पादुके हेमभूषिते ।
एते हि सर्वलोकस्य योगक्षेमं विधास्यतः ॥

TRANSLATION *Noble brother, step with your feet
onto these sandals adorned with gold;
for they will secure
the welfare of the whole world.*

लीला तो आर्य, स्वर्ण से सजी इन पादुकाओं पर अपने
चरण रखिए। यही सारे लोक का कल्याण और
रक्षा करेंगी।

SUBTITLE Then, noble brother,
step onto these gold-adorned sandals.
They will keep
the whole world safe.

॥ 2.112.22 ॥
CrEd 2.104.22

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 2.112.23-24 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

भरत BHARATA

वाल्मीकि चतुर्दश हि वर्षाणि जटाचीरधरो ह्य् अहम् ।
फलमूलाशनो वीर भवेयं रघुनन्दन ।
तवागमनम् आकाङ्क्षन् वसन् वै नगराद् बहिः ।
तव पादुकयोर् न्यस्य राज्यतन्त्रं परंतप ॥

TRANSLATION *For fourteen years, hero,
joy of the Raghus,
I shall wear matted hair and bark,
and live on fruit and roots,
longing for your return,
dwelling outside the city,
placing the rule of the kingdom
on your sandals, scorcher of foes.*

लीला चौदह वर्ष मैं जटा और चीर धारण करूँगा, फल-
मूल खाकर नगर के बाहर रहूँगा, आपके लौटने
की प्रतीक्षा में। राज्य का भार आपकी पादुकाओं
पर रहेगा।

SUBTITLE Fourteen years I will wear bark and
matted hair,
and live outside the city, waiting for you.
Your sandals will hold the kingdom.

॥ 2.112.29,
2.113.1 ॥

CrEd 2.104.23,
2.105.1

॥ 2.112.30-31 ॥
CrEd 2.104.24-25

SILENT MOMENT मौन क्षण

SILENT MOMENT मौन क्षण

३

अरण्यकाण्ड

Aranya Kanda

12 STORIES

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

Shurpanakha

शूर्पणखा

—❖ Valmiki · Aranya Kanda ❖—

3.17.3–3.18.24 (CrEd 3.16.3–3.17.24)

पंचवटी में रावण की बहन, राक्षसी शूर्पणखा राम को देखती है और उनसे अपना पति बनने को कहती है। राम मुस्कुराकर उसे लक्ष्मण के पास भेजते हैं, और लक्ष्मण उसे वापस भेज देते हैं; हँसी का पात्र बनकर वह सीता को खाने झपटती है। राम के कहने पर लक्ष्मण उसके नाक-कान काट देते हैं।

At Panchavati the rakshasi Shurpanakha, Ravana's sister, sees Rama and asks him to be her husband. Rama, smiling, sends her to Lakshmana, and Lakshmana sends her back; mocked, she rushes at Sita to devour her. At Rama's word Lakshmana cuts off her ears and nose.

१



PART 1 · भाग 1

Shurpanakha

Valmiki 3.17.3–3.18.24 (CrEd 3.16.3–3.17.24)

Uttara · later layer Valmiki 7.12.2; 7.24 (CrEd 7.12.2; 7.24.18–35)

Only the Uttara Kanda tells that Shurpanakha was a widow. Ravana gave her in marriage to Vidyujjihva, lord of the Kalakeya danavas, and later killed him in battle, not knowing friend from foe. When she wept before him, "you have made me a widow", he sent her to live in the Dandaka forest with her brother Khara. The Aranya Kanda says nothing of a husband.

॥ 3.17.3–4 ॥
CrEd 3.16.3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.17.5–9a ॥
CrEd 3.16.4–7

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.17.9b–11 ॥
CrEd 3.16.8–10

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.17.13 ॥

CrEd 3.16.11cd

3.17.13cd:
popular text
only · not in
the CrEd

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि आगतस् त्वम् इमं देशं कथं राक्षससेवितम् ।
किम् आगमनकृत्यं ते तत् त्वम् आख्यातुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *How have you come to this land,
where rakshasas dwell?
What business brings you here?
You should tell me.*

लीला यह राक्षसों का देश है। तुम यहाँ कैसे आ पहुँचे?
बताओ, किस काम से आए हो?

SUBTITLE How have you come
to this land where rakshasas live?
Tell me what brings you here.

दूसरी पंक्ति (3.17.13cd), “यहाँ आने का क्या काम है”, केवल प्रचलित पाठ में है। CrEd में पहली पंक्ति के साथ यह आता है: “तपस्वी के वेश में, जटा धारण किए, पत्नी के साथ, धनुष-बाण लिए” (3.16.11ab)।

The second half (3.17.13cd), “what business brings you here”, is the popular text's. In the CrEd the first half comes with “in an ascetic's guise, with matted hair, with your wife, bearing arrows and bow” (3.16.11ab).

popular text only · not in the CrEd 3.17.13cd

L2: the second half of her question, “Tell me what brings you here”, is the popular text's (3.17.13cd). In the CrEd she asks only how he came to this land where rakshasas live (3.16.11).

॥ 3.17.15 ॥
CrEd 3.16.13

राम R A M A

वाल्मीकि आसीद् दशरथो नाम राजा त्रिदशविक्रमः ।
तस्याहम् अग्रजः पुत्रो रामो नाम जनैः श्रुतः ॥

TRANSLATION *There was a king named Dasharatha,
with the valour of the gods;
I am his eldest son,
known among men as Rama.*

लीला दशरथ नाम के एक राजा थे, देवताओं जैसे
पराक्रमी। मैं उनका बड़ा बेटा हूँ। लोग मुझे राम
कहते हैं।

SUBTITLE There was a king, Dasharatha,
valiant as a god.
I am his eldest son.
People know me as Rama.

॥ 3.17.16 ॥
CrEd 3.16.14

राम R A M A

वाल्मीकि भ्रातायं लक्ष्मणो नाम यवीयान् माम् अनुव्रतः ।
इयं भार्या च वैदेही मम सीतेति विश्रुता ॥

TRANSLATION *This is my younger brother, Lakshmana,
who follows me faithfully;
and this is my wife, Vaidehi,
known by the name of Sita.*

लीला यह मेरा छोटा भाई लक्ष्मण है, जो मेरे साथ चलता
है। और यह मेरी पत्नी वैदेही है, जिसे सब सीता
कहते हैं।

SUBTITLE This is my younger brother,
Lakshmana, who follows me.
And this is my wife, Vaidehi,
known as Sita.

॥ 3.17.18-19 ॥

CrEd 3.16.16

3.17.18b:
popular text
only · not in
the CrEd

राम R A M A

वाल्मीकि त्वां तु वेदितुम् इच्छामि कथ्यतां कासि कस्य वा ।
इह वा किंनिमित्तं त्वम् आगता ब्रूहि तत्त्वतः ॥

TRANSLATION *But I wish to know of you:
tell me who you are, and whose;
or why you have come here:
tell me truly.*

लीला अब मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहता हूँ। तुम कौन
हो, किसकी हो? सच बताओ, यहाँ किसलिए
आई हो?

SUBTITLE Now I would know of you.
Who are you, and whose?
Tell me truly
why you have come here.

इससे पहले प्रचलित पाठ में राम कहते हैं, “तुम मुझे सुंदर अंगों वाली राक्षसी लगती हो” (3.17.18b); यह CrEd में नहीं है, और हमारी पंक्ति में
छोड़ दिया गया है।

Before this the popular text has Rama say “to me you seem a rakshasi with a lovely form”
(3.17.18b), not in the CrEd and left out of our line.

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि श्रूयतां राम वक्ष्यामि तत्त्वार्थं वचनं मम ।
अहं शूर्पणखा नाम राक्षसी कामरूपिणी ।
अरण्यं विचरामीदम् एका सर्वभयंकरा ॥

TRANSLATION *Listen, Rama: I will tell you
words that are the truth.
I am a rakshasi named Shurpanakha,
taking what form I please.
I roam this forest
alone, a terror to all.*

लीला सच सुनो, राम। मैं शूर्पणखा हूँ, राक्षसी। जो चाहूँ,
वही रूप धर लूँ। इस वन में अकेली घूमती हूँ, और
सब मुझसे डरते हैं।

SUBTITLE Hear the truth, Rama.
I am Shurpanakha, a rakshasi
who takes any form I please.
I roam this forest alone, and all fear me.

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि रावणो नाम मे भ्राता राक्षसो राक्षसेश्वरः ।
प्रवृद्धनिद्रश् च सदा कुम्भकर्णो महाबलः ।
विभीषणस् तु धर्मात्मा न तु राक्षसचेष्टितः ।
प्रख्यातवीर्यो च रणे भ्रातरौ खरदूषणौ ॥

TRANSLATION *My brother is the rakshasa named Ravana,
lord of the rakshasas;
and mighty Kumbhakarna,
ever deep in sleep;
and Vibhishana, righteous of soul,
who does not act as rakshasas do;
and my brothers Khara and Dushana,
famed for their valour in battle.*

लीला रावण मेरा भाई है, राक्षसों का राजा। सदा सोने
वाला कुम्भकर्ण भी। धर्मात्मा विभीषण भी, जो
राक्षसों जैसा नहीं। और रण में नामी खर और
दूषण भी।

SUBTITLE Ravana, lord of rakshasas, is my brother;
so is Kumbhakarna, ever asleep;
righteous Vibhishana, no rakshasa in
his ways;
and Khara and Dushana, famed in war.

प्रचलित पाठ में “वीरो विश्रवसः पुत्रः” (वीर, विश्रवा का पुत्र) है (3.17.22); यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार “राक्षसो राक्षसेश्वरः” है (3.16.19)।

The popular text reads *vīro viśravasaḥ putraḥ*, “the hero, son of Vishravas” (3.17.22); the Sanskrit shown follows the CrEd, *rākṣaso rākṣaseśvaraḥ* (3.16.19).

the CrEd and the popular text 3.17.22 (CrEd 3.16.19)

L8: in the popular text she calls Ravana “Vishravas's son” (*vīro viśravasaḥ putraḥ*). The CrEd has “a rakshasa, lord of the rakshasas” (*rākṣaso rākṣaseśvaraḥ*). Raam Leela follows the CrEd.

॥ 3.17.24 ॥

CrEd 3.16.21ab-cd

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि तान् अहं समतिक्रान्ता राम त्वापूर्वदर्शनात् ।
समुपेतास्मि भावेन भर्तारं पुरुषोत्तमम् ॥

TRANSLATION *I surpass them all, Rama;
from the first sight of you
I have come to you with love,
to have you, best of men, for my husband.*

लीला मैं उन सबसे बढ़कर हूँ, राम। तुम्हें पहली बार देखते
ही, मैं तुम्हारे पास चली आई। तुम्हें अपना पति
बनाने, पुरुषोत्तम।

SUBTITLE I surpass them all, Rama.
From the first sight of you,
best of men, I have come to you,
wanting you for my husband.

॥ 3.17.26 ॥

CrEd 3.16.22

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि विकृता च विरूपा च न सेयं सदृशी तव ।
अहम् एवानुरूपा ते भार्या रूपेण पश्य माम् ॥

TRANSLATION *Misshapen she is, and ugly;
she is no match for you.
I alone am the wife to suit you:
look at me, at my form.*

लीला यह विकृत है, कुरूप है, तुम्हारे जोड़ की नहीं।
तुम्हारे जोड़ की पत्नी तो बस मैं हूँ। मुझे देखो!

SUBTITLE She is misshapen, ugly,
no match for you.
I alone am the wife to match you.
Look at me!

॥ 3.17.27 ॥
CrEd 3.16.23

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि इमां विरूपाम् असतीं करालां निर्णतोदरीम् ।
अनेन सह ते भ्रात्रा भक्षयिष्यामि मानुषीम् ॥

TRANSLATION *This ugly, wanton, hideous woman,
with her hollow belly,
this human, I will devour,
and this brother of yours with her.*

लीला इस कुरूप, दुष्ट, विकराल, धँसे पेट वाली मानवी को
मैं खा जाऊँगी। और इसके साथ तुम्हारे इस भाई
को भी।

SUBTITLE This misshapen, wicked, hideous,
hollow-bellied human woman
I will eat,
and your brother with her.

॥ 3.18.1 ॥
CrEd 3.17.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.18.2 ॥
CrEd 3.17.2

राम RAMA

वाल्मीकि कृतदारोऽस्मि भवति भार्येयं दयिता मम ।
त्वद्विधानां तु नारीणां सुदुःखा ससपत्नता ॥

TRANSLATION *Lady, I am married;
this is my wife, my beloved.
For women such as you,
a rival wife is a bitter sorrow.*

लीला भद्रे, मैं ब्याहा हुआ हूँ। यह मेरी प्यारी पत्नी है। तुम
जैसी स्त्री को सौत के साथ रहना बहुत खलेगा।

SUBTITLE Lady, I am married.
This is my beloved wife.
For women like you,
a rival wife is bitter to bear.

॥ 3.18.3 ॥
CrEd 3.17.3

राम R A M A

वाल्मीकि अनुजस् त्व् एष मे भ्राता शीलवान् प्रियदर्शनः ।
श्रीमान् अकृतदारश् च लक्ष्मणो नाम वीर्यवान् ॥

TRANSLATION *But this is my younger brother,
of good character, fair to see,
splendid, unmarried,
Lakshmana by name, and strong.*

लीला पर यह मेरा छोटा भाई है, लक्ष्मण। सुशील है, सुंदर
है, भाग्यवान है, बलवान है, और अभी कुँवारा है।

SUBTITLE But here is my younger brother,
Lakshmana: good-natured, handsome,
fortunate, strong,
and not yet married.

॥ 3.18.6 ॥
CrEd 3.17.6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.18.7 ॥
CrEd 3.17.7

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि अस्य रूपस्य ते युक्ता भार्याहं वरवर्णिनी ।
मया सह सुखं सर्वान् दण्डकान् विचरिष्यसि ॥

TRANSLATION *I am the wife to fit your beauty,
I, of the finest colour;
with me you will roam in joy
through all the Dandaka forests.*

लीला तुम्हारे इस रूप के लायक पत्नी मैं हूँ, सुंदर रंग
वाली। मेरे साथ सारे दण्डक वन में सुख से घूमना।

SUBTITLE I am the wife
to suit your looks, and fair of colour.
With me you will roam
all the Dandaka, happy.

॥ 3.18.8 ॥
CrEd 3.17.8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.18.9 ॥
CrEd 3.17.9

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि कथं दासस्य मे दासी भार्या भवितुम् इच्छसि ।
सोऽहम् आर्येण परवान् भ्रात्रा कमलवर्णिनी ॥

TRANSLATION *How can you wish to be
the wife of a servant, his servant?
I am in the power of my noble brother,
O lady of the lotus hue.*

लीला मैं ठहरा दास। दास की पत्नी बनकर दासी क्यों
बनना चाहती हो? मैं तो अपने आर्य भाई के अधीन
हूँ, कमलवर्णी।

SUBTITLE I am a servant.
Why be a servant's wife,
a servant yourself?
I belong to my noble brother, lotus-
hued lady.

॥ 3.18.11 ॥
CrEd 3.17.11

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि एतां विरूपाम् असतीं करालां निर्णतोदरीम् ।
भार्या वृद्धां परित्यज्य त्वाम् एवैष भजिष्यति ॥

TRANSLATION *This ugly, wanton, hideous wife,
with her hollow belly, now grown old,
he will cast off,
and take you alone.*

लीला वे अपनी इस कुरूप, दुष्ट, विकराल, धँसे पेट वाली
बूढ़ी पत्नी को छोड़ देंगे, और बस तुम्हें ही चाहेंगे।

SUBTITLE He will give up his wife,
'misshapen, wicked, hideous,
hollow-bellied, old',
and cherish only you.

॥ 3.18.13-14 ॥
CrEd 3.17.13-14

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.18.16 ॥
CrEd 3.17.16

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि अद्येमां भक्षयिष्यामि पश्यतस् तव मानुषीम् ।
त्वया सह चरिष्यामि निःसपत्ना यथासुखम् ॥

TRANSLATION *Today, while you watch, I will devour
this human woman;
and with you, with no rival,
I will roam as I please.*

लीला आज, तुम्हारी आँखों के सामने, इस मानवी को खा
जाऊँगी! फिर कोई सौत नहीं। तुम्हारे साथ जैसे
चाहूँ, घूमूँगी!

SUBTITLE Today, before your eyes,
I will eat this woman,
and roam with you as I please,
with no rival!

॥ 3.18.17 ॥
CrEd 3.17.17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.18.18 ॥
CrEd 3.17.18

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.18.19 ॥
CrEd 3.17.19

राम RAMA

वाल्मीकि क्रूरैर् अनार्यैः सौमित्रे परिहासः कथं चन ।
न कार्यः पश्य वैदेहीं कथं चित् सौम्य जीवतीम् ॥

TRANSLATION *Saumitri, with the cruel and the base
one must never jest at all.
Look at Vaidehi, gentle one:
she is barely alive.*

लीला सौमित्र, क्रूर से हँसी कभी नहीं, नीच से ठिठोली
कभी नहीं। वैदेही को देखो, सौम्य। किसी तरह
जीवित है।

SUBTITLE Saumitri, never jest
with the cruel and the base.
Look at Vaidehi, gentle brother:
she is barely alive.

॥ 3.18.20 ॥
CrEd 3.17.20

राम R A M A

वाल्मीकि इमां विरूपाम् असतीम् अतिमत्तां महोदरीम् ।
राक्षसीं पुरुषव्याघ्र विरूपयितुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *This ugly, wanton rakshasi,
wild with frenzy, great of belly,
you should disfigure,
tiger among men.*

लीला नरशार्दूल, इस कुरूप, दुष्ट, उन्मत्त, बड़े पेट वाली
राक्षसी को विरूप कर दो।

SUBTITLE Tiger among men,
disfigure this rakshasi,
misshapen, wicked,
frenzied, big-bellied.

॥ 3.18.21 ॥
CrEd 3.17.21

वाल्मीकि VALMIKI *verse caption*

वाल्मीकि इत् उत्तो लक्ष्मणस् तस्याः क्रुद्धो रामस्य पश्यतः ।
उद्धृत्य खड्गं चिच्छेद कर्णनासं महाबलः ॥

TRANSLATION *Told this, Lakshmana, in anger,
while Rama looked on,
mighty, drew his sword
and cut off her ears and nose.*

SUBTITLE He drew his sword
and cut off her ears and nose.

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (3.17.21) में है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (3.17.21).

॥ 3.18.22 ॥
CrEd 3.17.22

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.18.22-24 ॥
CrEd 3.17.22-24

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.18.24 ॥
CrEd 3.17.24

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

The fourteen at the hut

कुटी पर चौदह राक्षस

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.18.25–3.23.25 (CrEd 3.17.25–3.22.25)

विरूप हुई शूर्पणखा अपने भाई खर के सामने गिरती है, और खर राम, लक्ष्मण और सीता को मारने चौदह राक्षस भेजता है। राम उन्हें लौट जाने की चेतावनी देते हैं, और जब वे वार करते हैं, तो चौदह बाण उन सबको मार देते हैं। शूर्पणखा खर को धिक्कारती है, और वह अपशकुनों पर हँसता हुआ चौदह हजार राक्षसों के साथ कूच करता है।

Disfigured, Shurpanakha falls before her brother Khara, and he sends fourteen rakshasas to kill Rama, Lakshmana and Sita. Rama warns them off, and when they attack, fourteen arrows kill them all. Shurpanakha shames Khara, and he marches with fourteen thousand rakshasas, laughing at the omens.

१



PART 1 · भाग 1

Khara's camp

Valmiki 3.18.25–3.19.26 (CrEd 3.17.25–3.18.21)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.18.25 ॥
CrEd 3.17.25

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.19.1 ॥
CrEd 3.18.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.19.2 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

खर KHARA

वाल्मीकि उत्तिष्ठ तावद् आख्याहि प्रमोहं जहि संभ्रमम् ।
व्यक्तम् आख्याहि केन त्वम् एवरूपा विरूपिता ॥

TRANSLATION *Get up, and tell me first;
throw off this daze and this alarm.
Tell me plainly: who has disfigured you,
and left you in this form?*

लीला उठो, और साफ़-साफ़ बताओ। यह घबराहट
छोड़ो। किसने तुम्हारा यह रूप बिगाड़ा?

SUBTITLE Rise, and tell me plainly.
Put away this fear.
Who has disfigured you
like this?

popular text only · not in the CrEd 3.19.2

L1: Khara's first words, "Rise, and tell me plainly; put away this fear", are the popular text's (3.19.2). In the CrEd he asks at once who, being so mighty, has brought her to this and disfigured her (3.18.2-3).

खर KHARA

वाल्मीकि देवगन्धर्वभूतानाम् ऋषीणां च महात्मनाम् ।
कोऽयम् एवं महावीर्यस् त्वां विरूपां चकार ह ।
न हि पश्याम्य् अहं लोके यः कुर्यान् मम विप्रियम् ।
अन्तरेण सहस्राक्षं महेन्द्रं पाकशासनम् ॥

TRANSLATION *Among gods, gandharvas and spirits,
and the great-souled sages,
who is this, so mighty,
who has disfigured you?
For I see no one in the world
who could do me harm,
save only the thousand-eyed,
great Indra, chastiser of Paka.*

लीला देवता हो, गन्धर्व हो, या कोई महर्षि, कौन इतना
बलवान है? संसार में मेरा बुरा करने वाला मुझे
कोई नहीं दिखता। इन्द्र को छोड़कर!

SUBTITLE God or gandharva,
spirit or great sage:
who is so mighty?
No one dares cross me, except Indra.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.18.3-4) में है। प्रचलित पाठ में “अमरेषु सहस्राक्षम्” (देवताओं में हज़ार आँखों वाला भी नहीं) है (3.19.7)।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.18.3-4). The popular text reads amareṣu sahasrākṣam, “not even the thousand-eyed one among the gods” (3.19.7).

the CrEd and the popular text 3.19.7 (CrEd 3.18.4)

L3: in the popular text Khara knows no one who would cross him, “not even Indra among the gods” (amareṣu sahasrākṣam). The CrEd has “except the thousand-eyed Indra” (antareṇa sahasrākṣam). Raam Leela follows the CrEd.

॥ 3.19.13 ॥
CrEd 3.18.10

॥ 3.19.14–15 ॥
CrEd 3.18.11

3.19.15a:
popular text
only · not in
the CrEd

condensed
from 3.19.14–
15

SILENT MOMENT मौन क्षण

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि तरुणौ रूपसंपन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ।
... पुत्रौ दशरथस्यास्तां भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥

TRANSLATION *Young, and rich in beauty,
tender, yet of great strength,
with long eyes like white lotuses,
clothed in bark and black deerskin,
...
they were two sons of Dasharatha,
the brothers Rama and Lakshmana.*

लीला दो युवक हैं, सुंदर, सुकुमार, पर बड़े बलवान ।
कमल-सी बड़ी आँखें, वल्कल और काला मृगचर्म
पहने। दशरथ के बेटे, राम और लक्ष्मण ।

SUBTITLE Two young men, handsome, gentle,
yet very strong, lotus-eyed,
in bark and black deerskin:
Rama and Lakshmana, Dasharatha's sons.

पंक्ति 3.19.15a छोड़ देती है (वे फल-मूल खाते हैं, तपस्वी हैं, ब्रह्मचारी हैं), जो केवल प्रचलित पाठ में है। CrEd में पहला श्लोक 3.18.11 है।

The line leaves out 3.19.15a (they live on fruit and roots, ascetics, celibate), which is the popular text's only. The CrEd has the first verse as 3.18.11.

popular text only · not in the CrEd 3.19.15a

Her words that they live on fruit and roots, are ascetics and keep celibacy (3.19.15a) are the popular text's; the CrEd has the rest of her description (3.18.11).

॥ 3.19.17-18 ॥
CrEd 3.18.13-14

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि तरुणी रूपसंपन्ना सर्वाभरणभूषिता ।
दृष्टा तत्र मया नारी तयोर् मध्ये सुमध्यमा ।
ताभ्याम् उभाभ्यां संभूय प्रमदाम् अधिकृत्य ताम् ।
इमाम् अवस्थां नीताहम् ॥

TRANSLATION *Young, and rich in beauty,
adorned with every ornament,
a woman was seen there by me,
slender-waisted, between the two.
Joining together, the two of them,
on account of that woman,
brought me to this state.*

लीला उन दोनों के बीच मैंने एक युवती देखी, पतली
कमर, रूपवती, गहनों से लदी। उसी के लिए, दोनों
ने मिलकर मेरा यह हाल किया।

SUBTITLE Between them I saw a young woman,
slender, lovely,
decked with every ornament.
For her, the two of them did this to me.

॥ 3.19.21 ॥
CrEd 3.18.17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.19.23ab,
24 ॥

CrEd 3.18.19ab, 20

खर KHARA

वाल्मीकि तौ हत्वा तां च दुर्वृत्ताम् उपावर्तितुम् अर्हथ ।
मनोरथोऽयम् इष्टोऽस्या भगिन्या मम राक्षसाः ।
शीघ्रं संपद्यतां गत्वा तौ प्रमथ्य स्वतेजसा ॥

TRANSLATION *Kill those two, and that woman of evil ways,
and only then come back.
This is the wish dear to the heart
of my sister, rakshasas:
go, crush those two with your might,
and let it quickly be fulfilled.*

लीला उन दोनों को, और उस दुष्टा को, मारकर ही
लौटना। जाओ, अपने बल से उन्हें कुचल डालो।
मेरी बहन की इच्छा पूरी करो।

SUBTITLE Kill those two,
and that wicked woman,
and only then come back.
Crush them; give my sister her wish.

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (3.18.19ab और 20) में है; बीच का आधा श्लोक, कि उसकी बहन उनका रक्त पिएगी, हमारी पंक्ति में छोड़ दिया गया है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (3.18.19ab and 20); the half-verse between them, that his sister will drink their blood, is left out of our line.

॥ 3.19.26 ॥
CrEd 3.18.21

SILENT MOMENT मौन क्षण



Fourteen arrows

Valmiki 3.20.1–22 (CrEd 3.19.1–23)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.20.2 ॥
CrEd 3.19.2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.20.1 ॥
CrEd 3.19.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.20.4 ॥
CrEd 3.19.4

राम RAMA

वाल्मीकि मुहूर्तं भव सौमित्रे सीतायाः प्रत्यनन्तरः ।
इमान् अस्या वधिष्यामि पदवीम् आगतान् इह ॥

TRANSLATION *Saumitri, for a moment
stay close by Sita;
I will kill these who have come here,
following her trail.*

लीला सौमित्र, थोड़ी देर सीता के पास रहो। जो इसके
पीछे-पीछे यहाँ आए हैं, उन्हें मैं मारूँगा।

SUBTITLE Saumitri, stay by Sita
a little while.
These who have followed her here,
I will kill.

॥ 3.20.5–6 ॥
CrEd 3.19.5–6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.20.8 ॥
CrEd 3.19.8

राम R A M A

वाल्मीकि फलमूलाशनौ दान्तौ तापसौ धर्मचारिणौ ।
वसन्तौ दण्डकारण्ये किमर्थम् उपहिंसथ ॥

TRANSLATION *Living on fruit and roots, self-controlled,
two ascetics who walk in dharma,
dwelling in the Dandaka forest:
why would you do us harm?*

लीला हम दोनों तपस्वी हैं, फल-मूल खाते हैं, संयम और
धर्म से इस दण्डक वन में रहते हैं। तुम हमें क्यों
सताते हो?

SUBTITLE We are ascetics, living on fruit and roots,
self-restrained, walking in dharma
here in the Dandaka.
Why do you harm us?

॥ 3.20.9 ॥
CrEd 3.19.9

राम R A M A

वाल्मीकि युष्मान् पापात्मकान् हन्तुं विप्रकारान् महाहवे ।
ऋषीणां तु नियोगेन प्राप्तोऽहं सशरासनः ॥

TRANSLATION *To kill you, evil-souled ones,
doers of wrong, in great battle,
I have come, bow in hand,
at the bidding of the sages.*

लीला ऋषियों के कहने पर मैं धनुष लेकर आया हूँ, तुम
जैसे पापियों को रण में मारने।

SUBTITLE At the sages' bidding
I have come, bow in hand,
to kill you evildoers
in battle.

यहाँ दिए गए प्रचलित पाठ में “महाहवे” (महायुद्ध में) है; CrEd में “महावने” (महावन में) है (3.19.9)।

The popular text, shown here, reads mahāhave, “in great battle”; the CrEd reads mahāvane, “in the great forest” (3.19.9).

॥ 3.20.10 ॥
CrEd 3.19.10

राम R A M A

वाल्मीकि तिष्ठतैवात्र संतुष्टा नोपसर्पितुम् अर्हथ ।
यदि प्राणैर् इहार्थो वो निवर्तध्वं निशाचराः ॥

TRANSLATION *Stay right there, and be content;
you should not come any nearer.
If you have any use for your lives here,
turn back, rangers of the night.*

लीला वहीं रुक जाओ, संतोष करो। पास मत आना।
निशाचरो, प्राण प्यारे हैं, तो लौट जाओ।

SUBTITLE Stay where you are, and be content.
Come no nearer.
If you care for your lives, night-walkers,
turn back.

प्रचलित पाठ में “उपवर्तितुम्” है; यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार “उपसर्पितुम्” है (3.19.10)। दोनों का अर्थ है “पास आना”।

The popular text reads upavartitum; the Sanskrit shown follows the CrEd, upasarpitum (3.19.10). Both mean “to come near”.

॥ 3.20.13 ॥
CrEd 3.19.13

चौदह राक्षस FOURTEEN

वाल्मीकि क्रोधम् उत्पाद्य नो भर्तुः खरस्य सुमहात्मनः ।
त्वम् एव हास्यसे प्राणान् अद्यास्माभिर् हतो युधि ॥

TRANSLATION *You have roused the anger of our master,
Khara, mighty of soul;
it is you who will give up your life today,
slain by us in battle.*

लीला तूने हमारे स्वामी, महाबली खर का क्रोध भड़काया
है। आज रण में हमारे हाथों तू मरेगा।

SUBTITLE You have roused the anger
of our great lord Khara.
Today, struck down by us,
you will lose your life.

॥ 3.20.14 ॥
CrEd 3.19.14

चौदह राक्षस FOURTEEN

वाल्मीकि का हि ते शक्तिर् एकस्य बहूनां रणमूर्धनि ।
अस्माकम् अग्रतः स्थातुं किं पुनर् योद्धुम् आहवे ॥

TRANSLATION *What strength have you, alone,
against many, at the front of battle,
even to stand before us,
let alone to fight us in combat?*

लीला हम इतने, और तू अकेला? हमारे सामने तू खड़ा
भी न रह पाएगा, लड़ना तो दूर!

SUBTITLE One man against so many?
You cannot even stand
before us in battle,
let alone fight.

॥ 3.20.16–17 ॥
CrEd 3.19.16–17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.20.18 ॥
CrEd 3.19.18

SILENT MOMENT मौन क्षण

वाल्मीकि VALMIKI *verse caption*

वाल्मीकि गृहीत्वा धनुर् आयम्य लक्ष्यान् उद्दिश्य राक्षसान् ।
मुमोच राघवो बाणान् वज्रान् इव शतक्रतुः ।
रुक्मपुङ्खाश् च विशिखाः प्रदीप्ता हेमभूषणाः ।
अन्तरिक्षे महोल्कानां बभूवुस् तुल्यवर्चसः ।
ते भित्त्वा रक्षसां वेगाद् वक्षांसि रुधिराप्लुताः ।
विनिष्पेतुस् तदा भूमौ न्यमज्जन्ताशनिस्वनाः ।
ते भिन्नहृदया भूमौ छिन्नमूला इव द्रुमाः ।
निपेतुः शोणितार्द्राङ्गा विकृता विगतासवः ॥

TRANSLATION *Taking his bow and drawing it,
aiming at the rakshasas,
Raghava loosed his arrows,
as Indra looses thunderbolts.
Gold-feathered, adorned with gold,
the arrows blazed,
and in the sky they shone
with the splendour of great meteors.
Piercing with force the rakshasas' chests,
drenched in blood,
they flew out and sank into the ground
with a sound like thunder.*

SUBTITLE Hearts pierced, they fell
like trees cut at the root,
wet with blood.

*Their hearts split open, to the ground
like trees cut at the root
they fell, their limbs wet with blood,
mangled, their life gone.*

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (3.19.19–22) में है; श्लोक-शीर्षक अंतिम श्लोक को कहता है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (3.19.19–22); the verse caption names the last verse.

॥ 3.20.22–23 ॥
CrEd 3.19.23

SILENT MOMENT मौन क्षण



Khara marches

Valmiki 3.20.23–3.23.25 (CrEd 3.19.24–3.22.25)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.20.23–25 ॥
CrEd 3.19.24–25

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.21.2 ॥
CrEd 3.20.2

खर KHARA

वाल्मीकि मया त्व् इदानीं शूरास् ते राक्षसाः पिशिताशनाः ।
त्वत्प्रियार्थं विनिर्दिष्टाः किमर्थं रुद्वते पुनः ॥

TRANSLATION *Just now, for your pleasure,
I sent out those heroes,
the flesh-eating rakshasas:
why do you weep again?*

लीला तुम्हारे कहने पर अभी-अभी मैंने वीर राक्षस भेजे हैं।
फिर क्यों रो रही हो?

SUBTITLE I have only just sent
brave rakshasas
to do your will.
Why are you weeping again?

यहाँ दिए गए प्रचलित पाठ में “पिशिताशनाः” (मांस खाने वाले) है; CrEd में “रुधिराशनाः” (रक्त पीने वाले) है (3.20.2)।

The popular text, shown here, reads piśitāśanāḥ, “flesh-eating”; the CrEd reads rudhirāśanāḥ, “blood-drinking” (3.20.2).

॥ 3.21.6 ॥
CrEd 3.20.6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.21.7-9 ॥

CrEd 3.20.7-8

3.21.7: popular
text only · not
in the CrEd

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि प्रेषिताश् च त्वया शूरा राक्षसास् ते चतुर्दश ।
निहन्तुं राघवं घोरा मत्प्रियार्थं सलक्ष्मणम् ।
ते तु रामेण सामर्षाः शूलपट्टिशपाणयः ।
समरे निहताः सर्वे सायकैर् मर्मभेदिभिः ॥

TRANSLATION *And you sent those heroes,
those fourteen fearsome rakshasas,
for my pleasure, to kill
Raghava with Lakshmana.
But they, in their fury,
spears and axes in hand,
were all slain by Rama in battle
with arrows that pierce the vitals.*

लीला मेरे लिए तुमने चौदह वीर राक्षस भेजे थे, राम और
लक्ष्मण को मारने। राम ने अपने बाणों से उन
सबको मार डाला।

SUBTITLE I came to you with ears and nose cut off.
You sent fourteen to kill Rama
and Lakshmana.
Rama has killed them all
with his arrows.

पहला श्लोक, 3.21.7 (“मैं कटे नाक-कान लिए, खून से लथपथ, तुम्हारे पास आई थी”), केवल प्रचलित पाठ में है, और शीर्षक में कहा गया है।
यहाँ दी गई संस्कृत बाकी अंश है, पूरी, जैसी CrEd (3.20.7-8) में है।

The first verse, 3.21.7 (“I came to you with ears and nose cut off, soaked in blood”), is the popular text's only and is named in the caption. The Sanskrit shown is the rest, given in full as the CrEd has it (3.20.7-8).

popular text only · not in the CrEd 3.21.7

L22: "I came to you just now with my ears and nose cut off, soaked in streams of blood, and you comforted me" is the popular text's (3.21.7). The CrEd goes straight from her wiping her eyes to the fourteen (3.20.6-7).

॥ 3.21.9 ॥
CrEd 3.20.8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.21.15b-16a ॥
CrEd 3.20.14

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि यदि रामं ममामित्रम् अद्य त्वं न वधिष्यसि ।
तव चैवाग्रतः प्राणांस् त्यक्ष्यामि निरपत्रपा ॥

TRANSLATION *If you do not kill Rama,
my enemy, today,
I will give up my life
right here before you, without shame.*

लीला यदि आज तुमने मेरे शत्रु राम को न मारा, तो
मैं यहीं तुम्हारे सामने प्राण दे दूँगी। मुझे कोई
लाज नहीं।

SUBTITLE If you do not kill Rama,
my enemy, today,
I will give up my life here before you,
and feel no shame.

प्रचलित पाठ में "अमित्रघ्नम्" (शत्रुओं को मारने वाले) है; यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार "ममामित्रम्" (मेरे शत्रु) है (3.20.14)।

The popular text reads amitraghnam, "the slayer of foes"; the Sanskrit shown follows the CrEd, mamāmitram, "my enemy" (3.20.14).

॥ 3.21.16b-17 ॥
CrEd 3.20.15-16ab

शूर्पणखा SHURPANAKHA

वाल्मीकि बुद्ध्याहम् अनुपश्यामि न त्वं रामस्य संयुगे ।
स्थातुं प्रतिमुखे शक्तः सचापस्य महारणे ।
शूरमानी न शूरस् त्वं मिथ्यारोपितविक्रमः ॥

TRANSLATION *I see it clearly with my mind:
you cannot stand
face to face with Rama, bow in hand,
in combat, in a great battle.
You think yourself a hero, but you are no hero;
your valour is falsely claimed.*

लीला मैं देख रही हूँ, तुम रण में राम के सामने टिक नहीं
पाओगे। तुम अपने को शूर समझते हो, पर शूर
नहीं हो। तुम्हारा पराक्रम झूठा है।

SUBTITLE I can see it:
you could never stand against Rama.
You think yourself a hero, and are none.
Your valour is a lie.

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (3.20.15-16ab) में है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (3.20.15-16ab).

॥ 3.21.22 ॥
CrEd 3.20.19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.22.1 ॥
CrEd 3.21.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.22.4 ॥
CrEd 3.21.4

खर KHARA

वाल्मीकि बाष्पः संधार्यताम् एष संभ्रमश् च विमुच्यताम् ।
अहं रामं सह भ्रात्रा नयामि यमसादनम् ॥

TRANSLATION *Let these tears be held back,
and let this alarm be let go.
I will send Rama, with his brother,
to the house of Yama.*

लीला आँसू रोको, यह घबराहट छोड़ो। राम को, उसके
भाई समेत, मैं यमलोक पहुँचाऊँगा।

SUBTITLE Hold back your tears.
Put away your fear.
Rama and his brother
I will send to Yama's house.

यहाँ दी गई संस्कृत में “संधार्यताम्” (रोको) है; CrEd में “संह्रियताम्” (बंद करो) है (3.21.4)।

The Sanskrit shown reads saṁdhāryatām, “hold back”; the CrEd reads saṁhriyatām, “stop” (3.21.4).

॥ 3.22.6 ॥
CrEd 3.21.6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.22.8-9 ॥

CrEd 3.21.8-10

condensed
from 3.22.8-9

खर KHARA

वाल्मीकि चतुर्दश सहस्राणि मम चित्तानुवर्तिनाम् ।
रक्षसां भीमवेगानां समरेष्व् अनिवर्तिनाम् ।
नीलजीमूतवर्णानां घोराणां क्रूरकर्मणाम् ।
लोकसिंहाविहाराणां बलिनाम् उग्रतेजसाम् ।
तेषां शार्दूलदर्पाणां महास्यानां महौजसाम् ।
सर्वोद्योगम् उदीर्णानां रक्षसां सौम्य कारय ॥

TRANSLATION *The fourteen thousand
who follow my will,
rakshasas of fearsome speed,
who never turn back in battle,
the colour of dark rain clouds,
terrible, cruel in their deeds,
who roam the world like lions,
strong, of fierce power,
proud as tigers,
wide-mouthed, of great might:
those rakshasas, eager for battle,
have them all make ready, my friend.*

लीला मित्र दूषण, मेरे चौदह हज़ार राक्षस, काले मेघों
जैसे, भयंकर वेग वाले, जो रण से कभी पीछे नहीं
हटते, उन सबको तैयार करो।

SUBTITLE Dushana, my friend:
my fourteen thousand, dark as rain clouds,
fierce, who never turn back in battle:
make them all ready.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.21.8-10) में है; ई-पाठ की दो भूलें “रक्षसाम्” और “महास्यानाम्” पढ़ी गई हैं। दृश्य की पंक्ति इन श्लोकों को जोड़ती और छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.21.8–10), with two slips in the e-text read rakṣasāṃ and mahāsyānām; the scene's line joins and shortens the verses.

॥ 3.22.12–16 ॥
CrEd 3.21.13–18

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.22.16 ॥
CrEd 3.21.18

खर KHARA

वाल्मीकि खरस् तु तान् महेष्वासान् घोरचर्मायुधध्वजान् ।
निर्यतित्य् अब्रवीद् दृष्ट्वा ॥

TRANSLATION *And Khara, seeing those great archers,
with their fearsome shields, weapons and banners,
said to them, “March out!”*

लीला कूच करो!

SUBTITLE March
out!

॥ 3.22.17–21 ॥
CrEd 3.21.19–22

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.23.1–6 ॥
CrEd 3.22.1–6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.23.16–17 ॥
CrEd 3.22.16–17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.23.19b-
20a ॥
CrEd 3.22.19

खर KHARA

वाल्मीकि महोत्पातान् इमान् सर्वान् उत्थितान् घोरदर्शनान् ।
न चिन्तयाम्य् अहं वीर्याद् बलवान् दुर्बलान् इव ॥

TRANSLATION *All these great portents
that have risen, fearful to see,
I pay no heed to, in my strength,
as the strong pay none to the weak.*

लीला ये सारे भयानक अपशकुन उठे हैं। पर अपने बल के
भरोसे, मैं इन्हें कुछ नहीं गिनता। जैसे बलवान
दुर्बल को नहीं गिनता।

SUBTITLE All these dreadful omens have risen.
Trusting my strength,
I pay them no heed,
as the strong pay the weak no heed.

॥ 3.23.24b-
25a ॥
CrEd 3.22.24

खर KHARA

वाल्मीकि देवराजम् अपि क्रुद्धो मत्तैरावतगामिनम् ।
वज्रहस्तं रणे हन्यां किं पुनस् तौ च मानुषौ ॥

TRANSLATION *In my anger I could kill in battle
even the king of the gods,
who rides the rutting Airavata, thunderbolt
in hand:
how much more these two men!*

लीला क्रोध में आऊँ, तो मतवाले ऐरावत पर चढ़े, वज्र
लिए देवराज को भी रण में मार दूँ। फिर ये दो
मनुष्य किस गिनती में?

SUBTITLE Roused, I could kill in battle
the king of the gods himself,
on his elephant, thunderbolt in hand.
What are two men?

यहाँ दी गई संस्कृत में “मत्तैरावतगामिनम्” है; CrEd में “मत्तैरावतयायिनम्” है (3.22.24)। दोनों का अर्थ है “मतवाले ऐरावत पर चलने वाले”।

The Sanskrit shown reads mattairāvatagāminam; the CrEd reads mattairāvatayāyinam
(3.22.24). Both mean “riding the rutting Airavata”.

॥ 3.23.25b-26a ॥
CrEd 3.22.25

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

Fourteen thousand

चौदह हजार

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.24–3.30 (CrEd 3.23–3.29)

उत्पात देखकर राम लक्ष्मण को सीता के साथ पर्वत की गुफा में भेजते हैं, और खर के चौदह हजार राक्षसों का अकेले सामना करते हैं। वे दूषण को मारते हैं, फिर तीन सिरों वाले त्रिशिरा को, और अंत में अगस्त्य के दिए बाण से स्वयं खर को। देवता और ऋषि उनकी जय-जयकार करते हैं: दण्डक वन फिर निर्भय है।

Reading the omens, Rama sends Lakshmana with Sita to a mountain cave and faces Khara's fourteen thousand alone. He kills Dushana, then three-headed Trishiras, and at last Khara himself with the arrow Agastya gave him. The gods and the sages hail him: the Dandaka forest is safe again.

१



PART 1 · भाग 1

One against fourteen thousand

Valmiki 3.24.1–3.26.16 (CrEd 3.23.1–3.25.10)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.24.1–2 ॥
CrEd 3.23.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.24.3 ॥
CrEd 3.23.3

राम R A M A

वाल्मीकि इमान् पश्य महाबाहो सर्वभूतापहारिणः ।
समुत्थितान् महोत्पातान् संहर्तुं सर्वराक्षसान् ॥

TRANSLATION *See, mighty-armed one,
these great portents,
bringers of ruin to all beings,
risen to destroy all the rakshasas.*

लीला महाबाहो, ये बड़े-बड़े उत्पात देखो। ये सारे राक्षसों
का नाश करने उठे हैं।

SUBTITLE See these great omens,
strong-armed one.
They have risen
to destroy all the rakshasas.

॥ 3.24.7-8 ॥
CrEd 3.23.7-8

राम R A M A

वाल्मीकि संप्रहारस् तु सुमहान् भविष्यति न संशयः ।
अयम् आख्याति मे बाहुः स्फुरमाणो मुहुर् मुहुः ।
संनिकर्षे तु नः शूर जयं शत्रोः पराजयम् ।
सुप्रभं च प्रसन्नं च तव वक्त्रं हि लक्ष्यते ॥

TRANSLATION *A very great battle
is coming, there is no doubt;
this arm of mine tells me so,
throbbing again and again.
But victory is near for us, hero,
and defeat for the enemy;
for your face is seen
bright and serene.*

लीला मेरी भुजा बार-बार फड़क रही है, बड़ा युद्ध होने
वाला है। पर वीर, तुम्हारा मुख दमक रहा है, प्रसन्न
है। विजय निकट है।

SUBTITLE My arm throbs again and again:
a great battle is coming.
But your face is bright and clear, brave one.
Victory is near.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.23.7-8) में है; दृश्य की पंक्ति उसका कुछ अंश छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.23.7-8); the scene's line leaves out part of it.

॥ 3.24.12 ॥
CrEd 3.23.11

राम R A M A

वाल्मीकि तस्माद् गृहीत्वा वैदेहीं शरपाणिर् धनुर्धरः ।
गुहाम् आश्रय शैलस्य दुर्गा पादपसंकुलाम् ॥

TRANSLATION *So take Vaidehi,
arrows in hand, bearing your bow,
and shelter in the mountain's cave,
hard to reach, thick with trees.*

लीला इसलिए वैदेही को लेकर, धनुष-बाण हाथ में लिए,
पर्वत की उस गुफा में चले जाओ, जो दुर्गम है, पेड़ों
से घिरी है।

SUBTITLE *So take Vaidehi,
bow in hand, arrows ready,
and shelter in the mountain cave,
hard to reach, thick with trees.*

॥ 3.24.13 ॥
CrEd 3.23.12

राम R A M A

वाल्मीकि प्रतिकूलितुम् इच्छामि न हि वाक्यम् इदं त्वया ।
शापितो मम पादाभ्यां गम्यतां वत्स माचिरम् ॥

TRANSLATION *I do not want you
to go against these words of mine.
I adjure you by my feet:
go, my child, without delay.*

लीला इसमें मेरी बात मत काटना। तुम्हें मेरे चरणों की
शपथ। वत्स, जाओ, अभी जाओ।

SUBTITLE *Do not set yourself against me in this.
By my feet I charge you:
go, my child,
without delay.*

॥ 3.24.14 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

राम R A M A

वाल्मीकि त्वं हि शूरश् च बलवान् हन्या एतान् न संशयः ।
स्वयं निहन्तुम् इच्छामि सर्वान् एव निशाचरान् ॥

TRANSLATION *For you are brave and strong;
you could kill them, no doubt of it;
but I wish to kill myself
all these rangers of the night.*

लीला तुम शूर हो, बलवान हो, इन्हें मार सकते हो, इसमें
संदेह नहीं। पर इन सब निशाचरों का सामना मैं
स्वयं करना चाहता हूँ।

SUBTITLE You are brave and strong,
and could kill them, no doubt.
But I wish to face
all these night-walkers myself.

popular text only · not in the CrEd 3.24.14

L10: "You are brave and strong, and could kill them; but I wish to face them all myself" is the popular text's (3.24.14). In the CrEd Rama's charge by his feet (3.23.12) is followed at once by Lakshmana going with Sita (3.23.13).

॥ 3.24.15 ॥

CrEd 3.23.13

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.24.15-16 ॥

CrEd 3.23.13-14

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.24.16-18 ॥

CrEd 3.23.14-16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.24.23 ॥
CrEd 3.23.18

देवता GODS

वाल्मीकि चतुर्दश सहस्राणि रक्षसां भीमकर्मणाम् ।
एकश् च रामो धर्मात्मा कथं युद्धं भविष्यति ॥

TRANSLATION *Fourteen thousand rakshasas,
of fearsome deeds,
and righteous Rama alone:
how will there be a battle?*

लीला चौदह हज़ार भयानक राक्षस, और धर्मात्मा राम
अकेले। यह युद्ध होगा कैसे?

SUBTITLE Fourteen thousand rakshasas
of terrible deeds,
and Rama alone, the righteous.
How will this battle go?

॥ 3.25.2 ॥
CrEd 3.24.2

खर KHARA

वाल्मीकि तं दृष्ट्वा सगुणं चापम् उद्यम्य खरनिःस्वनम् ।
रामस्याभिमुखं सूतं चोद्यताम् इत्य् अचोदयत् ॥

TRANSLATION *Seeing him, he raised his strung bow,
with its harsh twang,
and urged on his charioteer:
“Drive towards Rama.”*

लीला सारथी, रथ सीधा राम की ओर ले चलो!

SUBTITLE Charioteer,
drive straight at Rama!

॥ 3.25.6–14 ॥
CrEd 3.24.6–14

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.25.16–29 ॥
CrEd 3.24.16–29

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.26.1–6 ॥
CrEd 3.25.1–3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.26.10–15 ॥
CrEd 3.25.4–9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.26.16 ॥
CrEd 3.25.10

प्राणी BEINGS

वाल्मीकि दृष्ट्वा तं पतितं भूमौ दूषणं निहतं रणे ।
साधु साध्व् इति काकुत्स्थं सर्वभूतान् अपूजयन् ॥

TRANSLATION *Seeing Dushana fallen to the ground,
slain in battle,
all beings honoured Kakutstha,
crying, “Well done! Well done!”*

लीला धन्य! धन्य!

SUBTITLE Well done!
Well done!

॥ 3.26.23 ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 3.26.23–28

M9: in the popular text, seeing Dushana fall, Khara burns with rage and sends in his last champions (3.26.23-28). The CrEd goes on from Dushana's fall to Trishiras (3.25.10; 3.26.1).



Khara

Valmiki 3.27–3.30 (CrEd 3.26–3.29)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.27.1 ॥
CrEd 3.26.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.27.2 ॥
CrEd 3.26.2

त्रिशिरा TRISHIRAS

वाल्मीकि मां नियोजय विक्रान्त संनिवर्तस्व साहसात् ।
पश्य रामं महाबाहुं संयुगे विनिपातितम् ॥

TRANSLATION *Valiant one, send me;
turn back from this rash course.
See mighty-armed Rama
struck down in battle.*

लीला वीर, मुझे भेजिए। यह दुस्साहस छोड़कर लौटिए।
आप देखेंगे, महाबाहु राम रण में धरती पर
पड़ा होगा।

SUBTITLE Send me, hero,
and hold back from this rash fight.
You will see mighty Rama
struck down in battle.

॥ 3.27.4 ॥
CrEd 3.26.4

त्रिशिरा TRISHIRAS

वाल्मीकि अहं वास्य रणे मृत्युर् एष वा समरे मम ।
विनिवर्त्य रणोत्साहं मुहूर्तं प्राश्निको भव ॥

TRANSLATION *Either I will be his death in battle,
or he will be mine in the fight.
Hold back your zeal for battle a moment,
and be the judge.*

लीला या तो रण में मैं उसकी मौत बनूँगा, या वह
मेरी। घड़ी भर अपना जोश थामिए, और निर्णय
आप कीजिए।

SUBTITLE *Either I am his death in battle,
or he is mine.
Hold back your ardour a moment,
and be the judge.*

॥ 3.27.6–11 ॥
CrEd 3.26.6–11

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.27.12–13a ॥
CrEd 3.26.12

राम RAMA

वाल्मीकि अहो विक्रमशूरस्य राक्षसस्येदृशं बलम् ।
पुष्पैर् इव शरैर् यस्य ललाटेऽस्मि परिक्षतः ।
ममापि प्रतिगृह्णीष्व शरांश् चापगुणच्युतान् ॥

TRANSLATION *Ah, such strength
in this rakshasa, bold in valour,
whose arrows, like flowers,
have grazed my forehead!
Now receive my arrows too,
loosed from the bowstring.*

लीला वाह, इस राक्षस का ऐसा बल! इसके बाण मेरे
माथे पर फूल-से लगे। अब मेरे धनुष से छूटे बाण
भी झेलो!

SUBTITLE *What strength, from so bold a rakshasa!
His arrows touch my forehead
like flowers.
Now take the arrows from my bow!*

वाल्मीकि VALMIKI *verse caption*

वाल्मीकि एवम् उत्त्वा तु संरब्धः शरान् आशीविषोपमान् ।
त्रिशिरो वक्षसि क्रुद्धो निजघान चतुर्दश ।
चतुर्भिस् तुरगान् अस्य शरैः संनतपर्वभिः ।
न्यपातयत तेजस्वी चतुरस् तस्य वाजिनः ।
अष्टभिः सायकैः सूतं रथोपस्थे न्यपातयत् ।
रामश् चिच्छेद बाणेन ध्वजं चास्य समुच्छ्रितम् ।
ततो हतरथात् तस्माद् उत्पतन्तं निशाचरम् ।
बिभेद रामस् तं बाणैर् हृदये सोऽभवज् जडः ।
सायकैश् चाप्रमेयात्मा सामर्षस् तस्य रक्षसः ।
शिरांस्य् अपातयत् त्रीणि वेगवद्विस् त्रिभिः शतैः ।
स भूमौ शोणितोद्गारी रामबाणाभिपीडितः ।
न्यपतत् पतितैः पूर्वं स्वशिरोभिर् निशाचरः ॥

TRANSLATION *So saying, roused to fury,
he struck Trishiras in the chest
with fourteen arrows
like venomous snakes.
With four smooth-jointed arrows
the splendid one
brought down the four horses,
his steeds.*

SUBTITLE He struck off his three heads.
Spouting blood, Trishiras fell
on his own fallen heads.

*With eight shafts he felled the charioteer
where he stood in the chariot,
and with one arrow Rama cut down
his tall banner.
Then, as the night-ranger leapt
from the wrecked chariot,
Rama pierced his heart with arrows,
and he was stunned.
And with three hundred swift arrows,
Rama, of boundless spirit, in his anger,
brought down the three heads
of that rakshasa.
Spouting blood,
tormented by Rama's arrows,
the night-ranger fell to the ground
on his own heads, fallen before him.*

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (3.26.13–18) में है; श्लोक-शीर्षक अंतिम दो श्लोकों को कहता है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (3.26.13–18); the verse caption names the last two verses.

॥ 3.28.4–18 ॥
CrEd 3.27.4–18

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.28.19-21 ॥
CrEd 3.27.19-21

॥ 3.28.22-32 ॥
CrEd 3.27.22-32

॥ 3.29.2 ॥
CrEd 3.28.2

SILENT MOMENT मौन क्षण

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम RAMA

वाल्मीकि गजाश्वरथसंबाधे बले महति तिष्ठता ।
कृतं सुदारुणं कर्म सर्वलोकजुगुप्सितम् ॥

TRANSLATION *Standing in a great army
crowded with elephants, horses and chariots,
you have done a most dreadful deed,
loathed by all the world.*

लीला हाथी, घोड़े, रथों से भरी इतनी बड़ी सेना थी तुम्हारे
पास। और तुमने ऐसे क्रूर काम किए, जिनसे सारा
संसार घृणा करता है।

SUBTITLE You stood at the head of a great army,
crowded with elephants, horses
and chariots,
and did cruel deeds
that all the worlds despise.

॥ 3.29.10 ॥
CrEd 3.28.10

राम R A M A

वाल्मीकि पापम् आचरतां घोरं लोकस्याप्रियम् इच्छताम् ।
अहम् आसादितो राज्ञा प्राणान् हन्तुं निशाचर ॥

TRANSLATION *Those who do dreadful evil
and wish the world harm,
I have been sent by the king, night-ranger,
to take their lives.*

लीला निशाचर, जो ऐसे घोर पाप करते हैं, संसार का बुरा
चाहते हैं, उनके प्राण लेने मैं आया हूँ।

SUBTITLE Night-walker,
I have come to take the lives
of those who do such terrible wrong
and wish the world harm.

यहाँ दिए गए प्रचलित पाठ में “राज्ञा” (राजा ने भेजा) है; CrEd में “राजा” (मैं, राजा, आया हूँ) है (3.28.10)।

The popular text, shown here, reads rājñā, “sent by the king”; the CrEd reads rājā, “I, a king, have come” (3.28.10).

॥ 3.29.16-17 ॥
CrEd 3.28.16-17

खर KHARA

वाल्मीकि प्राकृतान् राक्षसान् हत्वा युद्धे दशरथात्मज ।
आत्मना कथम् आत्मानम् अप्रशस्यं प्रशंससि ।
विक्रान्ता बलवन्तो वा ये भवन्ति नरर्षभाः ।
कथयन्ति न ते किं चित् तेजसा स्वेन गर्विताः ॥

TRANSLATION *Having killed common rakshasas
in battle, son of Dasharatha,
how can you praise yourself
with your own mouth, when you merit no praise?
Bulls among men who are
valiant, or truly strong,
say nothing at all,
proud in their own power.*

लीला दशरथ के बेटे, मामूली राक्षस मारकर अपने
मुँह अपनी बड़ाई करता है? सच्चे वीर डींग
नहीं हाँकते।

SUBTITLE Son of Dasharatha,
you killed common rakshasas,
and you praise yourself?
True heroes do not boast.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.28.16-17) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.28.16-17).

खर KHARA

वाल्मीकि न तु माम् इह तिष्ठन्तं पश्यसि त्वं गदाधरम् ।
धराधरम् इवाकम्प्यं पर्वतं धातुभिश् चितम् ।
पर्याप्तोऽहं गदापाणिर् हन्तुं प्राणान् रणे तव ।
त्रयाणाम् अपि लोकानां पाशहस्त इवान्तकः ॥

TRANSLATION *Do you not see me
standing here, mace in hand,
unshakeable as an earth-bearing mountain
veined with ores?
Mace in hand, I am enough
to take your life in battle,
as Death, noose in hand, is enough
for all the three worlds.*

लीला क्या तुझे मैं नहीं दिखता, पर्वत-सा अडिग, गदा
लिए खड़ा? तेरे प्राण लेने को, गदा हाथ में लिए, मैं
अकेला काफ़ी हूँ।

SUBTITLE Do you not see me standing here,
mace in hand,
unshakeable as a mountain?
With this mace I am enough to end you.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.28.21-22) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.28.21-22).

॥ 3.29.24 ॥
CrEd 3.28.24

खर KHARA

वाल्मीकि चतुर्दश सहस्राणि राक्षसानां हतानि ते ।
त्वद्विनाशात् करोम्य् अद्य तेषाम् अश्रुप्रमार्जनम् ॥

TRANSLATION *Fourteen thousand rakshasas
have been slain by you;
by destroying you, today
I will wipe away their tears.*

लीला तूने चौदह हज़ार राक्षस मारे हैं। आज तुझे मारकर,
मैं उनके रोने वालों के आँसू पोंछूँगा।

SUBTITLE You have killed fourteen thousand.
Today, by killing you,
I will wipe away the tears
of those who weep for them.

॥ 3.29.25-28 ॥
CrEd 3.28.25-28

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.30.2-3 ॥
CrEd 3.29.2-3

राम R A M A

वाल्मीकि एतत् ते बलसर्वस्वं दर्शितं राक्षसाधम ।
शक्तिहीनतरो मत्तो वृथा त्वम् उपगर्जितम् ।
एषा बाणविनिर्भिन्ना गदा भूमितलं गता ।
अभिधानप्रगल्भस्य तव प्रत्ययघातिनी ॥

TRANSLATION *This is all the strength you have,
and you have shown it, basest of rakshasas;
you are far weaker than I;
your roaring was in vain.
This mace, split by my arrows,
has fallen to the ground,
destroying the trust you had in yourself,
bold only in your words.*

लीला राक्षसाधम, बस यही था तुम्हारा सारा बल? तुम्हारी
गदा टूटकर धरती पर पड़ी है, और उसके साथ
तुम्हारी डींग भी।

SUBTITLE So this is all your strength,
lowest of rakshasas?
Your mace lies broken on the ground,
and your boasting with it.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.29.2-3) में है; दृश्य की पंक्ति आधा श्लोक छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.29.2-3); the scene's line leaves out a half-verse.

॥ 3.30.8-9 ॥
CrEd 3.29.8-9

राम R A M A

वाल्मीकि प्रवृद्धनिद्रे शयिते त्वयि राक्षसपांसने ।
भविष्यन्त्य् अशरण्यानां शरण्या दण्डका इमे ।
जनस्थाने हतस्थाने तव राक्षसमच्छरैः ।
निर्भया विचरिष्यन्ति सर्वतो मुनयो वने ॥

TRANSLATION *When you lie in the long sleep,
disgrace of the rakshasas,
these Dandaka forests will be a refuge
to those who have no refuge.
When Janasthana, your stronghold,
is struck down, rakshasa, by my arrows,
the sages will roam the forest
everywhere without fear.*

लीला जब तुम चिरनिद्रा में सो जाओगे, तब यह
दण्डक वन बेसहारों का सहारा बनेगा। मुनि यहाँ
निर्भय घूमेंगे।

SUBTITLE When you lie in your long sleep,
the Dandaka will shelter
those who had no shelter,
and the sages will walk here unafraid.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.29.8-9) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.29.8-9).

॥ 3.30.16 ॥
CrEd 3.29.16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.30.17-22 ॥
CrEd 3.29.17-22

SILENT MOMENT मौन क्षण

वाल्मीकि VALMIKI *verse caption*

वाल्मीकि तस्य बाणान्तराद् रक्तं बहु सुस्राव फेनिलम् ।
गिरेः प्रस्रवणस्येव तोयधारापरिस्रवः ।
विह्वलः स कृतो बाणैः खरो रामेण संयुगे ।
मत्तो रुधिरगन्धेन तम् एवाभ्यद्रवद् द्रुतम् ।
तम् आपतन्तं संरब्धं कृतास्त्रो रुधिराप्लुतम् ।
अपसर्पत् प्रतिपदं किं चित् त्वरितविक्रमः ।
ततः पावकसंकाशं वधाय समरे शरम् ।
खरस्य रामो जग्राह ब्रह्मदण्डम् इवापरम् ॥

TRANSLATION *From between his arrow wounds
much foaming blood poured out,
like the streams of water
running from a mountain spring.
Shaken by Rama's arrows
in the battle, Khara,
maddened by the smell of blood,
rushed straight at him.
As he came on in fury, drenched in blood,
the master of weapons
drew back a little, step by step,
swift in his movement.*

SUBTITLE Blood poured from his wounds
like streams down a mountain;
drenched in it, he rushed at Rama.

*Then, to kill Khara in battle,
Rama took up an arrow
bright as fire,
like a second rod of Brahma.*

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (3.29.21–24) में है; श्लोक-शीर्षक पहले तीन श्लोकों को कहता है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (3.29.21–24); the verse caption names the first three verses.

॥ 3.30.25–27 ॥
CrEd 3.29.25–27

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.30.29 ॥
CrEd 3.29.29

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.30.30b-31 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

देवता GODS

वाल्मीकि अर्धाधिकमुहूर्तेन रामेण निशितैः शरैः ।
चतुर्दश सहस्राणि रक्षसां कामरूपिणाम् ।
खरदूषणमुख्यानां निहतानि महामृधे ॥

TRANSLATION *In a muhurta and a half,
with his sharpened arrows,
Rama has slain fourteen thousand
rakshasas who take what form they please,
with Khara and Dushana at their head,
in this great battle.*

लीला डेढ़ मुहूर्त में ही, राम ने तीखे बाणों से, खर और
दूषण समेत चौदह हजार राक्षस मार गिराए!

SUBTITLE In one and a half muhurta,
with his sharp arrows,
Rama has struck down fourteen thousand,
Khara and Dushana at their head.

popular text only · not in the CrEd 3.30.30-32

L35: the gods' cry, "In one and a half muhurta Rama has struck down fourteen thousand", and their wonder at his deed, "his valour is like Vishnu's", are the popular text's (3.30.30-32). In the CrEd the gods rain flowers, and the sages speak (3.29.29-32).

॥ 3.30.36b-
37a ॥
CrEd 3.29.32

ऋषि SAGES

वाल्मीकि तद् इदं नः कृतं कार्यं त्वया दशरथात्मज ।
स्वधर्मं प्रचरिष्यन्ति दण्डकेषु महर्षयः ॥

TRANSLATION *This task of ours
you have done, son of Dasharatha;
the great sages will practise their own dharma
in the Dandaka forests.*

लीला दशरथनन्दन, तुमने हमारा काम पूरा कर दिया।
अब महर्षि दण्डक वन में अपना धर्म निभाएँगे।

SUBTITLE You have done our work,
son of Dasharatha.
Now the great sages
will keep their dharma in the Dandaka.

यहाँ दी गई संस्कृत में “स्वधर्मं प्रचरिष्यन्ति” (अपना धर्म निभाएँगे) है; CrEd में “सुखं धर्मं चरिष्यन्ति” (सुख से धर्म निभाएँगे) है (3.29.32)।

The Sanskrit shown reads svadharmam pracarisyanti, “will practise their own dharma”; the CrEd reads sukham dharmam carisyanti, “will practise dharma in peace” (3.29.32).

॥ 3.30.37-38 ॥
CrEd 3.29.33-34

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.30.39 ॥
CrEd 3.29.35

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

The forced errand

विवश काम

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.35–3.42.14 (CrEd 3.33–3.40.12)

रावण मारीच के आश्रम आता है और उससे सोने का मृग बनने को कहता है, ताकि राम और लक्ष्मण दूर चले जाएँ और सीता को उठाया जा सके। दो बार राम के बाण झेल चुका मारीच उसे चेताता है कि राम देह धरे धर्म हैं, और लौट जाने की विनती करता है। मौत की धमकी पाकर वह मान जाता है: वह कहता है, रावण के हाथों मरने से राम के हाथों मरना भला।

Ravana comes to Maricha's hermitage and asks him to become a golden deer, so that Rama and Lakshmana are drawn away and Sita can be taken. Maricha, who has felt Rama's arrows twice, warns him that Rama is dharma in a body and begs him to turn back. Threatened with death, he gives in: death at Rama's hands, he says, is better than death at Ravana's.

१



PART 1 · भाग 1

The request

Valmiki 3.35–3.37 (CrEd 3.33–3.35)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.35.36–38 ॥
CrEd 3.33.36–37

SILENT MOMENT मौन क्षण

रावण RAVANA

वाल्मीकि मारीच श्रूयतां तात वचनं मम भाषतः ।
आर्तोऽस्मि मम चार्तस्य भवान् हि परमा गतिः ॥

TRANSLATION *Maricha, my friend, listen
to the words that I speak.
I am in distress, and to me in distress
you are the highest refuge.*

लीला तात मारीच, मेरी बात सुनिए। मैं संकट में हूँ। और
इस संकट में, मेरा सहारा बस आप हैं।

SUBTITLE Maricha, my friend,
hear what I say.
I am in distress,
and you are my last refuge.

॥ 3.36.8b-10a ॥
CrEd 3.34.8-9

रावण RAVANA

वाल्मीकि चतुर्दश सहस्राणि रक्षसां भीमकर्मणाम् ।
निहतानि शरैस् तीक्ष्णैर् मानुषेण पदातिना ।
खरश् च निहतः संख्ये दूषणश् च निपातितः ।
हत्वा त्रिशिरसं चापि निर्भया दण्डकाः कृताः ॥

TRANSLATION *Fourteen thousand rakshasas
of fearsome deeds
have been slain with sharp arrows
by a man, and he on foot.
Khara was slain in battle,
and Dushana struck down;
and with Trishiras slain as well,
the Dandaka is made free of fear.*

लीला वहाँ एक मनुष्य ने, पैदल, अपने तीखे बाणों से
चौदह हज़ार राक्षस मार डाले। खर मारा गया।
दूषण गिरा। त्रिशिरा भी मारा गया।

SUBTITLE One man, on foot,
has killed fourteen thousand of us.
Khara is dead, Dushana fallen,
Trishiras slain.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.34.8-9) में है; दृश्य की पंक्ति उसका कुछ अंश छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.34.8-9); the scene's line leaves out part of it.

रावण RAVANA

वाल्मीकि पित्रा निरस्तः क्रुद्धेन सभार्यः क्षीणजीवितः ।
स हन्ता तस्य सैन्यस्य रामः क्षत्रियपांसनः ।
अशीलः कर्कशस् तीक्ष्णो मूर्खो लुब्धोऽजितेन्द्रियः ।
त्यक्तधर्मस् त्व् अधर्मात्मा भूतानाम् अहिते रतः ॥

TRANSLATION *Cast out by his angry father,
with his wife, his life worn thin,
he is the slayer of that army,
Rama, disgrace of the kshatriyas:
without virtue, harsh and violent,
foolish, greedy, his senses unmastered;
he has abandoned dharma, unrighteous of soul,
delighting in the harm of creatures.*

लीला वह हत्यारा कौन? राम। उसे पिता ने क्रोध में
निकाल दिया। क्षत्रियों का कलंक। कठोर, क्रूर,
मूर्ख, लालची, अधर्मी। प्राणियों को सताकर ही उसे
सुख मिलता है।

SUBTITLE The killer is Rama,
thrown out by his angry father,
a shame to kshatriyas,
fierce, foolish, greedy, lawless.

रावण RAVANA

वाल्मीकि येन वैरं विनारण्ये सत्त्वम् आश्रित्य केवलम् ।
कर्णनासापहारेण भगिनी मे विरूपिता ।
तस्य भार्या जनस्थानात् सीतां सुरसुतोपमाम् ।
आनयिष्यामि विक्रम्य सहायस् तत्र मे भव ॥

TRANSLATION *He who, with no feud, in the forest,
trusting in his strength alone,
by cutting off her ears and nose
disfigured my sister:
his wife, out of Janasthana,
Sita, like a daughter of the gods,
I will bring away by force.
Be my helper in this.*

लीला कोई बैर नहीं था। बस बल के भरोसे, उसने मेरी
बहन का रूप बिगाड़ा। अब मैं उसकी पत्नी सीता
को जनस्थान से उठा लाऊँगा। तुम मेरा साथ दो।

SUBTITLE With no quarrel, trusting his strength,
he disfigured my sister.
I will carry off his wife Sita.
Be my helper.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.34.12-13) में है; दृश्य की पंक्ति “देवकन्या जैसी” छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.34.12-13); the scene's line leaves out “like a daughter of the gods”.

॥ 3.36.18 ॥
CrEd 3.34.17

रावण RAVANA

वाल्मीकि सौवर्णस् त्वं मृगो भूत्वा चित्रो रजतबिन्दुभिः ।
आश्रमे तस्य रामस्य सीतायाः प्रमुखे चर ॥

TRANSLATION *Become a golden deer,
dappled with spots of silver,
and roam in that Rama's hermitage,
right before Sita's eyes.*

लीला तुम सोने का मृग बन जाओ, चाँदी की बूँदों वाला ।
और राम के आश्रम में, सीता की आँखों के सामने
चरते फिरो।

SUBTITLE Become a golden deer,
dappled with silver,
and wander at Rama's hermitage,
before Sita's eyes.

॥ 3.36.19-20 ॥
CrEd 3.34.18-19

रावण RAVANA

वाल्मीकि त्वां तु निःसंशयं सीता दृष्ट्वा तु मृगरूपिणम् ।
गृह्यताम् इति भर्तारं लक्ष्मणं चाभिधास्यति ।
ततस् तयोर् अपाये तु शून्ये सीतां यथासुखम् ।
निराबाधो हरिष्यामि राहुश् चन्द्रप्रभाम् इव ॥

TRANSLATION *Seeing you in the form of a deer,
Sita, without a doubt,
will say to her husband and Lakshmana,
“Let it be caught.”
Then, with the two of them gone,
from the empty place, at my ease,
unhindered I will carry off Sita,
as Rahu takes the light of the moon.*

॥ 3.36.22-24 ॥
CrEd 3.34.22

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.37.1 ॥
CrEd 3.35.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

लीला तुम्हें देखकर वह अवश्य पति और लक्ष्मण से
कहेगी, “इसे पकड़ लाओ!” दोनों गए, आश्रम
सूना। मैं उसे आराम से हर लूँगा, जैसे राहु चाँदनी
निगल लेता है।

SUBTITLE She will send them after you:
"Catch it!"
With both gone, I take her,
as Rahu takes the moonlight.

॥ 3.37.2 ॥
CrEd 3.35.2

मारीच MARICHA

वाल्मीकि सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः ।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

TRANSLATION *Easy to find, king, are men
who always speak pleasing words;
but one who speaks the unwelcome and wholesome,
and one who hears it, are hard to find.*

लीला राजन्, मीठा बोलने वाले सदा मिल जाते हैं। कड़वी
पर भली बात कहने वाला कम मिलता है। और
सुनने वाला भी।

SUBTITLE King, those who please
are always easy to find.
Rare is the one who speaks,
or hears, a hard, wholesome word.

॥ 3.37.5-6 ॥
CrEd 3.35.5-6

मारीच MARICHA

वाल्मीकि अपि ते जीवितान्ताय नोत्पन्ना जनकात्मजा ।
अपि सीता निमित्तं च न भवेद् व्यसनं महत् ।
अपि त्वाम् ईश्वरं प्राप्य कामवृत्तं निरङ्कुशम् ।
न विनश्येत् पुरी लङ्का त्वया सह सराक्षसा ॥

TRANSLATION *Was Janaka's daughter not born
to bring your life to its end?
Will not some great calamity
arise, with Sita as its cause?
Having found in you a lord
self-willed and without a curb,
will not the city of Lanka perish,
with you and with its rakshasas?*

लीला क्या जनक की बेटी आपकी मौत बनकर जन्मी
है? आप जैसा मनमाना, बेलगाम स्वामी पाकर,
क्या लंका मिट जाएगी? आपके साथ, सारे राक्षसों
के साथ?

SUBTITLE Was Janaka's daughter
born to end your life?
Under a self-willed king,
will Lanka fall, with all its rakshasas?

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.35.5-6) में है; दृश्य की पंक्ति आधा श्लोक छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.35.5-6); the scene's line leaves out a half-verse.

मारीच MARICHA

वाल्मीकि न च पित्रा परित्यक्तो नामर्यादः कथं चन ।
न लुब्धो न च दुःशीलो न च क्षत्रियपांसनः ।
न च धर्मगुणैर्हीनैः कौसल्यानन्दवर्धनः ।
न च तीक्ष्णो हि भूतानां सर्वेषां च हिते रतः ॥

TRANSLATION *He was not cast off by his father,
nor does he ever break the bounds;
he is not greedy, nor of bad character,
nor a disgrace to the kshatriyas.
Nor is Kausalya's joy
lacking in dharma or in virtue;
nor is he harsh to living beings:
he delights in the good of all.*

लीला राम को पिता ने नहीं निकाला। वे मर्यादा नहीं
तोड़ते। न लालची हैं, न क्षत्रियों का कलंक। वे क्रूर
नहीं। वे तो सब प्राणियों का भला चाहते हैं।

SUBTITLE His father never cast Rama out.
He is not lawless, not greedy.
He is not cruel;
he seeks every creature's good.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.35.8-9) में है; दृश्य की पंक्ति “सर्वभूतहिते रतः” (सब प्राणियों के भले में लगे) पर समाप्त होती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.35.8-9); the scene's line ends sarvabhūtahite rataḥ, “devoted to the good of all beings”.

॥ 3.37.13 ॥
CrEd 3.35.13

मारीच MARICHA

वाल्मीकि रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः ।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानाम् इव वासवः ॥

TRANSLATION *Rama is dharma in bodily form,
good, and true in his valour,
king of the whole world,
as Indra is of the gods.*

लीला राम धर्म हैं, देह धरे हुए। सज्जन हैं, सच्चे वीर हैं।
सारे जग के राजा हैं, जैसे देवताओं के इन्द्र।

SUBTITLE Rama is dharma in human form,
good, and true in valour,
king of all the world,
as Indra is of the gods.

॥ 3.37.15 ॥
CrEd 3.35.15

मारीच MARICHA

वाल्मीकि शरार्चिषम् अनाधृष्यं चापखड्गेन्धनं रणे ।
रामाग्निं सहसा दीप्तं न प्रवेष्टुं त्वम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *Its flames are arrows, none may assail it,
its fuel is bow and sword in battle:
into the blazing fire of Rama
you must not rashly enter.*

लीला बाण जिसकी लपटें हैं, धनुष और तलवार जिसका
ईंधन, वह धधकती आग है राम। उस आग में आप
बिना सोचे मत कूदिए।

SUBTITLE Arrows are its flames,
bow and sword its fuel.
Do not rush into that blazing fire
called Rama.

॥ 3.40.1 ॥
CrEd 3.38.1

SILENT MOMENT मौन क्षण



PART 2 · भाग 2

Death either way

Valmiki 3.38–3.42.14 (CrEd 3.36–3.40.12)

॥ 3.38.14, 18 ॥

CrEd 3.36.11, 15

condensed
from 3.38.14,
18

मारीच MARICHA

वाल्मीकि अजातव्यञ्जनः श्रीमान् बालः श्यामः शुभेक्षणः ।
एकवस्त्रधरो धन्वी शिखी कनकमालया ।
अवजानन् अहं मोहाद् बालोऽयम् इति राघवम् ।
विश्वामित्रस्य तां वेदिम् अध्यधावं कृतत्वरः ॥

TRANSLATION *A boy, his beard not yet grown, handsome,
dark, with lovely eyes,
in a single garment, bearing a bow,
with a side-lock and a chain of gold.
Scorning Raghava in my folly,
thinking, "This is a mere boy,"
I rushed in all haste upon
that altar of Vishvamisra.*

लीला तब वे बालक ही थे, बिना दाढ़ी-मुँछ के। साँवले,
एक वस्त्र में, हाथ में धनुष। मूर्ख था मैं। "बच्चा है",
सोचकर मैं विश्वामित्र की वेदी पर झपटा।

SUBTITLE He was only a boy,
beardless, dark, bow in hand.
I scorned him, "just a child",
and rushed Vishvamitra's altar.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.36.11 और 15) में है, जहाँ ई-पाठ में "अध्यधावम्" है; दृश्य की पंक्ति में "अभ्यधावम्" है, और वह दोनों श्लोकों को जोड़ती और छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.36.11 and 15), where the e-text reads adhyadhāvaṃ; the scene's line reads abhyadhāvaṃ, and joins and shortens the two verses.

॥ 3.38.19-20a ॥
CrEd 3.36.16

3.38.20a:
popular text
only · not in
the CrEd

मारीच MARICHA

वाल्मीकि तेन मुक्तस् ततो बाणः शितः शत्रुनिबर्हणः ।
तेनाहं ताडितः क्षिप्तः समुद्रे शतयोजने ।
नेच्छता तात मां हन्तुं तदा वीरेण रक्षितः ॥

TRANSLATION *Then he let fly an arrow,
sharp, destroyer of foes;
struck by it, I was hurled
a hundred yojanas into the sea.
Not wishing to kill me then, my friend,
the hero spared me.*

लीला उन्होंने एक तीखा बाण छोड़ा। उस बाण ने मुझे सौ
योजन दूर, समुद्र में जा फेंका। तात, तब वे मुझे
मारना नहीं चाहते थे।

SUBTITLE His sharp arrow struck me
and hurled me a hundred leagues
into the sea.
He did not want me dead then.

अंतिम पंक्ति (3.38.20a), “तब वे मुझे मारना नहीं चाहते थे”, केवल प्रचलित पाठ में है; बाकी CrEd में 3.36.16 है।

The last half (3.38.20a), “he did not wish to kill me then”, is the popular text’s; the rest is in the CrEd as 3.36.16.

popular text only · not in the CrEd 3.38.20a

“He did not wish to kill me then” (3.38.20a) is the popular text’s; the CrEd has the arrow that hurled him into the sea (3.36.16).

॥ 3.39.15 ॥
CrEd 3.37.15

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.39.15-16 ॥
CrEd 3.37.15-16

मारीच MARICHA

वाल्मीकि वृक्षे वृक्षे हि पश्यामि चीरकृष्णाजिनाम्बरम् ।
गृहीतधनुषं रामं पाशहस्तम् इवान्तकम् ।
अपि रामसहस्राणि भीतः पश्यामि रावण ।
रामभूतम् इदं सर्वम् अरण्यं प्रतिभाति मे ॥

TRANSLATION *In tree after tree I see him,
clad in bark and black deerskin,
Rama, with his bow in hand,
like Death with noose in hand.
I see thousands of Ramas,
Ravana, in my fear;
this whole forest seems to me
to have become Rama.*

लीला अब हर पेड़ में मुझे राम दिखते हैं। वल्कल और
काला मृगचर्म पहने, हाथ में धनुष, जैसे फंदा लिए
काल। सारा वन मुझे राम ही राम लगता है।

SUBTITLE Now I see Rama behind every tree,
in bark and deerskin, bow in hand,
like Death with his noose.
The whole forest is Rama.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.37.15-16) में है; दृश्य की पंक्ति आधा श्लोक छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.37.15-16); the scene's line leaves out a half-verse.

॥ 3.39.18 ॥
CrEd 3.37.18

मारीच MARICHA

वाल्मीकि रकारादीनि नामानि रामत्रस्तस्य रावण ।
रत्नानि च रथाश् चैव त्रासं संजनयन्ति मे ॥

TRANSLATION *Names beginning with “ra”,
Ravana, to me who dread Rama,
ratnas, jewels, and rathas, chariots,
fill me with terror.*

लीला रावण, राम से मैं इतना डरता हूँ, कि “र” से शुरू
होने वाले शब्द भी मुझे डराते हैं। रत्न भी, रथ भी।

SUBTITLE I so dread Rama
that words beginning with “ra”
terrify me:
ratna, jewels; ratha, chariots.

॥ 3.39.19–20 ॥
CrEd 3.37.19

मारीच MARICHA

वाल्मीकि अहं तस्य प्रभावज्ञो न युद्धं तेन ते क्षमम् ।
रणे रामेण युध्यस्व क्षमां वा कुरु राक्षस ।
न ते रामकथा कार्या यदि मां द्रष्टुम् इच्छसि ॥

TRANSLATION *I know his power;
war with him is not fit for you.
Fight Rama in battle, rakshasa,
or else forgive him.
Do not speak to me of Rama,
if you wish to see me.*

लीला मैं उनका बल जानता हूँ। उनसे युद्ध आपके बस का
नहीं। उनसे लड़िए, या उन्हें क्षमा कीजिए। पर मुझे
जीवित देखना हो, तो राम की बात मत कीजिए।

SUBTITLE I know his power; you’re no match.
Fight, or forgive.
If you want me alive,
speak no more of Rama.

रावण RAVANA

वाल्मीकि यत् किलैतद् अयुक्तार्थं मारीच मयि कथ्यते ।
वाक्यं निष्फलम् अत्यर्थं बीजम् उत्तमम् इवोषरे ।
त्वद्वाक्यैर् न तु मां शक्यं भेतुं रामस्य संयुगे ।
पापशीलस्य मूर्खस्य मानुषस्य विशेषतः ॥

TRANSLATION *These words of unfit meaning, Maricha,
that you speak to me
are utterly fruitless,
like seed sown on salt ground.
Your words cannot break me
from battle with Rama,
a man of sinful ways, a fool,
and a mere man at that.*

लीला मारीच, तुम्हारी बातें बेकार हैं, जैसे ऊसर में बोया
बीज। ये मुझे राम से लड़ने से नहीं रोक सकतीं।
वह पापी है, मूर्ख है, और ऊपर से मनुष्य।

SUBTITLE Your words are fruitless, Maricha,
like seed sown in salt ground.
They cannot turn me from fighting Rama,
a wicked, foolish man.

॥ 3.40.6-7 ॥
CrEd 3.38.6-7

रावण RAVANA

वाल्मीकि अवश्यं तु मया तस्य संयुगे खरघातिनः ।
प्राणैः प्रियतरा सीता हर्तव्या तव संनिधौ ।
एवं मे निश्चिता बुद्धिर् हृदि मारीच वर्तते ।
न व्यावर्तयितुं शक्या सेन्द्रैर् अपि सुरासुरैः ॥

TRANSLATION *I must carry off Sita,
dearer than life to him
who killed Khara in battle,
with you beside me.
So my mind is resolved, Maricha;
so it stands in my heart,
not to be turned back even by gods
and asuras, with Indra.*

लीला मैंने ठान लिया है। तुम्हारी मदद से मैं सीता को
उठा लाऊँगा, जो उसे प्राणों से प्यारी है। इन्द्र समेत
देवता और असुर भी मुझे नहीं मोड़ सकते।

SUBTITLE I have decided.
With your help I will take Sita,
dearer to him than life.
No god, not Indra, could turn me.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.38.6-7) में है; दृश्य की पंक्ति कुछ शब्द छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.38.6-7); the scene's line leaves out a few words.

॥ 3.40.20 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

रावण RAVANA

वाल्मीकि अपक्रान्ते च काकुत्स्थे दूरं च यात्वाप्य् उदाहर ।
हा सीते लक्ष्मणेत्स्वं रामवाक्यानुरूपकम् ॥

TRANSLATION *When Kakutstha has gone off,
go far yourself and call out,
"Ha Sita! Ha Lakshmana!"
in the likeness of Rama's voice.*

लीला राम के दूर जाते ही, तुम भी दूर जाकर, उसी के स्वर
में पुकारना, "हा सीते! हा लक्ष्मण!"

SUBTITLE When Rama has gone off,
go far, and cry out
in a voice like his:
"Ha Sita! Ha Lakshmana!"

॥ 3.40.23 ॥

CrEd 3.38.18

रावण RAVANA

वाल्मीकि एवं कृत्वा त्व् इदं कार्यं यथेष्टं गच्छ राक्षस ।
राज्यस्यार्धं प्रदास्यामि मारीच तव सुव्रत ॥

TRANSLATION *Once you have done this task,
go wherever you please, rakhasa;
I will give you half my kingdom,
Maricha, keeper of vows.*

लीला यह काम कर दो, फिर जहाँ मन चाहे, चले जाना ।
मारीच, अपना आधा राज्य मैं तुम्हें दे दूँगा ।

SUBTITLE Do this, then go where you please.
Half my kingdom, Maricha,
will be yours.

॥ 3.40.27 ॥
CrEd 3.38.21

रावण RAVANA

वाल्मीकि आसाद्य तं जीवितसंशयस् ते मृत्युर् ध्रुवो ह्य् अद्य
मया विरुध्य ॥

TRANSLATION *If you go to him, your life is in doubt;
set against me today, your death is certain.*

लीला राम के पास गया, तो तू शायद बच भी जाए। पर
आज मुझसे टकराया, तो तेरी मौत तय है।

SUBTITLE Go near Rama,
and your life is in doubt.
Defy me now,
and your death is certain.

॥ 3.41.1 ॥
CrEd 3.39.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.41.17 ॥
CrEd 3.39.17

मारीच MARICHA

वाल्मीकि मां निहत्य तु रामोऽसौ नचिरात् त्वां वधिष्यति ।
अनेन कृतकृत्योऽस्मि म्रिये यद् अरिणा हतः ॥

TRANSLATION *Once he has slain me, that Rama
will before long slay you.
In this I have done my part:
I die slain by an enemy.*

लीला राम मुझे मारेंगे, और जल्दी ही आपको भी मार
डालेंगे। मैं शत्रु के हाथों मरूँ, तो समझूँगा, मेरा
जीवन सफल हुआ।

SUBTITLE Rama will kill me,
and soon after, you.
If I die by an enemy's hand,
my work is done.

प्रचलित पाठ में “म्रिये चाप्य् अरिणा हतः” है; यहाँ दी गई संस्कृत CrEd के अनुसार “म्रिये यद् अरिणा हतः” है (3.39.17)।

The popular text reads mriye cāpy ariṇā hataḥ, “and I die killed by an enemy”; the Sanskrit shown follows the CrEd, mriye yad ariṇā hataḥ (3.39.17).

॥ 3.41.19 ॥
CrEd 3.39.19

मारीच MARICHA

वाल्मीकि आनयिष्यसि चेत् सीताम् आश्रमात् सहितो मया ।
नैव त्वम् असि नैवाहं नैव लङ्का न राक्षसाः ॥

TRANSLATION *If you carry Sita off
from the hermitage, with me beside you,
then neither you will be, nor I,
nor Lanka, nor the rakshasas.*

लीला यदि मेरे साथ मिलकर आप उस आश्रम से सीता
को ले आए, तो न आप रहेंगे, न मैं। न लंका रहेगी,
न राक्षस।

SUBTITLE Carry off Sita with my help,
and there will be no you,
no me, no Lanka,
no rakshasas.

यहाँ दिए गए प्रचलित पाठ में “आनयिष्यसि” (आप ले आँगे) है; CrEd में “आनयिष्यामि” (मैं ले आऊँगा) है (3.39.19)।

The popular text, shown here, reads ānayaṣyasi, “you will bring”; the CrEd reads ānayaṣyāmi, “I will bring” (3.39.19).

॥ 3.42.1 ॥
CrEd 3.40.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.42.1-4 ॥

CrEd 3.40.1-3

3.42.3: popular
text only · not
in the CrEd

मारीच MARICHA

वाल्मीकि एवम् उक्त्वा तु परुषं मारीचो रावणं ततः ।
गच्छावेत्य् अब्रवीद् दीनो भयाद् रात्रिचरप्रभोः ।
दृष्टश् चाहं पुनस् तेन शरचापासिधारिणा ।
मद्विधोद्यतशस्त्रेण विनष्टं जीवितं च मे ।
किं तु कर्तुं मया शक्यम् एवं त्वयि दुरात्मनि ।
एष गच्छाम्य् अहं तात स्वस्ति तेऽस्तु निशाचर ॥

TRANSLATION *Having said these harsh words,
Maricha then, to Ravana,
said wretchedly, “Let us go,”
in fear of the lord of night-rangers.
“If I am seen again by him
who bears arrows, bow and sword,
who raises his weapon against such as me,
my life is lost.
But what can I do
against one as wicked as you?
Here I go, my friend.
May it be well with you, night-ranger.”*

लीला चलिए, चलें। उन्होंने मुझे फिर देखा, तो मेरा जीवन
गया। पर आप ही ऐसे दुष्ट हैं, तो मैं क्या कर
सकता हूँ? तात, मैं चला। आपका भला हो।

SUBTITLE Let us go.
If he sees me again, I die.
You are wicked; what can I do?
I go. Be well.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.40.1-3) में है; ई-पाठ की भूलें “रावणम्”, “दृष्टश्” और “निशाचर” पढ़ी गई हैं। प्रचलित पाठ का 3.42.3 CrEd में नहीं है, और हमारी पंक्ति में छोड़ दिया गया है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.40.1–3), with the e-text's slips read rāvaṇam, dṛṣṭaś and niśācara. The popular 3.42.3 is not in the CrEd and is left out of our line.

popular text only · not in the CrEd 3.42.3

One verse of his answer (3.42.3) is the popular text's; the CrEd has the rest (3.40.1-3).

॥ 3.42.6 ॥
CrEd 3.40.5

रावण RAVANA

वाल्मीकि एतच् छौण्डीर्ययुक्तं ते मच्छन्दवशवर्तिनः ।
इदानीम् असि मारीचः पूर्वम् अन्यो निशाचरः ॥

TRANSLATION *These words are full of courage,
now you bend to my will;
now you are Maricha;
before, you were some other night-ranger.*

लीला यह हुई वीरों वाली बात! अब तुम सचमुच मारीच
हो। पहले तो तुम कोई और ही निशाचर थे।

SUBTITLE Now you speak like a hero!
Now you are Maricha again;
before, you were some other rakshasa.

यहाँ दी गई संस्कृत में “मच्छन्दवशवर्तिनः” (मेरी इच्छा के वश में) है; CrEd में “मच्छब्दाद् इव भाषितम्” (मानो मेरे ही शब्दों में कहा गया) है (3.40.5)।

The Sanskrit shown reads macchandavaśavartinah, “bending to my will”; the CrEd reads macchabdād iva bhāṣitam, “spoken as if in my own voice” (3.40.5).

॥ 3.42.9–10 ॥
CrEd 3.40.7

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

The golden deer

स्वर्ण मृग

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.42.14–3.44.27 (CrEd 3.40.12–3.42.21)

कुटी के पास सोने और रत्नों का एक मृग चरता है, और सीता राम से उसे ले आने को कहती हैं,
जीवित, या उसकी खाल के लिए। लक्ष्मण चेताते हैं कि यह मारीच की माया है; राम उन्हें सीता की
रक्षा में छोड़कर मृग के पीछे घने वन में चले जाते हैं। राम के बाण से घायल मारीच राम की आवाज़
में “हा सीते! हा लक्ष्मण!” पुकारता हुआ मरता है।

A deer of gold and jewels grazes near the hut, and Sita asks Rama to bring it to
her, alive or for its skin. Lakshmana warns that it is Maricha's illusion;
Rama leaves him to guard Sita and follows the deer deep into the forest.
Struck by Rama's arrow, Maricha dies crying out in Rama's voice, “Ha Sita!
Ha Lakshmana!”

१



PART 1 · भाग 1

The golden deer

Valmiki 3.42.14–3.44.3 (CrEd 3.40.12–3.42.3)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.42.30–31 ॥
CrEd 3.40.27–29

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.42.22-29 ॥
CrEd 3.40.19-26

॥ 3.42.32-34 ॥
CrEd 3.40.29-30

॥ 3.43.3 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

॥ 3.43.4-5 ॥
CrEd 3.41.3-4

॥ 3.43.5 ॥
CrEd 3.41.4

SILENT MOMENT मौन क्षण

SILENT MOMENT मौन क्षण

सीता SITA

वाल्मीकि आगच्छ आगच्छ शीघ्रं वै आर्यपुत्र सहानुज ॥

TRANSLATION *Come, come quickly,
my lord, with your younger brother.*

लीला आर्यपुत्र, आइए, आइए! जल्दी आइए, और भाई
को भी साथ लाइए!

SUBTITLE My lord, come!
Come quickly,
and bring your brother!

CrEd में वे केवल अपने पति और शस्त्रधारी लक्ष्मण को पुकारती हैं (3.41.2)।

In the CrEd she only cries out to her husband and to the armed Lakshmana (3.41.2).

SILENT MOMENT मौन क्षण

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि तम् एवैनम् अहं मन्ये मारीचं राक्षसं मृगम् ॥

TRANSLATION *I think this deer
is that very rakshasa, Maricha.*

लीला आर्य, मुझे तो यह मृग वही राक्षस मारीच
लगता है।

SUBTITLE I think this deer
is that rakshasa Maricha.

॥ 3.43.8 ॥
CrEd 3.41.7

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि मृगो ह्य् एवंविधो रत्नविचित्रो नास्ति राघव ।
जगत्यां जगतीनाथ मायैषा हि न संशयः ॥

TRANSLATION *There is no such deer, Raghava,
dappled with jewels,
in all the world, lord of the world:
this is an illusion, no doubt of it.*

लीला राघव, धरती के स्वामी, धरती पर ऐसा कोई मृग
नहीं, जो रत्नों से जड़ा हो। यह माया है। इसमें कोई
संदेह नहीं।

SUBTITLE Lord of the earth,
no deer on earth is like this,
patterned with gems.
It is a trick, beyond doubt.

॥ 3.43.9-10 ॥
CrEd 3.41.8-9

सीता SITA

वाल्मीकि आर्यपुत्राभिरामोऽसौ मृगो हरति मे मनः ।
आनयैनं महाबाहो क्रीडार्थं नो भविष्यति ॥

TRANSLATION *My lord, that lovely deer
is stealing away my heart.
Bring it here, mighty-armed one;
it will be our delight.*

लीला आर्यपुत्र, वह सुंदर मृग मेरा मन हर रहा
है। महाबाहो, उसे ले आइए। उससे हमारा
मन बहलेगा।

SUBTITLE My lord, that lovely deer
is stealing my heart.
Bring it, strong-armed one;
it will be ours to play with.

॥ 3.43.16-17 ॥
CrEd 3.41.15-16

सीता SITA

वाल्मीकि यदि ग्रहणम् अभ्येति जीवन् एव मृगस् तव ।
आश्चर्यभूतं भवति विस्मयं जनयिष्यति ।
समाप्तवनवासानां राज्यस्थानां च नः पुनः ।
अन्तःपुरविभूषार्थो मृग एष भविष्यति ॥

TRANSLATION *If the deer comes into your hands
while it still lives,
it will be a marvel;
it will fill all with wonder.
And when our forest years are done,
and we are in the kingdom once more,
this deer will be an ornament
for the inner palace.*

लीला यदि यह जीवित ही आपके हाथ आ जाए, तो
कितना अद्भुत हो! वनवास पूरा होने पर, यह हमारे
रनिवास की शोभा बनेगा।

SUBTITLE If you catch it alive,
what a wonder that will be!
When our forest years are done,
it will grace our palace.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.41.15-16) में है; दृश्य की पंक्ति उसका कुछ अंश छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.41.15-16); the scene's line leaves out part of it.

सीता SITA

वाल्मीकि जीवन् न यदि तेऽभ्येति ग्रहणं मृगसत्तमः ।
अजिनं नरशार्दूल रुचिरं मे भविष्यति ।
निहतस्यास्य सत्त्वस्य जाम्बूनदमयत्वचि ।
शष्पवृष्यां विनीतायाम् इच्छाम्य् अहम् उपासितुम् ॥

TRANSLATION *If this finest of deer
does not come into your hands alive,
then, tiger among men,
its lovely skin shall be mine.
On the golden skin
of this creature, once it is slain,
spread on a seat of tender grass,
I wish to sit.*

लीला नरशार्दूल, यह जीवित न पकड़ा जाए, तो इसकी
सुंदर खाल तो रहेगी। नई घास पर बिछी उस
सुनहरी मृगछाला पर, मैं बैठना चाहती हूँ।

SUBTITLE If it cannot be caught alive,
its lovely skin remains.
I would sit on that golden hide,
spread over fresh grass.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.41.18-19) में है। प्रचलित पाठ में CrEd के “रुचिरं मे” (मेरी होगी) की जगह “रुचिरं तु” है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.41.18-19). The popular text reads ruciram tu for the CrEd's ruciram me, “will be mine”.

॥ 3.43.21 ॥
CrEd 3.41.20

सीता SITA

वाल्मीकि कामवृत्तम् इदं रौद्रं स्त्रीणाम् असदृशं मतम् ।
वपुषा त्व् अस्य सत्त्वस्य विस्मयो जनितो मम ॥

TRANSLATION *This self-willed wish is harsh,
held unfitting for women;
but the beauty of this creature
has filled me with wonder.*

लीला ऐसी मनमानी इच्छा कठोर मानी जाती है, स्त्री को
शोभा नहीं देती। पर इस प्राणी का रूप देखकर, मैं
अचरज से भर गई हूँ।

SUBTITLE A wilful wish like this
is thought harsh, unfit for a woman.
But the sight of it
fills me with wonder.

॥ 3.43.22-24 ॥
CrEd 3.41.21-22

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि पश्य लक्ष्मण वैदेह्याः स्पृहां मृगगताम् इमाम् ।
रूपश्रेष्ठतया ह्य एष मृगोऽद्य न भविष्यति ।
न वने नन्दनोद्देशे न चैत्ररथसंश्रये ।
कुतः पृथिव्यां सौमित्रे योऽस्य कश्चित् समो मृगः ॥

TRANSLATION *See, Lakshmana, this longing
of Vaidehi's, fixed upon the deer:
for the very excellence of its beauty,
this deer will not live past today.
Not in the forest, in the Nandana grove,
nor in the Chaitraratha garden,
much less on earth, Saumitri,
is there any deer its equal.*

लीला देखो लक्ष्मण, वैदेही इसे कितना चाहती है। ऐसा
मृग न इन्द्र के नन्दन वन में है, न कुबेर के चैत्ररथ
में। फिर धरती पर इसके जैसा कहाँ?

SUBTITLE Look, Lakshmana, how Vaidehi longs for it.
No deer like this lives
in Indra's garden or Kubera's.
How could its equal be on earth?

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.41.23-24) में है; दृश्य की पंक्ति उसका कुछ अंश छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.41.23-24); the scene's line leaves out part of it.

॥ 3.43.28 ॥
CrEd 3.41.26

राम R A M A

वाल्मीकि पश्यास्य जृम्भमाणस्य दीप्ताम् अग्निशिखोपमाम् ।
जिह्वां मुखान् निःसरन्तीं मेघाद् इव शतहृदाम् ॥

TRANSLATION *See, as it yawns,
its tongue, blazing,
like a tongue of flame, darts from its mouth,
like lightning from a cloud.*

लीला देखो, जम्हाई लेते हुए इसकी जीभ मुँह से निकलती
है, दमकती, आग की लौ-सी। जैसे बादल
से बिजली।

SUBTITLE *See, as it yawns,
its tongue flickers from its mouth
like a flame,
like lightning from a cloud.*

॥ 3.43.38 ॥
CrEd 3.41.36

राम R A M A

वाल्मीकि यदि वायं तथा यन् मां भवेद् वदसि लक्ष्मण ।
मायैषा राक्षसस्येति कर्तव्योऽस्य वधो मया ॥

TRANSLATION *Or if it is as you tell me,
Lakshmana, and it should be
a rakshasa's illusion,
then I must kill it.*

लीला और लक्ष्मण, यदि यह वैसा ही है जैसा तुम कहते
हो, यदि यह राक्षस की माया है, तो इसे मारना मेरा
धर्म है।

SUBTITLE *And if it is, as you say,
a rakshasa's trick,
then killing it is my duty.*

॥ 3.43.46b-
47a ॥
CrEd 3.41.44cd-
45ab

राम R A M A

वाल्मीकि इह त्वं भव संनद्धो यन्त्रितो रक्ष मैथिलीम् ।
अस्याम् आयत्तम् अस्माकं यत् कृत्यं रघुनन्दन ॥

TRANSLATION *Stay here, armed,
on guard, and protect Maithili;
on her depends
all we have to do, joy of the Raghus.*

लीला तुम यहीं रहो, शस्त्र लिए, चौकस। मैथिली की रक्षा
करो। हमारा जो भी काम है, सब उसी पर टिका है।

SUBTITLE *Stay here, armed and on guard,
and protect Sita.
Everything we must do
rests on her.*

॥ 3.43.51 ॥
CrEd 3.41.49

राम R A M A

वाल्मीकि प्रदक्षिणेनातिबलेन पक्षिणा जटायुषा बुद्धिमता च लक्ष्मण ।
भवाप्रमत्तः प्रतिगृह्य मैथिलीं प्रतिक्षणं सर्वत एव शङ्कितः ॥

TRANSLATION *With the bird Jatayu, kindly, very strong
and wise,
Lakshmana, stay watchful;
take charge of Maithili,
wary every moment, on every side.*

लीला लक्ष्मण, जटायु हितैषी हैं, बड़े बलवान हैं, बुद्धिमान
हैं। उनके साथ मिलकर मैथिली को सँभालना। हर
पल चौकस रहना, हर ओर से सावधान।

SUBTITLE *With Jatayu,
the kindly, mighty, wise bird,
keep Sita safe.
Watch every moment, every side.*

॥ 3.44.1 ॥
CrEd 3.42.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.1-3 ॥
CrEd 3.42.1-3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.4 ॥
CrEd 3.42.4

SILENT MOMENT मौन क्षण



The chase

Valmiki 3.44.3–27 (CrEd 3.42.3–21)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.44.4–8 ॥
CrEd 3.42.4–8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.9 ॥
CrEd 3.42.8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.9 ॥
CrEd 3.42.9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.10 ॥
CrEd 3.42.9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.13 ॥
CrEd 3.42.10

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.13–16 ॥
CrEd 3.42.10–13

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.17, 20–
21 ॥
CrEd 3.42.13ef, 15–
16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.44.19 ॥
CrEd 3.42.14

मारीच MARICHA

वाल्मीकि सट्टशं राघवस्यैव हा सीते लक्ष्मणेति च ॥

TRANSLATION *In a voice just like Raghava's:*
“*Ha Sita!*” and “*Ha Lakshmana!*”

लीला हा सीते! हा लक्ष्मण!

SUBTITLE Ha Sita!
Ha Lakshmana!

॥ 3.44.22 ॥
CrEd 3.42.17

॥ 3.44.23 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि मारीचस्य तु मायैषा पूर्वोक्तं लक्ष्मणेन तु ।
तत् तदा ह्य् अभवच् चाद्य मारीचोऽयं मया हतः ॥

TRANSLATION *This was Maricha's illusion,
as Lakshmana said before;
so it proved then, and today
this Maricha has been slain by me.*

लीला यह मारीच की माया थी, लक्ष्मण ने पहले ही कहा
था। वही हुआ। आज मेरे हाथों मारीच मारा गया।

SUBTITLE This was Maricha's trick,
just as Lakshmana said.
It has come true:
it is Maricha I have killed.

॥ 3.44.24-25 ॥
CrEd 3.42.18-19

राम R A M A

वाल्मीकि हा सीते लक्ष्मणेत् एवम् आक्रुश्य तु महास्वरम् ।
ममार राक्षसः सोऽयं श्रुत्वा सीता कथं भवेत् ।
लक्ष्मणश् च महाबाहुः काम् अवस्थां गमिष्यति ॥

TRANSLATION *Crying out with a great voice,
"Ha Sita! Ha Lakshmana!",
this rakshasa has died: hearing it,
how will Sita be?
And mighty-armed Lakshmana,
to what state will he come?*

लीला यह राक्षस ऊँचे स्वर में "हा सीते! हा लक्ष्मण!"
पुकारकर मरा है। यह सुनकर सीता का क्या हाल
होगा? और महाबाहु लक्ष्मण का क्या होगा?

SUBTITLE He died crying out,
"Ha Sita! Ha Lakshmana!"
What will become of Sita?
And of strong-armed Lakshmana?

॥ 3.44.25-26 ॥
CrEd 3.42.19-20

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.1 ॥
CrEd 3.43.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

Sita and Lakshmana

सीता और लक्ष्मण

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.45.1–40 (CrEd 3.43.1–37)

वन से राम की आवाज़ में एक पुकार आती है, और सीता लक्ष्मण से उनके पास दौड़ जाने को कहती हैं। लक्ष्मण मना करते हैं: राम को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता, और राम उन्हें लक्ष्मण के भरोसे छोड़ गए हैं। सीता के आरोपों से आहत होकर वे उन्हें वन के देवताओं को सौंपते हैं और चले जाते हैं।

A cry rings out from the forest in Rama's voice, and Sita begs Lakshmana to run to him. He refuses: no one can harm Rama, and Rama left her in his keeping. Stung by her charges, he commends her to the forest deities and goes.

१



PART 1 · भाग 1

The cry

Valmiki 3.45.1–16 (CrEd 3.43.1–14)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.45.1 ॥
CrEd 3.43.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.1 ॥
CrEd 3.43.1

सीता SITA

वाल्मीकि आर्तस्वरं तु तं भर्तुर् विज्ञाय सदृशं वने ।
उवाच लक्ष्मणं सीता गच्छ जानीहि राघवम् ॥

TRANSLATION *That cry of anguish, like her husband's voice,
she knew it, there in the forest;
and Sita said to Lakshmana:
"Go, find what has befallen Raghava."*

लीला जाओ! देखो, राघव को क्या हुआ है!

SUBTITLE Go! Find out
what has happened to Rama!

॥ 3.45.2-3a ॥
CrEd 3.43.2-3a

सीता SITA

वाल्मीकि न हि मे जीवितं स्थाने हृदयं वावतिष्ठते ।
क्रोशतः परमार्तस्य श्रुतः शब्दो मया भृशम् ।
आक्रन्दमानं तु वने भ्रातरं त्रातुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *My life does not keep its place,
nor does my heart stand still.
One crying out in utmost pain:
I have heard his voice, and loud.
Your brother cries out in the forest;
it is for you to save him.*

लीला मेरे प्राण, मेरा हृदय, अपनी जगह नहीं टिक रहे।
मैंने उन्हें बड़े दर्द में पुकारते सुना है। वन में तुम्हारे
भाई पुकार रहे हैं। उन्हें बचाओ!

SUBTITLE My heart won't stay in its place.
I heard him cry out in pain.
Your brother is calling in the forest.
Save him!

॥ 3.45.4b ॥
CrEd 3.43.4c

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.5 ॥
CrEd 3.43.5

॥ 3.45.5b-6a ॥
CrEd 3.43.5c-6a

SILENT MOMENT मौन क्षण

सीता SITA

वाल्मीकि सौमित्रे मित्ररूपेण भ्रातुस् त्वम् असि शत्रुवत् ।
यस् त्वम् अस्याम् अवस्थायां भ्रातरं नाभिपद्यसे ॥

TRANSLATION *Saumitri, in the form of a friend
you are your brother's enemy,
you who, in such a plight as this,
do not go to your brother's aid.*

लीला सौमित्र, तुम भाई के मित्र दिखते हो, पर हो शत्रु। वे
ऐसी विपदा में हैं, और तुम उनके पास नहीं जाते।

SUBTITLE Saumitri, you seem his friend,
but you are his enemy,
if you won't go to him
in his need.

॥ 3.45.6b–7a ॥

CrEd 3.43.6c

3.45.7a:
popular text
only · not in
the CrEd

सीता SITA

वाल्मीकि इच्छसि त्वं विनश्यन्तं रामं लक्ष्मण मत्कृते ।
लोभात् तु मत्कृतं नूनं नानुगच्छसि राघवम् ॥

TRANSLATION *You wish to see Rama perish,
Lakshmana, for my sake;
surely it is greed, for my sake,
that keeps you from following Raghava.*

लीला लक्ष्मण, तुम चाहते हो कि राम का विनाश हो, मेरे
कारण। मुझे पाने के लोभ में ही तुम उनके पीछे
नहीं जाते।

SUBTITLE You want Rama destroyed,
Lakshmana, because of me.
It is desire for me
that keeps you from him.

दूसरी पंक्ति (3.45.7a), लोभ का आरोप, केवल प्रचलित पाठ में है। CrEd में इसकी जगह यह आता है: “मुझे लगता है, उनकी विपदा तुम्हें प्रिय है; तुम्हें अपने भाई से प्रेम नहीं है” (3.43.7a)।

The second half (3.45.7a), the charge of greed, is the popular text's. The CrEd goes on instead:
“I think his ruin is dear to you; you have no love for your brother” (3.43.7a).

popular text only · not in the CrEd 3.45.7a

“It is desire for me that keeps you from following him” (3.45.7a) is the popular text's; the CrEd has her charge only that he wants Rama destroyed (3.43.6).

॥ 3.45.9b–10a ॥

CrEd 3.43.9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.11b-13a ॥
CrEd 3.43.10-11

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि देवि देवमनुष्येषु गन्धर्वेषु पतत्रिषु ।
राक्षसेषु पिशाचेषु किंनरेषु मृगेषु च ।
दानवेषु च घोरेषु न स विद्येत शोभने ।
यो रामं प्रतियुध्येत समरे वासवोपमम् ॥

TRANSLATION *Lady, among gods and men,
among gandharvas and birds,
rakshasas and pishachas,
kinnaras and beasts,
and the terrible danavas,
there is none, O lovely one,
who could fight back against Rama,
Indra's equal in battle.*

लीला देवी, देवता, मनुष्य, गन्धर्व, पक्षी, राक्षस, पिशाच,
किन्नर, पशु, भयानक दानव, इनमें कोई ऐसा नहीं
जो रण में राम से लड़ सके। राम इन्द्र जैसे हैं।

SUBTITLE Among gods and men,
rakshasas, beasts and fearsome danavas,
there is none who could fight Rama,
Indra's equal.

॥ 3.45.13b-14a ॥
CrEd 3.43.12

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि अवध्यः समरे रामो नैवं त्वं वक्तुम् अर्हसि ।
न त्वाम् अस्मिन् वने हातुम् उत्सहे राघवं विना ॥

TRANSLATION *Rama cannot be slain in battle;
you should not speak this way.
I cannot bring myself to leave you
in this forest, with Raghava gone.*

लीला राम को रण में कोई मार नहीं सकता। आप ऐसा
न कहिए। उनके बिना मैं आपको इस वन में छोड़
नहीं सकता।

SUBTITLE Rama cannot be killed in battle.
You must not speak so.
And I cannot leave you
in this forest without him.

॥ 3.45.15b-16a ॥
CrEd 3.43.14

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि हृदयं निर्वृतं तेऽस्तु संतापस् त्यज्यताम् अयम् ।
आगमिष्यति ते भर्ता शीघ्रं हत्वा मृगोत्तमम् ॥

TRANSLATION *Let your heart be at peace;
let this burning grief be put away.
Your husband will soon return,
when he has slain that finest deer.*

लीला आपका मन शांत हो। यह दुख छोड़िए। उस
अनोखे मृग को मारकर आपके पति जल्दी
लौट आएँगे।

SUBTITLE Let your heart be at peace.
Put this grief away.
Your husband will soon be back,
when he has killed the deer.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.43.14) में है; दृश्य की पंक्ति में “अयम्” (यह) शब्द छूटा है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.43.14); the scene's line leaves out the word
ayam, “this”.

॥ 3.45.15b-16a ॥
CrEd 3.43.14

SILENT MOMENT मौन क्षण



The forest deities

Valmiki 3.45.16–40 (CrEd 3.43.15–37)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.45.16b–17a ॥
CrEd 3.43.15

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि न स तस्य स्वरो व्यक्तं न कश्चिद् अपि दैवतः ।
गन्धर्वनगरप्रख्या माया सा तस्य रक्षसः ॥

TRANSLATION *That was plainly not his voice,
nor was it any god's;
like a city of the gandharvas,
it was that rakshasa's illusion.*

लीला साफ़ है, वह उनकी आवाज़ नहीं थी, किसी देवता
की भी नहीं। यह उसी राक्षस की माया है, गन्धर्व-
नगर जैसी झूठी।

SUBTITLE That was not his voice,
nor any god's.
It is that rakshasa's trick,
unreal as a city in the clouds.

॥ 3.45.17b–18a ॥
CrEd 3.43.16

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि न्यासभूतासि वैदेहि न्यस्ता मयि महात्मना ।
रामेण त्वं वरारोहे न त्वां त्यक्तुम् इहोत्सहे ॥

TRANSLATION *You are a trust, Vaidehi,
placed in my keeping by great-souled
Rama; O lady of fair form,
I cannot bring myself to leave you here.*

लीला वैदेही, महात्मा राम आपको धरोहर बनाकर
मुझे सौंप गए हैं। मैं आपको यहाँ छोड़कर नहीं
जा सकता।

SUBTITLE Vaidehi, great-hearted Rama
left you in my keeping,
as a trust.
I cannot leave you here.

॥ 3.45.20 ॥
CrEd 3.43.19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.21b–
22a ॥
CrEd 3.43.20

सीता SITA

वाल्मीकि अनार्य करुणारम्भ नृशंस कुलपांसन ।
अहं तव प्रियं मन्ये रामस्य व्यसनं महत् ॥

TRANSLATION *Ignoble one, pitiless in your deeds,
cruel one, disgrace to your house!
I think that Rama's great disaster
is a thing dear to you.*

लीला अनार्य! निर्दयी! क्रूर! कुलकलंक! मैं समझ गई, राम
पर बड़ी विपदा आए, यही तुम्हें प्यारा है।

SUBTITLE Ignoble! Pitiless!
Cruel shame of your family!
I think Rama's ruin
is what you want.

CrEd में दूसरी पंक्ति यह है: “मुझे लगता है, तुम मुझे चाहते हो; इसीलिए ऐसी बातें कहते हो” (3.43.20cd)।

In the CrEd the second half reads: “I think I am the one you want; that is why you say these things” (3.43.20cd).

॥ 3.45.24 ॥
CrEd 3.43.22

सीता SITA

वाल्मीकि सुदुष्टस् त्वं वने रामम् एकम् एकोऽनुगच्छसि ।
मम हेतोः प्रतिच्छन्नः प्रयुक्तो भरतेन वा ॥

TRANSLATION *Utterly wicked, you followed Rama
into the forest, you alone, him alone,
for my sake, with your purpose hidden,
or else set on by Bharata.*

लीला तुम बड़े दुष्ट हो! अकेले राम के पीछे तुम अकेले वन
में आए, मन की बात छिपाकर, मेरे लिए। या फिर
भरत ने तुम्हें भेजा है।

SUBTITLE Wicked one! You followed Rama
alone into the forest,
for my sake, hiding your aim,
or sent by Bharata.

॥ 3.45.25–26a ॥

CrEd 3.43.23

3.45.25a:
popular text
only · not in
the CrEd

सीता SITA

वाल्मीकि तन् न सिद्ध्यति सौमित्रे तवापि भरतस्य वा ।
कथम् इन्दीवरश्यामं रामं पद्मनिभेक्षणम् ।
उपसंश्रित्य भर्तारं कामयेयं पृथग् जनम् ॥

TRANSLATION *That shall not come to pass, Saumitri,
for you, nor yet for Bharata.
How could I, who have Rama,
dark as the blue lotus, lotus-eyed,
for my husband and my refuge,
desire some common man?*

लीला यह चाल न तुम्हारी चलेगी, न भरत की।
नीलकमल-से साँवले, कमलनयन राम मेरे पति
हैं। उनकी होकर मैं किसी साधारण पुरुष को
कैसे चाहूँ?

SUBTITLE It will not work,
for you or for Bharata.
Married to lotus-eyed Rama,
how could I want a common man?

पहली पंक्ति (3.45.25a) केवल प्रचलित पाठ में है; बाकी CrEd में 3.43.23 है।

The first half (3.45.25a) is the popular text's; the rest is in the CrEd as 3.43.23.

popular text only · not in the CrEd 3.45.25a

"It will not succeed, for you or for Bharata" (3.45.25a) is the popular text's; the CrEd has the rest of her answer (3.43.23).

॥ 3.45.27b–28a ॥

CrEd 3.43.25

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.28b ॥
CrEd 3.43.26ab

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि उत्तरं नोत्सहे वक्तुं दैवतं भवती मम ॥

TRANSLATION *I cannot bring myself to answer;
you are a deity to me.*

लीला मैथिली, मुझसे आपको उत्तर देते नहीं बनता। आप मेरे लिए देवी हैं।

SUBTITLE I cannot bring myself
to answer you, Maithili.
To me you are a goddess.

॥ 3.45.29–30a ॥

CrEd 3.43.26cd–27

condensed
from 3.45.29–
30a

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि वाक्यम् अप्रतिरूपं तु न चित्रं स्त्रीषु मैथिलि ।
स्वभावस् त्व एष नारीणाम् एषु लोकेषु दृश्यते ।
विमुक्तधर्माश् चपलास् तीक्ष्णा भेदकराः स्त्रियः ॥

TRANSLATION *Unfitting words are no wonder
in women, Maithili;
this is the nature of women,
seen throughout these worlds:
loosed from dharma, fickle,
sharp, are women, sowers of discord.*

लीला स्त्रियों के मुँह से ऐसी अनुचित बात, कोई अचरज
नहीं। उनका स्वभाव ही ऐसा है। धर्म से दूर, चंचल,
तीखी, फूट डालने वाली।

SUBTITLE Unfitting words from women
are no wonder.
That is their nature:
loosed from dharma, fickle, sharp, divisive.

लक्ष्मण क्रोध में बोल रहे हैं, और वाल्मीकि उनकी बात पूरी देते हैं। संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.43.26cd–27) में है; दृश्य की पंक्ति दोनों श्लोकों को जोड़ती है और “इन लोकों में दिखता है” छोड़ देती है।

Lakshmana speaks in anger, and Valmiki gives his words in full. The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.43.26cd–27); the scene's line joins the two verses and leaves out “seen in these worlds”.

॥ 3.45.32b-
33a ॥
CrEd 3.43.29

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि धिक् त्वाम् अद्य प्रणश्यन्तीं यन् माम् एवं विशङ्कसे ।
स्त्रीत्वाद् दुष्टस्वभावेन गुरुवाक्ये व्यवस्थितम् ॥

TRANSLATION *Shame on you, who are lost today,
that you suspect me so,
from a woman's evil nature,
me, who stand by my elder's word.*

लीला धिक्कार है आप पर! आप विनाश की ओर जा रही
हैं। मैं बड़े भाई की आज्ञा पर डटा हूँ, और आप स्त्री
के दुष्ट स्वभाव से मुझ पर ऐसा शक करती हैं।

SUBTITLE Shame on you, bound for ruin!
You suspect me
from a woman's wicked nature,
though I keep my elder's word.

प्रचलित पाठ में “प्रणश्यन्तीम्” (विनाश की ओर जाती हुई) है; CrEd में “प्रणश्य त्वम्” (तुम नष्ट हो जाओ) है (3.43.29)।

The popular text reads praṇaśyantīm, “you who are heading for ruin”; the CrEd reads praṇaśya tvam, “may you perish” (3.43.29).

॥ 3.45.33b-
34a ॥
CrEd 3.43.30

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि गमिष्ये यत्र काकुत्स्थः स्वस्ति तेऽस्तु वरानने ।
रक्षन्तु त्वां विशालाक्षि समग्रा वनदेवताः ॥

TRANSLATION *I will go where Kakutstha is.
May it be well with you, fair-faced one.
May they guard you, wide-eyed lady,
all the deities of the forest.*

लीला मैं वहाँ जाता हूँ, जहाँ राम हैं। आपका भला हो। वन
के सारे देवता आपकी रक्षा करें।

SUBTITLE I am going where Rama is.
May all be well with you.
May all the forest deities
protect you.

॥ 3.45.34b-c ॥
CrEd 3.43.31

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि निमित्तानि हि घोराणि यानि प्रादुर्भवन्ति मे ।
अपि त्वां सह रामेण पश्येयं पुनर् आगतः ॥

TRANSLATION *For the omens that rise before me
are terrible indeed.
Will I see you with Rama
when I come back again?*

लीला मुझे भयानक अपशकुन दिख रहे हैं। क्या लौटकर
मैं आपको फिर राम के साथ देख पाऊँगा?

SUBTITLE Terrible omens rise before me.
Will I come back
and see you again
with Rama?

॥ 3.45.35 ॥
CrEd 3.43.32

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.36 ॥
CrEd 3.43.33

सीता SITA

वाल्मीकि गोदावरीं प्रवेक्ष्यामि हीना रामेण लक्ष्मण ।
आबन्धिष्येऽथवा त्यक्ष्ये विषमे देहम् आत्मनः ॥

TRANSLATION *Into the Godavari I will go,
bereft of Rama, Lakshmana;
or I will hang myself, or cast away
my body from some rugged height.*

लीला लक्ष्मण, राम के बिना मैं गोदावरी में समा जाऊँगी।
या फाँसी लगा लूँगी। या किसी ऊँचाई से कूदकर
जान दे दूँगी।

SUBTITLE Without Rama, Lakshmana,
I will go into the Godavari,
or hang myself,
or throw myself from a height.

प्रचलित पाठ में “हीना रामेण” (राम से बिछुड़ी) है; CrEd में “विना रामेण” (राम के बिना) है (3.43.33)।

The popular text reads hīnā rāmeṇa, “bereft of Rama”; the CrEd reads vinā rāmeṇa, “without Rama” (3.43.33).

॥ 3.45.37 ॥
CrEd 3.43.34

सीता SITA

वाल्मीकि पिबामि वा विषं तीक्ष्णं प्रवेक्ष्यामि हुताशनम् ।
न त्व् अहं राघवाद् अन्यं कदापि पुरुषं स्पृशे ॥

TRANSLATION *Or I will drink sharp poison,
or I will enter the fire;
but never will I touch
any man but Raghava.*

लीला या तीखा विष पी लूँगी, या आग में उतर जाऊँगी।
पर राघव के सिवा किसी और पुरुष को मैं कभी
नहीं छुऊँगी।

SUBTITLE Or I will drink sharp poison,
or walk into fire.
But I will never touch
any man but Rama.

प्रचलित पाठ में “कदापि” (कभी भी) है; CrEd में “पदापि” (पैर से भी नहीं) है (3.43.34)।

The popular text reads kadāpi, “ever”; the CrEd reads padāpi, “not even with my foot” (3.43.34).

॥ 3.45.38 ॥
CrEd 3.43.35

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.39 ॥
CrEd 3.43.36

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.40 ॥
CrEd 3.43.37

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.45.40 ॥
CrEd 3.43.37

SILENT MOMENT मौन क्षण

In other Hindu scriptures

♦ The line on the ground (Lakshman Rekha)

Ananda Ramayana, Sara 7.98–106; Tulsidas, Ramcharitmanas 6.35.1 · not in Valmiki

Valmiki: Lakshmana commends her to the forest deities and goes (CrEd 3.43.30, 37)

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

The ascetic at the door

द्वार पर तपस्वी

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.46.1–3.49.22 (CrEd 3.44.1–3.47.21)

रावण एक भिक्षु ब्राह्मण के वेश में सूनी कुटिया पर आता है, और सीता अतिथि का सत्कार करते हुए उसे आसन और जल देती हैं और अपना परिचय देती हैं। वह अपना नाम बताता है और उन्हें अपनी पटरानी बनने को कहता है; सीता उसे सिंहनी को चाहने वाला सियार कहकर धिक्कारती हैं। वह अपना भयानक असली रूप धरकर उन्हें पकड़ लेता है, और सीता राम को पुकारती हैं।

Ravana comes to the empty hut in the guise of a wandering brahmin, and Sita, honouring a guest, gives him a seat and water and tells him who she is. He names himself and asks her to be his chief queen; she scorns him as a jackal reaching for a lioness. He takes his own fearsome form and seizes her, and she cries out for Rama.

१



PART 1 · भाग 1

The guest at the door

Valmiki 3.46–3.48.1 (CrEd 3.44–3.46.1)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.46.11 ॥
CrEd 3.44.11

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.46.6-7 ॥
CrEd 3.44.6-7

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.46.10 ॥
CrEd 3.44.10

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.46.12 ॥
CrEd 3.44.12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.46.16 ॥
CrEd 3.44.15

रावण RAVANA

वाल्मीकि का त्वं काञ्चनवर्णाभे पीतकौशेयवासिनि कमलानां शुभां
मालां पद्मिनीव च बिभ्रती ॥

TRANSLATION *Who are you, with the gleam of gold,
clad in yellow silk,
wearing a lovely garland of lotuses,
like a lotus pool?*

लीला सोने-सी दमक, पीला रेशम, गले में कमलों की
माला, जैसे खिला हुआ कमल-ताल। आप कौन हैं?

SUBTITLE Who are you, bright as gold,
in yellow silk,
garlanded with lotuses
like a lotus pool?

॥ 3.46.24b-
25a ॥
CrEd 3.44.23

रावण RAVANA

वाल्मीकि सा प्रतिक्राम भद्रं ते न त्वं वस्तुम् इहार्हसि राक्षसानाम् अयं
वासो घोराणां कामरूपिणाम् ॥

TRANSLATION *So turn back, and blessings on you;
you should not dwell here.
This is the home of rakshasas,
fearsome, taking what form they will.*

लीला लौट जाइए, आपका भला हो। यह जगह आपके
रहने की नहीं। यहाँ भयानक राक्षस रहते हैं, जो जब
चाहें, जो रूप धर लें।

SUBTITLE Turn back, and bless you.
You should not live here.
This is the home of rakshasas
who take any shape they please.

॥ 3.46.33 ॥
CrEd 3.44.31

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.46.36 ॥
CrEd 3.44.34

सीता SITA

वाल्मीकि इयं बृसी ब्राह्मण कामम् आस्यताम् इदं च पाद्यं
प्रतिगृह्यताम् इति ॥

TRANSLATION “Here is a seat, brahmin; sit as you please,
and here, accept this water for your feet.”

लीला ब्राह्मण, यह आसन है, आराम से बैठिए। और पाँव
धोने को यह जल लीजिए।

SUBTITLE Brahmin, here is a seat of grass.
Sit as you please.
And here is water for your feet.

यहाँ श्लोक की पहली पंक्ति दी गई है; दूसरी पंक्ति में वे उसे उसके लिए तैयार वन का भोजन देती हैं।

The Sanskrit shown is the verse's first half; in the second half she offers him the forest food
made ready for him.

॥ 3.46.37 ॥
CrEd 3.44.35

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.46.38 ॥
CrEd 3.44.36

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.47.2 ॥
CrEd 3.45.2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.47.3 ॥
CrEd 3.45.3

सीता SITA

वाल्मीकि दुहिता जनकस्याहं मैथिलस्य महात्मनः सीता नाम्नास्मि भद्रं
ते रामस्य महिषी प्रिया ॥

TRANSLATION *I am the daughter of Janaka,
the great-souled lord of Mithila;
Sita is my name, blessings on you,
Rama's beloved queen.*

लीला मैं मिथिला के महाराज जनक की बेटी हूँ। मेरा
नाम सीता है। मैं राम की प्रिय रानी हूँ। आपका
भला हो।

SUBTITLE I am the daughter of Janaka,
king of Mithila.
My name is Sita,
Rama's beloved queen.

प्रचलित पाठ में “रामस्य महिषी प्रिया” (राम की प्रिय पटरानी) है; CrEd में “रामभार्या द्विजोत्तम” (हे श्रेष्ठ ब्राह्मण, राम की पत्नी) है (3.45.3)।

The popular text reads *rāmasya mahiṣī priyā*, “Rama's beloved chief queen”; the CrEd reads *rāmabhāryā dvijottama*, “Rama's wife, best of brahmins” (3.45.3).

॥ 3.47.17b–18a ॥
CrEd 3.45.15

सीता SITA

वाल्मीकि दद्यान् न प्रतिगृह्णीयात् सत्यं ब्रूयान् न चानृतम् एतद् ब्राह्मण
रामस्य व्रतं ध्रुवम् अनुत्तमम् ॥

TRANSLATION *He would give, and never take;
he would speak the truth, and never a lie:
this, brahmin, is Rama's vow,
firm and unsurpassed.*

लीला ब्राह्मण, राम का व्रत अटल है। राम देते हैं, लेते
नहीं। राम सच बोलते हैं, झूठ नहीं।

SUBTITLE Brahmin, this is Rama's vow:
he gives, and never takes.
He speaks the truth,
never a lie.

॥ 3.47.22b-23 ॥

CrEd 3.45.19

3.47.23:
popular text
only · not in
the CrEd

सीता SITA

वाल्मीकि समाश्वस मुहूर्तं तु शक्यं वस्तुम् इह त्वया आगमिष्यति मे
भर्ता वन्यम् आदाय पुष्कलम् ॥

TRANSLATION *Take heart a moment;
you may stay here.
My husband will come,
bringing forest food in plenty.*

लीला थोड़ा सुस्ता लीजिए, आप यहाँ ठहर सकते हैं।
मेरे पति बस आते ही होंगे, वन से ढेर सारे फल-
मूल लेकर।

SUBTITLE Rest a while; you may stay.
My husband will soon be back
with plenty of forest food.

प्रचलित पाठ आगे (3.47.23) उस शिकार की बात करता है जो वे लाएँगे; वह अंश CrEd में नहीं है और यहाँ नहीं दिया गया। यहाँ दी गई संस्कृत CrEd का 3.45.19 है।

The popular text goes on (3.47.23) to the game he will bring; that part is not in the CrEd and is not shown. The Sanskrit shown is the CrEd's 3.45.19.

॥ 3.47.24 ॥

CrEd 3.45.20

सीता SITA

वाल्मीकि स त्वं नाम च गोत्रं च कुलम् आचक्ष्व तत्त्वतः एकश् च
दण्डकारण्ये किमर्थं चरसि द्विज ॥

TRANSLATION *So tell me truly your name,
your gotra and your family;
and why, twice-born, do you wander
alone in the Dandaka forest?*

लीला अब सच-सच बताइए, आपका नाम क्या है, गोत्र
क्या है, कुल क्या है? ब्राह्मण, इस दण्डक वन में
आप अकेले क्यों घूम रहे हैं?

SUBTITLE Now tell me truly, brahmin:
your name, your clan, your family.
Why do you wander alone
in the Dandaka forest?

॥ 3.47.26 ॥
CrEd 3.45.22

रावण RAVANA

वाल्मीकि येन वित्रासिता लोकाः सदेवासुरमानुषाः अहं स रावणो नाम
सीते रक्षोगणेश्वरः ॥

TRANSLATION *He by whom the worlds are terrified,
gods and asuras and men:
I am he, Ravana by name,
Sita, lord of the rakshasa hosts.*

लीला सीते, जिसके नाम से देवता, असुर और मनुष्य,
तीनों लोक काँपते हैं, मैं वही रावण हूँ, राक्षसों
का राजा।

SUBTITLE Sita, I am the one
who terrifies gods, asuras and men.
I am Ravana,
lord of the rakshasas.

प्रचलित पाठ में “सदेवासुरमानुषाः” (देवता, असुर और मनुष्य) है; CrEd में “सदेवासुरपन्नगाः” (देवता, असुर और नाग) है (3.45.22)।

The popular text reads sadevāsuraṁ mānuṣāḥ, “gods, asuras and men”; the CrEd reads sadevāsuraṁ pannaḡāḥ, “gods, asuras and serpents” (3.45.22).

॥ 3.47.26 ॥
CrEd 3.45.22

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.47.28 ॥
CrEd 3.45.24

रावण RAVANA

वाल्मीकि बह्वीनाम् उत्तमस्त्रीणाम् आहृतानाम् इतस् ततः सर्वासाम् एव
भद्रं ते ममाग्रमहिषी भव ॥

TRANSLATION *Of the many finest women
brought here from every side,
of all of them, blessings on you,
be my chief queen.*

लीला इधर-उधर से मैं कितनी ही सुंदर स्त्रियाँ उठा
लाया हूँ। उन सबमें तुम सबसे ऊपर रहोगी। मेरी
पटरानी बनो।

SUBTITLE Of all the fine women
I have carried off, far and near,
you shall be first.
Be my chief queen.

॥ 3.47.33 ॥
CrEd 3.45.29

सीता SITA

वाल्मीकि महागिरिम् इवाकम्प्यं महेन्द्रसदृशं पतिम् महोदधिम्
इवाक्षोभ्यम् अहं रामम् अनुव्रता ॥

TRANSLATION *Unshakable as a great mountain,
the equal of great Indra,
unruffled as the great ocean:
to Rama, my husband, I am vowed.*

लीला मैं राम की हूँ, केवल राम की। जो पर्वत-से अडिग
हैं, इन्द्र-से तेजस्वी, और सागर-से अथाह।

SUBTITLE I belong to Rama:
unshakable as a mountain,
equal to Indra,
unmoved as the ocean.

॥ 3.47.37 ॥
CrEd 3.45.32

सीता SITA

वाल्मीकि त्वं पुनर् जम्बुकः सिंहीं माम् इहेच्छसि दुर्लभाम् नाहं शक्या
त्वया स्प्रष्टुम् आदित्यस्य प्रभा यथा ॥

TRANSLATION *And you, a jackal, want me here,
a lioness, beyond your reach?
I can no more be touched by you
than the light of the sun.*

लीला और तू, सियार होकर, सिंहनी चाहता है? सूरज
की रोशनी को कोई छू सकता है? तू मुझे भी नहीं
छू सकता।

SUBTITLE You, a jackal,
want me, a lioness?
You can no more touch me
than the light of the sun.

॥ 3.47.48 ॥
CrEd 3.45.43

सीता SITA

वाल्मीकि तस्मिन् सहस्राक्षसमप्रभावे रामे स्थिते कार्मुकबाणपाणौ
हतापि तेऽहं न जरां गमिष्ये वज्रं यथा मक्षिकयावगीर्णम् ॥

TRANSLATION *While Rama stands, in power like the
Thousand-eyed,
his bow and arrows in his hand,
though you carry me off, you will never digest me,
as a fly cannot digest the diamond it swallows.*

लीला जब तक राम धनुष-बाण लिए खड़े हैं, तू मुझे उठा
भी ले जाए, तो पचा नहीं पाएगा। जैसे मक्खी हीरा
निगल तो ले, पर पचा न सके।

SUBTITLE While Rama stands with his bow,
carry me off if you can.
You will never digest me,
as a fly can't a diamond.

॥ 3.47.49 ॥
CrEd 3.45.44

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.48.1 ॥
CrEd 3.46.1

SILENT MOMENT मौन क्षण



PART 2 · भाग 2

The true form

Valmiki 3.48–3.49.22 (CrEd 3.46–3.47.21)

॥ 3.48.4-6 ॥

CrEd 3.46.4-6

condensed
from 3.48.4-6

रावण RAVANA

वाल्मीकि येन वैश्रवणो भ्राता वैमात्रः कारणान्तरे ।
 द्वन्द्वम् आसादितः क्रोधाद् रणे विक्रम्य निर्जितः ।
 मद्भयार्तः परित्यज्य स्वम् अधिष्ठानम् ऋद्धिमत् ।
 कैलासं पर्वतश्रेष्ठम् अध्यास्ते नरवाहनः ।
 यस्य तत् पुष्पकं नाम विमानं कामगं शुभम् ।
 वीर्याद् आवर्जितं भद्रे येन यामि विहायसं ॥

TRANSLATION *I am he who, for a certain cause,
 met my half-brother Vaishravana
 in single combat, in anger,
 and beat him in battle by my valour.
 Stricken with fear of me, he left
 his own rich seat;
 on Kailasa, best of mountains,
 he dwells now, he whom men carry.
 His fine chariot named Pushpaka,
 that goes wherever one wishes,
 I won by my strength, good lady;
 in it I travel the sky.*

लीला कुबेर, मेरा सौतेला भाई। रण में मैंने उसे हराया,
 और उसका पुष्पक, मन चाहे जहाँ उड़ने वाला
 विमान, अपने बल से छीन लिया।

SUBTITLE I fought my brother Kubera
 and beat him.
 His Pushpaka, the flying chariot,
 I took by my valour.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.46.4–6) में है; दृश्य की पंक्ति तीनों श्लोकों को छोटा करती है। वैश्रवण कुबेर हैं।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.46.4–6); the scene's line shortens the three verses. Vaishravana is Kubera.

॥ 3.48.16 ॥
CrEd 3.46.16

रावण RAVANA

वाल्मीकि तेन किं भ्रष्टराज्येन रामेण गतचेतसा करिष्यसि विशालाक्षि
तापसेन तपस्विना ॥

TRANSLATION *What will you do with Rama,
fallen from his kingdom, his spirit gone,
wide-eyed one, a hermit,
and a wretched one?*

लीला विशालाक्षी, उस राम का क्या करोगी? राज छिन
गया, मन टूट गया, बस एक बेचारा तपस्वी रह
गया है।

SUBTITLE Wide-eyed one,
what will you do with Rama?
His kingdom lost, his spirit broken,
a poor ascetic.

॥ 3.48.20 ॥
CrEd 3.46.19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.48.21 ॥
CrEd 3.46.20

सीता SITA

वाल्मीकि कथं वैश्रवणं देवं सर्वदेवनमस्कृतम् भ्रातरं व्यपदिश्य त्वम्
अशुभं कर्तुम् इच्छसि ॥

TRANSLATION *How, naming as your brother
the god Vaishravana,
to whom all the gods bow,
can you wish to do this evil?*

लीला जिन कुबेर को सारे देवता पूजते हैं, उन्हें तू
अपना भाई कहता है, और फिर ऐसा पाप करना
चाहता है?

SUBTITLE Kubera, whom all the gods revere,
you call your brother,
and yet you would do
this wicked thing?

प्रचलित पाठ में “सर्वदेवनमस्कृतम्” (सब देवताओं से पूजित) है; CrEd में “सर्वभूतनमस्कृतम्” (सब प्राणियों से पूजित) है (3.46.20)।

The popular text reads sarvadevanamaskṛtam, “revered by all the gods”; the CrEd reads sarvabhūtanamaskṛtam, “revered by all beings” (3.46.20).

॥ 3.48.23 ॥
CrEd 3.46.22

सीता SITA

वाल्मीकि अपहृत्य शचीं भार्या शक्यम् इन्द्रस्य जीवितुम् न तु रामस्य
भार्या माम् अपनीयास्ति जीवितम् ॥

TRANSLATION *One might carry off Shachi,
the wife of Indra, and live;
but having taken me away,
Rama's wife, there is no life.*

लीला इन्द्र की पत्नी शची को हर ले, तो शायद कोई जी
भी जाए। पर राम की पत्नी को हर ले, तो कोई
जीवित नहीं बचेगा।

SUBTITLE Steal Shachi, Indra's wife,
and a man might live.
Steal Rama's wife,
and no one lives.

॥ 3.49.1 ॥
CrEd 3.47.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.3 ॥
CrEd 3.47.3

रावण RAVANA

वाल्मीकि उद्धहेयं भुजाभ्यां तु मेदिनीम् अम्बरे स्थितः आपिबेयं समुद्रं च
मृत्युं हन्यां रणे स्थितः ॥

TRANSLATION *Standing in the sky, I could lift
the earth with my two arms;
I could drink up the ocean,
and, standing in battle, slay Death.*

लीला आकाश में खड़ा होकर मैं इन भुजाओं से धरती
उठा लूँ। समुद्र पी जाऊँ। रण में मौत को भी
मार डालूँ।

SUBTITLE *Standing in the sky,
I could lift the earth in my arms,
drink the ocean dry,
and kill Death in battle.*

॥ 3.49.5 ॥
CrEd 3.47.5

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.6 ॥
CrEd 3.47.6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.6–9 ॥
CrEd 3.47.6–9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.11 ॥
CrEd 3.47.11

रावण RAVANA

वाल्मीकि त्रिषु लोकेषु विख्यातं यदि भर्तारम् इच्छसि माम् आश्रय
वरारोहे तवाहं सदृशः पतिः ॥

TRANSLATION *If you want a husband
famed in the three worlds,
turn to me, lovely lady;
I am a husband fit for you.*

लीला तीनों लोकों में जिसका नाम हो, ऐसा पति चाहिए?
तो मेरे पास आओ, सुंदरी। तुम्हारे योग्य पति मैं
ही हूँ।

SUBTITLE *If you want a husband
famed in the three worlds,
turn to me, lady.
I am the one worthy of you.*

॥ 3.49.15-18 ॥
CrEd 3.47.15-17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.19 ॥
CrEd 3.47.18

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.21 ॥
CrEd 3.47.20

सीता SITA

वाल्मीकि सा गृहीतातिचुक्रोश रावणेन यशस्विनी रामेति सीता दुःखार्ता
रामं दूरगतं वने ॥

लीला राम!

SUBTITLE Rama!

TRANSLATION *Seized by Ravana, she cried aloud,
the glorious one, "Rama!",
Sita, stricken with grief,
to Rama, gone far into the forest.*

॥ 3.49.21 ॥
CrEd 3.47.20

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.22 ॥
CrEd 3.47.21

SILENT MOMENT मौन क्षण

In other Hindu scriptures

♦ A shadow was taken, not Sita

Tulsidas, Ramcharitmanas 3.23.1–2 · not in Valmiki

Valmiki: Ravana seizes Sita herself, by the hair and thighs (CrEd 3.47.15–16)

♦ He carried the ground she stood on

Kamban, Ramavataram, Aranya, Iravanan Soolchi 72–73 · not in Valmiki

Valmiki: Ravana seizes Sita herself, by the hair and thighs (CrEd 3.47.15–16)

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

Jatayu wakes

जटायु जागते हैं

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.49.23–3.51.20 (CrEd 3.47.22–3.49.16)

आकाश में ले जाई जाती सीता लक्ष्मण को, गोदावरी को और वन को पुकारती हैं, और बूढ़े गिद्ध जटायु से राम को खबर देने को कहती हैं। जटायु जागते हैं, रावण को चेताते हैं कि धर्म पर चलने वाला कोई राजा पराई स्त्री को हाथ नहीं लगाता, और उसे ललकारते हैं। वे रावण का रथ तोड़कर उसे धरती पर गिरा देते हैं, और सारे प्राणी “धन्य, धन्य” कह उठते हैं।

Carried through the sky, Sita cries out to Lakshmana, to the Godavari and to the forest, and calls on the old vulture Jatayu to tell Rama. Jatayu wakes, warns Ravana that no king who keeps dharma lays hands on another man's wife, and challenges him. He smashes Ravana's chariot and throws him to the ground, and all beings cry “well done”.

१



PART 1 · भाग 1

Jatayu wakes

Valmiki 3.49.23–3.51.20 (CrEd 3.47.22–3.49.16)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.49.23 ॥
CrEd 3.47.22

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.24 ॥
CrEd 3.47.23

सीता SITA

वाल्मीकि हा लक्ष्मण महाबाहो गुरुचित्तप्रसादक हियमाणां न जानीषे
रक्षसा कामरूपिणा ॥

TRANSLATION *Ah, Lakshmana, mighty-armed,
you who gladden your elder's heart,
you do not know I am carried off
by a rakshasa who takes any form he will.*

लीला हा लक्ष्मण! महाबाहु, बड़े भाई का मन रखने वाले!
तुम नहीं जानते, रूप बदलने वाला एक राक्षस मुझे
उठाए ले जा रहा है।

SUBTITLE Ah, Lakshmana, strong-armed,
always pleasing your elder!
A shape-changing rakshasa is carrying
me off,
and you don't know!

॥ 3.49.31 ॥
CrEd 3.47.31

सीता SITA

वाल्मीकि हंससारससंघुष्टां वन्दे गोदावरीं नदीम् क्षिप्रं रामाय शंस त्वं
सीतां हरति रावणः ॥

TRANSLATION *I bow to the river Godavari,
ringing with swans and cranes:
quickly, tell Rama
that Ravana is carrying off Sita.*

लीला हंसों और सारसों से गूँजती गोदावरी, तुम्हें प्रणाम!
राम से जल्दी कहना, रावण सीता को उठाए ले जा
रहा है।

SUBTITLE River Godavari, I bow to you,
loud with swans and cranes.
Tell Rama quickly:
Ravana is carrying off Sita!

हमारी पंक्ति की संस्कृत में “शंस त्वम्” (तुम कहना), केवल नदी से, है; CrEd में “शंसध्वम्” (तुम सब कहना) है (3.47.31)।

Our line's Sanskrit reads śaṃsa tvam, “you tell”, to the river alone; the CrEd reads śaṃsadhvam,
“tell”, said to many (3.47.31).

॥ 3.49.36–37 ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.49.38 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

सीता SITA

वाल्मीकि जटायो पश्य माम् आर्य ह्रियमाणाम् अनाथवत् अनेन
राक्षसेन्द्रेण करुणं पापकर्मणा ॥

TRANSLATION *Jatayu, noble one, see me
carried off as if I had no protector,
pitiably, by this
lord of rakshasas, doer of evil.*

लीला आर्य जटायु, मुझे देखिए! यह पापी राक्षसराज
मुझे बेबस उठाए ले जा रहा है, जैसे मेरा कोई है
ही नहीं।

SUBTITLE Noble Jatayu, look at me!
This evil lord of rakshasas
is carrying me off, pitiably,
like one with no protector.

॥ 3.49.39-40 ॥
CrEd 3.47.36

3.49.39:
popular text
only · not in
the CrEd

condensed
from 3.49.39-
40

सीता SITA

वाल्मीकि नैष वारयितुं शक्यस् त्वया क्रूरो निशाचरः ... रामाय तु
यथातत्त्वं जटायो हरणं मम लक्ष्मणाय च तत् सर्वम्
आख्यातव्यम् अशेषतः ॥

TRANSLATION *This cruel night-ranger
cannot be held back by you.*

...
*But to Rama, Jatayu, truly
tell how I was carried off,
and to Lakshmana: all of it
must be told, leaving nothing out.*

लीला आप इस क्रूर निशाचर को रोक नहीं सकते। पर
जटायु, राम और लक्ष्मण को मेरे हरण की सारी
बात, जैसे हुई, वैसे ही बता दीजिए।

SUBTITLE You cannot stop this cruel night-walker.
But Jatayu, tell Rama and Lakshmana
all about my taking,
just as it happened.

पहला अंश (3.49.39), “आप इसे रोक नहीं सकते”, केवल प्रचलित पाठ में है, और उसकी पहली पंक्ति ही दी गई है; बाकी CrEd में 3.47.36 है।

The first part (3.49.39), “you cannot stop him”, is the popular text's, and only its first line is shown; the rest is in the CrEd as 3.47.36.

popular text only · not in the CrEd 3.49.39

The first sentence, “You cannot stop this cruel night-walker” (3.49.39), is the popular text's; the CrEd has her ask only that Jatayu tell Rama everything (3.47.36).

SILENT MOMENT मौन क्षण

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.50.1 ॥
CrEd 3.48.1

॥ 3.50.1 ॥
CrEd 3.48.1

॥ 3.50.2 ॥
CrEd 3.48.2

॥ 3.50.3-4a ॥
CrEd 3.48.3

3.50.3b:
popular text
only · not in
the CrEd

SILENT MOMENT मौन क्षण

जटायु JATAYU

वाल्मीकि दशग्रीव स्थितो धर्मे पुराणे सत्यसंश्रयः जटायुर् नाम नाम्नाहं
गृध्रराजो महाबलः ॥

TRANSLATION *Ten-necked one, I stand in dharma,
the ancient one, with truth my refuge;
Jatayu is my name,
king of vultures, great in strength.*

लीला दशग्रीव, मैं पुरातन धर्म पर खड़ा हूँ। सत्य ही
मेरा सहारा है। मेरा नाम जटायु है, मैं महाबली
गृध्रराज हूँ।

SUBTITLE Ten-necked Ravana,
I stand in the ancient dharma,
holding to the truth.
I am Jatayu, mighty king of vultures.

प्रचलित पाठ में “भाई, अभी तुम्हें निंदनीय काम नहीं करना चाहिए” (3.50.3b) और है; वह CrEd में नहीं है और यहाँ नहीं दिया गया। यहाँ दी गई संस्कृत CrEd का 3.48.3 है।

The popular text adds “brother, you should not now do a blameworthy deed” (3.50.3b); it is not in the CrEd and is not shown. The Sanskrit shown is the CrEd's 3.48.3.

॥ 3.50.6b-7a ॥
CrEd 3.48.6

जटायु JATAYU

वाल्मीकि कथं राजा स्थितो धर्मे परदारान् परामृशेत् रक्षणीया विशेषेण
राजदारा महाबल ॥

TRANSLATION *How can a king who stands in dharma
lay hands on the wives of others?
A king's wife above all
must be guarded, mighty one.*

लीला जो राजा धर्म पर खड़ा है, वह पराई स्त्री पर हाथ
कैसे डाले? महाबली, राजा की पत्नी की रक्षा तो
सबसे पहले होनी चाहिए।

SUBTITLE How can a righteous king
lay hands on another man's wife?
A king's wife, above all,
must be protected, mighty one.

CrEd में इस श्लोक (3.48.6) में एक तीसरी पंक्ति भी है: “पराई स्त्री को छूने का यह नीच विचार छोड़ दो।”

In the CrEd the verse (3.48.6) has a third line: “Turn back this low thought of touching
another man's wife.”

॥ 3.50.20-21 ॥

CrEd 3.48.19-20

condensed
from 3.50.20-
21

जटायु JATAYU

वाल्मीकि षष्टिवर्षसहस्राणि मम जातस्य रावण ।
पितृपैतामहं राज्यं यथावद् अनुतिष्ठतः ।
वृद्धोऽहं त्वं युवा धन्वी सरथः कवची शरी ।
तथाप्य् आदाय वैदेहीं कुशली न गमिष्यसि ॥

TRANSLATION *Sixty thousand years, Ravana,
have passed since I was born,
ruling as is fitting
the kingdom of my fathers and their fathers.
I am old; you are young, an archer,
with chariot, armour and arrows;
even so, taking Vaidehi,
you will not go from here unharmed.*

लीला रावण, मैं साठ हजार बरस का हूँ। मैं बूढ़ा, तुम
जवान। तुम्हारे पास धनुष, रथ, कवच, बाण,
सब है। फिर भी वैदेही को लेकर तुम बचकर
नहीं जाओगे।

SUBTITLE I have lived sixty thousand years, Ravana.
I am old; you are young,
armoured, an archer in a chariot.
Yet you will not go unharmed.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.48.19-20) में है; दृश्य की पंक्ति में बाप-दादों के राज्य वाली पंक्ति छोड़ी गई है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.48.19-20); the scene's line leaves out the line on ruling the kingdom of his fathers.

॥ 3.50.28 ॥

CrEd 3.48.27

condensed
from 3.50.28

जटायु JATAYU

वाल्मीकि तिष्ठ तिष्ठ दशग्रीव मुहूर्तं पश्य रावण ।
युद्धातिथ्यं प्रदास्यामि यथाप्राणं निशाचर ।
वृन्ताद् इव फलं त्वां तु पातयेयं रथोत्तमात् ॥

TRANSLATION *Stop, stop, ten-necked one!*
Wait a moment and see, Ravana!
I will give you the welcome of battle,
night-ranger, as far as my breath allows.
Like a fruit from its stalk
I would bring you down from your fine chariot.

लीला ठहर! ठहर, दशग्रीव! मैं युद्ध से तेरा स्वागत
करूँगा। तुझे रथ से ऐसे गिराऊँगा, जैसे डंठल
से फल।

SUBTITLE Stop! Stop, ten-necked Ravana!
I'll welcome you with battle,
and shake you from your chariot
like fruit from its stalk!

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.48.27) में है; दृश्य की पंक्ति इसे छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.48.27); the scene's line shortens it.

॥ 3.51.1-2 ॥

CrEd 3.49.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.3-6 ॥

CrEd 3.49.2-6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.7-9 ॥

CrEd 3.49.7-10

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.10 ॥

CrEd 3.49.11

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.19 ॥

CrEd 3.49.15

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.20 ॥

CrEd 3.49.16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.20 ॥
CrEd 3.49.16

प्राणी BEINGS

वाल्मीकि दृष्ट्वा निपतितं भूमौ रावणं भग्नवाहनम् साधु साध्व् इति
भूतानि गृध्रराजम् अपूजयन् ॥

TRANSLATION *Seeing him fallen to the ground,
Ravana, his chariot wrecked,
all beings cried “Well done, well done!”
and honoured the king of vultures.*

लीला धन्य! धन्य!

SUBTITLE Well done!
Well done!

॥ 3.51.19–20 ॥
CrEd 3.49.15–16

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

Jatayu falls

जटायु गिरते हैं

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.51.21–3.52.13 (CrEd 3.49.17–3.50.12)

जटायु रावण को चोरों की राह चलने वाला कायर कहकर धिक्कारते हैं और लड़ने की ललकार देते हैं। रावण तलवार खींचकर बूढ़े गिद्ध के पंख, पैर और पसलियाँ काट देता है, और जटायु गिर पड़ते हैं। सीता पेड़ों से लिपटकर राम और लक्ष्मण को पुकारती हैं, पर रावण उनके बाल पकड़कर उन्हें आकाश में ले जाता है, और ब्रह्मा कहते हैं कि कार्य हो गया।

Jatayu shames Ravana as a coward walking the road of thieves and dares him to fight. Ravana draws his sword and cuts off the old vulture's wings, feet and flanks, and Jatayu falls. Sita clings to the trees and cries for Rama and Lakshmana, but Ravana seizes her by the hair and carries her into the sky, while Brahma says the deed is done.

१



PART 1 · भाग 1

Jatayu falls

Valmiki 3.51.21–3.52.13 (CrEd 3.49.17–3.50.12)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.51.21 ॥
CrEd 3.49.17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.29 ॥
CrEd 3.49.24

जटायु JATAYU

वाल्मीकि यथा त्वया कृतं कर्म भीरुणा लोकगर्हितम् तस्कराचरितो
मार्गो नैष वीरनिषेवितः ॥

TRANSLATION *This deed that you have done,
coward, the world condemns;
this is the road that thieves walk,
not one that heroes tread.*

लीला कायर, तूने जो किया है, उसे सारा संसार
धिक्कारता है। यह चोरों का रास्ता है, वीरों
का नहीं।

SUBTITLE What you have done, coward,
the whole world despises.
This is the road of thieves,
not of heroes.

॥ 3.51.30 ॥
CrEd 3.49.25

जटायु JATAYU

वाल्मीकि युध्यस्व यदि शूरोऽसि मुहूर्तं तिष्ठ रावण शयिष्यसे हतो भूमौ
यथा भ्राता खरस् तथा ॥

TRANSLATION *Fight, if you are brave!
Stand a moment, Ravana,
and you will lie slain on the ground,
as your brother Khara lies.*

लीला शूर है तो लड़! घड़ी भर ठहर, रावण। फिर तू भी
अपने भाई खर की तरह धरती पर मरा पड़ा होगा।

SUBTITLE Fight, if you are brave!
Stand a moment, Ravana,
and you'll lie dead on the ground
like your brother Khara.

॥ 3.51.36 ॥
CrEd 3.49.31

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.40 ॥
CrEd 3.49.34

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.42-43 ॥
CrEd 3.49.36-37

वाल्मीकि VALMIKI *verse caption*

वाल्मीकि तस्य व्यायच्छमानस्य रामस्यार्थेऽथ रावणः ।
पक्षौ पादौ च पार्श्वौ च खड्गम् उद्धृत्य सोऽच्छिनत् ।
स छिन्नपक्षः सहसा रक्षसा रौद्रकर्मणा ।
निपपात हतो गृध्रो धरण्याम् अल्पजीवितः ॥

TRANSLATION *Then, as he struggled on
for Rama's sake, Ravana
drew his sword and cut off
his wings, his feet and his flanks.
His wings cut off by the rakshasa
of savage deeds, the vulture
fell suddenly to earth, struck down,
with little life left in him.*

SUBTITLE He drew his sword and cut off
his wings, feet and flanks.
The vulture fell,
little life left.

इस कैप्शन के साथ अपनी संस्कृत नहीं है; यहाँ वह वैसी दी गई है जैसी CrEd (3.49.36-37) में है।

The verse caption has no Sanskrit of its own; it is given here as the CrEd has it (3.49.36-37).

॥ 3.51.44-45 ॥
CrEd 3.49.38-39

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.51.46 ॥
CrEd 3.49.40

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.52.4 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

सीता SITA

वाल्मीकि अयं हि कृपया राम मां त्रातुम् इह संगतः शेते विनिहतो भूमौ
ममाभग्याद् विहंगमः ॥

TRANSLATION *For this bird, Rama, out of pity,
came here to save me,
and lies struck down on the ground
through my ill fortune.*

लीला राम, यह पक्षी दया करके मुझे बचाने आया था। मेरे
अभाग्य से आज यह धरती पर घायल पड़ा है।

SUBTITLE Rama, this bird came here
out of pity, to save me.
Through my ill fortune
he lies struck down.

popular text only · not in the CrEd 3.52.4

L12: Sita's "Rama, this bird came here out of pity to save me, and lies struck down through my ill fortune" is the popular text's (3.52.4). In the CrEd her lament goes from the omens (3.50.3-4) straight to her cry for help (3.50.5). It stays the scene's signature line.

॥ 3.52.5 ॥

CrEd 3.50.5

सीता SITA

वाल्मीकि त्राहि माम् अद्य काकुत्स्थ लक्ष्मणेति वराङ्गना सुसंत्रस्ता
समाक्रन्दच् छृण्वतां तु यथान्तिके ॥

TRANSLATION *"Save me now, Kakutstha!
Lakshmana!" the lovely lady
cried out in utter terror,
as if they were near enough to hear.*

लीला मुझे बचाओ, काकुत्स्थ! लक्ष्मण!

SUBTITLE Save me now, Rama!
Lakshmana!

॥ 3.52.6-7 ॥

CrEd 3.50.6-7

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.52.7-8 ॥
CrEd 3.50.7

रावण RAVANA

वाल्मीकि तां लताम् इव वेष्टन्तीम् आलिङ्गन्तीं महाद्रुमान् मुञ्च मुञ्चेति
बहुशः प्रवदन् राक्षसाधिपः ॥

TRANSLATION *As she wound about the great trees
like a creeper, clinging to them,
“Let go! Let go!” said
the lord of rakshasas, again and again.*

लीला छोड़! छोड़!

SUBTITLE Let go!
Let go!

॥ 3.52.8 ॥
CrEd 3.50.8

वाल्मीकि VALMIKI *verse caption*

वाल्मीकि क्रोशन्तीं राम रामेति रामेण रहितां वने ।
जीवितान्ताय केशेषु जग्राहान्तकसंनिभः ॥

TRANSLATION *As she cried, “Rama, Rama!”,
bereft of Rama in the forest,
he, like Death, seized her by the hair,
for the ending of a life.*

SUBTITLE As she cried "Rama! Rama!",
like Death he seized her
by the hair.

इस कैप्शन के साथ अपनी संस्कृत नहीं है; यहाँ वह वैसी दी गई है जैसी CrEd (3.50.8) में है।

The verse caption has no Sanskrit of its own; it is given here as the CrEd has it (3.50.8).

॥ 3.52.9-10a ॥
CrEd 3.50.9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.52.10b–11a ॥
CrEd 3.50.10

ब्रह्मा BRAHMA

वाल्मीकि दृष्ट्वा सीतां परामृष्टां दीनां दिव्येन चक्षुषा कृतं कार्यम् इति
श्रीमान् व्याजहार पितामहः ॥

TRANSLATION *Seeing Sita seized and wretched,
with his divine eye,
“The deed is done,” said
the glorious Grandsire.*

लीला कार्य सिद्ध हुआ।

SUBTITLE The deed is done.

॥ 3.52.13 ॥
CrEd 3.50.12

सीता SITA

वाल्मीकि स तु तां राम रामेति रुदन्तीं लक्ष्मणेति च जगामाकाशम्
आदाय रावणो राक्षसाधिपः ॥

TRANSLATION *And she wept, “Rama, Rama!”
and “Lakshmana!”; and taking her,
Ravana, lord of rakshasas,
went up into the sky.*

लीला राम! राम! लक्ष्मण!

SUBTITLE Rama! Rama!
Lakshmana!

॥ 3.52.13 ॥
CrEd 3.50.12

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

The jewels thrown down

गिराए गए आभूषण

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.52.13–3.54.5 (CrEd 3.50.12–3.52.5)

रावण सीता को आकाश के रास्ते दक्षिण ले जाता है, और सारे प्राणी विलाप करते हैं कि धर्म और सत्य नहीं रहे। सीता उसे कायर और चोर कहकर धिक्कारती हैं, जिसने उन्हें युद्ध में नहीं, छल से पाया, और चेताती हैं कि राम उसे मार डालेंगे। एक पहाड़ी पर उन्हें पाँच वानर दिखते हैं, और वे राम और लक्ष्मण को पुकारते हुए अपना उत्तरीय और आभूषण उनके बीच गिरा देती हैं।

As Ravana carries Sita south through the sky, all beings lament that dharma and truth are gone. Sita rages at him as a coward and a thief who won her by trickery, not in battle, and warns him that Rama will kill him. Over a hilltop she sees five monkeys, and drops her upper cloth and ornaments among them, crying out to Rama and Lakshmana.

१



PART 1 · भाग 1

The ornaments

Valmiki 3.52.13–3.54.5 (CrEd 3.50.12–3.52.5)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.52.13–21 ॥
CrEd 3.50.12–19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.52.29 ॥
CrEd 3.50.27

॥ 3.52.31–33 ॥
CrEd 3.50.29–31

॥ 3.52.34–38 ॥
CrEd 3.50.32–36

॥ 3.52.39–40a ॥
CrEd 3.50.37–38

SILENT MOMENT मौन क्षण

SILENT MOMENT मौन क्षण

SILENT MOMENT मौन क्षण

प्राणी BEINGS

वाल्मीकि नास्ति धर्मः कुतः सत्यं नार्जवं नानृशंसता ।
यत्र रामस्य वैदेहीं भार्या हरति रावणः ।
इति सर्वाणि भूतानि गणशः पर्यदेवयन् ॥

TRANSLATION “There is no dharma; whence then truth?
No honesty, no mercy,
where Ravana carries off Vaidehi,
the wife of Rama”:
so all beings, troop by troop,
lamented.

लीला धर्म नहीं रहा, सत्य कहाँ रहा? न सरलता रही, न
करुणा, जब रावण राम की पत्नी को हर ले जाता है।

SUBTITLE No dharma left, and where is truth?
No honesty, no kindness,
when Ravana carries off
Rama's wife!

संस्कृत वैसी दी गई है जैसी CrEd (3.50.37–38ab) में है; आखिरी पंक्ति कथावाचक की है, जो बताती है कि यह कौन कह रहा है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (3.50.37–38ab); the last line, the narrator's, says who speaks.

॥ 3.53.3 ॥
CrEd 3.51.3

सीता SITA

वाल्मीकि न व्यपत्रपसे नीच कर्मणानेन रावण ज्ञात्वा विरहितां यो मां
चोरयित्वा पलायसे ॥

TRANSLATION *Are you not ashamed, base one,
of this deed, Ravana,
you who, knowing me alone,
steal me away and run?*

लीला नीच रावण, तुझे इस कर्म पर लज्जा नहीं आती?
मुझे अकेली जानकर तू मुझे चुराकर भाग रहा है।

SUBTITLE Are you not ashamed, base Ravana?
You knew I was alone,
and you steal me
and run.

॥ 3.53.4 ॥
CrEd 3.51.4

सीता SITA

वाल्मीकि त्वयैव नूनं दुष्टात्मन् भीरुणा हर्तुम् इच्छता ममापवाहितो
भर्ता मृगरूपेण मायया ॥

TRANSLATION *Surely it was you, wicked one,
a coward who wished to steal me,
who drew my husband away
by magic in a deer's form.*

लीला दुष्टात्मा, कायर, निश्चय ही मुझे हरने की इच्छा
से तूने ही मृग के रूप वाली माया से मेरे पति को
दूर हटाया।

SUBTITLE It was you, wicked coward,
who drew my husband away
with magic
in the shape of a deer.

CrEd में इस श्लोक (3.51.4) में एक तीसरी पंक्ति भी है: “और जो मुझे बचाने उठा, उसे भी मार गिराया गया।”

In the CrEd the verse (3.51.4) has a third line: “and the one who rose to save me, he too has been struck down.”

॥ 3.53.6 ॥
CrEd 3.51.5

सीता SITA

वाल्मीकि परमं खलु ते वीर्यं दृश्यते राक्षसाधम विश्राव्य नामधेयं हि युद्धे
नास्मि जिता त्वया ॥

TRANSLATION *Great indeed is the valour
that you show, lowest of rakshasas!
For you proclaimed your name,
yet you did not win me in battle.*

लीला बड़ा भारी पराक्रम दिखा रहा है तू, राक्षसाधम!
अपना नाम तो ऊँचे स्वर में सुनाया, पर मुझे युद्ध में
नहीं जीता।

SUBTITLE Great valour indeed, lowest of rakshasas!
You shouted your name,
but you never won me
in battle.

॥ 3.53.23b-
25a ॥

CrEd 3.51.22-23

condensed
from 3.53.23b-
25a

सीता SITA

वाल्मीकि निमेषान्तरमात्रेण विना भ्रातरम् आहवे ।
राक्षसा निहता येन सहस्राणि चतुर्दश ।
स कथं राघवो वीरः सर्वास्त्रकुशलो बली ।
न त्वां हन्याच् छरैस् तीक्ष्णैर् इष्टभार्यापहारिणम् ॥

TRANSLATION *He by whom, in the space of a blink,
in battle, without his brother,
rakshasas were slain,
fourteen thousand of them:
how could Raghava, that hero,
skilled in all weapons, mighty,
not slay you with sharp arrows,
you who carried off his beloved wife?*

लीला जिन्होंने पलक झपकते, भाई के बिना, चौदह सहस्र
राक्षस मार डाले, वे वीर राघव अपनी पत्नी के चोर,
तुझे कैसे न मारेंगे?

SUBTITLE In the blink of an eye, without his brother,
he killed fourteen thousand.
How will that hero not kill you,
who stole his wife?

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.51.22-23) में है; दृश्य की पंक्ति में “सब अस्त्रों में कुशल, बलवान” छोड़ा गया है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.51.22-23); the scene's line leaves out “skilled in every weapon, mighty”.

॥ 3.53.25b-26 ॥
CrEd 3.51.24-25

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.54.1 ॥
CrEd 3.52.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.54.2 ॥
CrEd 3.52.2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.54.3 ॥
CrEd 3.52.3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.54.4b-5a ॥
CrEd 3.52.4

सीता SITA

वाल्मीकि पिङ्गाक्षास् तां विशालाक्षीं नेत्रैर् अनिमिषैर् इव ।
विक्रोशन्तीं तदा सीतां ददृशुर् वानरर्षभाः ॥

TRANSLATION *Yellow-eyed, with eyes that seemed
not to blink, those bulls among monkeys
saw her then, wide-eyed Sita,
crying out.*

लीला राम! राम! लक्ष्मण!

SUBTITLE Rama! Rama!
Lakshmana!

संस्कृत वैसे दी गई है जैसी CrEd (3.52.4) में है। उनकी पुकार के शब्द CrEd 3.50.40 के हैं, “लक्ष्मण! राम!”, और सुग्रीव की याद के, “राम, राम, लक्ष्मण पुकारती” (4.6.10; CrEd 4.6.8)।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (3.52.4). The words she cries are those of 3.50.40 (CrEd), “Lakshmana! Rama!”, and of Sugriva’s memory, “crying Rama, Rama, Lakshmana” (4.6.10; CrEd 4.6.8).

॥ 3.54.5b ॥
CrEd 3.52.5

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

The dying vulture's word

मरते गिद्ध का वचन

—❖ Valmiki · Aranya Kanda ❖—

3.57.1–3.68.38 (CrEd 3.55.1–3.64.36)

राम कुटिया को सूना पाते हैं और लक्ष्मण के साथ वन में खोजते हैं, पेड़ों से और गोदावरी नदी से सीता के बारे में पूछते हैं। राह में उन्हें सीता के फूल, खून और एक टूटा रथ मिलता है, और राम का दुख सारे लोकों पर क्रोध बन जाता है, जब तक लक्ष्मण उन्हें शांत नहीं करते। उन्हें मरते हुए जटायु मिलते हैं, जो बताते हैं कि रावण सीता को दक्षिण की ओर ले गया; राम उन्हें पिता की तरह मानकर उनका अंतिम संस्कार करते हैं।

Rama finds the hut empty and searches the forest with Lakshmana, asking the trees and the river Godavari for Sita. On the path they find her flowers, blood and a broken chariot, and Rama's grief turns to fury against the worlds until Lakshmana calms him. They find the dying Jatayu, who tells them Ravana took her south; Rama honours him as a father and gives him the last rites.

१



PART 1 · भाग 1

The empty hut

Valmiki 3.57–3.64.14 (CrEd 3.55–3.60.14)

॥ 3.57.2-3 ॥
CrEd 3.55.2-3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.57.14 ॥
CrEd 3.55.13

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.57.17b-18a ॥
CrEd 3.55.16

राम RAMA

वाल्मीकि अहो लक्ष्मण गर्ह्यं ते कृतं यत् त्वं विहाय ताम् सीताम्
इहागतः सौम्य कञ्चित् स्वस्ति भवेद् इति ॥

TRANSLATION *Ah, Lakshmana, a blameworthy thing
you have done, in leaving her,
Sita, and coming here, gentle one.
Can it be that all is well?*

लीला आह, लक्ष्मण! सीता को छोड़कर तुम यहाँ आ गए,
यह तुमने ठीक नहीं किया। सौम्य, क्या अब भी
सब कुशल होगा?

SUBTITLE *Ah, Lakshmana, you did wrong
to leave Sita and come here.
Gentle brother,
can all still be well?*

॥ 3.59.6 ॥
CrEd 3.57.6

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि न स्वयं कामकारेण तां त्यक्त्वाहम् इहागतः प्रचोदितस्
तयैवोग्रैस् त्वत्सकाशम् इहागतः ॥

TRANSLATION *Not of my own will, not by choice,
did I leave her and come here;
driven by her own fierce words
I have come here to your side.*

लीला आर्य, मैं अपनी इच्छा से उन्हें छोड़कर नहीं आया।
उनके कठोर वचनों ने मुझे आपके पास भेजा।

SUBTITLE *I did not leave her
of my own will.
Her fierce words
drove me here to you.*

॥ 3.59.22 ॥
CrEd 3.57.20

राम R A M A

वाल्मीकि जानन् अपि समर्थ मां रक्षसां विनिवारणे अनेन क्रोधवाक्येन
मैथिल्या निःसृतो भवान् ॥

TRANSLATION *Though you knew that I was able
to hold the rakshasas at bay,
you came away at this,
the angry speech of Maithili.*

लीला तुम जानते थे कि मैं राक्षसों को रोक सकता हूँ। फिर
भी मैथिली के एक क्रोध-भरे वचन पर तुम उसे
छोड़ आए?

SUBTITLE You knew I could
hold off the rakshasas,
and yet you left her
for one angry word from Maithili?

॥ 3.60.1 ॥
CrEd 3.58.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.60.3-4 ॥
CrEd 3.58.3-4

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.60.12 ॥
CrEd 3.58.12

राम R A M A

वाल्मीकि अस्ति कञ्चित् त्वया दृष्टा सा कदम्बप्रिया प्रिया कदम्ब यदि
जानीषे शंस सीतां शुभाननाम् ॥

TRANSLATION *Have you seen her, perhaps,
my love, who loved the kadamba?
Kadamba, if you know,
tell me of Sita, the fair-faced.*

लीला कदम्ब, क्या तुमने मेरी प्रिया को देखा है? उसे
तुम्हारे फूल बहुत प्यारे थे। जानते हो, तो बताओ,
सुंदर मुख वाली सीता कहाँ है?

SUBTITLE Kadamba, have you seen my love,
who loved your flowers?
If you know, tell me
of Sita, the fair-faced.

॥ 3.61.3 ॥
CrEd 3.59.3

राम R A M A

वाल्मीकि क्व नु लक्ष्मण वैदेही कं वा देशम् इतो गता केनाहता वा
सौमित्रे भक्षिता केन वा प्रिया ॥

TRANSLATION *Where, Lakshmana, is Vaidehi?
To what land has she gone from here?
By whom, Saumitri, was she carried off?
By whom was my love devoured?*

लीला लक्ष्मण, वैदेही कहाँ है? यहाँ से वह किस ओर
गई? मेरी प्रिया को कौन हर ले गया?

SUBTITLE Lakshmana, where is Vaidehi?
Where has she gone from here?
Who has carried off
my love?

॥ 3.61.4 ॥
CrEd 3.59.4

राम R A M A

वाल्मीकि वृक्षेणावार्य यदि मां सीते हसितुम् इच्छसि अलं ते हसितेनाद्य
मां भजस्व सुदुःखितम् ॥

TRANSLATION *If, hiding behind a tree,
you wish to laugh at me, Sita,
enough of your laughter now;
come to me, who grieve so deeply.*

लीला सीते, पेड़ की ओट में छिपकर मुझ पर हँस रही
हो? बस करो यह हँसी। आ जाओ, मैं बहुत
दुखी हूँ।

SUBTITLE Sita, if you're hiding
behind a tree to laugh at me,
enough laughing now.
Come to me; I am in such sorrow.

॥ 3.61.14 ॥
CrEd 3.59.13

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि मा विषादं महाबाहो कुरु यत्नं मया सह इदं च हि वनं शूर
बहुकन्दरशोभितम् ॥

TRANSLATION *Do not despair, strong-armed one;
make the effort with me.
For this forest, hero,
is graced with many caves.*

लीला महाबाहो, हिम्मत मत हारिए। मेरे साथ खोजिए।
वीर, इस वन में बहुत-सी गुफाएँ हैं।

SUBTITLE Do not despair, strong-armed one.
Search with me.
This forest, hero,
is full of caves.

यहाँ दी गई संस्कृत CrEd (3.59.13) की है। प्रचलित पाठ में “महाबुद्धे” (हे बुद्धिमान) और “इदं गिरिवरं वीर” (हे वीर, यह श्रेष्ठ पर्वत) है।

The Sanskrit shown is the CrEd's (3.59.13). The popular text reads mahābuddhe, “wise one”,
and idaṃ girivaraṃ vīra, “this great hill, hero”.

॥ 3.64.3b–4a ॥
CrEd 3.60.3

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम RAMA

वाल्मीकि रामः समभिचक्राम स्वयं गोदावरीं नदीम् स ताम् उपस्थितो
रामः क्व सीतेत्य् एवम् अब्रवीत् ॥

TRANSLATION *Rama himself went
to the river Godavari;
standing before her, Rama
said this: “Where is Sita?”*

लीला सीता कहाँ है?

SUBTITLE Where is Sita?



The wreck on the path

Valmiki 3.64.15–3.67.3 (CrEd 3.60.15–3.63.3)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.64.15b–24a ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 3.64.15b–24a

M7: the great deer that look at Rama again and again, spring up, face south, look to the sky and the ground, and go south, turning back to look at him, are the popular text's (3.64.15b-24a). In the CrEd the brothers go south and find her flowers (3.60.15).

॥ 3.64.24b–25 ॥
CrEd 3.60.15

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.64.26b–
27a ॥
CrEd 3.60.17

राम R A M A

वाल्मीकि अभिजानामि पुष्पाणि तानीमानीह लक्ष्मण अपिनद्भानि
वैदेह्या मया दत्तानि कानने ॥

TRANSLATION *I know these flowers here, Lakshmana,
these very ones:
Vaidehi wore them,
given by me in the forest.*

लीला लक्ष्मण, ये फूल मैं पहचानता हूँ। ये मैंने ही वन
में वैदेही को दिए थे। उसने इन्हें अपने बालों में
लगाया था।

SUBTITLE I know these flowers, Lakshmana.
I gave them to Vaidehi
here in the forest,
and she wore them in her hair.

॥ 3.64.35b–39 ॥
CrEd 3.60.22–24

SILENT MOMENT मौन क्षण

वाल्मीकि VALMIKI *verse caption*

वाल्मीकि तप्तबिन्दुनिकाशैश् च चित्रैः क्षतजबिन्दुभिः ।
आवृतं पश्य सौमित्रे सर्वतो धरणीतलम् ।
मन्ये लक्ष्मण वैदेही राक्षसैः कामरूपिभिः ।
भित्त्वा भित्त्वा विभक्ता वा भक्षिता वा भविष्यति ।
तस्य निमित्तं वैदेह्या द्वयोर् विवदमानयोः ।
बभूव युद्धं सौमित्रे घोरं राक्षसयोर् इह ॥

TRANSLATION *With bright drops of blood,
like drops of molten gold,
see, Saumitri, the ground
is covered all around.
I think, Lakshmana, that Vaidehi,
by rakshasas who take what form they will,
has been torn and torn and parted,
or else devoured.
Over Vaidehi, Saumitri,
as two rakshasas quarrelled,
a terrible battle
was fought between them here.*

SUBTITLE All the ground was strewn
with bright drops of blood,
like drops of molten gold.

इस कैप्शन के साथ अपनी संस्कृत नहीं है; यहाँ वह वैसी दी गई है जैसी CrEd (3.60.25-27) में है, जहाँ ये शब्द राम कहते हैं। कैप्शन पहला श्लोक लेता है।

The verse caption has no Sanskrit of its own; it is given here as the CrEd has it (3.60.25–27), where Rama speaks the words. The caption takes the first verse.

॥ 3.64.43 ॥
CrEd 3.60.28

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.64.43-44a,
3.64.47b-48a ॥

CrEd 3.60.28,
3.60.32

condensed
from 3.64.43-
44a, 3.64.47b-
48a

राम R A M A

वाल्मीकि मुक्तामणिचितं चेदं तपनीयविभूषितम् ।
धरण्यां पतितं सौम्य कस्य भग्नं महद् धनुः ।
... ।
दीप्तपावकसंकाशो द्युतिमान् समरध्वजः ।
अपविद्धश् च भग्नश् च कस्य सांग्रामिको रथः ॥

TRANSLATION *And this, set with pearls and gems,
adorned with burnished gold,
fallen on the ground, gentle one:
whose great bow, broken?
...
Like a blazing fire, shining,
with its banner of battle,
flung down and shattered:
whose war-chariot is this?*

लीला मोतियों और मणियों से जड़ा यह बड़ा धनुष
किसका है, जो टूटकर धरती पर पड़ा है? यह
उलटा पड़ा, टूटा हुआ युद्ध-रथ किसका है?

SUBTITLE Whose great bow is this,
set with pearls and gems,
broken on the ground?
Whose war-chariot, thrown down
and shattered?

दोनों श्लोक यहाँ पूरे दिए गए हैं, जैसे CrEd (3.60.28 और 3.60.32) में हैं; दृश्य की पंक्ति इन्हें जोड़ती है।

The two verses are given in full as the CrEd has them (3.60.28 and 3.60.32); the scene's line joins them.

॥ 3.64.62b-
63a ॥
CrEd 3.60.44

राम R A M A

वाल्मीकि न तां कुशलिनीं सीतां प्रदास्यन्ति ममेश्वराः अस्मिन् मुहूर्ते
सौमित्रे मम द्रक्ष्यन्ति विक्रमम् ॥

TRANSLATION *If the lords do not give me back
Sita, safe and well,
this very moment, Saumitri,
they shall see my might.*

लीला लक्ष्मण, अगर देवता मेरी सीता को सकुशल नहीं
लौटाते, तो इसी घड़ी वे मेरा पराक्रम देखेंगे।

SUBTITLE *If the gods will not give Sita back
to me unharmed, Lakshmana,
this very moment
they shall see my might.*

॥ 3.64.74-75 ॥
CrEd 3.60.49-50

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि यथा जरा यथा मृत्युर् यथा कालो यथा विधिः नित्यं न
प्रतिहन्यन्ते सर्वभूतेषु लक्ष्मण तथाहं क्रोधसंयुक्तो न
निवार्योऽस्म्य् असंशयम् ॥

TRANSLATION *As old age, as death,
as time, as fate
are never turned back
in any creature, Lakshmana,
so I, possessed by anger,
cannot be held back, beyond doubt.*

लीला लक्ष्मण, जैसे बुढ़ापा नहीं टलता, मौत नहीं टलती,
काल और विधि नहीं टलते, वैसे ही क्रोध में भरा मैं
भी नहीं रुकूँगा।

SUBTITLE *As old age and death,
as time and fate
are never turned back,
so I, in my anger, cannot be stopped.*

॥ 3.65.4 ॥
CrEd 3.61.4

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि पुरा भूत्वा मृदुर् दान्तः सर्वभूतहिते रतः न क्रोधवशम् आपन्नः
प्रकृतिं हातुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *Once you were gentle and restrained,
delighting in the good of all beings;
do not, falling into anger's power,
cast away your nature.*

लीला आप सदा कोमल और संयमी रहे हैं, सब प्राणियों
का भला चाहने वाले। क्रोध के वश होकर अपना
स्वभाव मत छोड़िए।

SUBTITLE You have always been gentle,
self-controlled,
the friend of all beings.
Do not give your nature up to anger.

॥ 3.66.21 ॥
CrEd 3.62.20

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि किं ते सर्वविनाशेन कृतेन पुरुषर्षभ तम् एव तु रिपुं पापं
विज्ञायोद्धर्तुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *What is it to you, bull among men,
to bring all things to ruin?
That wicked foe alone
you should find out and uproot.*

लीला पुरुषश्रेष्ठ, सबका नाश करके आपको क्या मिलेगा?
बस उस एक पापी शत्रु का पता लगाइए, और उसे
जड़ से उखाड़ दीजिए।

SUBTITLE What is gained by destroying all,
best of men?
Find that one wicked enemy,
and root him out.

॥ 3.67.1-2 ॥
CrEd 3.63.1-2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.67.3 ॥
CrEd 3.63.3

राम R A M A

वाल्मीकि किं करिष्यावहे वत्स क्व वा गच्छाव लक्ष्मण केनोपायेन
पश्येयं सीताम् इति विचिन्तय ॥

TRANSLATION *What shall we do, dear one,
or where shall we go, Lakshmana?
By what means might I see Sita?
Think on this.*

लीला वत्स, अब हम क्या करें? लक्ष्मण, कहाँ जाएँ?
सोचो, किस उपाय से मैं सीता को देख पाऊँ।

SUBTITLE What shall we do, dear brother?
Where shall we go, Lakshmana?
Think how
I may find Sita.



The dying vulture's word

Valmiki 3.67.8–3.68.38 (CrEd 3.63.8–3.64.36)

VALMIKI

THE LEELA

popular text only · not in the CrEd Valmiki 3.68.38

The ending: "their minds fixed on finding Sita, the two went on into the forest" is the popular text's last verse (3.68.38). The CrEd ends with the water rites at the Godavari and the vulture going to his auspicious world (3.64.35-36); the way south is Jatayu's word (3.64.10).

॥ 3.67.9b–10a ॥
CrEd 3.63.9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.67.11b-12 ॥

CrEd 3.63.11

condensed
from 3.67.11b-
12

राम R A M A

वाल्मीकि गृध्ररूपम् इदं व्यक्तं रक्षो भ्रमति काननम् ।
भक्षयित्वा विशालाक्षीम् आस्ते सीतां यथासुखम् ।
एनं वधिष्ये दीप्ताग्रैर् घोरैर् बाणैर् अजिह्मगैः ॥

TRANSLATION *Plainly this is a rakshasa
roaming the forest in a vulture's form;
having devoured wide-eyed Sita
it sits here at its ease.
I will slay it with terrible arrows,
blazing-tipped and flying straight.*

लीला साफ़ है, यह कोई राक्षस है, जो गिद्ध का रूप धरकर
वन में घूम रहा है। मैं इसे अपने दमकते, सीधे जाने
वाले बाणों से मार डालूँगा।

SUBTITLE Plainly this is a rakshasa
roaming the forest
in a vulture's shape.
I will kill it with my blazing arrows.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.63.11) में है; दृश्य की पंक्ति सीता को खा जाने वाली बीच की पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.63.11); the scene's line leaves out the middle line, that it has eaten Sita.

॥ 3.67.15 ॥
CrEd 3.63.14

जटायु JATAYU

वाल्मीकि याम् ओषधिम् इवायुष्मन् अन्वेषसि महावने सा देवी मम च
प्राणा रावणेनोभयं हृतम् ॥

TRANSLATION *Long-lived one, she whom you seek
like a healing herb in this great forest,
the lady, and my life as well:
Ravana has taken both.*

लीला आयुष्मन्, जिस देवी को तुम इस महावन में जड़ी-
बूटी की तरह खोज रहे हो, उसे भी रावण ले गया,
और मेरे प्राण भी।

SUBTITLE Long-lived one, the lady you seek
through this great forest
like a healing herb:
Ravana has taken her, and my life.

॥ 3.67.19b-20 ॥

CrEd 3.63.18

3.67.19a:
popular text
only · not in
the CrEd

जटायु JATAYU

वाल्मीकि परिश्रान्तस्य मे पक्षौ छित्त्वा खड्गेन रावणः सीताम् आदाय
वैदेहीम् उत्पपात विहायसम् रक्षसा निहतं पूर्वं न मां हन्तुं
त्वम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *When I was spent, Ravana
cut off my wings with his sword,
and taking Sita, Vaidehi,
he flew up into the sky.
Struck down already by the rakshasa,
I am not one for you to slay.*

लीला मैं थक गया, तो रावण ने तलवार से मेरे पंख काट
दिए, और सीता को लेकर आकाश में उड़ गया।
जिसे राक्षस मार चुका, उसे तुम मत मारो।

SUBTITLE When I tired, Ravana
cut my wings with his sword
and flew off with Sita.
Do not kill one already slain.

प्रचलित पाठ का 3.67.19a, कि उन्होंने रावण के सारथी को मारा, CrEd में नहीं है और यहाँ नहीं दिया गया। यहाँ दी गई संस्कृत CrEd का 3.63.18 है।

The popular text's 3.67.19a, that he killed Ravana's charioteer, is not in the CrEd and is not shown. The Sanskrit shown is the CrEd's 3.63.18.

॥ 3.67.21-22 ॥

CrEd 3.63.19

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 3.67.21

M15: Rama throwing down his bow before he takes the vulture in his arms is the popular text's (3.67.21). The CrEd has the embrace and the tears (3.63.19).

॥ 3.67.27 ॥
CrEd 3.63.24

राम R A M A

वाल्मीकि अयं पितृवयस्यो मे गृध्रराजो जरान्वितः शेते विनिहतो भूमौ
मम भाग्यविपर्ययात् ॥

TRANSLATION *This king of vultures, grown old,
my father's friend,
lies struck down on the ground
because my fortune has turned.*

लीला मेरे पिता के मित्र, ये बूढ़े गृध्रराज, मेरे भाग्य के फेर
से घायल होकर धरती पर पड़े हैं।

SUBTITLE This old king of vultures,
my father's friend,
lies struck down on the ground
because my fortune has turned.

॥ 3.68.7 ॥
CrEd 3.64.7

राम R A M A

वाल्मीकि कथंवीर्यः कथंरूपः किंकर्मा स च राक्षसः क्व चास्य भवनं
तात ब्रूहि मे परिपृच्छतः ॥

TRANSLATION *Of what strength, of what form,
of what deeds is that rakshasa?
And where is his dwelling, father?
Tell me, I ask you.*

लीला तात, उस राक्षस का बल कैसा है, रूप कैसा है, वह
क्या करता है? और उसका घर कहाँ है? मुझे
बताइए, मैं आपसे पूछता हूँ।

SUBTITLE What is that rakshasa's strength,
his form, his deeds?
And where is his home, father?
Tell me, I beg you.

॥ 3.68.9-10 ॥

CrEd 3.64.9-10

condensed
from 3.68.9-10

जटायु JATAYU

वाल्मीकि सा हृता राक्षसेन्द्रेण रावणेन विहायसा ।
मायाम् आस्थाय विपुलां वातदुर्दिनसंकुलाम् ।
परिश्रान्तस्य मे तात पक्षौ छित्त्वा निशाचरः ।
सीताम् आदाय वैदेहीं प्रयातो दक्षिणामुखः ॥

TRANSLATION *She was carried off through the sky
by Ravana, lord of rakshasas,
who raised a vast illusion
thick with wind and storm-dark.
When I was spent, father,
the night-walker cut off my wings;
taking Sita, Vaidehi,
he went away, facing south.*

लीला राक्षसराज रावण ने आँधी और घने अँधेरे की माया
रचकर उसे हर लिया, और वैदेही को लेकर दक्षिण
की ओर चला गया।

SUBTITLE Ravana, lord of rakshasas, took her,
raising a storm of magic,
and went away with Vaidehi,
facing south.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.64.9-10) में है; दृश्य की पंक्ति “मैं थक गया था, तब उसने मेरे पंख काटे” वाला अंश छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.64.9-10); the scene's line leaves out “when I was worn out, he cut my wings”.

॥ 3.68.12-13a ॥
CrEd 3.64.12-13

जटायु JATAYU

वाल्मीकि येन याति मुहूर्तेन सीताम् आदाय रावणः विप्रनष्टं धनं
क्षिप्रं तत् स्वामी प्रतिपद्यते विन्दो नाम मुहूर्तोऽसौ स च
काकुत्स्थ नाबुधत् ॥

TRANSLATION *The hour in which Ravana went,
carrying Sita away,
is one in which lost wealth
soon returns to its owner.
That hour is called Vinda,
Kakutstha, and he did not know it.*

लीला जिस मुहूर्त में रावण सीता को ले गया, उसका नाम
विन्द है। उसमें खोया धन स्वामी को जल्दी लौट
आता है। काकुत्स्थ, यह बात वह नहीं जानता था।

SUBTITLE The hour he took Sita is called Vinda.
Whatever is lost in it,
its owner soon regains.
He did not know that, Kakutstha.

॥ 3.68.16 ॥
CrEd 3.64.16

जटायु JATAYU

वाल्मीकि पुत्रो विश्रवसः साक्षाद् भ्राता वैश्रवणस्य च इत्य् उत्त्वा
दुर्लभान् प्राणान् मुमोच पतगेश्वरः ॥

TRANSLATION “*The very son of Vishravas,
and Vaishravana’s brother*”:
*so saying, the lord of birds
let go his precious life.*

लीला वह साक्षात् विश्रवा का पुत्र है, कुबेर का भाई।

SUBTITLE He is the son of Vishravas,
the brother of Kubera...

वैश्रवण कुबेर हैं।

Vaishravana is Kubera.

॥ 3.68.17 ॥
CrEd 3.64.17

राम R A M A

वाल्मीकि ब्रूहि ब्रूहीति रामस्य ब्रुवाणस्य कृताञ्जलेः त्यक्त्वा शरीरं गृध्रस्य
जग्मुः प्राणा विहायसम् ॥

TRANSLATION *As Rama, palms joined, kept saying,
“Speak, speak!”,
the vulture’s life left his body
and went into the sky.*

लीला बोलिए! बोलिए!

SUBTITLE Speak!
Speak!

॥ 3.68.17–19 ॥
CrEd 3.64.17–19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.68.26 ॥
CrEd 3.64.26

राम R A M A

वाल्मीकि राजा दशरथः श्रीमान् यथा मम महायशाः पूजनीयश् च
मान्यश् च तथायं पतगेश्वरः ॥

TRANSLATION *King Dasharatha, the glorious,
of great fame, as he is to me
to be honoured and revered,
so is this lord of birds.*

लीला जैसे यशस्वी राजा दशरथ मेरे पूज्य और माननीय
हैं, वैसे ही ये पक्षिराज भी मेरे पूज्य हैं।

SUBTITLE As glorious King Dasharatha
is to be honoured by me,
so is this
lord of birds.

॥ 3.68.27-31 ॥
CrEd 3.64.27-31

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.68.29-30 ॥

CrEd 3.64.29-30

condensed
from 3.68.29-
30

राम R A M A

वाल्मीकि या गतिर् यज्ञशीलानाम् आहिताग्रेष् च या गतिः ।
अपरावर्तिनां या च या च भूमिप्रदायिनाम् ।
मया त्वं समनुज्ञातो गच्छ लोकान् अनुत्तमान् ।
गृध्रराज महासत्त्व संस्कृतश् च मया व्रज ॥

TRANSLATION *The way of those given to sacrifice,
the way of one who keeps the sacred fires,
the way of those who never turn back,
and the way of those who give land:
with my leave, go
to those highest worlds;
king of vultures, great of spirit,
given your rites by me, go.*

लीला महात्मा गृध्रराज, मेरी अनुमति से आप उत्तम लोकों
को जाइए, जहाँ यज्ञ करने वाले जाते हैं। मेरे हाथों
संस्कार पाकर जाइए।

SUBTITLE Great-souled king of vultures,
go with my blessing to the highest worlds,
the way of those who sacrifice.
Go, honoured with rites by me.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.64.29-30) में है; दृश्य की पंक्ति लोकों की सूची में से केवल पहला रखती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.64.29-30); the scene's line keeps only the first
of the worlds.

॥ 3.68.37 ॥

CrEd 3.64.36

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.68.38 ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण

ARANYA KANDA · अरण्यकाण्ड

Shabari; spring sharpens the grief

शबरी; वसन्त में बढ़ता दुख

—❧ Valmiki · Aranya Kanda ❧—

3.74.1–3.75.30; 4.1.1–130 (CrEd 3.70.1–3.71.26; 4.1.1–49)

राम और लक्ष्मण तपस्विनी शबरी के आश्रम पहुँचते हैं, जो अपने गुरुओं के कहे अनुसार उनकी राह देख रही थीं। वे उन्हें मतंग वन दिखाती हैं और राम की आज्ञा से देह त्यागकर उन मुनियों के पास चली जाती हैं जिनकी उन्होंने सेवा की थी। राम ऋष्यमूक और सुग्रीव की ओर चलते हैं, पर पम्पा सरोवर का वसन्त सीता के लिए उनके दुख को और बढ़ा देता है।

Rama and Lakshmana reach the hermitage of the ascetic Shabari, who has waited for them as her teachers foretold. She shows them Matanga's forest and, with Rama's leave, gives up her body to join the sages she served. Rama turns toward Rishyamukha and Sugriva, but the spring at Lake Pampa only sharpens his grief for Sita.

१



PART 1 · भाग 1

Shabari; spring sharpens the grief

Valmiki 3.74.1–3.75.30; 4.1.1–130 (CrEd 3.70.1–3.71.26; 4.1.1–49)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 3.74.4–5 ॥
CrEd 3.70.4–5

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.74.6 ॥
CrEd 3.70.6

॥ 3.74.8-9 ॥
CrEd 3.70.7-8

condensed
from 3.74.8-9

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम RAMA

वाल्मीकि ताम् उवाच ततो रामः श्रमणीं संशितव्रताम् ।
कच्चित् ते निर्जिता विघ्नाः कच्चित् ते वर्धते तपः ।
कच्चित् ते नियतः कोप आहारश् च तपोधने ।
कच्चित् ते नियमाः प्राप्ताः कच्चित् ते मनसः सुखम् ।
कच्चित् ते गुरुशुश्रूषा सफला चारुभाषिणि ॥

TRANSLATION *Then Rama said to her,
the ascetic woman firm in her vows:
“Have you overcome all hindrances?
Does your penance grow?
Have you held in check your anger
and your food, lady rich in penance?
Have you kept your observances?
Is there ease in your mind?
Has your service to your teachers
borne fruit, sweet-spoken one?”*

लीला तपोधने, क्या आपने सब विघ्नों पर विजय पाई?
क्या आपका तप बढ़ रहा है? क्या गुरुजनों की
आपकी सेवा सफल हुई?

SUBTITLE Lady rich in penance,
have you overcome every obstacle?
Does your penance grow?
Has your service to your teachers
borne fruit?

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.70.7-8) में है; दृश्य की पंक्ति उनके पहले और आखिरी प्रश्न रखती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.70.7-8); the scene's line keeps the first and last of his questions.

॥ 3.74.14 ॥
CrEd 3.70.10

3.74.11–13:
popular text
only · not in
the CrEd

शबरी SHABARI

वाल्मीकि चित्रकूटं त्वयि प्राप्ते विमानैर् अतुलप्रभैः ।
इतस् ते दिवम् आरूढा यान् अहं पर्यचारिषम् ॥

TRANSLATION *When you came to Chitrakuta,
in chariots of matchless splendour
they rose from here to heaven,
those whom I served.*

लीला जब आप चित्रकूट पहुँचे, तब जिन महर्षियों की मैं
सेवा करती थी, वे अनुपम प्रभा वाले विमानों में
यहीं से स्वर्ग चले गए।

SUBTITLE When you came to Chitrakuta,
those I served
rose from here to heaven,
in chariots of matchless light.

प्रचलित पाठ में इससे ठीक पहले के श्लोक (3.74.11–13, “आज मेरा तप पूरा हुआ, मेरा जन्म सफल हुआ”) CrEd में नहीं हैं। यह श्लोक CrEd का 3.70.10 है।

The verses just before this one in the popular text (3.74.11–13, “today my penance is fulfilled, my birth has borne fruit”) are not in the CrEd. This verse is the CrEd's 3.70.10.

शबरी SHABARI

वाल्मीकि तैश् चाहम् उक्ता धर्मज्ञैर् महाभागैर् महर्षिभिः ।
आगमिष्यति ते रामः सुपुण्यम् इमम् आश्रमम् ।
स ते प्रतिग्रहीतव्यः सौमित्रिसहितोऽतिथिः ।
तं च दृष्ट्वा वरांस् लोकान् अक्षयांस् त्वं गमिष्यसि ॥

TRANSLATION *And those great sages, knowing dharma,
most blessed, said to me:
“Rama will come to you,
to this most holy hermitage.
You must receive him as your guest,
with Saumitri at his side;
and when you have seen him, you will go
to the highest worlds, that never fade.”*

लीला उन्होंने मुझसे कहा था, ‘राम सौमित्र के साथ इस
पवित्र आश्रम में आएँगे। उनका अतिथि-सत्कार
करना। उनके दर्शन करके तुम अक्षय लोकों
को जाओगी।’

SUBTITLE They told me:
'Rama will come here, with Saumitri.
Receive him as your guest.
Seeing him, you will reach the
undying worlds.'

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.70.11-12) में है; दृश्य की पंक्ति पहली पंक्ति को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.70.11-12); the scene's line shortens the first line.

॥ 3.74.17-18a ॥
CrEd 3.70.13

शबरी SHABARI

वाल्मीकि मया तु विविधं वन्यं संचितं पुरुषर्षभ ।
तवार्थे पुरुषव्याघ्र पम्पायास् तीरसंभवम् ॥

TRANSLATION *And I, bull among men,
have gathered forest food of many kinds
for your sake, tiger among men,
grown on the banks of the Pampa.*

लीला पुरुषश्रेष्ठ, आपके लिए मैंने पम्पा के तट पर उपजे
अनेक प्रकार के वन्य फल-मूल संचित किए हैं।

SUBTITLE For you, best of men,
I have gathered forest food of every kind,
grown on the banks of the Pampa.

॥ 3.74.19-20a ॥
CrEd 3.70.15

राम RAMA

वाल्मीकि दनोः सकाशात् तत्त्वेन प्रभावं ते महात्मनः ।
श्रुतं प्रत्यक्षम् इच्छामि संद्रष्टुं यदि मन्यसे ॥

TRANSLATION *From Danu I have heard in truth
of the power of your great-souled ones;
I wish to see it with my own eyes,
if you think it right.*

लीला दनु से मैंने आपके महात्मा गुरुओं का प्रभाव ठीक-
ठीक सुना है। यदि आप उचित समझें, तो मैं उसे
प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ।

SUBTITLE From Danu I have heard
of your great teachers' power.
If you think it fit,
I would see it with my own eyes.

॥ 3.74.20b ॥
CrEd 3.70.16

SILENT MOMENT मौन क्षण

शबरी SHABARI

वाल्मीकि पश्य मेघघनप्रख्यं मृगपक्षिसमाकुलम् ।
मतङ्गवनम् इत्य् एव विश्रुतं रघुनन्दन ।
इह ते भावितात्मानो गुरवो मे महाद्युते ।
जुहवांश् चक्रिरे तीर्थं मन्त्रवन् मन्त्रपूजितम् ॥

TRANSLATION *See, like a dense mass of cloud,
teeming with deer and birds,
this forest, famed by the name
of Matanga's forest, joy of the Raghus.
Here, radiant one, my teachers,
whose souls were made pure,
made offerings with mantras
at this sacred place, hallowed by mantras.*

लीला रघुनन्दन, मेघों-सा सघन, पशु-पक्षियों से भरा यह
वन देखिए। यही मतंगवन है। यहीं मेरे पवित्रात्मा
गुरु मन्त्रों से हवन करते थे।

SUBTITLE See this wood, dark as cloud,
full of birds and deer:
Matanga's forest.
Here my teachers made their offerings.

॥ 3.74.23 ॥
CrEd 3.70.19

शबरी SHABARI

वाल्मीकि इयं प्रत्यक् स्थली वेदी यत्र ते मे सुसत्कृताः ।
पुष्पोपहारं कुर्वन्ति श्रमाद् उद्वेपिभिः करैः ॥

TRANSLATION *This is the altar on the western ground,
where they, so honoured by me,
made offerings of flowers
with hands that trembled from their toil.*

लीला यह वह वेदी है, जहाँ मेरे पूज्य गुरु श्रम से काँपते
हाथों से पुष्प अर्पित करते थे।

SUBTITLE This is the altar
where my teachers offered flowers,
with hands that trembled
from their labours.

॥ 3.74.24 ॥
CrEd 3.70.20

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.74.25 ॥
CrEd 3.70.21

शबरी SHABARI

वाल्मीकि अशक्नुवद्भिस् तैर् गन्तुम् उपवासश्रमालसैः ।
चिन्तितेऽभ्यागतान् पश्य समेतान् सप्त सागरान् ॥

TRANSLATION *When they, made weary by fasting,
could no longer go to them,
they thought of them, and see: they came,
the seven seas, gathered here.*

लीला उपवास से दुर्बल वे समुद्र तक नहीं जा सकते थे,
तो उन्होंने बस चिन्तन किया, और देखिए, सातों
समुद्र यहीं आ मिले।

SUBTITLE Too weak from fasting to go,
they only thought of the seas,
and see: the seven seas
came here together.

॥ 3.74.26 ॥
CrEd 3.70.22

SILENT MOMENT मौन क्षण

शबरी SHABARI

वाल्मीकि कृत्स्नं वनम् इदं दृष्टं श्रोतव्यं च श्रुतं त्वया ।
तद् इच्छाम्य् अभ्यनुज्ञाता त्यक्तुम् एतत् कलेवरम् ।
तेषाम् इच्छाम्य् अहं गन्तुं समीपं भावितात्मनाम् ।
मुनीनाम् आश्रमो येषाम् अहं च परिचारिणी ॥

TRANSLATION *You have seen this whole forest,
and heard what there was to hear;
so, with your leave, I wish
to give up this body.
I wish to go and be near them,
those sages, pure of soul,
whose hermitage this is,
and whom I served.*

लीला आपने यह सारा वन देख लिया, सब सुन लिया।
आपकी आज्ञा हो तो यह देह त्यागकर उन मुनियों
के पास जाऊँ, जिनकी मैं सेविका थी।

SUBTITLE You have seen this forest,
and heard all.
With your leave, I would give up this body,
and go to the sages I served.

॥ 3.74.30–31 ॥
CrEd 3.70.25

राम R A M A

वाल्मीकि धर्मिष्ठं तु वचः श्रुत्वा राघवः सहलक्ष्मणः ।
अनुजानामि गच्छेति प्रहृष्टवदनोऽब्रवीत् ॥

TRANSLATION *Hearing her words, so steeped in dharma,
Raghava, with Lakshmana,
said, with a glad face:
“I give you leave. Go.”*

लीला मैं आज्ञा देता हूँ। जाइए।

SUBTITLE I give you leave.
Go.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.70.25) में है। प्रचलित पाठ में राम इसकी जगह कहते हैं, “भद्रे, आपने मेरा सत्कार किया; अब इच्छा से जाइए” (3.74.31)।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.70.25). In the popular text Rama says instead, “You have honoured me, gentle lady; go as you wish” (3.74.31).

॥ 3.74.32–33 ॥
CrEd 3.70.26

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.74.35 ॥
CrEd 3.70.27

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.75.1–2 ॥
CrEd 3.71.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 3.75.5-6 ॥

CrEd 3.71.5-6

condensed
from 3.75.5-6

राम R A M A

वाल्मीकि प्रनष्टम् अशुभं यत् तत् कल्याणं समुपस्थितम् ।
तेन त्व् एतत् प्रहृष्टं मे मनो लक्ष्मण संप्रति ।
हृदये हि नरव्याघ्र शुभम् आविर्भविष्यति ।
तद् आगच्छ गमिष्यावः पम्पां तां प्रियदर्शनाम् ॥

TRANSLATION *The ill that was ours has vanished,
and good fortune has come near;
that is why my mind, Lakshmana,
is glad now.
For in my heart, tiger among men,
something good will come to light.
So come, we will go
to that Pampa, lovely to see.*

लीला लक्ष्मण, जो अशुभ था, वह नष्ट हो गया। अब
कल्याण आ पहुँचा है। मेरा मन अब प्रसन्न है।
चलो, उस सुन्दर पम्पा की ओर चलें।

SUBTITLE Whatever ill was ours is gone;
good has come.
My heart is glad, Lakshmana.
Come, let us go to lovely Pampa.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.71.5-6) में है; दृश्य की पंक्ति तीसरी पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.71.5-6); the scene's line leaves out the third line.

॥ 3.75.7-8 ॥

CrEd 3.71.7-8

condensed
from 3.75.7-8

राम R A M A

वाल्मीकि ऋश्यमूको गिरिर् यत्र नातिदूरे प्रकाशते ।
यस्मिन् वसति धर्मात्मा सुग्रीवोऽंशुमतः सुतः ।
नित्यं वालिभयात् त्रस्तश्चतुर्भिः सह वानरैः ।
अभित्वरे च तं द्रष्टुं सुग्रीवं वानरर्षभम् ।
तदधीनं हि मे सौम्य सीतायाः परिमार्गणम् ॥

TRANSLATION *There, not far off, the hill
Rishyamukha shines,
where righteous Sugriva lives,
son of the radiant Sun,
ever in fear of Vali,
with four monkeys at his side.
And I am eager to see him,
Sugriva, bull among monkeys,
for on him, gentle one,
rests the search for Sita.*

लीला उसके पास ही ऋश्यमूक पर्वत है, जहाँ सुग्रीव वाली
के भय से सदा त्रस्त रहते हैं। मैं उनसे मिलने को
आतुर हूँ, सीता की खोज उन्हीं पर निर्भर है।

SUBTITLE Near it rises Rishyamukha,
where Sugriva lives, ever in fear of Vali.
I long to see him:
the search for Sita rests on him.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.71.7-8) में है; दृश्य की पंक्ति दूसरी और तीसरी पंक्ति को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.71.7-8); the scene's line shortens the second and third lines.

॥ 3.75.9 ॥
CrEd 3.71.9

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि इति ब्रुवाणं तं रामं सौमित्रिर् इदम् अब्रवीत् ।
गच्छावस् त्वरितं तत्र ममापि त्वरते मनः ॥

TRANSLATION *As Rama spoke so,
Saumitri said to him:
“Let us go there quickly;
my heart too is in haste.”*

लीला चलिए, शीघ्र वहाँ चलें। मेरा मन भी उतावला है।

SUBTITLE Let us go there quickly.
My heart is eager too.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (3.71.9) में है; पहली पंक्ति कथावाचक की है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (3.71.9); the first line is the narrator's.

॥ 4.1.1-3 ॥
CrEd 4.1.1-2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.1.4-5 ॥

CrEd 4.1.3-4

condensed
from 4.1.4-5

राम R A M A

वाल्मीकि सौमित्रे पश्य पम्पायाः काननं शुभदर्शनम् ।
यत्र राजन्ति शैलाभा द्रुमाः सशिखरा इव ।
मां तु शोकाभिसंतप्तम् आधयः पीडयन्ति वै ।
भरतस्य च दुःखेन वैदेह्या हरणेन च ॥

TRANSLATION *Saumitri, see the woods of Pampa,
so lovely to behold,
where trees like hills stand splendid,
as though crowned with peaks.
But sorrows torment me,
burning as I am with grief,
for Bharata's pain
and for Vaidehi carried off.*

लीला सौमित्र, पम्पा का यह वन कितना सुन्दर है, देखो।
पर मैं शोक से जल रहा हूँ। भरत का दुःख और
वैदेही का हरण मुझे पीड़ा दे रहे हैं।

SUBTITLE Saumitri, see how lovely
the woods of Pampa are.
But I burn with grief:
Bharata's sorrow, and Vaidehi taken.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.1.3-4) में है; दृश्य की पंक्ति पेड़ों वाली पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.1.3-4); the scene's line leaves out the line on the trees.

॥ 4.1.22-23 ॥
CrEd 4.1.12-13

राम R A M A

वाल्मीकि अयं वसन्तः सौमित्रे नानाविहगनादितः ।
सीतया विप्रहीणस्य शोकसंदीपनो मम ।
मां हि शोकसमाक्रान्तं संतापयति मन्मथः ।
हृष्टः प्रवदमानश् च समाह्वयति कोकिलः ॥

TRANSLATION *This spring, Saumitri,
loud with many birds,
sets my grief ablaze,
parted as I am from Sita.
For love torments me,
overwhelmed with grief;
the kokila, glad and calling,
challenges me.*

लीला सौमित्र, पक्षियों से गूँजता यह वसन्त, सीता से
बिछुड़े मेरे शोक को और भड़काता है। काम मुझे
तपाता है, और हर्षित कोकिल मानो मुझे
ललकारता है।

SUBTITLE This spring, loud with birds,
only kindles my grief without Sita.
Love burns me,
and the glad kokila calls, as if to taunt me.

॥ 4.1.38 ॥
CrEd 4.1.18

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.1.38-40 ॥

CrEd 4.1.18-19

condensed
from 4.1.38-40

राम R A M A

वाल्मीकि पश्य लक्ष्मण नृत्यन्तं मयूरम् उपनृत्यति ।
शिखिनी मन्मथार्तैषा भर्तारं गिरिसानुषु ।
मयूरस्य वने नूनं रक्षसा न हृता प्रिया ।
मम त्व् अयं विना वासः पुष्पमासे सुदुःसहः ॥

TRANSLATION *Look, Lakshmana: as the peacock dances,
the peahen, struck by love,
dances beside her mate
on the slopes of the hills.
Surely no rakshasa in the forest
has carried off the peacock's love;
but for me, this life without her
in the month of flowers is hard to bear.*

लीला देखो लक्ष्मण, मोरनी नाचते हुए मोर के चारों ओर
नाच रही है। मोर की प्रिया को किसी राक्षस ने
नहीं हरा।

SUBTITLE Look, Lakshmana:
the peahen dances round her mate.
No rakshasa
stole the peacock's love.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.1.18-19) में है; दृश्य की पंक्ति आखिरी पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.1.18-19); the scene's line leaves out the last line.

॥ 4.1.40 ॥

CrEd 4.1.19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.1.47b, 50a ॥
CrEd 4.1.22

राम R A M A

वाल्मीकि नूनं परवशा सीता सापि शोचत्य् अहं यथा ।
श्यामा पद्मपलाशाक्षी मृदुभाषा च मे प्रिया ॥

TRANSLATION *Surely Sita, in another's power,
grieves too, as I do:
dark, with eyes like lotus petals,
gentle of speech, my love.*

लीला निश्चय ही पराये वश में पड़ी सीता भी वैसे ही शोक
करती होगी, जैसे मैं। मेरी श्यामा, कमलनयनी,
मृदुभाषिणी प्रिया।

SUBTITLE Surely Sita too,
in another's power, grieves as I do:
my dark, lotus-eyed love,
so soft of speech.

CrEd का श्लोक (4.1.22) प्रचलित पाठ की दो आधी पंक्तियों को जोड़ता है।

The CrEd verse (4.1.22) joins two popular half-verses.

॥ 4.1.71-72 ॥
CrEd 4.1.30-31

राम R A M A

वाल्मीकि पद्मकोशपलाशानि द्रष्टुं दृष्टिर् हि मन्यते ।
सीताया नेत्रकोशाभ्यां सदृशानीति लक्ष्मण ।
पद्मकेसरसंसृष्टो वृक्षान्तरविनिःसृतः ।
निःश्वास इव सीताया वाति वायुर् मनोहरः ॥

TRANSLATION *My eyes long to look
on the petals of the lotus bud,
for they are like Sita's eyes,
Lakshmana.
Mingled with lotus pollen,
slipping out from among the trees,
the charming wind blows
like Sita's breath.*

लीला लक्ष्मण, ये कमल की पंखुड़ियाँ सीता के नेत्रों जैसी
लगती हैं। और वृक्षों के बीच से आती, कमल-केसर
से सुगन्धित यह हवा सीता की साँस-सी बहती है।

SUBTITLE These lotus petals
seem to me Sita's eyes.
And this wind through the trees, sweet
with pollen,
is like Sita's breath.

॥ 4.1.72 ॥
CrEd 4.1.31

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.1 (the sarga's
end) ॥
CrEd 4.1.48

SILENT MOMENT मौन क्षण

किष्किन्धाकाण्ड

Kishkindha Kanda

3 STORIES

Hanuman on the hill; the jewels

पर्वत पर हनुमान; आभूषण

—❧ Valmiki · Kishkindha Kanda ❧—

4.2.1–4.7.2 (CrEd 4.2.1–4.7.2)

ऋष्यमूक से डरे हुए सुग्रीव दो हथियारबंद अजनबियों को देखते हैं और हनुमान को भिक्षु के वेश में यह जानने भेजते हैं कि वे कौन हैं। हनुमान की वाणी राम का मन जीत लेती है, लक्ष्मण अपनी कथा सुनाते हैं, और अग्नि के सामने राम और सुग्रीव मित्रता की शपथ लेते हैं। सुग्रीव वह वस्त्र और आभूषण लाते हैं जो सीता ने हरण के समय गिराए थे; राम उन्हें पहचानकर रो पड़ते हैं, और पूछते हैं कि हरने वाला कहाँ रहता है।

From Rishyamukha, the frightened Sugriva sees two armed strangers and sends Hanuman down in a mendicant's guise to learn who they are. Hanuman's speech wins Rama, Lakshmana tells their story, and Rama and Sugriva swear friendship before the fire. Sugriva brings out the cloth and ornaments Sita dropped in her flight; Rama knows them and weeps, and asks where her captor lives.

१



PART 1 · भाग 1

The mendicant

Valmiki 4.2.1–4.4.35 (CrEd 4.2.1–4.4.26)

॥ 4.2.1-3 ॥
CrEd 4.2.1-3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.2.6 ॥
CrEd 4.2.6

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि एतौ वनम् इदं दुर्गं वालिप्रणिहितौ ध्रुवम् ।
छद्मना चीरवसनौ प्रचरन्ताव् इहागतौ ॥

TRANSLATION *These two, surely sent by Vali
into this forest, hard to pass,
have come here roaming in disguise,
dressed in bark cloth.*

लीला छाल के वस्त्र पहने ये दोनों इस दुर्गम वन में
छद्मवेश में घूमते हुए यहाँ आए हैं। निश्चय ही इन्हें
वाली ने भेजा है।

SUBTITLE These two, in bark cloth,
roam this pathless forest
in disguise.
Vali has sent them, surely.

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यस्माद् उद्विग्नचेतास् त्वं प्रद्रुतो हरिपुंगव ।
तं क्रूरदर्शनं क्रूरं नेह पश्यामि वालिनम् ।
यस्मात् तव भयं सौम्य पूर्वजात् पापकर्मणः ।
स नेह वाली दुष्टात्मा न ते पश्याम्य् अहं भयम् ॥

TRANSLATION *The one you fled from in alarm,
bull among monkeys,
Vali, cruel and cruel to look on,
I do not see here.
The one you fear, gentle one,
your elder brother of evil deeds,
that wicked Vali, is not here;
I see nothing for you to fear.*

लीला जिस क्रूर वाली से डरकर आप भागे थे, आपका वह
पापी बड़ा भाई, यहाँ नहीं है। मुझे यहाँ कोई भय
नहीं दिखता।

SUBTITLE The cruel Vali you fled from,
your wicked elder brother,
is not here, my lord.
I see nothing to fear.

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अहो शाखामृगत्वं ते व्यक्तम् एव प्लवंगम् ।
लघुचित्ततयात्मानं न स्थापयसि यो मतौ ।
बुद्धिविज्ञानसंपन्न इङ्गितैः सर्वम् आचर ।
न ह्य् अबुद्धिं गतो राजा सर्वभूतानि शास्ति हि ॥

TRANSLATION *Ah, monkey, your branch-dweller's nature
is plain indeed to see,
you who, so light of mind,
cannot hold yourself steady in thought.
With wit and understanding,
do all things by the signs;
for a king fallen into folly
cannot govern all beings.*

लीला अहो, आपका वानर-स्वभाव दिख रहा है। चंचल
मन स्थिर नहीं रहता। संकेतों को पढ़िए। बुद्धिहीन
राजा किसी पर शासन नहीं करता।

SUBTITLE Ah, your monkey nature shows:
your mind is too light to hold steady.
Read the signs.
A king without sense rules no one.

॥ 4.2.24,
4.2.26 ॥

CrEd 4.2.23, 4.2.25

condensed
from 4.2.24,
4.2.26

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि तौ त्वया प्राकृतेनैव गत्वा ज्ञेयौ प्लवंगम ।
शङ्कितानां प्रकरैश् च रूपव्याभाषणेन च ।
... ।
ममैवाभिमुखं स्थित्वा पृच्छ त्वं हरिपुंगव ।
प्रयोजनं प्रवेशस्य वनस्यास्य धनुर्धरौ ॥

TRANSLATION *Go to them as a common person,
monkey, and come to know them,
by their bearing, as the wary do,
by their looks and by their speech.
...
Stand face to face with them,
bull among monkeys, and ask
why they have entered this forest,
those two bowmen.*

लीला साधारण वेश में उनके पास जाओ। उनके रूप और
वाणी से जानो कि ये धनुर्धर कौन हैं, और इस वन
में क्यों आए।

SUBTITLE Go to them as a common wanderer.
Learn from their looks and words
who these bowmen are,
and why they came.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.2.23 and 4.2.25) में है; दृश्य की पंक्ति दोनों श्लोकों को जोड़ती है और दूसरे को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.2.23 and 4.2.25); the scene's line joins the two verses and shortens the second.

॥ 4.3.1-6 ॥
CrEd 4.3.1-4

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.3.8, 4.3.11 ॥

CrEd 4.3.6cd, 4.3.9

condensed
from 4.3.8,
4.3.11

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि धैर्यवन्तौ सुवर्णाभौ कौ युवां चीरवाससौ ।
प्रभया पर्वतेन्द्रोऽयं युवयोर् अवभासितः ।
राज्यार्हाव् अमरप्रख्यौ कथं देशम् इहागतौ ॥

TRANSLATION *Steadfast, golden-bright,
who are you two, clad in bark?
This king of mountains
is lit up by your radiance.
Fit for kingdoms, like the immortals,
how have you come to this land?*

लीला यह पर्वतराज आपकी प्रभा से जगमगा उठा है।
आप राज्य के योग्य हैं, देवताओं जैसे। स्वर्ण-सी
कांति वाले, छाल पहने आप दोनों कौन हैं?

SUBTITLE This king of mountains
glows with your light.
You are fit for kingdoms, like immortals.
Who are you two, in bark cloth?

दो श्लोक जुड़े हैं (CrEd 4.3.6cd और 4.3.9)।

Two verses joined (CrEd 4.3.6cd and 4.3.9).

॥ 4.3.19 ॥

CrEd 4.3.17

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि एवं मां परिभाषन्तं कस्माद् वै नाभिभाषथः ॥

TRANSLATION *When I address you so,
why do you not answer me?*

लीला मैं आपसे इस प्रकार बोल रहा हूँ, और आप कुछ
नहीं कहते। आप मुझे उत्तर क्यों नहीं देते?

SUBTITLE I speak to you like this,
and you say nothing.
Why do you not answer me?

॥ 4.3.20-21 ॥

CrEd 4.3.18-19

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि सुग्रीवो नाम धर्मात्मा कश्चिद् वानरयूथपः ।
वीरो विनिकृतो भ्रात्रा जगद् भ्रमति दुःखितः ।
प्राप्तोऽहं प्रेषितस् तेन सुग्रीवेण महात्मना ।
राज्ञा वानरमुख्यानां हनुमान् नाम वानरः ॥

TRANSLATION *There is a righteous monkey,
a leader of troops, named Sugriva,
a hero wronged by his brother,
who wanders the world in grief.
I have come, sent by him,
by great-souled Sugriva,
king of the foremost monkeys:
a monkey named Hanuman.*

लीला सुग्रीव नाम के एक धर्मात्मा वानर-यूथपति, वीर,
जिन्हें भाई ने छला है, दुखी होकर भटकते हैं।
उन्होंने मुझे भेजा है। मैं हनुमान हूँ।

SUBTITLE A righteous monkey chief, Sugriva,
wronged by his brother,
wanders the world in grief.
He sent me. I am Hanuman.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.3.18-19) में है; दृश्य की पंक्ति आखिरी पंक्ति को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.3.18-19); the scene's line shortens the last line.

॥ 4.3.22-23 ॥
CrEd 4.3.20-21

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि युवाभ्यां सह धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यम् इच्छति ।
तस्य मां सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम् ।
भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नं सुग्रीवप्रियकाम्यया ।
ऋश्यमूकाद् इह प्राप्तं कामगं कामरूपिणम् ॥

TRANSLATION *Righteous Sugriva
seeks friendship with you both.
Know me as his minister,
a monkey, son of the Wind,
hidden in a mendicant's form
to do Sugriva a kindness,
come here from Rishyamukha,
going where I will, taking what form I will.*

लीला धर्मात्मा सुग्रीव आपसे मित्रता चाहते हैं। मुझे
उनका मंत्री, पवनपुत्र जानिए, जो भिक्षु के वेश में
छिपा है। मैं इच्छानुसार रूप धारण करता हूँ।

SUBTITLE Sugriva wants your friendship.
I am his minister, the Wind's son,
hidden in a mendicant's form.
I take what form I will.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.3.20-21) में है; दृश्य की पंक्ति आखिरी पंक्ति को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.3.20-21); the scene's line shortens the last line.

॥ 4.3.24-25 ॥
CrEd 4.3.22-23

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि एतच् छुत्वा वचस् तस्य रामो लक्ष्मणम् अब्रवीत् ।
प्रहृष्टवदनः श्रीमान् भ्रातरं पार्श्वतः स्थितम् ।
सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।
तम् एव काङ्क्षमाणस्य ममान्तिकम् उपागतः ॥

TRANSLATION *Hearing these words of his,
glorious Rama, his face glad,
said to Lakshmana,
his brother standing at his side:
“This is the minister
of great-souled Sugriva, lord of monkeys;
he has come to me, who was longing
for that very one.”*

लीला यह वानरराज महात्मा सुग्रीव का मंत्री है, जिन्हें मैं
खोज ही रहा था। यह स्वयं मेरे पास आया है।

SUBTITLE This is great Sugriva's minister,
the very one I was seeking.
He has come to me himself.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.3.23-24) में है; पहला श्लोक कथावाचक का है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.3.23-24); the first verse is the narrator's.

॥ 4.3.27 ॥
CrEd 4.3.25

राम R A M A

वाल्मीकि तम् अभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम् ।
वाक्यज्ञं मधुरैर् वाक्यैः स्नेहयुक्तम् अरिदमम् ॥

TRANSLATION *Speak, Saumitri, with sweet words
to this monkey, Sugriva's minister,
who knows the art of speech,
who is full of warmth, a tamer of foes.*

लीला सौमित्र, सुग्रीव के इस मंत्री को मधुर वचनों से
उत्तर दो। यह वाणी का मर्मज्ञ है, और स्नेह से
बोलता है।

SUBTITLE Answer him, Saumitri, with sweet words.
He is a master of speech,
and he speaks with warmth.

राम R A M A

वाल्मीकि नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः ।
नासामवेदविदुषः शक्यम् एवं विभाषितुम् ।
नूनं व्याकरणं कृत्स्नम् अनेन बहुधा श्रुतम् ।
बहु व्याहरतानेन न किं चिद् अपशब्दितम् ॥

TRANSLATION *None untrained in the Rig Veda,
none who has not borne the Yajur Veda,
none who does not know the Sama Veda
could speak in such a way.
Surely he has heard all of grammar,
and heard it many times;
for though he has said so much,
not one word was wrongly spoken.*

लीला जिसने ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद न पढ़ा हो, वह
ऐसा नहीं बोल सकता। निश्चय ही इसने पूरा
व्याकरण पढ़ा है। इतना बोला, पर एक भी शब्द
अशुद्ध नहीं।

SUBTITLE No one untaught in the Rig,
the Yajur and the Sama Veda
could speak so.
So much said, and not one word wrong.

॥ 4.4.6, 4.4.8 ॥
CrEd 4.4.6

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि राजा दशरथो नाम द्युतिमान् धर्मवत्सलः ।
तस्यायं पूर्वजः पुत्रो रामो नाम जनैः श्रुतः ॥

TRANSLATION *There was a king named Dasharatha,
radiant, devoted to dharma;
this is his eldest son,
known among men as Rama.*

लीला दशरथ नाम के एक तेजस्वी, धर्मप्रेमी राजा थे।
ये उनके ज्येष्ठ पुत्र हैं, जिन्हें लोग राम के नाम से
जानते हैं।

SUBTITLE There was a king, Dasharatha,
radiant, devoted to dharma.
This is his eldest son,
known to all as Rama.

॥ 4.4.10-11 ॥
CrEd 4.4.8

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि राज्याद् भ्रष्टो वने वस्तुं मया सार्धम् इहागतः ।
भार्यया च महातेजाः सीतयानुगतो वशी ॥

TRANSLATION *Fallen from the kingdom, he has come here
to live in the forest with me;
and by his wife Sita he was followed,
he of great splendour, master of himself.*

लीला राज्य से वंचित होकर ये मेरे साथ वन में रहने आए,
और इनकी पत्नी सीता भी इनके पीछे चली आई।

SUBTITLE He lost his kingdom
and came to live in the forest with me,
and his wife Sita followed him.

CrEd में इस श्लोक (4.4.8) में एक तीसरी पंक्ति भी है: “जैसे दिन ढलने पर सूर्य के पीछे उसकी प्रभा”।

In the CrEd the verse (4.4.8) has a third line: “as the sun at day's end is followed by its light”.

॥ 4.4.14 ॥
CrEd 4.4.11

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि रक्षसापहता भार्या रहिते कामरूपिणा ।
तच् च न ज्ञायते रक्षः पत्नी येनास्य सा हता ॥

TRANSLATION *While he was away, his wife was carried off
by a rakshasa who takes what form he will;
and it is not known, that rakshasa
by whom his wife was taken.*

लीला जब ये दूर थे, तब इच्छानुसार रूप बदलने वाला
एक राक्षस इनकी पत्नी को हर ले गया। किसने हरा,
हम नहीं जानते।

SUBTITLE While he was away,
a shape-changing rakshasa
carried off his wife.
Who took her, we do not know.

॥ 4.4.18 ॥
CrEd 4.4.15

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि एष दत्त्वा च वित्तानि प्राप्य चानुत्तमं यशः ।
लोकनाथः पुरा भूत्वा सुग्रीवं नाथम् इच्छति ॥

TRANSLATION *He who gave away riches
and won the highest fame,
who was once lord of the world,
now seeks Sugriva for his lord.*

लीला जिन्होंने धन का दान किया और परम यश पाया, जो
कभी जगत के स्वामी थे, वे आज सुग्रीव को अपना
स्वामी बनाना चाहते हैं।

SUBTITLE He who gave away riches
and won the highest fame,
once lord of the world,
now seeks Sugriva for his lord.

॥ 4.4.26 ॥
CrEd 4.4.18

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि ईदृशा बुद्धिसंपन्ना जितक्रोधा जितेन्द्रियाः ।
द्रष्टव्या वानरेन्द्रेण दिष्ट्या दर्शनम् आगताः ॥

TRANSLATION *Such as you, rich in wisdom,
masters of anger and of the senses,
the lord of monkeys must see;
by good fortune you have come into our sight.*

लीला आप जैसे बुद्धिमान, क्रोध और इंद्रियों को जीतने
वाले पुरुषों से हमारे राजा को मिलना चाहिए।
सौभाग्य है कि आप आए।

SUBTITLE Men like you, wise,
masters of anger and the senses,
our king must meet.
It is our good fortune you came.

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि स हि राज्याच् च विभ्रष्टः कृतवैरश् च वालिना ।
हतदारो वने त्रस्तो भ्रात्रा विनिकृतो भृशम् ।
करिष्यति स साहाय्यं युवयोर् भास्करात्मजः ।
सुग्रीवः सह चास्माभिः सीतायाः परिमार्गणे ॥

TRANSLATION *For he has fallen from the kingdom,
and Vali has made him his enemy;
robbed of his wife, in fear in the forest,
deeply wronged by his brother.
He will give you both his help,
Sugriva, son of the Sun,
and we with him,
in the search for Sita.*

लीला वाली ने उनका राज्य और पत्नी छीन ली। वे भय में
जीते हैं। सूर्यपुत्र सुग्रीव हम सबके साथ सीता की
खोज में आपकी सहायता करेंगे।

SUBTITLE Vali took his kingdom and his wife;
he lives in fear.
Sugriva, the Sun's son,
will help you search for Sita.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.4.19-20) में है; दृश्य की पंक्ति दूसरी पंक्ति को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.4.19-20); the scene's line shortens the second line.

॥ 4.4.29 ॥
CrEd 4.4.21

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि इत् एवम् उक्त्वा हनुमाञ् श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ।
बभाषे सोऽभिगच्छामः सुग्रीवम् इति राघवम् ॥

TRANSLATION *So saying, Hanuman,
gently, in a sweet voice,
said to Raghava:
“Let us go to Sugriva.”*

लीला चलिए, हम सुग्रीव के पास चलें।

SUBTITLE Come,
let us go to Sugriva.

यहाँ दी गई संस्कृत CrEd (4.4.21) की है, “सोऽभिगच्छामः” (हम उनके पास चलें); प्रचलित पाठ में “साधु गच्छामः” (अच्छा, चलें) है।

The Sanskrit shown is the CrEd's (4.4.21), so 'bhigacchāmaḥ, “let us go to”; the popular text reads sādhu gacchāmaḥ, “let us go, then”.

॥ 4.4.31-32 ॥
CrEd 4.4.23-24

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि कपिः कथयते हृष्टो यथायं मारुतात्मजः ।
कृत्यवान् सोऽपि संप्राप्तः कृतकृत्योऽसि राघव ।
प्रसन्नमुखवर्णश् च व्यक्तं हृष्टश् च भाषते ।
नानृतं वक्ष्यते वीरो हनूमान् मारुतात्मजः ॥

TRANSLATION *As this monkey, son of the Wind,
speaks to us so gladly,
he too has come with a need of his own;
your work is done, Raghava.
The colour of his face is clear,
and plainly he speaks with gladness;
heroic Hanuman, son of the Wind,
will not speak falsely.*

लीला ये प्रसन्न होकर बोल रहे हैं। इनके राजा का भी
प्रयोजन है। राघव, आपका काम हुआ समझिए।
इनका मुख निर्मल है, ये झूठ नहीं बोलेंगे।

SUBTITLE He speaks gladly; his king needs us too.
Your work is as good as done, Raghava.
His face is clear;
he will not lie.

॥ 4.4.33-35 ॥
CrEd 4.4.25-26

SILENT MOMENT मौन क्षण



PART 2 · भाग 2

The fire and the jewels

Valmiki 4.5.1–4.7.2 (CrEd 4.5.1–4.7.2)

॥ 4.5.2-3 ॥

CrEd 4.5.2-3

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अयं रामो महाप्राज्ञः संप्राप्तो दृढविक्रमः ।
 लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा रामोऽयं सत्यविक्रमः ।
 इक्ष्वाकूणां कुले जातो रामो दशरथात्मजः ।
 धर्मे निगदितश्चैव पितुर्निर्देशपालकः ॥

TRANSLATION *This is Rama, of great wisdom,
 who has come, firm in valour,
 with Lakshmana his brother;
 this Rama is true in valour.
 Born in the line of the Ikshvakus,
 Rama, son of Dasharatha,
 renowned in dharma,
 keeper of his father's command.*

लीला ये राम हैं, महाबुद्धिमान, दृढ़ पराक्रमी, जो अपने
 भाई लक्ष्मण के साथ आए हैं, इक्ष्वाकुकुल में जन्मे,
 दशरथ के पुत्र, पिता की आज्ञा के पालक।

SUBTITLE This is Rama, wise, steady in valour,
 come with his brother Lakshmana:
 an Ikshvaku, Dasharatha's son,
 keeper of his father's word.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.5.2-3) में है; दृश्य की पंक्ति दूसरी पंक्ति को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.5.2-3); the scene's line shortens the second line.

॥ 4.5.6-7 ॥

CrEd 4.5.4, 4.5.7

condensed
from 4.5.6-7

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि तस्यास्य वसतोऽरण्ये नियतस्य महात्मनः ।
रक्षसापहृता भार्या स त्वां शरणम् आगतः ।
... ।

भवता सख्यकामौ तौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।
प्रतिगृह्यार्चयस्वमौ पूजनीयतमाव् उभौ ॥

TRANSLATION *While he, great-souled and restrained,
was living in the forest,
a rakshasa carried off his wife;
he has come to you for refuge.
...
Seeking friendship with you,
these two brothers, Rama and Lakshmana:
receive them and honour them,
for both are most worthy of honour.*

लीला जब ये वन में रह रहे थे, एक राक्षस इनकी पत्नी को
हर ले गया। ये आपकी शरण में आए हैं। इन्हें मित्र
बनाइए, और इनका सत्कार कीजिए।

SUBTITLE While he lived in the forest,
a rakshasa carried off his wife.
He comes to you for refuge.
Take them as friends, and honour them.

संस्कृत वैसी दी गई है जैसी CrEd (4.5.4 और 4.5.7) में है। प्रचलित पाठ यहाँ रावण का नाम लेता है ("रावणेन हृता", 4.5.6); CrEd में "एक राक्षस" है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (4.5.4 and 4.5.7). The popular text names Ravana here (rāvaṇena hṛtā, 4.5.6); the CrEd says "a rakshasa".

॥ 4.5.7-8 ॥

CrEd 4.5.8-9

SILENT MOMENT मौन क्षण

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि भवान् धर्मविनीतश् च विक्रान्तः सर्ववत्सलः ।
आख्याता वायुपुत्रेण तत्त्वतो मे भवद्गुणाः ।
तन् ममैवैष सत्कारो लाभश् चैवोत्तमः प्रभो ।
यत् त्वम् इच्छसि सौहार्दं वानरेण मया सह ॥

TRANSLATION *You are schooled in dharma,
valiant, kind to all;
the Wind's son has told me truly
of your virtues.
So this is honour to me,
and the highest gain, my lord,
that you desire friendship
with me, a monkey.*

लीला आप धर्म में शिक्षित, पराक्रमी और सबके प्रति
स्नेही हैं। पवनपुत्र ने मुझे सब सच बताया है। आप
एक वानर से मित्रता चाहते हैं, यह मेरा सम्मान है।

SUBTITLE Schooled in dharma, valiant, kind to all:
so the Wind's son has told me.
That you want a monkey's friendship
does me honour.

॥ 4.5.11 ॥
CrEd 4.5.12

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि रोचते यदि वा सख्यं बाहुर् एष प्रसारितः ।
गृह्यतां पाणिना पाणिर् मर्यादा वध्यतां ध्रुवा ॥

TRANSLATION *If friendship pleases you,
here is my arm, held out;
let hand be taken in hand,
and let a firm bond be made.*

लीला यदि आपको मित्रता रुचती है, तो यह मेरी भुजा
फैली है। मेरा हाथ अपने हाथ में लीजिए, और यह
बंधन सदा के लिए अटल हो।

SUBTITLE If friendship pleases you,
here is my arm held out.
Take my hand in yours,
and let the bond hold for ever.

॥ 4.5.12 ॥
CrEd 4.5.13

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.5.13–14 ॥
CrEd 4.5.14–15

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.5.15 ॥
CrEd 4.5.16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.5.16 ॥
CrEd 4.5.17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.6.1-4 ॥

CrEd 4.6.1-3

condensed
from 4.6.1-4

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि अयम् आख्याति मे राम सचिवो मन्त्रिसत्तमः ।
हनुमान् यन्निमित्तं त्वं निर्जनं वनम् आगतः ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा वसतश् च वने तव ।
रक्षसापहृता भार्या मैथिली जनकात्मजा ।
त्वया वियुक्ता रुदती लक्ष्मणेन च धीमता ।
अन्तरं प्रेप्सुना तेन हत्वा गृध्रं जटायुषम् ॥

TRANSLATION *Rama, my minister Hanuman,
best of counsellors, has told me
why you have come
to this empty forest:
that while you lived in the forest
with Lakshmana your brother,
a rakshasa carried off your wife,
Maithili, Janaka's daughter,
weeping, parted from you
and from wise Lakshmana;
watching for his chance, he
killed the vulture Jatayu.*

लीला हनुमान ने मुझे बताया कि आप इस निर्जन वन में
क्यों आए। जब आप और लक्ष्मण दूर थे, एक
राक्षस आपकी रोती हुई पत्नी को हर ले गया।

SUBTITLE Hanuman told me why you came
to this empty forest:
while you and Lakshmana were away,
a rakshasa took your weeping wife.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.6.1-3) में है; दृश्य की पंक्ति वन में भाइयों के रहने की और जटायु के मारे जाने की बात छोड़ती है;
वाक्य अगले श्लोक में आगे चलता है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.6.1–3); the scene's line leaves out the brothers' life in the forest and the killing of Jatayu; the sentence goes on into the next verse.

॥ 4.6.5–6 ॥
CrEd 4.6.4–5

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि भार्यावियोगजं दुःखं नचिरात् त्वं विमोक्ष्यसे ।
अहं ताम् आनयिष्यामि नष्टां वेदश्रुतिं यथा ।
रसातले वा वर्तन्तीं वर्तन्तीं वा नभस्तले ।
अहम् आनीय दास्यामि तव भार्याम् अरिंदम ॥

TRANSLATION *From the grief of parting from your wife
you will soon be set free.
I will bring her back,
as the lost Veda was brought back.
Whether she dwells in the underworld
or dwells in the sky,
I will bring your wife and give her to you,
tamer of foes.*

लीला शीघ्र ही आप इस दुख से मुक्त होंगे। वे पाताल में
हों या आकाश में, मैं उन्हें खोए हुए वेद की भाँति
लौटा लाऊँगा।

SUBTITLE Soon you will be free of this grief.
Under the earth or in the sky,
I will bring her back,
like the lost Veda.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.6.4–5) में है; दृश्य की पंक्ति आखिरी पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.6.4–5); the scene's line leaves out the last line.

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि अनुमानात् तु जानामि मैथिली सा न संशयः ।
हियमाणा मया दृष्टा रक्षसा क्रूरकर्मणा ।
क्रोशन्ती राम रामेति लक्ष्मणेति च विस्वरम् ।
स्फुरन्ती रावणस्याङ्के पन्नगेन्द्रवधूर् यथा ॥

TRANSLATION *But I know by inference,
beyond doubt, it was Maithili:
I saw her carried off
by a rakshasa of cruel deeds,
crying, "Rama, Rama!"
and "Lakshmana!" in a broken voice,
writhing in Ravana's lap
like the wife of a serpent king.*

लीला निश्चय ही वे मैथिली थीं, जिन्हें मैंने एक क्रूर राक्षस
के द्वारा ले जाते देखा। वे पुकार रही थीं, "राम! राम!
लक्ष्मण!", और रावण की गोद में नागिन-सी
छटपटा रही थीं।

SUBTITLE It was Maithili I saw carried off,
crying "Rama! Rama! Lakshmana!",
writhing in Ravana's lap
like a serpent queen.

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि आत्मना पञ्चमं मां हि दृष्ट्वा शैलतटे स्थितम् ।
उत्तरीयं तथा त्यक्तं शुभान् आभरणानि च ।
तान् अस्माभिर् गृहीतानि निहितानि च राघव ।
आनयिष्याम्य अहं तानि प्रत्यभिज्ञातुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *For seeing me on the mountain slope,
standing there, myself the fifth,
she let fall her upper cloth
and her lovely ornaments.
These we took up
and put away, Raghava;
I will bring them;
you should know them again.*

लीला पर्वत पर हम पाँचों को देखकर उन्होंने अपना
उत्तरीय और आभूषण गिरा दिए। हमने उन्हें
सँभालकर रखा है। मैं लाता हूँ, आप पहचानिए।

SUBTITLE Seeing us five on the ridge,
she dropped her cloth and ornaments.
We kept them.
I will bring them for you to know.

॥ 4.6.13 ॥
CrEd 4.6.11

राम R A M A

वाल्मीकि तम् अब्रवीत् ततो रामः सुग्रीवं प्रियवादिनम् ।
आनयस्व सखे शीघ्रं किमर्थं प्रविलम्बसे ॥

TRANSLATION *Then Rama said
to Sugriva, speaker of kind words:
“Bring them quickly, friend.
Why do you delay?”*

लीला सखे, शीघ्र ले आओ! देर क्यों करते हो?

SUBTITLE Bring them quickly, friend!
Why do you wait?

॥ 4.6.14 ॥
CrEd 4.6.12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.6.15 ॥
CrEd 4.6.13

सुग्रीव S U G R I V A

वाल्मीकि उत्तरीयं गृहीत्वा तु शुभान्य् आभरणानि च ।
इदं पश्येति रामाय दर्शयाम् आस वानरः ॥

TRANSLATION *Taking the upper cloth
and the lovely ornaments,
the monkey showed them to Rama:
“See this.”*

लीला देखिए।

SUBTITLE See.

॥ 4.6.16 ॥
CrEd 4.6.14

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.6.17 ॥
CrEd 4.6.15

राम R A M A

वाल्मीकि सीतास्नेहप्रवृत्तेन स तु बाष्पेण दूषितः ।
हा प्रियेति रुदन् धैर्यम् उत्सृज्य न्यपतत् क्षितौ ॥

TRANSLATION *Blinded by tears
that welled from his love for Sita,
he wept, "Ah, beloved!",
let go his composure, and fell to the ground.*

लीला हा प्रिये!

SUBTITLE Ah, my beloved!

॥ 4.6.17-19 ॥
CrEd 4.6.15-17

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि पश्य लक्ष्मण वैदेह्या संत्यक्तं ह्रियमाणया ।
उत्तरीयम् इदं भूमौ शरीराद् भूषणानि च ।
शाद्वलिन्यां ध्रुवं भूम्यां सीतया ह्रियमाणया ।
उत्सृष्टं भूषणम् इदं तथारूपं हि दृश्यते ॥

TRANSLATION *Look, Lakshmana: this upper cloth,
let fall by Vaidehi
as she was carried off, here on the ground,
and the ornaments from her body.
Surely on grassy ground
Sita, as she was carried off,
dropped these ornaments,
for so they look.*

लीला देखो लक्ष्मण, हरी जाती वैदेही ने यह उत्तरीय और
अपने अंगों के आभूषण गिराए थे। ये घास पर गिरे
होंगे। देखो, ज्यों के त्यों हैं।

SUBTITLE Look, Lakshmana: the cloth
Vaidehi let fall as she was carried off,
and her ornaments. They fell on grass:
see, they are unharmed.

॥ 4.6.22-23a ॥

popular text
only · not in
the CrEd

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले ।
नूपुरे त्व् अभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ॥

TRANSLATION *I do not know the armlets,
I do not know the earrings;
but the anklets I know,
from bowing at her feet each day.*

लीला मैं इन बाजूबंदों को नहीं पहचानता, न इन कुंडलों
को। पर नूपुरों को पहचानता हूँ, क्योंकि मैं नित्य
उनके चरणों में प्रणाम करता था।

SUBTITLE I do not know the armlets,
nor the earrings.
But I know the anklets,
for every day I bowed at her feet.

॥ 4.6.24-25a ॥

CrEd 4.6.20-21ab

राम RAMA

वाल्मीकि ब्रूहि सुग्रीव कं देशं ह्रियन्ती लक्षिता त्वया ।
रक्षसा रौद्ररूपेण मम प्राणसमा प्रिया ।
क्व वा वसति तद् रक्षो महद् व्यसनदं मम ॥

TRANSLATION *Tell me, Sugriva: toward what land
did you see her carried
by the rakshasa of fearsome form,
my love, dear to me as life?
And where does he live, that rakshasa
who brings me this great calamity?*

लीला बताओ सुग्रीव, वह भयानक राक्षस मेरी प्राणप्रिया
को किस दिशा में ले गया? कहाँ रहता है वह,
जिसने मुझ पर यह विपत्ति डाली?

SUBTITLE Tell me, Sugriva: which way
did that fierce rakshasa take her,
my love, dear as my life?
Where does he live?

॥ 4.6.25b-26 ॥
CrEd 4.6.21cd-22

राम R A M A

वाल्मीकि यन्निमित्तम् अहं सर्वान् नाशयिष्यामि राक्षसान् ।
हरता मैथिलीं येन मां च रोषयता भृशम् ।
आत्मनो जीवितान्ताय मृत्युद्वारम् अपावृतम् ॥

TRANSLATION *For his sake I will destroy
all the rakshasas.
By carrying off Maithili
and rousing me to fierce anger,
he has opened wide the door of death
to end his own life.*

लीला उसी के कारण मैं सब राक्षसों का नाश करूँगा।
मैथिली को चुराकर और मेरा क्रोध जगाकर उसने
अपनी मृत्यु का द्वार खोल लिया है।

SUBTITLE Because of him
I will destroy every rakshasa.
By stealing Maithili,
he has opened the door of his own death.

॥ 4.6.27 ॥
CrEd 4.6.23

राम R A M A

वाल्मीकि मम दयिततमा हृता वनाद् रजनिचरेण विमथ्य येन सा ।
कथय मम रिपुं तम् अद्य वै प्रवगपते यमसंनिधिं नयामि ॥

TRANSLATION *My dearest was taken from the forest
by the night-walker who seized her by force;
tell me of that enemy, lord of monkeys:
this very day I lead him before Yama.*

लीला वानरराज, मुझे मेरा शत्रु बताओ। आज ही मैं उसे
यमराज के सामने पहुँचा दूँगा।

SUBTITLE Tell me who my enemy is,
lord of monkeys,
and today I will lead him
into Yama's presence.

॥ 4.7.1-2 ॥
CrEd 4.7.1-2

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि एवम् उक्तस् तु सुग्रीवो रामेणार्तेन वानरः ।
अब्रवीत् प्राञ्जलिर् वाक्यं सबाष्पं बाष्पगद्गदः ।
न जाने निलयं तस्य सर्वथा पापरक्षसः ।
सामर्थ्यं विक्रमं वापि दौष्कुलेयस्य वा कुलम् ॥

TRANSLATION *Spoken to so by grieving Rama,
the monkey Sugriva,
with joined palms, in tears,
his voice choked with tears, said:
“I do not know at all
where that evil rakshasa dwells,
nor his strength, nor his valour,
nor the family of that low-born one.”*

लीला मैं नहीं जानता कि वह पापी राक्षस कहाँ रहता है,
न उसकी शक्ति, न उसका पराक्रम, न उस नीच
का कुल।

SUBTITLE I do not know
where that evil rakshasa lives,
nor his power, nor his valour,
nor his low-born line.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.7.1-2) में है; पहली पंक्ति कथावाचक की है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.7.1-2); the first line is the narrator's.

॥ 4.7.1 ॥
CrEd 4.7.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

KISHKINDHA KANDA · किष्किन्धाकाण्ड

Behind the tree

पेड़ की ओट से

—❧ Valmiki · Kishkindha Kanda ❧—

4.12.14–4.22.32 (CrEd 4.12.14–4.22.26)

सुग्रीव वाली को ललकारते हैं और हार जाते हैं, क्योंकि राम दोनों भाइयों को अलग नहीं पहचान पाते; फूलों वाली लता पहनकर वे वाली को फिर ललकारते हैं। तारा वाली को चेताती हैं कि राम सुग्रीव के साथ हैं, पर वाली लड़ने निकलते हैं, और राम ओट से उन पर बाण चलाते हैं। वाली राम पर अधर्म का आरोप लगाते हैं, राम राजधर्म से उत्तर देते हैं, और मरते हुए वाली मन का बैर छोड़कर सुग्रीव को अपनी स्वर्णमाला देते हैं और अंगद और तारा को उन्हें सौंपते हैं।

Sugriva challenges Vali and is beaten, for Rama cannot tell the brothers apart; marked with a flowering creeper, he calls Vali out again. Tara warns Vali that Rama stands with Sugriva, but Vali goes out to fight, and Rama shoots him from cover. Vali charges Rama with adharma, Rama answers with the king's dharma, and the dying Vali, reconciled, gives Sugriva his golden chain and commends Angada and Tara to him.

१



PART 1 · भाग 1

The garland

Valmiki 4.12.14–4.14.22 (CrEd 4.12.14–4.14.21)

॥ 4.12.15–19 ॥
CrEd 4.12.15–19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.12.20 ॥
CrEd 4.12.20

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.12.21 ॥
CrEd 4.12.21

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.12.23 ॥
CrEd 4.12.23

वाली VALI

वाल्मीकि तं प्रविष्टं वनं दृष्ट्वा वाली शापभयात् ततः ।
मुक्तो ह्य् असि त्वम् इत्य् उक्त्वा स निवृत्तो महाबलः ॥

TRANSLATION *Seeing him enter the forest,
Vali, in fear of the curse,
said, "You have got away!",
and the mighty one turned back.*

लीला तो तू बच निकला!

SUBTITLE So you have escaped me!

॥ 4.12.26 ॥
CrEd 4.12.26

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि आह्वयस्वेति माम् उक्त्वा दर्शयित्वा च विक्रमम् ।
वैरिणा घातयित्वा च किम् इदानीं त्वया कृतम् ॥

TRANSLATION *"Challenge him," you told me,
and showed me your valour;
then you had me beaten by my foe.
What is this you have done?*

लीला "उसे ललकारो," आपने मुझसे कहा, और अपना
पराक्रम दिखाया। फिर शत्रु के हाथों मुझे पिटने
दिया। यह आपने क्या किया?

SUBTITLE "Challenge him," you told me,
and you showed me your power.
Then you let my enemy beat me.
What have you done?

॥ 4.12.27 ॥
CrEd 4.12.27

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि ताम् एव वेलां वक्तव्यं त्वया राघव तत्त्वतः ।
वालिनं न निहन्मीति ततो नाहम् इतो व्रजे ॥

TRANSLATION *At that very time, Raghava,
you should have told me truly,
"I will not kill Vali";
then I would not have gone from here.*

लीला राघव, आपको उसी समय सच कह देना था,
"मैं वाली को नहीं मारूँगा।" तब मैं यहाँ से जाता
ही नहीं।

SUBTITLE You should have told me the truth
then, Raghava:
"I will not kill Vali."
Then I would never have gone.

॥ 4.12.29 ॥
CrEd 4.12.29

राम RAMA

वाल्मीकि सुग्रीव श्रूयतां तात क्रोधश् च व्यपनीयताम् ।
कारणं येन बाणोऽयं न मया स विसर्जितः ॥

TRANSLATION *Sugriva, dear one, listen,
and let your anger be put away:
hear the reason why
I did not loose this arrow.*

लीला प्रिय सुग्रीव, सुनो, और अपना क्रोध दूर करो। सुनो
कि मैंने बाण क्यों नहीं छोड़ा।

SUBTITLE Hear me, dear Sugriva,
and put away your anger.
Hear why I did not loose my arrow.

राम R A M A

वाल्मीकि अलङ्कारेण वेषेण प्रमाणेन गतेन च ।
त्वं च सुग्रीव वाली च सदृशौ स्थः परस्परम् ।
स्वरेण वर्चसा चैव प्रेक्षितेन च वानर ।
विक्रमेण च वाक्यैश्च व्यक्तिं वां नोपलक्षये ॥

TRANSLATION *In ornament, in dress,
in stature and in gait,
you and Vali, Sugriva,
are like each other.
In voice, in lustre,
in glance, monkey,
in valour and in speech,
I could not tell you apart.*

लीला आभूषण, वेश, डील-डौल, चाल, स्वर, कांति, दृष्टि,
पराक्रम, वाणी, तुम और वाली सबमें एक-से हो। मैं
तुम दोनों को अलग नहीं पहचान सका।

SUBTITLE Ornaments, dress, size, gait,
voice, lustre, glance, valour, speech:
you and Vali are alike in all.
I could not tell you apart.

॥ 4.12.32 ॥
CrEd 4.12.32

4.12.33–36:
popular text
only · not in
the CrEd

राम R A M A

वाल्मीकि ततोऽहं रूपसादृश्यान् मोहितो वानरोत्तम ।
नोत्सृजामि महावेगं शरं शत्रुनिबर्हणम् ॥

TRANSLATION *So, best of monkeys, bewildered
by the likeness of your forms,
I did not loose my arrow,
swift, the destroyer of foes.*

लीला रूप की इस समानता से मोहित होकर मैंने
शत्रुनाशक, महावेगी बाण नहीं छोड़ा।

SUBTITLE Bewildered by the likeness,
I held back the swift arrow
that destroys enemies.

प्रचलित पाठ में इसके बाद के श्लोक (4.12.33–36, शरण में आए मित्र को मार देने का उनका डर) CrEd में नहीं हैं। यह श्लोक CrEd का 4.12.32 है।

The verses after this one in the popular text (4.12.33–36, his fear of killing a friend who had come to him for refuge) are not in the CrEd. This verse is the CrEd's 4.12.32.

॥ 4.12.37 ॥
CrEd 4.12.33

राम R A M A

वाल्मीकि एतन्मुहूर्ते तु मया पश्य वालिनम् आहवे ।
निरस्तम् इषुणैकेन वेष्टमानं महीतले ॥

TRANSLATION *But within this hour, see Vali
in battle, by me
struck down with a single arrow,
writhing on the ground.*

लीला इस बार, इसी घड़ी तुम देखोगे कि युद्ध में मेरे एक
ही बाण से गिरा वाली धरती पर लोट रहा है।

SUBTITLE This time, within the hour,
you will see Vali brought down
by a single arrow of mine,
rolling on the earth.

॥ 4.12.38–39 ॥
CrEd 4.12.34–35

राम R A M A

वाल्मीकि अभिज्ञानं कुरुष्व त्वम् आत्मनो वानरेश्वर ।
येन त्वाम् अभिजानीयां द्वन्द्वयुद्धम् उपागतम् ।
गजपुष्पीम् इमां फुल्लाम् उत्पाद्य शुभलक्षणाम् ।
कुरु लक्ष्मण कण्ठेऽस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ॥

TRANSLATION *Make a sign upon yourself,
lord of monkeys,
by which I may know you
when you have come to the duel.
This flowering gajapushpi,
so fair to see, pull it up,
Lakshmana, and put it round the neck
of great-souled Sugriva.*

लीला वानरराज, कोई चिह्न धारण करो, जिससे युद्ध में मैं
तुम्हें पहचान सकूँ। लक्ष्मण, यह खिली हुई
गजपुष्पी उखाड़कर सुग्रीव के गले में डाल दो।

SUBTITLE Wear a sign, lord of monkeys,
so I know you in the fight.
Lakshmana, pull up this
flowering gajapushpi
and hang it round his neck.

॥ 4.12.40–41 ॥
CrEd 4.12.36–37

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.12.42, 4.14.1–
2 ॥
CrEd 4.12.38,
4.14.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि हरिवागुरया व्याप्तं तप्तकाञ्चनतोरणाम् ।
प्राप्ताः स्म ध्वजयन्त्राढ्यां किष्किन्धां वालिनः पुरीम् ।
प्रतिज्ञा या त्वया वीर कृता वालिवधे पुरा ।
सफलां तां कुरु क्षिप्रं लतां काल इवागतः ॥

TRANSLATION *Ringed by a net of monkeys,
with arches of burnished gold,
rich in banners and engines,
we have reached Kishkindha, Vali's city.
The vow you made before, hero,
to kill Vali:
make it bear fruit quickly,
as the season, come, makes a creeper fruit.*

लीला हम वाली की नगरी किष्किंधा पहुँच गए हैं, जिसका
तोरण तपे सोने का है। वाली-वध की अपनी
प्रतिज्ञा अब सफल कीजिए, जैसे ऋतु लता को फल
देती है।

SUBTITLE We are at Kishkindha,
Vali's city of the golden gate.
Keep your vow now,
as the season makes a vine bear fruit.

॥ 4.14.8,
4.14.10 ॥
CrEd 4.14.8-9

राम R A M A

वाल्मीकि कृताभिज्ञान चिह्नस् त्वम् अनया गजसाह्वया ।
विपरीत इवाकाशे सूर्यो नक्षत्र मालया ।
अद्य वालिसमुत्थं ते भयं वैरं च वानर ।
एकेनाहं प्रमोक्ष्यामि बाणमोक्षेण संयुगे ॥

TRANSLATION *You are marked with a sign
by this gajapushpi,
like the sun in the sky, the order reversed,
wreathed in a garland of stars.
Today, monkey, the fear and the feud
that Vali has raised for you,
from these I will free you with one arrow
loosed in battle.*

लीला इस गजपुष्पी से तुम पहचाने जाते हो, जैसे
नक्षत्रमाला से घिरा सूर्य। आज एक ही बाण तुम्हें
वाली के भय और वैर से मुक्त करेगा।

SUBTITLE With this gajapushpi you are marked,
like the sun wreathed in stars.
Today one arrow will free you
from Vali, and from your fear.

॥ 4.14.13-14 ॥

CrEd 4.14.12-13

condensed
from 4.14.13-
14

राम R A M A

वाल्मीकि प्रत्यक्षं सप्त ते साला मया बाणेन दारिताः ।
ततो वेत्सि बलेनाद्य वालिनं निहतं मया ।
अनृतं नोक्तपूर्वं मे वीर कृच्छ्रेऽपि तिष्ठता ।
धर्मलोभपरीतेन न च वक्ष्ये कथं चन ॥

TRANSLATION *Before your eyes, seven sal trees
were split by my arrow;
so know by that strength that Vali
will be slain by me today.
No lie have I ever spoken,
hero, even standing in hardship;
held fast by love of dharma,
nor shall I ever speak one.*

लीला तुमने अपनी आँखों से देखा था, मेरे बाण ने सात
साल-वृक्ष भेद दिए। तो जान लो, आज वाली मारा
जाएगा। मैंने संकट में भी कभी झूठ नहीं कहा।

SUBTITLE You saw my one arrow
split seven sal trees.
Know that Vali dies today.
I have never lied, not even in trouble.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.14.12-13) में है; दृश्य की पंक्ति आखिरी पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.14.12-13); the scene's line leaves out the last line.

॥ 4.14.16 ॥
CrEd 4.14.15

राम R A M A

वाल्मीकि तदाह्वाननिमित्तं त्वं वालिनो हेममालिनः ।
सुग्रीव कुरु तं शब्दं निष्पतेद् येन वानरः ॥

TRANSLATION *So, to call him out,
Vali of the golden chain,
Sugriva, raise that cry
at which the monkey will rush out.*

लीला अब वह गर्जना करो, सुग्रीव, जिससे स्वर्णमालाधारी
वाली दौड़ता हुआ बाहर आए।

SUBTITLE Now give the cry, Sugriva,
that brings Vali of the golden chain
rushing out.

॥ 4.14.18–20 ॥
CrEd 4.14.17–19

SILENT MOMENT मौन क्षण



Tara's warning

Valmiki 4.15.1–4.17.54 (CrEd 4.15.1–4.17.45)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 4.15.1–6 ॥
CrEd 4.15.1–6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.15.7, 4.15.9 ॥
CrEd 4.15.7–8

तारा TARA

वाल्मीकि साधु क्रोधम् इमं वीर नदी वेगम् इवागतम् ।
शयनाद् उत्थितः काल्यं त्यज भुक्ताम् इव स्रजम् ।
सहसा तव निष्क्रामो मम तावन् न रोचते ।
श्रूयताम् अभिधास्यामि यन्निमित्तं निवार्यसे ॥

TRANSLATION *Well now, hero, let go this anger
that has come like a river in flood,
as one risen from bed at dawn
casts off a garland worn.
Your going out so suddenly
does not please me yet;
listen, I will tell you
why you are held back.*

लीला वीर, नदी की बाढ़-से उमड़ते इस क्रोध को छोड़
दीजिए। आपका यों सहसा निकलना मुझे अच्छा
नहीं लगता। सुनिए, मैं आपको क्यों रोकती हूँ।

SUBTITLE My hero, let this anger go:
it comes like a river in flood.
Do not rush out.
Hear why I hold you back.

॥ 4.15.10-12 ॥

CrEd 4.15.9-11

condensed
from 4.15.10-
12

तारा TARA

वाल्मीकि पूर्वम् आपतितः क्रोधात् स त्वाम् आह्वयते युधि ।
निष्पत्य च निरस्तस् ते हन्यमानो दिशो गतः ।
त्वया तस्य निरस्तस्य पीडितस्य विशेषतः ।
इहैत्य पुनर् आह्वानं शङ्कां जनयतीव मे ।
दर्पश् च व्यवसायश् च यादृशस् तस्य नर्दतः ।
निनादस्य च संरम्भो नैतद् अल्पं हि कारणम् ॥

TRANSLATION *Before, he fell on you in anger,
and challenged you to fight;
you rushed out and beat him,
and, struck, he fled in all directions.
That he, beaten by you
and hurt so badly,
should come here and challenge you again
wakes a fear in me.
The pride and the resolve
in his roaring,
the fury of his cry:
this is no small cause.*

लीला पहले आपने उसे हराया था, और वह भाग गया था।
अब वह लौटकर फिर ललकार रहा है। इससे मुझे
भय होता है। ऐसी गर्जना का कोई बड़ा कारण है।

SUBTITLE You beat him once, and he fled.
Now he is back, calling you out again.
That frightens me:
such a roar has a reason.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.15.9-11) में है; दृश्य की पंक्ति इसे छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.15.9–11); the scene's line shortens it.

॥ 4.15.13,
4.15.15, 4.15.18 ॥

CrEd 4.15.12,
4.15.14–15

4.15.16–17:
popular text
only · not in
the CrEd

*condensed
from 4.15.13,
4.15.15, 4.15.18*

तारा T A R A

वाल्मीकि नासहायम् अहं मन्ये सुग्रीवं तम् इहागतम् ।
अवष्टब्धसहायश् च यम् आश्रित्यैष गर्जति ।
... ।

पूर्वम् एव मया वीर श्रुतं कथयतो वचः ।
अङ्गदस्य कुमारस्य वक्ष्यामि त्वा हितं वचः ।
तव भ्रातुर् हि विख्यातः सहायो रणकर्कशः ।
रामः परबलामर्दी युगान्ताग्निर् इवोत्थितः ॥

TRANSLATION *I do not think that Sugriva
has come here without help;
he has a firm ally,
and leaning on him he roars.*
...
*Hero, I have already heard
the words that Prince Angada spoke;
I will tell you
words for your good.
For your brother's famous ally,
harsh in battle,
is Rama, crusher of enemy armies,
risen like the fire at the end of an age.*

लीला सुग्रीव अकेला नहीं आया। कुमार अंगद ने मुझे
बताया कि उसके साथ कौन है, शत्रु-सेनाओं को
मथने वाले राम, प्रलय की अग्नि जैसे।

SUBTITLE Sugriva has not come alone.
Prince Angada told me who stands
with him:
Rama, crusher of armies,
like the fire at the end of time.

संस्कृत वैसी दी गई है जैसी CrEd (4.15.12, 4.15.14–15) में है। प्रचलित पाठ के 4.15.16–17 (अंगद के गुप्तचर, और “अयोध्या के राजा के पुत्र”) CrEd में नहीं हैं और यहाँ नहीं दिए गए।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (4.15.12, 4.15.14–15). The popular text's 4.15.16–17 (Angada's scouts, and “sons of the king of Ayodhya”) are not in the CrEd and are not shown.

॥ 4.15.23–24 ॥

CrEd 4.15.20–21

तारा T A R A

वाल्मीकि यौवराज्येन सुग्रीवं तूर्णं साध्व् अभिषेचय ।
विग्रहं मा कृथा वीर भ्रात्रा राजन् बलीयसा ।
अहं हि ते क्षमं मन्ये तव रामेण सौहृदम् ।
सुग्रीवेण च संप्रीतिं वैरम् उत्सृज्य दूरतः ॥

TRANSLATION *Quickly, as is right,
consecrate Sugriva as crown prince.
Do not make war, my heroic king,
with your brother, the stronger one.
For I think it fitting for you
to have friendship with Rama,
and goodwill with Sugriva,
casting the feud far away.*

लीला सुग्रीव का शीघ्र युवराज-पद पर अभिषेक कीजिए।
राजन्, भाई से युद्ध मत कीजिए। राम से मित्रता
और सुग्रीव से प्रीति कीजिए, और यह वैर दूर
छोड़ दीजिए।

SUBTITLE Make Sugriva your heir at once.
Do not fight your brother, my king.
Take Rama's friendship, make peace
with Sugriva,
and put the feud away.

॥ 4.16.2-3 ॥
CrEd 4.16.2-3

वाली VALI

वाल्मीकि गर्जतोऽस्य च संरम्भं भ्रातुः शत्रोर् विशेषतः ।
मर्षयिष्याम्य् अहं केन कारणेन वरानने ।
अधर्षितानां शूराणां समरेष्व् अनिवर्तिनाम् ।
धर्षणामर्षणं भीरु मरणाद् अतिरिच्यते ॥

TRANSLATION *This roaring brother's fury,
my enemy above all:
for what reason should I bear it,
fair-faced one?
For heroes never overcome,
who never turn back in battle,
to bear an insult, timid one,
is worse than death.*

लीला मैं अपने भाई की, उस शत्रु की, गर्जना कैसे सहूँ?
जो वीर कभी हारा नहीं, उसके लिए अपमान सहना
मृत्यु से भी बढ़कर है।

SUBTITLE How can I bear my brother's roar,
my enemy's above all?
For a hero never beaten,
an insult is worse than death.

॥ 4.16.5 ॥
CrEd 4.16.5

वाली VALI

वाल्मीकि न च कार्यो विषादस् ते राघवं प्रति मत्कृते ।
धर्मज्ञश् च कृतज्ञश् च कथं पापं करिष्यति ॥

TRANSLATION *And you need not grieve
over Raghava for my sake;
he knows dharma, he knows gratitude:
how could he do wrong?*

लीला और राघव के कारण मेरे लिए चिंता मत करो। वे
धर्मज्ञ हैं, कृतज्ञ हैं। ऐसे पुरुष पाप कैसे करेंगे?

SUBTITLE Do not fear Raghava for my sake.
He knows dharma, he knows gratitude.
How could such a man
do wrong?

॥ 4.16.7,
4.16.10 ॥
CrEd 4.16.7-8

वाली VALI

वाल्मीकि प्रतियोत्स्याम्य् अहं गत्वा सुग्रीवं जहि संभ्रमम् ।
दर्पं चास्य विनेष्यामि न च प्राणैर् विमोक्ष्यते ।
शापितासि मम प्राणैर् निवर्तस्व जयेन च ।
अहं जित्वा निवर्तिष्ये तम् अलं भ्रातरं रणे ॥

TRANSLATION *I will go and fight Sugriva;
put away your alarm.
I will tame his pride,
but he will not lose his life.
I adjure you by my life:
go back, wishing me victory.
When I have beaten that brother in battle,
I will return.*

लीला मैं उसका घमंड तोड़ूंगा, पर उसके प्राण नहीं लूँगा।
भीतर जाओ, मैं अपने प्राणों की शपथ लेता हूँ। मैं
जीतकर लौटूँगा।

SUBTITLE I will break his pride,
not take his life.
Go in; I swear it by my life.
I will come back the victor.

॥ 4.16.10-12 ॥
CrEd 4.16.9-12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.16.20 ॥
CrEd 4.16.18

वाली VALI

वाल्मीकि एष मुष्टिर् मया बद्धो गाढः सुनिहिताङ्गुलिः ।
मया वेगविमुक्तस् ते प्राणान् आदाय यास्यति ॥

TRANSLATION *Here is my fist, clenched by me,
tight, the fingers set firm;
loosed by me with force,
it will carry off your life.*

लीला देख यह मुट्ठी, कसकर बँधी हुई। जब मैं इसे पूरे
वेग से चलाऊँगा, यह तेरे प्राण ले जाएगी।

SUBTITLE See this fist, clenched hard.
When I let it fly,
it will carry off your life.

॥ 4.16.21 ॥
CrEd 4.16.19

सुग्रीव SUGRIVA

वाल्मीकि एवम् उक्तस् तु सुग्रीवः क्रुद्धो वालिनम् अब्रवीत् ।
तवैव च हरन् प्राणान् मुष्टिः पततु मूर्धनि ॥

TRANSLATION *Spoken to so, Sugriva,
in anger, said to Vali:
“On your own head let the fist fall,
taking your life!”*

लीला नहीं, मेरी मुट्ठी तेरे सिर पर पड़े और तेरे प्राण ले!

SUBTITLE No: let my fist fall on your head,
and take your life!

॥ 4.16.22–30 ॥
CrEd 4.16.20–24

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.16.33–35 ॥
CrEd 4.16.25–26

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.17.1 ॥
CrEd 4.17.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.17.5–15 ॥
CrEd 4.17.5–12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.17.16 ॥
CrEd 4.17.13

वाली VALI

वाल्मीकि पराङ्मुखवधं कृत्वा को नु प्राप्तस् त्वया गुणः ।
यद् अहं युद्धसंरब्धस् त्वत्कृते निधनं गतः ॥

TRANSLATION *Killing one whose face was turned,
what merit have you won,
when I, intent upon the fight,
have met my death through you?*

लीला मैं दूसरे से लड़ रहा था, मेरा मुख तुम्हारी ओर नहीं
था। मुझे यों मारकर तुमने कौन-सा पुण्य पाया? मैं
तुम्हारे कारण मरता हूँ।

SUBTITLE I was fighting another,
my face turned from you.
What merit have you won, striking me so?
I die because of you.

॥ 4.17.17-18,
4.17.20-21 ॥

CrEd 4.17.14-17

condensed
from 4.17.17-
18, 4.17.20-21

वाली VALI

वाल्मीकि कुलीनः सत्त्वसंपन्नस् तेजस्वी चरितव्रतः ।
रामः करुणवेदी च प्रजानां च हिते रतः ।
सानुक्रोशो महोत्साहः समयज्ञो दृढव्रतः ।
इति ते सर्वभूतानि कथयन्ति यशो भुवि ।
तान् गुणान् संप्रधार्याहम् अग्र्यं चाभिजनं तव ।
तारया प्रतिषिद्धः सन् सुग्रीवेण समागतः ।
न माम् अन्येन संरब्धं प्रमत्तं वेद्मुम् अर्हसि ।
इति मे बुद्धिर् उत्पन्ना बभूवाददर्शने तव ॥

TRANSLATION “Rama is high-born, full of strength,
radiant, true to his vows,
he knows compassion,
and delights in his people’s good;
he is kind, of great energy,
knows what is fitting, firm in his vows”:
so all beings on earth
tell your fame.
Weighing those virtues,
and your high birth,
I came out to meet Sugriva,
though Tara forbade me.

लीला संसार तुम्हें करुणामय कहता है। उसी पर भरोसा
करके मैं निकला, जबकि तारा ने रोका था, सोचा,
दूसरे से लड़ते समय तुम मुझ पर वार नहीं करोगे।

SUBTITLE The world calls you compassionate.
Trusting that, I came out, though Tara held
me back:
you would not strike me
while I fought another.

*“He will not strike me, locked with another,
off my guard”:
that was the thought that rose in me,
while you were out of sight.*

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.17.14–17) में है; दृश्य की पंक्ति इसे छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.17.14–17); the scene's line shortens it.

॥ 4.17.22-23 ॥

CrEd 4.17.18-19

condensed
from 4.17.22-
23

वाली VALI

वाल्मीकि न त्वां विनिहतात्मानं धर्मध्वजम् अधार्मिकम् ।
जाने पापसमाचारं तृणैः कूपम् इवावृतम् ।
सतां वेषधरं पापं प्रच्छन्नम् इव पावकम् ।
नाहं त्वाम् अभिजानानि धर्मच्छद्माभिसंवृतम् ॥

TRANSLATION *I did not know you, ruined in yourself,
with dharma for a banner, without dharma,
evil in your ways,
like a well covered over with grass;
a sinner wearing the dress of the good,
like a hidden fire:
I did not know you,
wrapped in the disguise of dharma.*

लीला मैं तुम्हें नहीं जानता था, धर्म का ध्वज उठाए पापी,
घास से ढका कुआँ, सज्जनों के वेश में छिपी आग।

SUBTITLE I did not know you:
a sinner under dharma's flag,
a well hidden by grass,
a fire hidden in the dress of the good.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.17.18-19) में है; दृश्य की पंक्ति आखिरी पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.17.18-19); the scene's line leaves out the last line.

वाली VALI

वाल्मीकि विषये वा पुरे वा ते यदा नापकरोम्य् अहम् ।
न च त्वां प्रतिजानेऽहं कस्मात् त्वं हंस्य् अकिल्बिषम् ।
फलमूलाशनं नित्यं वानरं वनगोचरम् ।
माम् इहाप्रतियुध्यन्तम् अन्येन च समागतम् ॥

TRANSLATION *When I do you no harm,
in your land or in your city,
and do not set myself against you,
why do you kill me, who am blameless,
a monkey roaming the forest,
ever living on fruit and roots,
who was not fighting you here,
but locked with another?*

लीला मैंने तुम्हारे देश या नगर में तुम्हारा कुछ नहीं
बिगाड़ा। फल-मूल खाने वाले वनवासी वानर को,
जो तुमसे लड़ भी नहीं रहा था, क्यों मारा?

SUBTITLE I never harmed you,
in your land or city.
Why kill a forest monkey, living on fruit
and roots,
who was not fighting you?

वाली VALI

वाल्मीकि दृश्यमानस् तु युध्येथा मया युधि नृपात्मज ।
अद्य वैवस्वतं देवं पश्येस् त्वं निहतो मया ।
त्वयादृश्येन तु रणे निहतोऽहं दुरासदः ।
प्रसुप्तः पन्नगेनेव नरः पानवशं गतः ॥

TRANSLATION *Had you fought me in battle
in my sight, prince,
you would see today the god Vaivasvata,
struck down by me.
But unseen in battle
you struck me down, whom none can face,
as a snake strikes a sleeping man
who has fallen into drink's power.*

लीला राजकुमार, यदि तुम सामने आकर लड़ते, तो आज
मेरे हाथों मरकर यमराज के दर्शन करते। तुमने
छिपकर मारा, जैसे सोए मनुष्य को सर्प डँसे।

SUBTITLE Had you fought me in the open, prince,
you would stand before Yama today.
You struck unseen,
like a snake at a sleeping man.

॥ 4.17.49-51 ॥

CrEd 4.17.41-42

4.17.49:
popular text
only · not in
the CrEd

वाली VALI

वाल्मीकि सुग्रीवप्रियकामेन यद् अहं निहतस् त्वया ।
कण्ठे बद्धा प्रदद्यां तेऽनिहतं रावणं रणे ।
न्यस्तां सागरतोये वा पाताले वापि मैथिलीम् ।
जानयेयं तवादेशाच् छेताम् अश्वतरीम् इव ॥

TRANSLATION *For your wish to please Sugriva
you struck me down;
yet I would have bound Ravana by the neck
and given him to you, alive, in battle.
Maithili, though cast into the sea's waters
or into the underworld,
I would have brought at your command,
like the white mare.*

लीला सुग्रीव को प्रसन्न करने के लिए तुमने मुझे मारा ।
मुझसे कहते, तो मैं रावण को गले में बाँधकर लाता,
और मैथिली को समुद्र या पाताल से भी ।

SUBTITLE You killed me to please Sugriva.
Asked, I would have brought you Ravana,
bound by the neck,
and Maithili from the sea or
the underworld.

प्रचलित पाठ का 4.17.49 “एक ही दिन में” जोड़ता है; वह CrEd में नहीं है और यहाँ नहीं दिया गया। यहाँ दी गई संस्कृत CrEd का 4.17.41-42 है। सफ़ेद घोड़ी खोया हुआ वेद है, जिसे विष्णु हयग्रीव रूप में वापस लाए।

The popular text's 4.17.49 adds “in a single day”; that is not in the CrEd and is not shown. The Sanskrit shown is the CrEd's 4.17.41-42. The white mare is the lost Veda, brought back by Vishnu as Hayagriva.

॥ 4.17.52-53 ॥

CrEd 4.17.43-44

condensed
from 4.17.52-
53

वाली VALI

वाल्मीकि युक्तं यत् प्राप्तुयाद् राज्यं सुग्रीवः स्वर्गते मयि ।
अयुक्तं यद् अधर्मेण त्वयाहं निहतो रणे ।
कामम् एवंविधं लोकः कालेन विनियुज्यते ।
क्षमं चेद् भवता प्राप्तम् उत्तरं साधु चिन्त्यताम् ॥

TRANSLATION *That Sugriva should gain the kingdom
when I have gone to heaven is fitting;
unfitting it is that by adharma
you struck me down in battle.
Granted, the world is bound by time
to ends such as this;
but if you have found a fitting answer,
let it be well thought through.*

लीला मेरे स्वर्ग जाने पर सुग्रीव राज करे, यह उचित है।
पर तुमने मुझे अधर्म से मारा, यह अनुचित है।
भली-भाँति सोचकर उत्तर दो।

SUBTITLE That Sugriva should rule when I am gone
is fitting.
That you killed me by adharma is not.
Think well what answer you can give.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.17.43-44) में है; दृश्य की पंक्ति काल वाली पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.17.43-44); the scene's line leaves out the line on time.

॥ 4.17.54 ॥

CrEd 4.17.45

SILENT MOMENT मौन क्षण



The king's dharma

Valmiki 4.18.1–4.22.32 (CrEd 4.18.1–4.22.26)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 4.18.4 ॥
CrEd 4.18.4

राम RAMA

वाल्मीकि धर्मम् अर्थं च कामं च समयं चापि लौकिकम् ।
अविज्ञाय कथं बाल्यान् माम् इहाद्य विगर्हसे ॥

TRANSLATION *Not knowing dharma, artha and kama,
nor the customs of the world,
how, out of childishness,
do you reproach me here today?*

लीला तुम धर्म, अर्थ, काम और लोक-मर्यादा को नहीं
जानते। फिर बालक की तरह मेरी निंदा कैसे
करते हो?

SUBTITLE You know not dharma, nor gain,
nor desire, nor the ways of the world.
How can you, like a child,
reproach me?

॥ 4.18.6-7 ॥

CrEd 4.18.6-7

condensed
from 4.18.6-7

राम R A M A

वाल्मीकि इक्ष्वाकूणाम् इयं भूमिः सरौलवनकानना ।
मृगपक्षिमनुष्याणां निग्रहानुग्रहाव् अपि ।
तां पालयति धर्मात्मा भरतः सत्यवाग् ऋजुः ।
धर्मकामार्थतत्त्वज्ञो निग्रहानुग्रहे रतः ॥

TRANSLATION *This earth, with its hills, woods and forests,
belongs to the Ikshvakus,
and the power to curb and to favour
its beasts, its birds, its men.
Righteous Bharata protects it,
truthful in speech and upright,
who knows the truth of dharma, kama and artha,
devoted to curbing and to favour.*

लीला पर्वतों और वनों सहित यह पृथ्वी इक्ष्वाकुओं की है।
पशु, पक्षी और मनुष्य को दंड देना या क्षमा करना
उनका अधिकार है। धर्मात्मा भरत इसका पालन
करते हैं।

SUBTITLE This earth, with its hills and forests,
is the Ikshvakus':
theirs to punish or spare beast, bird
and man.
Righteous Bharata rules it.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.18.6-7) में है; दृश्य की पंक्ति आखिरी पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.18.6-7); the scene's line leaves out the last line.

॥ 4.18.9,
4.18.11 ॥

CrEd 4.18.9, 4.18.11

condensed
from 4.18.9,
4.18.11

राम R A M A

वाल्मीकि तस्य धर्मकृतादेशा वयम् अन्ये च पार्थिवाः ।
चरामो वसुधां कृत्स्नां धर्मसंतानम् इच्छवः ।
... ।

ते वयं मार्गविभ्रष्टं स्वधर्मे परमे स्थिताः ।
भरताज्ञां पुरस्कृत्य निगृहीमो यथाविधि ॥

TRANSLATION *With his command, given in dharma,
we and other kings
roam the whole earth,
wishing to spread dharma wide.
...
We curb one strayed from the path,
standing in our own highest dharma,
with Bharata's order before us,
as the law lays down.*

लीला उन्हीं की धर्माज्ञा से हम पृथ्वी पर विचरते हैं। भरत
की आज्ञा को आगे रखकर हम मार्ग से भटके हुआओं
को विधि से दंड देते हैं।

SUBTITLE Under his command
we walk the earth, keeping dharma.
With Bharata's order before us,
we punish those who stray.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.18.9 and 4.18.11) में है; दृश्य की पंक्ति दोनों श्लोकों को जोड़ती है और पहले को छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.18.9 and 4.18.11); the scene's line joins the two verses and shortens the first.

॥ 4.18.18-19 ॥
CrEd 4.18.18-19

राम R A M A

वाल्मीकि तद् एतत् कारणं पश्य यदर्थं त्वं मया हतः ।
भ्रातुर् वर्तसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्मं सनातनम् ।
अस्य त्वं धरमाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।
रुमायां वर्तसे कामात् सुषायां पापकर्मकृत् ॥

TRANSLATION *See then the reason
for which I killed you:
you live with your brother's wife,
casting aside eternal dharma.
While great-souled Sugriva still lives,
with Ruma you live, out of lust,
with one who is as your daughter-in-law,
doer of evil deeds.*

लीला सुनो, मैंने तुम्हें क्यों मारा। सनातन धर्म छोड़कर,
भाई के जीते-जी तुमने उसकी पत्नी रुमा को रख
लिया, जो तुम्हारे लिए पुत्रवधू के समान है।

SUBTITLE Hear why I killed you.
Casting off dharma, while your
brother lives,
you took his wife Ruma,
who should be as a daughter to you.

राम R A M A

वाल्मीकि तद् व्यतीतस्य ते धर्मात् कामवृत्तस्य वानर ।
भ्रातृभार्याभिमर्शोऽस्मिन् दण्डोऽयं प्रतिपादितः ।
न हि धर्मविरुद्धस्य लोकवृत्ताद् अपेयुषः ।
दण्डाद् अन्यत्र पश्यामि निग्रहं हरियूथप ॥

TRANSLATION *So for you, monkey, who have strayed
from dharma,
who live by lust,
for laying hands on your brother's wife
this punishment has been dealt.
For one who goes against dharma,
who has left the ways of the world,
I see no curb but punishment,
chief of the monkey troops.*

लीला भाई की पत्नी को छूने का यही दंड है। जो इस
प्रकार धर्म तोड़े, उसके लिए दंड के सिवा कोई
अंकुश मैं नहीं देखता।

SUBTITLE For taking your brother's wife,
this is the sentence.
For one who breaks dharma so,
I see no restraint but punishment.

राम R A M A

वाल्मीकि सुग्रीवेण च मे सख्यं लक्ष्मणेन यथा तथा ।
दारराज्यनिमित्तं च निःश्रेयसि रतः स मे ।
प्रतिज्ञा च मया दत्ता तदा वानरसंनिधौ ।
प्रतिज्ञा च कथं शक्या मद्विधेनानवेक्षितुम् ॥

TRANSLATION *And my friendship with Sugriva
is as it is with Lakshmana;
for his wife and his kingdom's sake,
he is devoted to my good.
And I gave my promise then,
in the presence of the monkeys;
and how could a promise
be disregarded by one like me?*

लीला और सुग्रीव मेरा मित्र है, लक्ष्मण जैसा प्रिय। मैंने
वानरों के सामने उसे वचन दिया था। मुझ जैसा
व्यक्ति वह वचन कैसे तोड़ सकता है?

SUBTITLE Sugriva is my friend,
as dear as Lakshmana.
I gave him my word before the monkeys.
How could one like me break it?

॥ 4.18.38-40 ॥

CrEd 4.18.34-36

condensed
from 4.18.38-
40

राम R A M A

वाल्मीकि वागुराभिश् च पाशैश् च कूटैश् च विविधैर् नराः ।
प्रतिच्छन्नाश् च दृश्याश् च गृह्णन्ति सुबहून् मृगान् ।
प्रधावितान् वा वित्रस्तान् विस्रब्धान् अतिविष्टितान् ।
प्रमत्तान् अप्रमत्तान् वा नरा मांसार्थिनो भृशम् ।
विध्यन्ति विमुखांश् चापि न च दोषोऽत्र विद्यते ।
यान्ति राजर्षयश् चात्र मृगयां धर्मकोविदाः ।
तस्मात् त्वं निहतो युद्धे मया बाणेन वानर ।
अयुध्यन् प्रतियुध्यन् वा यस्माच् छाखामृगो ह्य् असि ॥

TRANSLATION *With nets and snares
and traps of many kinds,
men, hidden or in plain sight,
catch a great many deer,
running or terrified,
trusting or standing still;
heedless or heedful,
men who want meat
strike them hard, even turned away,
and there is no fault in this.
And royal sages who know dharma
go hunting in this world.*

लीला छिपकर हो या प्रकट, मनुष्य मुँह फेरे मृगों को भी
बेधते हैं, इसमें दोष नहीं। राजर्षि भी आखेट करते
हैं। तुम तो शाखामृग हो।

SUBTITLE Hidden or seen,
men strike deer even turned away,
and there is no fault: royal sages hunt so.
You are a branch-deer.

*So you were slain in battle
by my arrow, monkey,
whether fighting me or not,
for you are a branch-deer.*

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.18.34–36) में है; दृश्य की पंक्ति इसे छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.18.34–36); the scene's line shortens it.

॥ 4.18.42-43 ॥

CrEd 4.18.38-39

condensed
from 4.18.42-
43

राम R A M A

वाल्मीकि तान् न हिंस्यान् न चाक्रोशेन् नाक्षिपेन् नाप्रियं वदेत् ।
देवा मानुषरूपेण चरन्त्य् एते महीतले ।
त्वं तु धर्मम् अविज्ञाय केवलं रोषम् आस्थितः ।
प्रदूषयसि मां धर्मे पितृपैतामहे स्थितम् ॥

TRANSLATION *One should not harm them, nor revile them,
nor scorn them, nor speak unkindly:
these are gods who walk the earth
in human form.
But you, not knowing dharma,
given over to anger alone,
find fault with me, who stand
in the dharma of my fathers and forefathers.*

लीला राजा मनुष्य-रूप में पृथ्वी पर विचरते देवता हैं। धर्म
को न जानकर, केवल क्रोध में, तुम मुझे दोष देते
हो, जो पितरों के धर्म पर स्थित हूँ।

SUBTITLE Kings are gods who walk the earth as men.
Moved by anger alone, not
knowing dharma,
you blame me,
who keep my fathers' dharma.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.18.38-39) में है; दृश्य की पंक्ति पहली पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.18.38-39); the scene's line leaves out the first line.

॥ 4.18.44 ॥

CrEd 4.18.40

SILENT MOMENT मौन क्षण

वाली VALI

वाल्मीकि यत् त्वम् आत्थ नरश्रेष्ठ तद् एवं नात्र संशयः ।
प्रतिवक्तुं प्रकृष्टे हि नापकृष्टस् तु शक्नुयात् ।
यद् अयुक्तं मया पूर्वं प्रमादाद् वाक्यम् अप्रियम् ।
तत्रापि खलु मे दोषं कर्तुं नार्हसि राघव ॥

TRANSLATION *What you say, best of men,
is so; there is no doubt of it.
For the lesser cannot
answer back the greater.
And the unfitting, unkind words
I spoke before in heedlessness:
even there, Raghava,
do not hold them as my fault.*

लीला नरश्रेष्ठ, आपने जो कहा वह सत्य है, इसमें संदेह नहीं। छोटा बड़े को उत्तर नहीं दे सकता। राघव, मैंने जो कठोर वचन कहे, उनका दोष मुझ पर मत रखिए।

SUBTITLE What you say is so, best of men;
there is no doubt.
The lesser cannot answer the greater.
Forgive my harsh words, Raghava.

॥ 4.18.53-55 ॥

CrEd 4.18.48-50

condensed
from 4.18.53-
55

वाली VALI

वाल्मीकि सुग्रीवे चाङ्गदे चैव विधत्स्व मतिम् उत्तमाम् ।
त्वं हि शास्ता च गोप्ता च कार्याकार्यविधौ स्थितः ।
या ते नरपते वृत्तिर् भरते लक्ष्मणे च या ।
सुग्रीवे चाङ्गदे राजंस् तां चिन्तयितुम् अर्हसि ।
मद्दोषकृतदोषां तां यथा तारां तपस्विनीम् ।
सुग्रीवो नावमन्येत तथावस्थातुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *On Sugriva and on Angada*
set your highest thought;
for you are ruler and protector,
firm in judging what is done and not done.
The way you are, lord of men,
with Bharata and with Lakshmana,
so with Sugriva and Angada,
king, you should think to be.
And so that Sugriva does not scorn
poor Tara, who bears
the blame for faults that were mine,
so should you stand.

लीला सुग्रीव और अंगद को वैसे ही देखिए, जैसे भरत और लक्ष्मण को देखते हैं। और ऐसा कीजिए कि मेरे दोषों के कारण सुग्रीव बेचारी तारा का अपमान न करे।

SUBTITLE Care for Sugriva and Angada
as you care for Bharata and Lakshmana.
And let Sugriva not scorn
poor Tara for my faults.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.18.48-50) में है; दृश्य की पंक्ति इसे छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.18.48–50); the scene's line shortens it.

॥ 4.18.60–62 ॥

CrEd 4.18.53–55

condensed
from 4.18.60–
62

राम R A M A

वाल्मीकि न वयं भवता चिन्त्या नाप्य् आत्मा हरिसत्तम ।
वयं भवद्विशेषेण धर्मतः कृतनिश्चयाः ।
दण्ड्ये यः पातयेद् दण्डं दण्ड्यो यश् चापि दण्ड्यते ।
कार्यकारणसिद्धार्थात् उभौ तौ नावसीदतः ।
तद् भवान् दण्डसंयोगाद् अस्माद् विगतकल्मषः ।
गतः स्वां प्रकृतिं धर्म्या धर्मदृष्टेन वर्त्मना ॥

TRANSLATION *You need not think of us,
nor of yourself, best of monkeys;
we have reached our resolve by dharma,
with especial thought for you.
He who brings punishment down on the guilty,
and the guilty one who is punished:
both have fulfilled cause and effect,
and neither comes to grief.
So, through meeting this punishment,
you are cleansed of your stain,
and have gone back to your own nature, true
to dharma,
by the path that dharma shows.*

लीला हमारे लिए या अपने लिए चिंता मत करो। उचित
दंड देने वाला और दंड पाने वाला, दोनों ही नष्ट नहीं
होते। इस दंड से तुम पाप से मुक्त हो गए।

SUBTITLE Fear nothing for us, or for yourself.
He who rightly punishes, and he who
is punished,
both go free.
Through this, you are cleansed.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.18.53–55) में है; दृश्य की पंक्ति इसे छोटा करती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.18.53–55); the scene's line shortens it.

॥ 4.18.66 ॥

CrEd 4.18.57

वाली VALI

वाल्मीकि शराभितप्तेन विचेतसा मया प्रदूषितस् त्वं यद्
अजानता प्रभो ।
इदं महेन्द्रोपमभीमविक्रम प्रसादितस् त्वं क्षम मे महीश्वर ॥

TRANSLATION *Burning from your arrow, out of my mind,
not knowing, I wronged you, lord;
you whose dread valour is like great Indra's,
be gracious, lord of the earth, and forgive me this.*

लीला बाण की जलन से, सुध-बुध खोकर, अनजाने में मैंने
आपकी निंदा की। पृथ्वीपति, प्रसन्न होइए, मुझे
क्षमा कीजिए।

SUBTITLE Burning from your arrow, out of my mind,
not knowing, I wronged you.
Forgive me,
lord of the earth.

॥ 4.19.25–26 ॥

CrEd 4.19.25–26

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.19.27 ॥
CrEd 4.19.27

तारा TARA

वाल्मीकि समीक्ष्य व्यथिता भूमौ संभ्रान्ता निपपात ह ।
सुप्तेव पुनर् उत्थाय आर्यपुत्रेति क्रोशती ॥

TRANSLATION *Seeing him, stricken, bewildered,
she fell to the ground;
then, rising again as if from sleep,
she cried out, "Aryaputra!"*

लीला आर्यपुत्र!

SUBTITLE My lord!

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.19.27) में है; पहली पंक्ति कथावाचक की है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.19.27); the first line is the narrator's.

तारा TARA

वाल्मीकि रणे दारुणविक्रान्त प्रवीर प्लवतां वर ।
किं दीनाम् अपुरोभागाम् अद्य त्वं नाभिभाषसे ।
उत्तिष्ठ हरिशार्दूल भजस्व शयनोत्तमम् ।
नैवविधाः शेरते हि भूमौ नृपतिसत्तमाः ॥

TRANSLATION *Hero, dreadful in your valour in battle,
best of leapers,
why do you not speak today to me,
wretched and meek as I am?
Rise, tiger among monkeys,
go to your finest bed;
for the best of kings like you
do not lie on the ground.*

लीला आप मुझसे बोलते क्यों नहीं? उठिए, वानरसिंह,
अपनी उत्तम शय्या पर चलिए। आप जैसे श्रेष्ठ राजा
धरती पर नहीं सोते।

SUBTITLE Why do you not speak to me?
Rise, tiger among monkeys, to your bed.
Kings like you
do not lie on the bare earth.

वाली VALI

वाल्मीकि सुग्रीवदोषेण न मां गन्तुम् अर्हसि किल्बिषात् ।
कृष्यमाणं भविष्येण बुद्धिमोहेन मां बलात् ।
युगपद्विहितं तात न मन्ये सुखम् आवयोः ।
सौहार्दं भ्रातृयुक्तं हि तद् इदं जातम् अन्यथा ॥

TRANSLATION *Do not hold against me
my wrong toward you, Sugriva;
I was dragged along by force
by a bewilderment that fate sent.
I think, dear one, that happiness
was never set for us both at once;
the friendship that brothers should have
has turned out otherwise.*

लीला सुग्रीव, मेरे पाप के कारण मुझसे बैर मत रखना।
भवितव्यता ने बलपूर्वक मेरी बुद्धि फेर दी थी। तात,
हम दोनों को एक साथ सुख पाना लिखा ही न था।

SUBTITLE Do not hold my wrong against me, Sugriva:
fate dragged my mind astray.
It was not our lot, brother,
to be happy together.

वाली VALI

वाल्मीकि सुखार्हं सुखसंवृद्धं बालम् एनम् अबालिशम् ।
बाष्पपूर्णमुखं पश्य भूमौ पतितम् अङ्गदम् ।
मम प्राणैः प्रियतरं पुत्रं पुत्रम् इवौरसं ।
मया हीनम् अहीनार्थं सर्वतः परिपालय ॥

TRANSLATION *Deserving comfort, raised in comfort,
a child, but no fool:
see him fallen on the ground,
Angada, his face full of tears.
My son, dearer to me than life,
as a son of your own body,
bereft of me, let him lack nothing:
protect him in every way.*

लीला धरती पर पड़े अंगद को देखो, उसका मुख आँसुओं
से भरा है। वह मुझे प्राणों से भी प्रिय है। उसे अपने
पुत्र की तरह सब ओर से पालना।

SUBTITLE Look at Angada, fallen on the ground,
his face wet with tears.
He is dearer to me than life.
Guard him as your own son.

वाली VALI

वाल्मीकि सुषेणदुहिता चेयम् अर्थसूक्ष्मविनिश्चये ।
औत्पातिके च विविधे सर्वतः परिनिष्ठिता ।
यद् एषा साध्व् इति ब्रूयात् कार्यं तन् मुक्तसंशयम् ।
न हि तारामतं किं चिद् अन्यथा परिवर्तते ॥

TRANSLATION *And this daughter of Sushena,
in judging the fine points of affairs
and in omens of every kind,
is sure in every way.
Whatever she says is good,
do it, free of doubt;
for nothing Tara judges
ever turns out otherwise.*

लीला सुषेण की यह पुत्री सूक्ष्म बातों के निर्णय में और
शकुन पढ़ने में निपुण है। जिसे यह उचित कहे,
वह निःसंदेह करना। तारा की बात कभी झूठी
नहीं होती।

SUBTITLE Sushena's daughter sees the finest points
and reads omens truly.
What she calls good, do without doubt.
Tara's counsel never proves false.

॥ 4.22.15-16 ॥

CrEd 4.22.15-16

condensed
from 4.22.15-
16

वाली VALI

वाल्मीकि राघवस्य च ते कार्यं कर्तव्यम् अविशङ्कया ।
स्याद् अधर्मो ह्य् अकरणे त्वां च हिंस्याद् विमानितः ।
इमां च मालाम् आधत्स्व दिव्यां सुग्रीवकाञ्चनीम् ।
उदारा श्रीः स्थिता ह्य् अस्यां संप्रजह्यान् मृते मयि ॥

TRANSLATION *And you must do Raghava's work
without misgiving;
it would be adharma not to do it,
and, slighted, he might strike you down.
And put on this golden chain,
heavenly, Sugriva;
a noble glory dwells in it,
which would leave it once I am dead.*

लीला राघव का कार्य बिना संशय करना। और यह दिव्य
स्वर्णमाला पहन लो। इसमें महान श्री बसती है, जो
मेरे मरने पर इसे छोड़ देगी।

SUBTITLE Do Raghava's work without doubting.
And put on this golden chain from heaven:
its glory lives in it,
and would leave it when I die.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.22.15-16) में है; दृश्य की पंक्ति दूसरी पंक्ति छोड़ती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.22.15-16); the scene's line leaves out the second line.

॥ 4.22.20,
4.22.22 ॥

CrEd 4.22.20,
4.22.22

वाली VALI

वाल्मीकि देशकालौ भजस्वाद्य क्षममाणः प्रियाप्रिये ।
सुखदुःखसहः काले सुग्रीववशगो भव ।
मास्यामित्रैर् गतं गच्छेर् मा शत्रुभिर् अरिंदम ।
भर्तुर् अर्थपरो दान्तः सुग्रीववशगो भव ॥

TRANSLATION *Keep now to time and place,
bearing the pleasant and the unpleasant;
bearing joy and sorrow in their time,
live under Sugriva's rule.
Do not go with his foes,
nor with his enemies, tamer of foes;
intent on your lord's good, restrained,
live under Sugriva's rule.*

॥ 4.22.24 ॥
CrEd 4.22.24

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.22.26-27 ॥
CrEd 4.22.26

SILENT MOMENT मौन क्षण

लीला देश और काल को पहचानो। प्रिय-अप्रिय, सुख-
दुख, सब सहो। उसके शत्रुओं का साथ कभी मत
देना। संयमी रहकर स्वामी की सेवा करना, सुग्रीव
की आज्ञा में रहना।

SUBTITLE Know the time and the place.
Bear joy and sorrow alike.
Never side with his enemies.
Serve your king, and obey Sugriva.

KISHKINDHA KANDA · किष्किन्धाकाण्ड

Jambavan's reminder; the leap

जाम्बवान का याद दिलाना; छलौंग

—❧ Valmiki · Kishkindha Kanda ❧—

4.64.1–5.1.44 (CrEd 4.63.1–5.1.40)

सागर के तट पर अंगद पूछते हैं कि लंका तक सौ योजन कौन लौंघ सकता है, और हर वानर-नायक बताता है कि वह कितनी दूर जा सकता है; कोई उतनी दूर नहीं जा सकता। बूढ़े जाम्बवान चुप, अलग बैठे हनुमान की ओर मुड़ते हैं और उन्हें याद दिलाते हैं कि वे किसके पुत्र हैं। हनुमान बढ़ते हैं, महेन्द्र पर चढ़ते हैं और लंका के लिए छलौंग लगाते हैं।

On the shore of the ocean, Angada asks who can leap the hundred yojanas to Lanka, and each monkey leader names how far he can go; none can go so far. Old Jambavan turns to Hanuman, sitting silent and apart, and reminds him whose son he is. Hanuman grows, climbs Mahendra and leaps for Lanka.

१



PART 1 · भाग 1

The shore

Valmiki 4.64.1–4.65.33 (CrEd 4.63.1–4.64.33)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 4.64.1–8 ॥
CrEd 4.63.1–9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.64.9 ॥
CrEd 4.63.10

अंगद ANGADA

वाल्मीकि न विषादेन नः कार्यं विषादो दोषवत्तरः ।
विषादो हन्ति पुरुषं बालं क्रुद्ध इवोरगः ॥

TRANSLATION *We have no business with despair;
despair is the gravest fault.
Despair kills a man
as an angry snake kills a child.*

लीला विषाद में मत डूबिए। विषाद सबसे बड़ा दोष है।
यह पुरुष को वैसे ही मार देता है, जैसे क्रुद्ध सर्प।

SUBTITLE Do not give way to despair:
despair is the worse fault.
It kills a man
like an angry snake.

अंगद ANGADA

वाल्मीकि क इदानीं महातेजा लङ्घयिष्यति सागरम् ।
कः करिष्यति सुग्रीवं सत्यसंधम् अरिंदमम् ।
को वीरो योजनशतं लङ्घयेत् प्लवंगमाः ।
इमांश् च यूथपान् सर्वान् मोचयेत् को महाभयात् ॥

TRANSLATION *Who now, of great splendour,
will leap across the ocean?
Who will make Sugriva,
tamer of foes, true to his word?
What hero, monkeys, could leap
a hundred yojanas?
Who could free all these troop leaders
from their great fear?*

लीला अब कौन इस सागर को लाँघेगा? कौन सौ योजन
पार करके सुग्रीव के वचन को सत्य करेगा, और इन
सब यूथपतियों को महाभय से मुक्त करेगा?

SUBTITLE Who will leap this ocean now,
a hundred yojanas,
keep Sugriva's word true,
and free us all from fear?

अंगद ANGADA

वाल्मीकि कस्य प्रसादाद् दारांश् च पुत्रांश् चैव गृहाणि च ।
इतो निवृत्ताः पश्येम सिद्धार्थाः सुखिनो वयम् ।
कस्य प्रसादाद् रामं च लक्ष्मणं च महाबलम् ।
अभिगच्छेम संहृष्टाः सुग्रीवं च महाबलम् ॥

TRANSLATION *By whose grace shall we see
our wives, our sons, our homes,
turning back from here,
our purpose won, in happiness?
By whose grace, to Rama
and to Lakshmana of great strength,
shall we go, rejoicing,
and to Sugriva of great strength?*

लीला किसकी कृपा से हम सफल होकर अपनी पत्नियों,
पुत्रों और घरों को फिर देखेंगे, और प्रसन्न होकर
राम, लक्ष्मण और सुग्रीव के पास लौटेंगे?

SUBTITLE By whose grace will we see
our wives, our sons, our homes,
and go back gladly
to Rama?

॥ 4.64.19 ॥
CrEd 4.63.20

अंगद ANGADA

वाल्मीकि यदि कश्चित् समर्थो वः सागरप्लवने हरिः ।
स ददात् इह नः शीघ्रं पुण्याम् अभयदक्षिणाम् ॥

TRANSLATION *If any monkey among you
is able to leap the ocean,
let him give us here, and quickly,
the holy gift of freedom from fear.*

लीला यदि आपमें से कोई वानर सागर लाँघने में समर्थ है,
तो वह अभी हमें अभयदान का पुण्य दे।

SUBTITLE If any monkey here
can leap the sea,
let him give us now
the gift of freedom from fear.

॥ 4.64.20 ॥
CrEd 4.63.21

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.64.21-22 ॥

CrEd 4.63.22,
4.63.24

condensed
from 4.64.21-
22

अंगद ANGADA

वाल्मीकि पुनर् एवाङ्गदः प्राह तान् हरीन् हरिसत्तमः ।
सर्वे बलवतां श्रेष्ठा भवन्तो दृढविक्रमाः ।
ब्रुवध्वं यस्य या शक्तिर् गमने प्लवगर्षभाः ॥

TRANSLATION *Once more Angada,
best of monkeys, spoke to the monkeys:
“You are all the best of the strong,
firm in your valour.
Tell me, bulls among monkeys,
what strength each has for the crossing.”*

लीला आप सब बलवानों में श्रेष्ठ हैं, दृढ़ पराक्रमी।
बताइए, आपमें से कौन कितनी दूर छलाँग लगा
सकता है?

SUBTITLE You are the best of the strong,
all of you.
Tell me, each of you:
how far can you leap?

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (4.63.22 और 24) में है; बीच का श्लोक, उनके ऊँचे कुल के बारे में, छोड़ा गया है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (4.63.22 and 24); the verse between, on their noble birth, is left out.

॥ 4.65.3a ॥

CrEd 4.64.3ab

गज GAJA

वाल्मीकि आबभाषे गजस् तत्र प्लवेयं दशयोजनम् ॥

TRANSLATION *Gaja spoke up there:
“I can leap ten yojanas.”*

लीला मैं दस योजन कूद सकता हूँ।

SUBTITLE Ten yojanas.

॥ 4.65.3b ॥
CrEd 4.64.3cd

गवाक्ष GAVAKSHA

वाल्मीकि गवाक्षो योजनान्य् आह गमिष्यामीति विंशतिम् ॥

TRANSLATION *Gavaksha said, "I will go
twenty yojanas."*

लीला मैं बीस योजन जाऊँगा।

SUBTITLE Twenty.

॥ 4.65.4 ॥
CrEd 4.64.4

गवय GAVAYA

वाल्मीकि त्रिंशत् तु गमिष्यामि योजनानां प्लवंगमाः ॥

TRANSLATION *Thirty yojanas, monkeys,
I will go.*

लीला मैं तीस योजन जाऊँगा।

SUBTITLE Thirty.

॥ 4.65.5 ॥
CrEd 4.64.5

शरभ SHARABHA

वाल्मीकि चत्वारिंशद् गमिष्यामि योजनानां न संशयः ॥

TRANSLATION *Forty yojanas I will go;
there is no doubt of it.*

लीला चालीस योजन, इसमें संदेह नहीं।

SUBTITLE Forty.

॥ 4.65.6 ॥
CrEd 4.64.6

गन्धमादन GANDHAMADANA

वाल्मीकि योजनानां गमिष्यामि पञ्चाशत् तु न संशयः ॥

TRANSLATION *Fifty yojanas I will go;
there is no doubt of it.*

लीला पचास योजन, निःसंदेह।

SUBTITLE Fifty.

॥ 4.65.7 ॥
CrEd 4.64.7

मैन्द MAINDA

वाल्मीकि योजनानां परं षष्टिम् अहं प्लवितुम् उत्सहे ॥

TRANSLATION *Up to sixty yojanas*
I can venture to leap.

लीला मैं साठ योजन कूदने का साहस रखता हूँ।

SUBTITLE Sixty.

॥ 4.65.8 ॥
CrEd 4.64.8

द्विविद DVIVIDA

वाल्मीकि गमिष्यामि न संदेहः सप्ततिं योजनान्य् अहम् ॥

TRANSLATION *I will go, there is no doubt of it,*
seventy yojanas.

लीला मैं सत्तर योजन जाऊँगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

SUBTITLE Seventy.

॥ 4.65.9 ॥
CrEd 4.64.9

सुषेण SUSHENA

वाल्मीकि अशीतिं योजनानां तु प्लवेयं प्लवगर्षभाः ॥

TRANSLATION *Eighty yojanas*
I can leap, bulls among monkeys.

लीला वानरश्रेष्ठो, मैं अस्सी योजन कूद सकता हूँ।

SUBTITLE Eighty.

॥ 4.65.11 ॥
CrEd 4.64.11

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि पूर्वम् अस्माकम् अप्य् आसीत् कश्चिद् गतिपराक्रमः ।
ते वयं वयसः पारम् अनुप्राप्ताः स्म साम्प्रतम् ॥

TRANSLATION *Once we too had
some power of movement;
now we have reached
the far shore of old age.*

लीला एक समय मुझमें भी गति का पराक्रम था। अब मैं
बुढ़ापे के उस पार आ पहुँचा हूँ।

SUBTITLE Once I too could go far.
Now I have come
to the far shore of age.

॥ 4.65.12-13 ॥

CrEd 4.64.12-13

condensed
from 4.65.12-
13

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि किं तु नैवं गते शक्यम् इदं कार्यम् उपेक्षितुम् ।
यद् अर्थं कपिराजश् च रामश् च कृतनिश्चयौ ।
साम्प्रतं कालभेदेन या गतिस् तां निबोधत ।
नवतिं योजनानां तु गमिष्यामि न संशयः ॥

TRANSLATION *Yet, things being so, this task
cannot be set aside,
for which the monkey king and Rama
have set their resolve.
Hear what my range is now,
with the change that time has made:
ninety yojanas I will go;
there is no doubt of it.*

लीला फिर भी यह कार्य छोड़ा नहीं जा सकता। अब मेरी
जो गति है, वह सुनो, नब्बे योजन, निःसंदेह।

SUBTITLE Still, this work must not be dropped.
Hear what I can do now:
ninety yojanas.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.64.12-13) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.64.12-13).

॥ 4.65.15-17 ॥

CrEd 4.64.15-17

condensed
from 4.65.15-
17

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि मया महाबलैश् चैव यज्ञे विष्णुः सनातनः ।
प्रदक्षिणीकृतः पूर्वं क्रममाणस् त्रिविक्रमः ।
स इदानीम् अहं वृद्धः प्लवने मन्दविक्रमः ।
यौवने च तदासीन् मे बलम् अप्रतिमं परैः ।
संप्रत्य् एतावतीं शक्तिं गमने तर्कयाम्य् अहम् ।
नैतावता च संसिद्धिः कार्यस्यास्य भविष्यति ॥

TRANSLATION *By me and by other mighty ones,
at the sacrifice, eternal Vishnu
was once circled, kept on our right,
as he took his three strides.
Now I am old,
slow in my leaping;
but in my youth I had
a strength no one could match.
Now I judge my power
for going to be this much;
and with this much the task
will not be accomplished.*

लीला बहुत पहले मैंने सनातन विष्णु की परिक्रमा की थी,
जब वे तीन पग भर रहे थे। अब मैं बूढ़ा और मंद हूँ।
नब्बे से यह काम नहीं होगा।

SUBTITLE Long ago I circled Vishnu
as he took his three strides.
Now I am old and slow,
and ninety will not do it.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.64.15-17) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.64.15-17).

॥ 4.65.19 ॥

CrEd 4.64.19

अंगद ANGADA

वाल्मीकि अहम् एतद् गमिष्यामि योजनानां शतं महत् ।
निवर्तने तु मे शक्तिः स्यान् न वेति न निश्चितम् ॥

TRANSLATION *I will go this great distance,
a hundred yojanas;
but whether I will have the strength to return
is not certain.*

लीला मैं यह सौ योजन की महान दूरी पार कर लूँगा ।
पर लौटने की शक्ति मुझमें होगी या नहीं, यह
निश्चित नहीं ।

SUBTITLE I can go the hundred yojanas.
But whether I have the strength
to come back,
I cannot say.

॥ 4.65.22,

4.65.25 ॥

CrEd 4.64.22,

4.64.25

condensed
from 4.65.22,
4.65.25

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि न हि प्रेषयिता तात स्वामी प्रेष्यः कथं चन ।
भवतायं जनः सर्वः प्रेष्यः प्लवगसत्तम ।
मूलम् अर्थस्य संरक्ष्यम् एष कार्यविदां नयः ॥

TRANSLATION *For the master who sends, dear one,
is never himself sent;
all these people are yours to send,
best of monkeys.
The root of a venture must be guarded:
this is the way of those who know affairs.*

लीला तात, स्वामी को भेजा नहीं जाता, वह भेजता है ।
आप इस कार्य की जड़ हैं, और जड़ की रक्षा की
जाती है ।

SUBTITLE The master is never sent;
he sends.
You are the root of this work,
and the root must be guarded.

॥ 4.65.30-32 ॥

CrEd 4.64.30-32

condensed
from 4.65.30-
32

अंगद ANGADA

वाल्मीकि न ह्य् अकृत्वा हरिपतेः संदेशं तस्य धीमतः ।
तत्रापि गत्वा प्राणानां पश्यामि परिरक्षणम् ।
स हि प्रसादे चात्यर्थं कोपे च हरिर् ईश्वरः ।
अतीत्य तस्य संदेशं विनाशो गमने भवेत् ।
तद् यथा ह्य् अस्य कार्यस्य न भवत्य् अन्यथा गतिः ।
तद् भवान् एव दृष्टार्थः संचिन्तयितुम् अर्हति ॥

TRANSLATION *For without carrying out the command
of that wise lord of monkeys,
even if we go back there, I see
no way to save our lives.
For that monkey is master, beyond measure,
both in kindness and in anger;
if we go, having passed over his command,
ruin will follow.
So, that this task
may not go astray,
you, who see to the heart of things,
must think it through.*

लीला राजा की आज्ञा पूरी किए बिना हम लौट नहीं
सकते। वे कृपा और क्रोध, दोनों में समर्थ हैं। आप
दूरदर्शी हैं। आप ही कोई मार्ग सोचिए।

SUBTITLE We cannot go back
with the king's order undone.
You see clearly.
Find the way.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.64.30-32) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.64.30-32).

॥ 4.65.33 ॥
CrEd 4.64.33

SILENT MOMENT मौन क्षण



Son of the Wind

Valmiki 4.65.34–4.67.49, 5.1.1–44 (CrEd 4.64.34–4.66.44, 5.1.1–40)

VALMIKI

THE LEELA

Uttara · later layer Valmiki 7.36 (CrEd 7.36.32–33)

Only the Uttara tells why he did not know his strength: as a boy he troubled the sages' hermitages, and the sages of the Bhrigu and Angiras lines cursed him not to know it for a long time. The Kishkindha gives no curse: Jambavan only asks, "Why do you not know yourself?" (CrEd 4.65.7).

॥ 4.65.34 ॥
CrEd 4.64.34

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि अस्य ते वीर कार्यस्य न किं चित् परिहीयते ।
एष संचोदयाम्य् एनं यः कार्यं साधयिष्यति ॥

TRANSLATION *Hero, in this task of yours*

nothing will fall short.

Here, I rouse the one

who will carry the task through.

लीला वीर, आपका यह कार्य अधूरा नहीं रहेगा। मैं उसे
प्रेरित करता हूँ, जो इसे पूरा करेगा।

SUBTITLE Nothing of this work will fail, hero.

I will rouse the one

who will do it.

॥ 4.65.35–
4.66.1 ॥
CrEd 4.64.35–4.65.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.66.2 ॥
CrEd 4.65.2

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि वीर वानरलोकस्य सर्वशास्त्रविदां वर ।
तूष्णीम् एकान्तम् आश्रित्य हनुमन् किं न जल्पसि ॥

TRANSLATION *Hero of the monkey world,
best of all who know the shastras,
why, Hanuman, sitting silent and apart,
do you say nothing?*

लीला वानर-लोक के वीर, सब शास्त्र जानने वालों में श्रेष्ठ,
हनुमान, तुम एकांत में चुप क्यों बैठे हो? कुछ
बोलते क्यों नहीं?

SUBTITLE Hero of the monkeys,
why do you sit apart in silence,
Hanuman?
Why say nothing?

प्रचलित पाठ में “सर्वशास्त्रविदां वर” (सब शास्त्र जानने वालों में श्रेष्ठ) है; CrEd के ई-पाठ में उस जगह “सर्वशास्त्रम् अथाब्रवीत्” है (4.65.2a)।

The popular text reads sarvaśāstravidāṃ vara, “best of all who know the shastras”; the CrEd e-text reads sarvaśāstram athābravīt in that place (4.65.2a).

॥ 4.66.3,
4.66.6 ॥

CrEd 4.65.3, 4.65.6

condensed
from 4.66.3,
4.66.6

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि हनुमन् हरिराजस्य सुग्रीवस्य समो ह्य् असि ।
रामलक्ष्मणयोश् चापि तेजसा च बलेन च ।
पक्षयोर् यद् बलं तस्य तावद् भुजबलं तव ॥

TRANSLATION *Hanuman, you are the equal
of Sugriva, king of monkeys,
and of Rama and Lakshmana too,
in splendour and in strength.
As much strength as is in his wings,
so much is in your arms.*

लीला तेज और बल में तुम सुग्रीव के समान हो, और राम-
लक्ष्मण के भी। गरुड़ के पंखों में जो बल है, वही
तुम्हारी भुजाओं में है।

SUBTITLE You equal Sugriva,
and Rama and Lakshmana too.
The strength of Garuda's wings
is in your arms.

॥ 4.66.7 ॥
CrEd 4.65.7

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि बलं बुद्धिश् च तेजश् च सत्त्वं च हरिसत्तम ।
विशिष्टं सर्वभूतेषु किम् आत्मानं न बुध्यसे ॥

TRANSLATION *Strength, wisdom, splendour
and courage, best of monkeys,
are yours beyond all beings:
why do you not know yourself?*

लीला बल, बुद्धि, तेज और साहस में तुम सब प्राणियों से
बढ़कर हो। फिर तुम स्वयं को क्यों नहीं पहचानते?

SUBTITLE Strength, wisdom, fire and courage:
in you they surpass all beings.
Why do you not
know yourself?

॥ 4.66.7 ॥
CrEd 4.65.7

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.66.8,
4.66.18 ॥

CrEd 4.65.8,
4.65.18

condensed
from 4.66.8,
4.66.18

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि अप्सराप्सरसां श्रेष्ठा विख्याता पुञ्जिकस्थला ।
अञ्जनेति परिख्याता पत्नी केसरिणो हरेः ।
मनसास्मि गतो यत् त्वां परिष्वज्य यशस्विनि ।
वीर्यवान् बुद्धिसंपन्नः पुत्रस् तव भविष्यति ॥

TRANSLATION *Finest of the apsaras,
famed Punjikasthala,
was known as Anjana,
wife of the monkey Kesari.
“Since I have come to you in mind,
embracing you, glorious one,
you will have a son,
valiant, rich in wisdom.”*

लीला तुम्हारी माता अंजना हैं, केसरी की पत्नी। पवनदेव
केवल मन से उनके पास आए और बोले, “तुम्हें
बलवान, बुद्धिमान पुत्र होगा।”

SUBTITLE Your mother is Anjana,
Kesari's wife.
The Wind came to her in thought:
"You will bear a son, mighty and wise."

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि अभ्युत्थितं ततः सूर्यं बालो दृष्ट्वा महावने ।
फलं चेति जिघृक्षुस् त्वम् उत्प्लुत्याभ्यपतो दिवम् ।
शतानि त्रीणि गत्वाथ योजनानां महाकपे ।
तेजसा तस्य निर्धूतो न विषादं ततो गतः ॥

TRANSLATION *Then, a child in the great forest,
you saw the sun risen,
and thinking it a fruit, wanting to seize it,
you leapt and flew up into the sky.
You went three hundred
yojanas, great monkey,
and though scorched by its blaze,
you did not lose heart.*

लीला बचपन में तुमने उगते सूर्य को फल समझा और
उसे पकड़ने के लिए आकाश में उछल गए। तीन
सौ योजन तक तुम बिना हार माने उड़ते गए।

SUBTITLE As a child you took the rising sun
for a fruit,
and leapt into the sky
to seize it.

जाम्बवान् JAMBAVAN

वाल्मीकि तावद् आपततस् तूर्णम् अन्तरिक्षं महाकपे ।
क्षिप्तम् इन्द्रेण ते वज्रं क्रोधाविष्टेन धीमता ।
ततः शैलाग्रशिखरे वामो हनुर् अभज्यत ।
ततो हि नामधेयं ते हनुमान् इति कीर्त्यते ॥

TRANSLATION *As you sped swiftly
through the sky, great monkey,
Indra hurled his thunderbolt at you,
wise Indra, filled with anger.
Then on a mountain peak
your left jaw was broken;
and so your name
is known as Hanuman.*

लीला क्रुद्ध इन्द्र ने तुम पर वज्र चलाया, और पर्वत-शिखर
पर तुम्हारी हनु टूट गई। इसी से तुम्हारा नाम
हनुमान पड़ा।

SUBTITLE Indra hurled his thunderbolt,
and your jaw broke on a peak.
So you are called
Hanuman.

॥ 4.66.30,
4.66.34 ॥

CrEd 4.65.28,
4.65.32

condensed
from 4.66.30,
4.66.34

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि मारुतस्यौरसः पुत्रस् तेजसा चापि तत्समः ।
त्वं हि वायुसुतो वत्स प्लवने चापि तत्समः ।
स इदानीम् अहं वृद्धः परिहीनपराक्रमः ।
साम्प्रतं कालम् अस्माकं भवान् सर्वगुणान्वितः ॥

TRANSLATION *You are the Wind's own son,
his equal in splendour too;
you, child, son of Vayu,
are his equal in leaping too.
Now I am old,
my prowess gone;
at this time, among us,
it is you who have every gift.*

लीला तुम पवन के औरस पुत्र हो, छलाँग में उनके
समान। मैं बूढ़ा हो गया, मेरा पराक्रम घट गया।
अब समय तुम्हारा है।

SUBTITLE You are the Wind's own son,
his equal in leaping.
I am old.
Now the time is yours.

॥ 4.66.35-37 ॥

CrEd 4.65.33-35

condensed
from 4.66.35-
37

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि तद् विजृम्भस्व विक्रान्तः प्लवताम् उत्तमो ह्य् असि ।
त्वद्वीर्यं द्रष्टुकामेयं सर्वा वानरवाहिनी ।
उत्तिष्ठ हरिशार्दूल लङ्घयस्व महार्णवम् ।
परा हि सर्वभूतानां हनुमन् या गतिस् तव ।
विषण्णा हरयः सर्वे हनुमन् किम् उपेक्षसे ।
विक्रमस्व महावेगो विष्णुस् त्रीन् विक्रमान् इव ॥

TRANSLATION *So stretch yourself and stride out;
you are the best of all who leap.
This whole monkey army
longs to see your valour.
Rise, tiger among monkeys,
leap across the great ocean;
for your range, Hanuman,
is beyond all beings.
All the monkeys are downcast;
Hanuman, why do you hold back?
Stride out, mighty in speed,
as Vishnu took his three strides.*

लीला उठो, वानरसिंह, इस महासागर को लाँघो! सारी
वानर-सेना तुम्हारा पराक्रम देखना चाहती है। विष्णु
के तीन पगों की भाँति पग बढ़ाओ!

SUBTITLE Rise, tiger among monkeys,
and leap the great ocean!
Stride out,
as Vishnu took his three strides!

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.65.33-35) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.65.33-35).

॥ 4.66.38–
4.67.8 ॥

CrEd 4.65.36–4.66.5

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 4.67.9–10 ॥

CrEd 4.66.6–7

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अरुजन् पर्वताग्राणि हुताशनसखोऽनिलः ।
बलवान् अप्रमेयश् च वायुर् आकाशगोचरः ।
तस्याहं शीघ्रवेगस्य शीघ्रगस्य महात्मनः ।
मारुतस्यौरसः पुत्रः प्लवने नास्ति मे समः ॥

TRANSLATION *Breaking the tops of mountains,
the Wind, friend of fire,
mighty, beyond measure, is Vayu,
who moves through the sky.
Of him, swift in his rush,
swift-going, great of soul,
of Maruta I am the own son;
in leaping I have no equal.*

लीला अग्नि के सखा पवन आकाश में बहते हुए पर्वतों के
शिखर तोड़ देते हैं। मैं उन्हीं का औरस पुत्र हूँ।
छलाँग में मेरे समान कोई नहीं।

SUBTITLE The Wind breaks the mountain tops
as he sweeps the sky.
I am his own son.
No one leaps as I do.

॥ 4.67.15-16 ॥
CrEd 4.66.12-13

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि उदयात् प्रस्थितं वापि ज्वलन्तं रश्मिमालिनम् ।
अनस्तमितम् आदित्यम् अभिगन्तुं समुत्सहे ।
ततो भूमिम् असंस्पृश्य पुनर् आगन्तुम् उत्सहे ॥

TRANSLATION *Even the sun, set out from its rising,
blazing, garlanded with rays,
before it has set,
I can venture to reach,
and then, not touching the ground,
I can come back again.*

लीला मैं उदय से चले धधकते सूर्य तक, उसके अस्त होने
से पहले पहुँच सकता हूँ, और धरती छुए बिना लौट
सकता हूँ।

SUBTITLE I could chase the blazing sun
and reach it before it sets,
then come back
without touching the earth.

॥ 4.67.26 ॥
CrEd 4.66.23

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि बुद्ध्या चाहं प्रपश्यामि मनश् चेष्टा च मे तथा ।
अहं द्रक्ष्यामि वैदेहीं प्रमोदध्वं प्लवंगमाः ॥

TRANSLATION *With my mind I see it clearly,
and my heart and my will are so:
I will see Vaidehi.
Rejoice, monkeys!*

लीला मेरी बुद्धि इसे देख रही है, मन और चेष्टा भी वैसी
ही है, मैं वैदेही को देखूँगा। आनंद मनाइए, वानरो!

SUBTITLE My mind foresees it:
I shall see Vaidehi.
Rejoice,
monkeys!

॥ 4.67.31,
4.67.33-34 ॥

CrEd 4.66.27,
4.66.29-30

condensed
from 4.67.31,
4.67.33-34

जाम्बवान् JAMBAVAN

वाल्मीकि वीर केसरिणः पुत्र वेगवन् मारुतात्मज ।
ज्ञातीनां विपुलं शोकस् त्वया तात प्रणाशितः ।
ऋषीणां च प्रसादेन कपिवृद्धमतेन च ।
गुरूणां च प्रसादेन प्लवस्व त्वं महार्णवम् ।
स्थास्यामश् चैकपादेन यावदागमनं तव ।
त्वद्गतानि च सर्वेषां जीवितानि वनौकसाम् ॥

TRANSLATION *Hero, son of Kesari,
swift son of the Wind,
you have wiped away, dear one,
the great grief of your kin.
By the grace of the sages,
with the blessing of the elder monkeys,
and by the grace of your teachers,
leap across the great ocean.
We will stand on one foot
until you come back;
the lives of all the forest-dwellers
rest on you.*

लीला पवनपुत्र, तुमने हम सबका महाशोक मिटा दिया।
गुरुजनों के आशीर्वाद से महासागर लाँघो। तुम्हारे
लौटने तक हम एक पैर पर खड़े रहेंगे।

SUBTITLE Son of the Wind, you have ended our grief.
Go with the elders' blessing.
We will stand on one foot
till you return.

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (4.66.27 और 29-30) में है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (4.66.27 and 29-30).

॥ 4.67.35-38 ॥

CrEd 4.66.31-33

condensed
from 4.67.35-
38

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि ततस् तु हरिशार्दूलस् तान् उवाच वनौकसः ।
नेयं मम मही वेगं प्लवने धारयिष्यति ।
एतानि हि नगस्यास्य शिलासंकटशालिनः ।
शिखराणि महेन्द्रस्य स्थिराणि च महान्ति च ।
एतानि मम निष्पेषं पादयोः पततां वराः ।
प्लवतो धारयिष्यन्ति योजनानाम् इतः शतम् ॥

TRANSLATION *Then the tiger among monkeys
said to the forest-dwellers:
“This ground will not bear
the force of my leap.
These peaks of this mountain,
Mahendra, crowded with rocks,
firm and huge:
these, best of leapers,
will bear the pounding of my feet
as I leap from here
a hundred yojanas.”*

लीला यह धरती मेरी छलाँग का वेग नहीं सह सकेगी।
महेन्द्र के ये दृढ़, विशाल शिखर ही मेरे पैरों का
दबाव सहेंगे।

SUBTITLE This ground will not bear my leap.
Only Mahendra's peaks,
firm and great,
can take it.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (4.66.31-33) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (4.66.31-33).

॥ 5.1.3-18 ॥
CrEd 5.1.2-16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.1.29-30 ॥
CrEd 5.1.27-28

ऋषि SAGES

वाल्मीकि एष पर्वतसंकाशो हनूमान् मारुतात्मजः ।
तितीर्षति महावेगं समुद्रं मकरालयम् ।
रामार्थं वानरार्थं च चिकीर्षन् कर्म दुष्करम् ।
समुद्रस्य परं पारं दुष्प्रापं प्राप्तुम् इच्छति ॥

TRANSLATION *This Hanuman, son of the Wind,
huge as a mountain,
means to cross at great speed
the ocean, home of the makaras.
For Rama's sake and the monkeys',
wishing to do a deed hard to do,
he seeks to reach the ocean's far shore,
so hard to reach.*

लीला पर्वत-सा विशाल यह पवनपुत्र हनुमान, राम और
वानरों के लिए, दुष्कर कर्म करने हेतु मकरों के घर
इस सागर के पार जाना चाहता है।

SUBTITLE Hanuman, son of the Wind,
vast as a mountain,
will cross the ocean
for Rama's sake.

॥ 5.1.32-38 ॥
CrEd 5.1.29-35

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.1.39 ॥
CrEd 5.1.36

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यथा राघवनिर्मुक्तः शरः श्वसनविक्रमः ।
गच्छेत् तद्वद् गमिष्यामि लङ्कां रावणपालिताम् ॥

TRANSLATION *As an arrow loosed by Raghava
flies with the speed of the wind,
so I will go
to Lanka, which Ravana guards.*

लीला जैसे राघव के धनुष से छूटा बाण पवन-वेग से
जाता है, वैसे ही मैं रावण की लंका जाऊँगा।

SUBTITLE As an arrow flies
from Raghava's bow,
so I will go
to Lanka.

॥ 5.1.42 ॥
CrEd 5.1.39

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि सर्वथा कृतकार्योऽहम् एष्यामि सह सीतया ।
आनयिष्यामि वा लङ्कां समुत्पाद्य सरावणाम् ॥

TRANSLATION *Either way, my task done,
I will come back with Sita;
or I will tear up Lanka,
Ravana and all, and bring it here.*

लीला हर प्रकार से मैं कार्य पूरा करके सीता के साथ
लौटूँगा, या रावण सहित लंका को उखाड़कर यहाँ
ले आऊँगा!

SUBTITLE I will come back with Sita,
or uproot Lanka,
Ravana and all,
and bring it here!

॥ 5.1.44–49 ॥
CrEd 5.1.40–45

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.1.49 ॥
CrEd 5.1.45

SILENT MOMENT मौन क्षण

५

सुन्दरकाण्ड

Sundara Kanda

2 STORIES

SUNDARA KANDA · सुन्दरकाण्ड

Found

मिल गई

—❧ Valmiki · Sundara Kanda ❧—

5.30.1–5.39.14 (CrEd 5.28.1–5.37.13)

अशोक वृक्ष के पत्तों के बीच से हनुमान सीता को पा लेते हैं, और धीरे-धीरे राम की कथा सुनाकर,
फिर राम की मुद्रिका देकर, उनका विश्वास जीतते हैं। वे उन्हें अपनी पीठ पर ले जाने को कहते हैं;
सीता मना करती हैं, क्योंकि विजय राम की होनी चाहिए। वे हनुमान को ऐसी पहचान देती हैं जो
केवल राम जानते हैं, चित्रकूट के कौए की कथा, और अपनी मणि।

From the leaves of the Ashoka tree Hanuman finds Sita, and wins her trust by
telling Rama's story softly, then giving her Rama's ring. He offers to carry her
away on his back; she refuses, for the victory must be Rama's. She gives him a
token only Rama knows, the story of the crow at Chitrakuta, and her jewel.

१



PART 1 · भाग 1

A voice in the tree

Valmiki 5.30.1–5.34.7 (CrEd 5.28.1–5.32.7)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 5.30.1–2 ॥
CrEd 5.28.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.30.3 ॥
CrEd 5.28.3

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यां कपीनां सहस्राणि सुबहून् अयुतानि च ।
दिक्षु सर्वासु मार्गान्ते सेयम् आसादिता मया ॥

TRANSLATION *She whom monkeys by the thousand,
by many tens of thousands,
are seeking in every direction:
here she is; I have found her.*

लीला जिन्हें सहस्रों-सहस्रों वानर सब दिशाओं में खोज रहे
हैं, वे यही हैं। मैंने उन्हें पा लिया।

SUBTITLE Thousands upon thousands of monkeys
search every land for her.
Here she is.
I have found her.

॥ 5.30.18-19 ॥
CrEd 5.28.18-19

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिर् इव संस्कृताम् ।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति ।
अवश्यम् एव वक्तव्यं मानुषं वाक्यम् अर्थवत् ॥

TRANSLATION *If I give voice to speech
refined, like a brahmin's,
Sita will think me Ravana
and will be afraid.
I must, without fail, speak
the speech of men, full of meaning.*

लीला यदि मैं ब्राह्मण की भाँति परिष्कृत वाणी बोलूँ, तो
सीता मुझे रावण समझकर डर जाएँगी। मुझे मनुष्य
की सीधी, सार्थक वाणी ही बोलनी होगी।

SUBTITLE Speak polished, like a brahmin,
and she will take me for Ravana.
I must speak plain human words,
with meaning.

॥ 5.30.41 ॥
CrEd 5.28.41

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि रामम् अक्लिष्टकर्माणं स्वबन्धुम् अनुकीर्तयन् ।
नैनाम् उद्वेजयिष्यामि तद्वन्धुगतमानसाम् ॥

TRANSLATION *Telling the praise of Rama,
her own, whose deeds never falter,
I will not alarm her,
whose heart has gone to her own.*

लीला मैं उनके अपने प्रियतम राम का गुणगान करूँगा,
जिनके कर्म कभी नहीं डिगते। इससे वे नहीं डरेंगी,
क्योंकि उनका मन उन्हीं में लगा है।

SUBTITLE I will tell of Rama, her own beloved,
whose deeds never falter.
Her heart is with him:
she will not be frightened.

॥ 5.31.2 ॥
CrEd 5.29.2

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि राजा दशरथो नाम रथकुञ्जरवाजिनाम् ।
पुण्यशीलो महाकीर्तिर् ऋजुर् आसीन् महायशः ।
चक्रवर्तिकुले जातः पुरंदरसमो बले ॥

TRANSLATION *There was a king named Dasharatha,
lord of chariots, elephants and horses,
pure in conduct, of great renown,
upright, widely famed,
born in a line of world-rulers,
equal to Indra in strength.*

लीला दशरथ नाम के एक राजा थे, रथों, हाथियों और
घोड़ों के स्वामी, पुण्यशील, सरल, महायशस्वी,
चक्रवर्ती कुल में जन्मे, बल में इन्द्र के समान।

SUBTITLE There was a king named Dasharatha,
lord of chariots, elephants and horses,
upright, famed,
strong as Indra.

॥ 5.31.6 ॥
CrEd 5.29.5

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि तस्य पुत्रः प्रियो ज्येष्ठस् ताराधिपनिभाननः ।
रामो नाम विशेषज्ञः श्रेष्ठः सर्वधनुष्मताम् ॥

TRANSLATION *His dear eldest son,
his face like the moon,
is named Rama, knower of distinctions,
best of all who bear the bow.*

लीला उनके ज्येष्ठ और प्रिय पुत्र हैं, चन्द्रमा-से मुख वाले,
राम नाम के, विवेकी, और सब धनुर्धरों में श्रेष्ठ।

SUBTITLE His eldest, dearest son, with a face like
the moon,
is named Rama:
the finest of all bowmen.

॥ 5.31.8 ॥
CrEd 5.29.7

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि तस्य सत्याभिसंधस्य वृद्धस्य वचनात् पितुः ।
सभार्यः सह च भ्रात्रा वीरः प्रव्रजितो वनम् ॥

TRANSLATION *At the word of his aged father,
a man true to his promise,
with his wife and with his brother
the hero went into exile in the forest.*

लीला अपने सत्यप्रतिज्ञ, वृद्ध पिता के वचन पर वे वीर
अपनी पत्नी और भाई के साथ वन को चले गए।

SUBTITLE At the word of his aged father,
true to his promise,
the hero went to the forest
with his wife and his brother.

॥ 5.31.9-10 ॥

CrEd 5.29.8

5.31.10:
popular text
only · not in
the CrEd

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि तेन तत्र महारण्ये मृगयां परिधावता ।
जनस्थानवधं श्रुत्वा हतौ च खरदूषणौ ।
ततस् त्व् अमर्षापहता जानकी रावणेन तु ॥

TRANSLATION *While he roamed that great forest,
ranging after game,
Ravana, hearing of the slaughter at Janasthana
and of Khara and Dushana slain,
in his fury then
carried Janaki away.*

लीला उस महावन में उन्होंने जनस्थान के राक्षसों को, और
खर-दूषण को, मार गिराया। यह सुनकर रावण ने
क्रोध में जानकी का हरण कर लिया।

SUBTITLE In the great forest he slew
Khara and Dushana.
Hearing of it, in fury,
Ravana carried Janaki away.

यहाँ दी गई संस्कृत CrEd का एक श्लोक (5.29.8) है। प्रचलित पाठ इसे 5.31.9-10 में फैलाता है, और 5.31.10 में जोड़ा गया सोने का मृग केवल प्रचलित पाठ में है।

The Sanskrit shown is the CrEd's single verse (5.29.8). The popular text spreads it over 5.31.9-10, and the golden deer it adds in 5.31.10 is the popular text's only.

॥ 5.31.15 ॥
CrEd 5.29.9

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यथारूपां यथावर्णां यथालक्ष्मीं विनिश्चिताम् ।
अश्रौषं राघवस्याहं सेयम् आसादिता मया ॥

TRANSLATION *Of just the form, just the colouring,
just the grace, beyond all doubt,
that I heard of from Raghava:
here she is; I have found her.*

लीला जैसा रूप, जैसा वर्ण, जैसी शोभा मैंने राघव से सुनी
थी, ठीक वैसी ही, वे यही हैं। मैंने उन्हें पा लिया।

SUBTITLE Her form, her colour,
every mark of her beauty,
just as I heard from Raghava:
here she is. I have found her.

॥ 5.31.18–19 ॥
CrEd 5.29.11–12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.32.1–8 ॥
CrEd 5.30.1–3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.32.9 ॥
CrEd 5.30.4

सीता SITA

वाल्मीकि स्वप्नो मयायं विकृतोऽद्य दृष्टः शाखामृगः
शास्त्रगणैर् निषिद्धः ।
स्वस्त्य् अस्तु रामाय सलक्ष्मणाय तथा पितुर् मे
जनकस्य राज्ञः ॥

TRANSLATION *Today I have seen an evil dream:
a monkey, forbidden by the books of lore.
May all be well with Rama and Lakshmana,
and with my father, King Janaka.*

लीला मैंने आज एक अशुभ स्वप्न देखा है, वानर, जिसे
शास्त्र वर्जित बताते हैं। राम और लक्ष्मण का
कल्याण हो, और मेरे पिता राजा जनक का भी।

SUBTITLE An ill dream today:
a monkey, which the scriptures forbid.
May Rama and Lakshmana be safe,
and my father, King Janaka!

॥ 5.32.10 ॥
CrEd 5.30.5

सीता SITA

वाल्मीकि स्वप्नोऽपि नायं न हि मेऽस्ति निद्रा शोकेन दुःखेन
च पीडितायाः ।
सुखं हि मे नास्ति यतोऽस्मि हीना तेनेन्दुपूर्णप्रतिमानेन ॥

TRANSLATION *Yet this is no dream, for I have no sleep,
worn down as I am by grief and pain;
there is no joy for me, bereft
of him whose face is like the full moon.*

लीला पर यह स्वप्न भी नहीं। शोक और दुःख से पीड़ित
मुझे नींद ही कहाँ आती है। पूर्णचन्द्र-से मुख वाले
उनसे बिछुड़कर मेरे लिए कोई सुख नहीं।

SUBTITLE But this is no dream.
Grief and pain leave me no sleep,
and no joy, parted from him
whose face is like the full moon.

॥ 5.32.14 ॥
CrEd 5.30.8

सीता SITA

वाल्मीकि नमोऽस्तु वाचस्पतये सवज्रिणे स्वयम्भुवे चैव हुताशनाय ।
अनेन चोक्तं यद् इदं ममाग्रतो वनौकसा तच् च
तथास्तु नान्यथा ॥

TRANSLATION *Homage to the Lord of Speech, and to Indra of
the thunderbolt,
to the Self-born, and to Fire:
what this forest-dweller has said before me,
may it be so, and not otherwise.*

लीला वाचस्पति बृहस्पति को, वज्रधारी इन्द्र को,
स्वयम्भू ब्रह्मा को और अग्निदेव को नमस्कार! इस
वनवासी ने मेरे सामने जो कहा है, वह सत्य हो,
अन्यथा नहीं।

SUBTITLE Homage to Brihaspati, to Indra,
to Brahma and to Agni!
What this forest creature told me,
let it be true, and not otherwise.

॥ 5.33.1-2 ॥
CrEd 5.31.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.33.3 ॥
CrEd 5.31.2

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि का नु पद्मपलाशाक्षी क्लिष्टकौशेयवासिनी ।
द्रुमस्य शाखाम् आलम्ब्य तिष्ठसि त्वम् अनिन्दिता ॥

TRANSLATION *Who are you, with eyes like lotus petals,
in a soiled silk garment,
standing here, holding a branch
of the tree, blameless lady?*

लीला कमलनयने, अनिन्दिते, मलिन रेशमी वस्त्र पहने,
इस वृक्ष की शाखा थामे खड़ी आप कौन हैं?

SUBTITLE Who are you, lotus-eyed,
faultless one, in worn silk,
holding a branch of this tree?

॥ 5.33.12 ॥
CrEd 5.31.10

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि रावणेन जनस्थानाद् बलाद् अपहृता यदि ।
सीता त्वम् असि भद्रं ते तन् ममाचक्ष्व पृच्छतः ॥

TRANSLATION *If you are Sita, carried off
by force from Janasthana by Ravana,
blessings on you, tell me so,
for I am asking.*

लीला यदि आप वही सीता हैं, जिन्हें रावण जनस्थान से
बलपूर्वक हर लाया, तो आपका कल्याण हो, मुझे
बताइए। मैं पूछ रहा हूँ।

SUBTITLE If you are Sita,
taken by force from Janasthana by Ravana,
bless you: tell me.
I am asking.

॥ 5.33.16 ॥
CrEd 5.31.12

सीता SITA

वाल्मीकि दुहिता जनकस्याहं वैदेहस्य महात्मनः ।
सीता च नाम नाम्नाहं भार्या रामस्य धीमतः ॥

TRANSLATION *I am the daughter of Janaka,
the great-souled king of Videha;
Sita is my name,
the wife of wise Rama.*

लीला मैं विदेहराज महात्मा जनक की पुत्री हूँ। मेरा नाम
सीता है। मैं बुद्धिमान राम की पत्नी हूँ।

SUBTITLE I am the daughter
of great-souled Janaka, king of Videha.
My name is Sita.
I am the wife of wise Rama.

सीता SITA

वाल्मीकि वसतो दण्डकारण्ये तस्याहम् अमितौजसः ।
रक्षसापहता भार्या रावणेन दुरात्मना ।
द्वौ मासौ तेन मे कालो जीवितानुग्रहः कृतः ।
ऊर्ध्वं द्वाभ्यां तु मासाभ्यां ततस् त्यक्ष्यामि जीवितम् ॥

TRANSLATION *While he of boundless might
was living in the Dandaka forest,
I, his wife, was carried off
by Ravana, the evil rakshasa.
He has granted me two months,
a term of grace to live;
and when the two months are over,
I will give up my life.*

लीला जब वे दण्डकारण्य में रहते थे, तब दुरात्मा रावण ने
मेरा हरण कर लिया। उसने मुझे दो मास का
जीवन-दान दिया है। दो मास के बाद मैं अपने प्राण
त्याग दूँगी।

SUBTITLE While he lived in Dandaka,
Ravana carried me off.
He has left me two months to live;
after two, I give up my life.

॥ 5.34.2 ॥
CrEd 5.32.2

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अहं रामस्य संदेशाद् देवि दूतस् तवागतः ।
वैदेहि कुशली रामस् त्वां च कौशलम् अब्रवीत् ॥

TRANSLATION *At Rama's bidding, lady,
I have come to you as messenger.
Vaidehi, Rama is well,
and he asks if you are well.*

लीला देवी, मैं राम का संदेश लेकर दूत के रूप में आपके पास आया हूँ। वैदेही, राम सकुशल हैं, और उन्होंने आपकी कुशल पूछी है।

SUBTITLE Devi, I have come as a messenger,
with word from Rama.
Vaidehi, Rama is well,
and asks if you are well.

॥ 5.34.4 ॥
CrEd 5.32.4

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि लक्ष्मणश् च महातेजा भर्तुस् तेऽनुचरः प्रियः ।
कृतवाज् शोकसंतप्तः शिरसा तेऽभिवादनम् ॥

TRANSLATION *And Lakshmana of great splendour,
your husband's dear companion,
burning with grief,
bows his head to you in greeting.*

लीला और आपके पति के प्रिय अनुचर, तेजस्वी लक्ष्मण ने, शोक से संतप्त होकर, सिर झुकाकर आपको प्रणाम कहा है।

SUBTITLE And shining Lakshmana,
your husband's dear companion,
burning with grief,
bows his head to you.

॥ 5.34.6 ॥
CrEd 5.32.6

सीता SITA

वाल्मीकि कल्याणी बत गाथेयं लौकिकी प्रतिभाति मे ।
एति जीवन्तम् आनन्दो नरं वर्षशताद् अपि ॥

TRANSLATION *How fair, how true, this saying
of the people seems to me:
joy comes to the one who lives,
even after a hundred years.*

लीला लोक में कही जाने वाली यह कल्याणकारी उक्ति
आज मुझे सच्ची लगती है, जीवित मनुष्य के पास
आनन्द आ ही जाता है, सौ वर्ष बाद ही सही।

SUBTITLE How true it seems, that old saying:
joy comes to one who lives,
even after a hundred years.



The ring

Valmiki 5.34.8–5.37.66 (CrEd 5.32.8–5.35.68)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 5.34.8–9 ॥
CrEd 5.32.8–9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.34.10 ॥
CrEd 5.32.10

सीता SITA

वाल्मीकि अहो धिग् धिक् कृतम् इदं कथितं हि यद् अस्य मे ।
रूपान्तरम् उपागम्य स एवायं हि रावणः ॥

TRANSLATION *Oh, shame, shame on what I have done,
for I have told him everything!
He has come in another form:
this is Ravana himself.*

लीला धिक्कार है, धिक्कार! मैंने इसे सब कुछ बता
दिया। यह तो वही रावण है, दूसरा रूप धरकर
आया है।

SUBTITLE Shame on me, shame!
I have told him everything.
He is Ravana himself,
come in another form.

॥ 5.34.15 ॥
CrEd 5.32.15

सीता SITA

वाल्मीकि स्वं परित्यज्य रूपं यः परिव्राजकरूपधृत् ।
जनस्थाने मया दृष्टस् त्वं स एवासि रावणः ॥

TRANSLATION *You who cast off your own form
and wore the form of a wandering ascetic,
whom I saw in Janasthana:
you are that same Ravana.*

लीला अपना रूप छोड़कर जो परिव्राजक का वेश धरे
जनस्थान में मुझे दिखा था, तुम वही रावण हो।

SUBTITLE You threw off your own form,
came to me in Janasthana as a
wandering ascetic.
You are that same Ravana.

सीता SITA

वाल्मीकि यदि रामस्य दूतस् त्वम् आगतो भद्रम् अस्तु ते ।
पृच्छामि त्वां हरिश्रेष्ठ प्रिया राम कथा हि मे ।
गुणान् रामस्य कथय प्रियस्य मम वानर ।
चित्तं हरसि मे सौम्य नदीकूलं यथा रयः ॥

TRANSLATION *If you have come as Rama's messenger,
blessings on you.
I ask you, best of monkeys,
for talk of Rama is dear to me.
Tell me the virtues of Rama,
my beloved, monkey;
you steal my heart away, gentle one,
as a current steals a river's bank.*

लीला पर यदि तुम सचमुच राम के दूत हो, तो तुम्हारा
कल्याण हो। मुझे राम के गुण सुनाओ, सौम्य। तुम
मेरा मन वैसे ही बहा ले जाते हो, जैसे प्रवाह नदी के
तट को।

SUBTITLE If you are Rama's messenger, bless you.
Tell me of Rama, dear to me.
You carry my heart away,
as a flood carries a riverbank.

॥ 5.34.32 ॥
CrEd 5.32.30

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अपकृष्याश्रमपदान् मृगरूपेण राघवम् ।
शून्ये येनापनीतासि तस्य द्रक्ष्यसि यत् फलम् ॥

TRANSLATION *He who drew Raghava
from the hermitage in a deer's form,
and carried you off when you were alone:
you will see what fruit he reaps.*

लीला जिसने मृग के रूप से राघव को आश्रम से दूर खींचा
और सूने में आपको हर लाया, उसका क्या फल
होता है, वह आप देखेंगी।

SUBTITLE He who drew Raghava from the hermitage
in a deer's shape, and took you when it
stood empty:
you will see the fruit of that.

॥ 5.34.39 ॥
CrEd 5.32.37

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अहं सुग्रीवसचिवो हनूमान् नाम वानरः ।
प्रविष्टो नगरीं लङ्कां लङ्घयित्वा महोदधिम् ॥

TRANSLATION *I am Sugriva's minister,
a monkey named Hanuman;
I have entered the city of Lanka,
having leapt the great ocean.*

लीला मैं सुग्रीव का मंत्री हूँ, हनुमान नाम का वानर।
महासागर लाँघकर मैं लंका नगरी में आया हूँ।

SUBTITLE I am a monkey,
Hanuman by name, Sugriva's minister.
I leapt the great ocean
and entered the city of Lanka.

॥ 5.34.41 ॥
CrEd 5.32.39

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि नाहम् अस्मि तथा देवि यथा माम् अवगच्छसि ।
विशङ्का त्यज्यताम् एषा श्रद्धत्स्व वदतो मम ॥

TRANSLATION *I am not as you take me,
lady; let this doubt
be cast away; believe me
when I speak.*

लीला देवी, मैं वैसा नहीं हूँ जैसा आप मुझे समझ
रही हैं। यह शंका छोड़ दीजिए। मेरी बात पर
विश्वास कीजिए।

SUBTITLE I am not what you take me for, Devi.
Put this doubt away.
Believe what I tell you.

॥ 5.36.2-3 ॥
CrEd 5.34.2

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि वानरोऽहं महाभागे दूतो रामस्य धीमतः ।
रामनामाङ्कितं चेदं पश्य देव्य् अङ्गुलीयकम् ।
समाश्वसिहि भद्रं ते क्षीणदुःखफला ह्य् असि ॥

TRANSLATION *I am a monkey, noble lady,
the messenger of wise Rama;
and see this ring, lady,
marked with Rama's name.
Take heart, blessings on you;
the fruit of your sorrow is all but spent.*

लीला महाभागे, मैं वानर हूँ, बुद्धिमान राम का दूत। देवी,
देखिए, यह राम के नाम से अंकित मुद्रिका है।
धीरज धरिए। आपके दुःख का अंत आ पहुँचा है।

SUBTITLE Noble lady, I am wise Rama's messenger.
Look, Devi: this ring bears Rama's name.
Take heart:
your sorrow has run its course.

॥ 5.36.4-5 ॥
CrEd 5.34.3-4

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.36.7 ॥
CrEd 5.34.6

सीता SITA

वाल्मीकि विक्रान्तस् त्वं समर्थस् त्वं प्राज्ञस् त्वं वानरोत्तम ।
येनेदं राक्षसपदं त्वयैकेन प्रधर्षितम् ॥

TRANSLATION *You are bold, you are able,
you are wise, best of monkeys,
you who alone have assailed
this stronghold of the rakshasas.*

लीला वानरश्रेष्ठ, तुम पराक्रमी हो, समर्थ हो, बुद्धिमान हो,
जो तुम अकेले ही राक्षसों के इस गढ़ को भेदकर
यहाँ आ पहुँचे।

SUBTITLE You are brave, you are able,
you are wise, best of monkeys,
to break alone
into this rakshasa stronghold.

॥ 5.36.13 ॥
CrEd 5.34.12

सीता SITA

वाल्मीकि कुशली यदि काकुत्स्थः किं नु सागरमेखलाम् ।
महीं दहति कोपेन युगान्ताग्निर् इवोत्थितः ॥

TRANSLATION *If Kakutstha is well, why then
does he not burn in his anger
the sea-girdled earth,
risen like the fire at the end of an age?*

लीला यदि काकुत्स्थ सकुशल हैं, तो प्रलय की अग्नि की
भाँति उठकर वे क्रोध से सागर से घिरी इस पृथ्वी
को भस्म क्यों नहीं कर देते?

SUBTITLE If Kakutstha is well,
why does his anger not rise
like the fire at the world's end,
and burn the sea-girt earth?

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि न त्वाम् इहस्थां जानीते रामः कमललोचनः ।
श्रुत्वैव तु वचो मह्यं क्षिप्रम् एष्यति राघवः ।
चमूं प्रकर्षन् महतीं हर्यृक्षगणसंकुलाम् ॥

TRANSLATION *Lotus-eyed Rama
does not know you are here;
but the moment he hears my word,
Raghava will come swiftly,
leading a mighty army,
thronged with troops of monkeys and bears.*

लीला कमलनयन राम नहीं जानते कि आप यहाँ हैं। मेरी
बात सुनते ही राघव वानरों और भालुओं की
विशाल सेना लेकर शीघ्र आ पहुँचेंगे।

SUBTITLE Lotus-eyed Rama does not know you
are here.
The moment he hears, he will come,
with a great army
of monkeys and bears.

सीता SITA

वाल्मीकि स वाच्यः संत्वरस्वेति यावद् एव न पूर्यते ।
अयं संवत्सरः कालस् तावद् धि मम जीवितम् ।
वर्तते दशमो मासो द्वौ तु शेषौ प्लवंगम ।
रावणेन नृशंसेन समयो यः कृतो मम ॥

TRANSLATION *He must be told, "Make haste,"
for only until this year's term
has run its course
will my life last.
The tenth month is passing,
and two remain, monkey,
of the term that cruel Ravana
has set for me.*

लीला उनसे कहना, शीघ्रता करें। यह वर्ष पूरा होने तक ही मेरा जीवन है। क्रूर रावण ने जो अवधि दी है, उसका दसवाँ मास चल रहा है, केवल दो शेष हैं।

SUBTITLE Tell him to hurry.
I live only till this year ends.
Of cruel Ravana's term, the tenth month
is passing.
Two remain.

॥ 5.37.19 ॥
CrEd 5.35.21

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अथ वा मोचयिष्यामि ताम् अद्यैव हि राक्षसात् ।
अस्माद् दुःखाद् उपारोह मम पृष्ठम् अनिन्दिते ॥

TRANSLATION *Or else I will free you
this very day from the rakshasa,
from this misery; climb up
onto my back, blameless lady.*

लीला या फिर मैं आज ही आपको इस राक्षस से, इस
दुःख से छुड़ा ले जाऊँ। अनिन्दिते, मेरी पीठ पर
चढ़ जाइए।

SUBTITLE *Or else I will free you
from this rakshasa today, from this sorrow.
Climb onto my back,
faultless one.*

॥ 5.37.20 ॥
CrEd 5.35.22

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि त्वं हि पृष्ठगतां कृत्वा संतरिष्यामि सागरम् ।
शक्तिर् अस्ति हि मे वोढुं लङ्काम् अपि सरावणाम् ॥

TRANSLATION *With you upon my back
I will cross the ocean;
I have the strength to carry
even Lanka, with Ravana.*

लीला आपको पीठ पर बिठाकर मैं सागर पार कर
जाऊँगा। मुझमें तो रावण समेत पूरी लंका को उठा
ले जाने की शक्ति है।

SUBTITLE *With you on my back
I will cross the sea.
I have the strength to carry Lanka itself,
and Ravana with it.*

॥ 5.37.29-30 ॥
CrEd 5.35.31-32

सीता SITA

वाल्मीकि हनूमन् दूरम् अध्वानं कथं मां वोढुम् इच्छसि ।
तद् एव खलु ते मन्ये कपित्वं हरियूथप ।
कथं वाल्पशरीरस् त्वं माम् इतो नेतुम् इच्छसि ॥

TRANSLATION *Hanuman, how can you wish
to carry me so long a way?
This, I think, is surely
your monkey nature, troop leader.
How, with so small a body,
can you wish to take me from here?*

लीला हनुमान, इतनी लंबी राह तुम मुझे कैसे ले जाना
चाहते हो, इतनी छोटी देह से? मुझे तो लगता है,
यह तुम्हारा वानर-स्वभाव ही है।

SUBTITLE Hanuman, how can you think
to carry me so far?
With a body so small?
That, I think, is just your monkey nature!

॥ 5.37.31-36 ॥
CrEd 5.35.33-38

SILENT MOMENT मौन क्षण

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि सपर्वतवनोद्देशां साट्टप्राकारतोरणाम् ।
लङ्काम् इमां सनाथां वा नयितुं शक्तिर् अस्ति मे ।
तद् अवस्थाप्य तां बुद्धिर् अलं देवि विकाङ्क्षया ।
विशोकं कुरु वैदेहि राघवं सहलक्ष्मणम् ॥

TRANSLATION *Lanka itself, with its mountains and forests,
its towers, walls and gates,
and its lord as well,
I have the strength to carry off.
So let your mind be settled, lady;
enough of doubting.
Free Raghava from grief, Vaidehi,
and Lakshmana with him.*

लीला पर्वतों, वनों, अटारियों, परकोटों और तोरणों समेत,
इसके स्वामी सहित, इस लंका को उठा ले जाने की
शक्ति मुझमें है। देवी, संशय छोड़िए। राघव का
शोक मिटाइए।

SUBTITLE Hills and woods, towers, walls and gates:
I could carry off this Lanka, and its lord.
Doubt no more, Devi.
End Raghava's grief.

सीता SITA

वाल्मीकि अयुक्तं तु कपिश्रेष्ठ मया गन्तुं त्वया सह ।
वायुवेगसवेगस्य वेगो मां मोहयेत् तव ।
अहम् आकाशम् आसक्ता उपर्य् उपरि सागरम् ।
प्रपतेयं हि ते पृष्ठाद् भयाद् वेगेन गच्छतः ॥

TRANSLATION *But it is not fitting, best of monkeys,
for me to go with you;
your speed, swift as the wind,
would make me faint.
Clinging in the sky, high,
high above the ocean,
I would fall from your back in fear
as you sped along.*

लीला पर तुम्हारे साथ मेरा जाना उचित नहीं, कपिश्रेष्ठ।
वायु-जैसा तुम्हारा वेग मुझे मूर्च्छित कर देगा।
सागर के ऊपर आकाश में भय से मैं तुम्हारी पीठ से
गिर पड़ूँगी।

SUBTITLE I should not go with you.
Your speed, like the wind's, would make
me faint.
High over the sea,
I could fall from your back.

॥ 5.37.49 ॥
CrEd 5.35.51

सीता SITA

वाल्मीकि सायुधा बहवो व्योम्नि राक्षसास् त्वं निरायुधः ।
कथं शक्यसि संयातुं मां चैव परिरक्षितुम् ॥

TRANSLATION *Many rakshasas, armed, in the sky,
and you without a weapon:
how will you be able to fight
and to guard me as well?*

लीला आकाश में अनेक सशस्त्र राक्षस होंगे, और तुम
निहत्ये। तुम उनसे लड़ोगे भी और मेरी रक्षा भी
कैसे करोगे?

SUBTITLE Many armed rakshasas will fill the sky,
and you have no weapon.
How can you fight them
and guard me too?

॥ 5.37.55 ॥
CrEd 5.35.57

सीता SITA

वाल्मीकि कामं त्वम् अपि पर्याप्तो निहन्तुं सर्वराक्षसान् ।
राघवस्य यशो हीयेत् त्वया शस्तैस् तु राक्षसैः ॥

TRANSLATION *Granted, you too are able
to slay all the rakshasas;
but Raghava's glory would be lessened
if the rakshasas were slain by you.*

लीला मानती हूँ, तुम सब राक्षसों को मारने में समर्थ हो।
पर यदि वे तुम्हारे हाथों मारे गए, तो राघव का यश
घट जाएगा।

SUBTITLE You could kill every rakshasa,
I grant you.
But if you strike them down,
Raghava's glory would be less.

सीता SITA

वाल्मीकि भर्तुर् भक्तिं पुरस्कृत्य रामाद् अन्यस्य वानर ।
नाहं स्प्रष्टुं पदा गात्रम् इच्छेयं वानरोत्तम ।
यद् अहं गात्रसंस्पर्शं रावणस्य गता बलात् ।
अनीशा किं करिष्यामि विनाथा विवशा सती ॥

TRANSLATION *Holding first my devotion to my husband,
monkey, I would not wish to touch
the body of any but Rama,
not even with my foot, best of monkeys.
That I came to touch Ravana's body
was by force;
powerless, what could I do,
without my protector, helpless?*

लीला पति-भक्ति को आगे रखकर, वानरोत्तम, मैं राम के
सिवा किसी और पुरुष की देह को पाँव से भी छूना
नहीं चाहती। रावण ने बलपूर्वक मेरा स्पर्श किया।
तब मैं अनाथ और विवश थी, क्या करती?

SUBTITLE For love of my husband,
I will touch no man but Rama,
not even with my foot.
Ravana's touch was forced: I was helpless.

॥ 5.37.62 ॥
CrEd 5.35.64

सीता SITA

वाल्मीकि यदि रामो दशग्रीवम् इह हत्वा सराक्षसं ।
माम् इतो गृह्य गच्छेत् तत् तस्य सदृशं भवेत् ॥

TRANSLATION *If Rama slays the Ten-necked one
here, with his rakshasas,
and takes me and goes from here,
that would be worthy of him.*

॥ 5.38.1 ॥
CrEd 5.36.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

लीला यदि राम यहीं आकर दशग्रीव को राक्षसों समेत
मारें, और स्वयं मुझे यहाँ से ले जाएँ, तो वही उनके
योग्य होगा।

SUBTITLE If Rama kills the ten-necked one here,
with all his rakshasas,
and takes me home himself:
that will be worthy of him.



The jewel

Valmiki 5.38.1–5.39.14 (CrEd 5.36.1–5.37.13)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 5.38.4–5 ॥
CrEd 5.36.4–5

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि द्वितीयं कारणं यच् च ब्रवीषि विनयान्विते ।
रामाद् अन्यस्य नार्हामि संस्पर्शम् इति जानकि ।
एतत् ते देवि सदृशं पत्न्यास् तस्य महात्मनः ।
का ह्य् अन्या त्वाम् ऋते देवि ब्रूयाद् वचनम् ईदृशम् ॥

TRANSLATION *And the second reason you give,
modest lady, Janaki,
that you must not be touched
by anyone but Rama:
this is worthy of you, lady,
the wife of that great soul;
for who but you, lady,
would speak such words?*

लीला और जानकी, आपका दूसरा कारण, कि राम के
सिवा किसी का स्पर्श आपके योग्य नहीं, यह उन
महात्मा की पत्नी के सर्वथा अनुरूप है। देवी, आपके
सिवा ऐसा वचन और कौन कहेगा?

SUBTITLE Your second reason, Janaki,
to touch no one but Rama,
is worthy of his wife.
Who but you could speak so?

॥ 5.38.10 ॥
CrEd 5.36.10

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यदि नोत्सहसे यातुं मया सार्धम् अनिन्दिते ।
अभिज्ञानं प्रयच्छ त्वं जानीयाद् राघवो हि यत् ॥

TRANSLATION *If you have no heart to go
with me, blameless lady,
give me a token
that Raghava will know.*

लीला अनिन्दिते, यदि आप मेरे साथ नहीं चलना चाहतीं,
तो कोई ऐसी पहचान दीजिए, जिसे राघव जान लें।

SUBTITLE If you will not come with me,
faultless one,
give me a token,
something Raghava will know.

॥ 5.38.11 ॥
CrEd 5.36.11

SILENT MOMENT मौन क्षण

सीता SITA

वाल्मीकि इदं श्रेष्ठम् अभिज्ञानं ब्रूयास् त्वं तु मम प्रियम् ।
शैलस्य चित्रकूटस्य पादे पूर्वोत्तरे तदा ।
तापसाश्रमवासिन्याः प्राज्यमूलफलोदके ।
तस्मिन् सिद्धाश्रमे देशे मन्दाकिन्या अदूरतः ॥

TRANSLATION *But tell my beloved this,
the best of tokens:
at the foot of the mountain Chitrakuta,
on its north-east side, back then,
when I lived in the ascetics' hermitage,
rich in roots, fruit and water,
in that land of the siddhas' hermitage,
not far from the Mandakini,*

लीला मेरे प्रिय से यह श्रेष्ठ पहचान कहना। राघव,
चित्रकूट पर्वत की पूर्वोत्तर तलहटी में, मन्दाकिनी के
पास, जब मैं तपस्वियों के आश्रम में रहती थी,

SUBTITLE Tell my beloved this, the best of tokens.
Raghava, at the north-east foot
of Chitrakuta,
near the Mandakini,
where we lived among the ascetics...

॥ 5.38.14, 21 ॥

CrEd 5.36.14–15

condensed
from 5.38.14,
21

सीता SITA

वाल्मीकि तस्योपवनषण्डेषु नानापुष्पसुगन्धिषु ।
विहत्य सलिलक्लिन्ना तवाङ्गे समुपाविशम् ।
पर्यायेण प्रसुप्तश् च ममाङ्गे भरताग्रजः ॥

TRANSLATION *in its groves of flowering woods,
sweet with every kind of flower,
I played, and wet with water
came and sat in your lap.
And in turn Bharata's elder brother
fell asleep in my lap.*

लीला सुगन्धित उपवनों में विहार करके, जल से भीगी मैं
आपकी गोद में आ बैठी। और फिर बारी-बारी से
आप मेरी गोद में सो गए।

SUBTITLE ...after wandering in the fragrant groves,
still wet from the water,
I sat in your lap.
And then, in turn, you slept in mine.

प्रचलित पाठ राम के सोने की बात बाद में (5.38.21) कहता है; CrEd इसे तुरंत, अगले श्लोक (5.36.15) में कहता है।

The popular text tells of Rama's sleep later (5.38.21); the CrEd tells it at once, in the next verse (5.36.15).

॥ 5.38.15, 17-
18 ॥

CrEd 5.36.16, 18-
19a

condensed
from 5.38.15,
17-18

सीता SITA

वाल्मीकि ततो मांससमायुक्तो वायसः पर्यतुण्डयत् ।
तम् अहं लोष्टम् उद्यम्य वारयामि स्म वायसं ।
उत्कर्षन्त्यां च रशनां क्रुद्धायां मयि पक्षिणे ।
संसमाने च वसने ततो दृष्टा त्वया ह्य् अहम् ।
त्वया विहसिता चाहं क्रुद्धा संलज्जिता तदा ॥

TRANSLATION *Then a crow, greedy for flesh,
kept pecking at me;
I picked up a clod of earth
and kept driving the crow away.
As I pulled at my girdle,
angry with the bird,
and my garment slipped,
then you saw me;
and you laughed at me,
and I was angry then, and ashamed.*

लीला तभी एक कौआ मुझ पर बार-बार चोंच मारने लगा ।
मैंने ढेला उठाकर उसे भगाया । मेरा वस्त्र सरक
गया, आपने देखा और हँस पड़े । मैं क्रुद्ध भी हुई,
लज्जित भी ।

SUBTITLE A crow kept pecking at me;
I drove it off with a clod.
My garment slipped; you saw, and laughed.
I was angry, and ashamed.

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (5.36.16, 18-19ab) में है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (5.36.16, 18-19ab).

॥ 5.38.20, 29 ॥

CrEd 5.36.21, 25

condensed
from 5.38.20,
29

सीता SITA

वाल्मीकि बाष्पपूर्णमुखी मन्दं चक्षुषी परिमार्जती ।
लक्षिताहं त्वया नाथ वायसेन प्रकोपिता ।
ततस् तस्मिन् महाबाहुः कोपसंवर्तितेक्षणः ।
वायसे कृतवान् क्रूरां मतिं मतिमतां वर ॥

TRANSLATION *My face full of tears,
slowly wiping my eyes,
I was seen by you, my lord,
provoked by the crow.
Then, mighty-armed one, your eyes
rolling in anger,
you turned a cruel mind on the crow,
best of the wise.*

लीला नाथ, आपने देखा कि उस कौए ने मुझे सताया है
और मेरा मुख आँसुओं से भरा है। तब आपकी
आँखें उस पक्षी पर क्रोध से घूम गईं।

SUBTITLE You saw my face full of tears, my lord,
tormented by that crow.
And your eyes rolled in anger
at the bird.

॥ 5.38.30 ॥
CrEd 5.36.26

सीता SITA

वाल्मीकि स दर्भसंस्तराद् गृह्य ब्रह्मणोऽस्त्रेण योजयः ।
स दीप्त इव कालाग्निर् जज्वालाभिमुखो द्विजम् ॥

TRANSLATION *You took a blade from your bed of darbha grass
and joined it to Brahma's weapon;
blazing like the fire at the end of time,
it flamed out against the bird.*

लीला आपने कुश के बिछौने से एक दर्भ उठाया, उसे
ब्रह्मास्त्र से अभिमन्त्रित किया, और वह प्रलय की
अग्नि-सा उस पक्षी की ओर धधक उठा।

SUBTITLE You took a blade of darbha from your bed,
charged it with Brahma's weapon;
it blazed at the bird
like doomsday fire.

सीता SITA

वाल्मीकि स पित्रा च परित्यक्तः सुरैः सर्वैर् महर्षिभिः ।
त्रील् लोकान् संपरिक्रम्य त्वाम् एव शरणं गतः ।
तं त्वं निपतितं भूमौ शरण्यः शरणागतम् ।
वधार्हम् अपि काकुत्स्थ कृपया पर्यपालयः ॥

TRANSLATION *Forsaken by his father,
by all the gods and the great sages,
he went round the three worlds
and came to you alone for refuge.
Fallen on the ground, come for refuge,
he deserved death, Kakutstha,
yet you, the giver of refuge,
in pity protected him.*

लीला अपने पिता इन्द्र ने, सब देवताओं और महर्षियों ने
उसे त्याग दिया। तीनों लोकों में भटककर वह
आपकी ही शरण आ गिरा। वध के योग्य होने
पर भी, काकुत्स्थ, आपने करुणा करके उसे
बचा लिया।

SUBTITLE Cast off by Indra his father, by gods
and sages,
he fled through three worlds
and fell before you.
You spared him.

॥ 5.38.37 ॥
CrEd 5.36.31

5.38.37cd:
popular text
only · not in
the CrEd

सीता SITA

वाल्मीकि ततस् तस्याक्षि काकस्य हिनस्ति स्म स दक्षिणम् ।
दत्त्वा स दक्षिणं नेत्रं प्राणेभ्यः परिरक्षितः ॥

TRANSLATION *Then it destroyed
the crow's right eye;
giving up his right eye,
he kept his life.*

लीला अस्त्र ने उस कौए की दाहिनी आँख ली। दाहिनी
आँख देकर उसने अपने प्राण बचाए।

SUBTITLE The weapon took the crow's right eye.
Giving his right eye,
he kept his life.

दूसरी पंक्ति (5.38.37cd), “दाहिनी आँख देकर उसने प्राण बचाए”, केवल प्रचलित पाठ में है। CrEd का श्लोक केवल पहली पंक्ति है (5.36.31)।

The second half (5.38.37cd), “giving up his right eye, he kept his life”, is the popular text's. The CrEd verse is the first half alone (5.36.31).

popular text only · not in the CrEd 5.38.37b

The second half, "giving his right eye, he kept his life" (5.38.37b), is the popular text's; the CrEd verse ends with the weapon taking the crow's right eye (5.36.31).

॥ 5.38.39 ॥
CrEd 5.36.33

सीता SITA

वाल्मीकि मत्कृते काकमात्रेऽपि ब्रह्मास्त्रं समुदीरितम् ।
कस्माद् यो मां हरत् त्वत्तः क्षमसे तं महीपते ॥

TRANSLATION *For my sake, at a mere crow,
you loosed Brahma's weapon;
why then, lord of the earth, do you bear with
the one who took me from you?*

लीला मेरे लिए आपने एक कौए भर पर ब्रह्मास्त्र चला दिया था। तो फिर, पृथ्वीपति, जो मुझे आपसे हर ले गया, उसे आप क्षमा क्यों कर रहे हैं?

SUBTITLE For me you loosed Brahma's weapon
at a mere crow.
Then why, lord of the earth,
do you forgive the one who stole me?

॥ 5.38.67 ॥
CrEd 5.36.50

सीता SITA

वाल्मीकि इदं ब्रूयाश् च मे नाथं शूरं रामं पुनः पुनः ।
जीवितं धारयिष्यामि मासं दशरथात्मज ।
ऊर्ध्व मासान् न जीवेयं सत्येनाहं ब्रवीमि ते ॥

TRANSLATION *And tell my lord, the hero Rama,
this, again and again:
"I will hold on to life for a month,
son of Dasharatha;
beyond that month I will not live:
I tell you this by the truth."*

लीला और मेरे स्वामी, शूरवीर राम से बार-बार कहना, दशरथनन्दन, मैं एक मास और प्राण धारण करूँगी। उसके बाद नहीं जीऊँगी। मैं सत्य कहती हूँ।

SUBTITLE Tell brave Rama, again and again:
son of Dasharatha, I will hold on to life
one month more. No longer.
I swear it by the truth.

॥ 5.38.69-70 ॥
CrEd 5.36.52-53

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.39.1-2 ॥
CrEd 5.37.1-2

सीता SITA

वाल्मीकि अभिज्ञानम् अभिज्ञातम् एतद् रामस्य तत्त्वतः ।
मणिं तु दृष्ट्वा रामो वै त्रयाणां संस्मरिष्यति ।
वीरो जनन्या मम च राज्ञो दशरथस्य च ॥

TRANSLATION *This token is truly
one that Rama knows well.
Seeing the jewel, Rama the hero
will remember three:
the mother, and me,
and King Dasharatha.*

लीला राम इस पहचान को भली-भाँति जानते हैं। इस
मणि को देखकर वीर राम हम तीनों को स्मरण
करेंगे, मेरी माता को, मुझे, और राजा दशरथ को।

SUBTITLE Rama knows this token well.
When he sees this jewel, he will
remember three:
my mother, me,
and King Dasharatha.

॥ 5.39.14 ॥
CrEd 5.37.13

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि क्षिप्रम् एष्यति काकुत्स्थो हर्यृक्षप्रवरैर् वृतः ।
यस् ते युधि विजित्यारीज् शोकं व्यपनयिष्यति ॥

TRANSLATION *Kakutstha will come soon,
surrounded by the best of monkeys and bears,
and, conquering your foes in battle,
he will take away your grief.*

लीला काकुत्स्थ शीघ्र ही श्रेष्ठ वानरों और भालुओं से घिरे
हुए आएँगे। युद्ध में शत्रुओं को जीतकर वे आपका
शोक दूर करेंगे।

SUBTITLE Kakutstha will come soon,
with the best of the monkeys and bears.
He will conquer his enemies in battle
and take your grief away.

॥ 5.38.71 ॥
CrEd 5.36.54

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.38.72 ॥
CrEd 5.36.55

SILENT MOMENT मौन क्षण

SUNDARA KANDA · सुन्दरकाण्ड

Bound; the city burns

बंधन; जलती नगरी

—❧ Valmiki · Sundara Kanda ❧—

5.41.1–5.55.34 (CrEd 5.39.1–5.53.28)

हनुमान रावण का उपवन उजाड़ते हैं और राक्षसों से लड़ते हैं, फिर इन्द्रजित के ब्रह्मास्त्र से स्वयं को बँध जाने देते हैं, ताकि रावण के सामने पहुँच सकें। सभा में वे राजा से सीता को लौटाने को कहते हैं; विभीषण उन्हें मृत्युदण्ड से बचाते हैं, और रावण उसकी जगह उनकी पूँछ में आग लगाने का आदेश देता है। जलती पूँछ से हनुमान लंका को जला देते हैं, डरते हैं कि कहीं सीता भी न जल गई हों, और फिर जानते हैं कि उन्हें कुछ नहीं हुआ।

Hanuman wrecks Ravana's grove and fights off the rakshasas, then lets Indrajit's Brahma weapon bind him so that he can face Ravana. In the court he tells the king to give Sita back; Vibhishana saves him from death, and Ravana orders his tail set on fire instead. With the burning tail Hanuman sets Lanka ablaze, fears he has burned Sita too, and learns that she is unharmed.

१



PART 1 · भाग 1

The gate

Valmiki 5.41.1–5.48.56 (CrEd 5.39.1–5.46.54)

॥ 5.41.1 ॥
CrEd 5.39.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.41.2-3 ॥
CrEd 5.39.2-3

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अल्पशेषम् इदं कार्यं दृष्टेयम् असितेक्षणा ।
त्रीन् उपायान् अतिक्रम्य चतुर्थं इह दृश्यते ।
न साम रक्षःसु गुणाय कल्पते न दानम् अर्थोपचितेषु वर्तते ।
न भेदसाध्या बलदर्पिता जनाः पराक्रमस् त्व् एष
ममेह रोचते ॥

TRANSLATION *Little is left of this task;
I have seen the dark-eyed lady.
Passing over the three means,
the fourth is what shows itself here.
Soft words do no good with rakshasas;
gifts do not work with those heaped with wealth;
people proud of their strength are not won
by division;
here it is force that pleases me.*

लीला मैंने उन श्यामनयना को देख लिया। अब थोड़ा ही
काम शेष है। राक्षसों पर न साम चलता है, न दान,
न भेद। यहाँ तो पराक्रम ही मुझे उचित लगता है।

SUBTITLE I have seen the dark-eyed lady;
little work is left.
Soft words won't move rakshasas,
nor gifts, nor division: here, force.

॥ 5.41.11 ॥
CrEd 5.39.10

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि इदं विध्वंसयिष्यामि शुष्कं वनम् इवानलः ।
अस्मिन् भग्ने ततः कोपं करिष्यति स रावणः ॥

TRANSLATION *I will lay this grove waste,
as fire lays waste a dry forest;
and when it is broken,
Ravana will grow angry.*

लीला जैसे अग्नि सूखे वन को नष्ट करती है, वैसे ही मैं इस
उपवन को उजाड़ दूँगा। इसके उजड़ते ही रावण
क्रोध करेगा।

SUBTITLE I will lay this grove waste,
as fire takes a dry forest.
When it lies broken,
Ravana will rage.

॥ 5.41.14–19,
5.42.17–19 ॥
CrEd 5.39.13–14,
5.40.17–19

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.42.1–4 ॥
CrEd 5.40.1–4

SILENT MOMENT मौन क्षण

राक्षसी RAKSHASI

वाल्मीकि कोऽयं कस्य कुतो वायं किंनिमित्तम् इहागतः ।
कथं त्वया सहानेन संवादः कृत इत्य् उत ।
आचक्ष्व नो विशालाक्षि मा भूत् ते सुभगे भयम् ॥

TRANSLATION *Who is he? Whose is he? From where?
For what cause has he come here?
And how is it that you
have talked with him?
Tell us, wide-eyed one;
have no fear, lovely lady.*

लीला यह कौन है? किसका है? कहाँ से आया,
किसलिए? इसने तुमसे क्या बात की? बताओ,
विशालाक्षी, डरो मत।

SUBTITLE Who is he? Whose is he?
Where from, and why here?
What did he say to you?
Tell us, wide-eyed one; don't be afraid.

॥ 5.42.8-9 ॥
CrEd 5.40.8-9

सीता SITA

वाल्मीकि रक्षसां कामरूपाणां विज्ञाने मम का गतिः ।
यूयम् एवास्य जानीत योऽयं यद् वा करिष्यति ।
अहिर् एव अहेः पादान् विजानाति न संशयः ॥

TRANSLATION *What means have I of knowing
rakshasas who take any form they will?
You yourselves must know
who he is, or what he will do.
Only a snake knows a snake's feet;
of that there is no doubt.*

लीला इच्छा से रूप बदलने वाले राक्षसों को पहचानना
मेरे बस में कहाँ? यह कौन है, क्या करेगा, तुम्हीं
जानो। साँप के पैर साँप ही जानता है।

SUBTITLE How would I know rakshasas
who change shape at will?
You know who he is.
Only a snake knows a snake's tracks.

॥ 5.42.10 ॥
CrEd 5.40.10

सीता SITA

वाल्मीकि अहम् अप्य् अस्य भीतास्मि नैनं जानामि कोऽन्वयम् ।
वेद्मि राक्षसम् एवैनं कामरूपिणम् आगतम् ॥

TRANSLATION *I too am afraid of him;
I do not know who he is.
I take him for a rakshasa
come here in a form of his choosing.*

लीला मैं भी इससे डरी हुई हूँ। मैं नहीं जानती यह कौन
है। मुझे तो यह इच्छा से रूप धरने वाला कोई
राक्षस ही लगता है।

SUBTITLE I am afraid of him too.
I don't know who he is.
Some rakshasa, I think,
come in a shape of his choosing.

॥ 5.42.33 ॥
CrEd 5.41.6

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि जयत्य् अतिबलो रामो लक्ष्मणश् च महाबलः ।
राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः ॥

TRANSLATION *Victory to Rama, mighty beyond measure,
and to Lakshmana of great strength!
Victory to King Sugriva,
protected by Raghava!*

लीला अतिबलशाली राम की जय! महाबली लक्ष्मण की
जय! राघव से रक्षित राजा सुग्रीव की जय!

SUBTITLE Victory to Rama, mighty beyond measure,
and to strong Lakshmana!
Victory to King Sugriva,
whom Raghava protects!

प्रचलित पाठ यह जयघोष द्वार पर (5.42.33-36) और फिर चैत्य-प्रासाद पर (5.43.8-11) देता है; CrEd इसे केवल एक बार, चैत्य-प्रासाद पर (5.41.6-9) देता है।

The popular text gives this cry at the gate (5.42.33-36) and again at the temple tower (5.43.8-11); the CrEd gives it once, at the temple tower (5.41.6-9).

॥ 5.42.34 ॥
CrEd 5.41.7

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि दासोऽहं कोसलेन्द्रस्य रामस्याक्लिष्टकर्मणः ।
हनुमाञ् शत्रुसैन्यानां निहन्ता मारुतात्मजः ॥

TRANSLATION *I am the servant of the lord of Kosala,
Rama, whose deeds never falter:
Hanuman, slayer of enemy armies,
son of the Wind.*

लीला मैं अक्लिष्टकर्मा कोसलराज राम का दास हूँ,
पवनपुत्र हनुमान, शत्रु-सेनाओं का संहारक!

SUBTITLE I am the servant of Rama,
Kosala's king, whose deeds never falter:
Hanuman, son of the Wind,
destroyer of enemy armies!

॥ 5.42.35-36 ॥
CrEd 5.41.8-9

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि न रावणसहस्रं मे युद्धे प्रतिबलं भवेत् ।
शिलाभिस् तु प्रहरतः पादपैश् च सहस्रशः ।
अर्दयित्वा पुरीं लङ्काम् अभिवाद्य च मैथिलीम् ।
समृद्धार्थो गमिष्यामि मिषतां सर्वरक्षसाम् ॥

TRANSLATION *A thousand Ravanaas could not
match me in battle,
as I strike with rocks
and with trees by the thousand.
I will crush the city of Lanka,
bow to Maithili,
and go, my purpose won,
while all the rakshasas look on.*

लीला सहस्र रावण भी युद्ध में मेरी बराबरी नहीं कर
सकते। सब राक्षसों के देखते-देखते मैं लंका
को रौंदकर, मैथिली को प्रणाम करके, सफल
होकर लौटूँगा।

SUBTITLE A thousand Ravanaas could not match me.
I will crush Lanka,
bow to Maithili, and go,
while every rakshasa watches!

॥ 5.42.39-40 ॥
CrEd 5.40.31-32

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.48.18-38 ॥
CrEd 5.46.16-36

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.48.43 ॥
CrEd 5.46.41

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अस्त्रेणापि हि बद्धस्य भयं मम न जायते ।
पितामहमहेन्द्राभ्यां रक्षितस्यानिलेन च ॥

TRANSLATION *Though bound by the weapon,
I feel no fear,
for the Grandsire and great Indra
protect me, and the Wind.*

लीला अस्त्र से बँधकर भी मुझे भय नहीं होता। पितामह
ब्रह्मा, महेन्द्र और पवनदेव मेरी रक्षा करते हैं।

SUBTITLE Bound by the weapon,
I feel no fear:
Brahma and great Indra guard me,
and the Wind.

॥ 5.48.44 ॥
CrEd 5.46.42

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि ग्रहणे चापि रक्षोभिर् महन् मे गुणदर्शनम् ।
राक्षसेन्द्रेण संवादस् तस्माद् गृह्णन्तु मां परे ॥

TRANSLATION *Even in being seized by rakshasas
I see great gain for me:
I will speak with the lord of rakshasas.
So let the enemy take me.*

लीला राक्षसों के पकड़ने में भी मेरा बड़ा लाभ है,
राक्षसराज से बात होगी। इसलिए शत्रु मुझे पकड़
ही लें।

SUBTITLE Even taken, I gain much:
I will speak with the rakshasa king.
So let them seize me.

॥ 5.48.46–48 ॥
CrEd 5.46.44–46

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.48.50 ॥
CrEd 5.46.48

इन्द्रजित् INDRAJIT

वाल्मीकि अहो महत् कर्म कृतं निरर्थकं न राक्षसैर् मन्त्रगतिर् विमृष्टा ।
पुनश् च नास्त्रे विहतेऽस्त्रम् अन्यत् प्रवर्तते संशयिताः
स्म सर्वे ॥

TRANSLATION *Oh, a great deed done for nothing!
The rakshasas did not weigh how a spell works:
once a weapon is undone, no other weapon
takes hold. We are all in peril.*

लीला अहो, इतना बड़ा कर्म व्यर्थ गया! राक्षसों ने मन्त्र
की गति पर विचार ही नहीं किया। एक अस्त्र टूटा
तो दूसरा अब काम न करेगा। हम सब संकट में हैं।

SUBTITLE All that work for nothing!
They never weighed the spell.
The weapon is undone, no other will serve,
and we are all at risk.

॥ 5.48.52 ॥
CrEd 5.46.50

SILENT MOMENT मौन क्षण



The envoy

Valmiki 5.49.1–5.53.9 (CrEd 5.47.1–5.51.9)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 5.49.1–2, 15–
16 ॥
CrEd 5.47.1–2, 15–
16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.49.17 ॥
CrEd 5.47.17

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अहो रूपम् अहो धैर्यम् अहो सत्त्वम् अहो द्युतिः ।
अहो राक्षसराजस्य सर्वलक्षणयुक्तता ॥

TRANSLATION *Oh, what beauty! Oh, what composure!*
Oh, what strength! Oh, what radiance!
Oh, how the king of the rakshasas
bears every mark of greatness!

लीला अहो, कैसा रूप! कैसा धैर्य, कैसा बल, कैसी
कान्ति! इस राक्षसराज में सब शुभ लक्षण हैं।

SUBTITLE What a form! What courage,
what strength, what splendour!
The king of the rakshasas
bears every mark of greatness.

॥ 5.49.18 ॥
CrEd 5.47.18

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यद्य् अधर्मो न बलवान् स्याद् अयं राक्षसेश्वरः ।
स्याद् अयं सुरलोकस्य सशक्रस्यापि रक्षिता ॥

TRANSLATION *If unrighteousness were not so strong in him,
this lord of the rakshasas
could be the protector even
of the world of the gods, with Indra.*

लीला यदि इसमें अधर्म इतना बलवान न होता, तो यह
राक्षसेश्वर इन्द्र समेत पूरे देवलोक का रक्षक हो
सकता था।

SUBTITLE If adharma were not so strong in him,
this lord of rakshasas
could guard heaven itself,
and Indra too.

॥ 5.50.5 ॥
CrEd 5.48.3

रावण RAVANA

वाल्मीकि दुरात्मा पृच्छ्यताम् एष कुतः किं वास्य कारणम् ।
वनभङ्गे च कोऽस्यार्थो राक्षसीनां च तर्जने ॥

TRANSLATION *Let this wicked one be asked
where he comes from, and why,
and what he meant by breaking the grove
and threatening the rakshasis.*

लीला इस दुष्ट से पूछो, कहाँ से आया है? किस कारण?
मेरा उपवन उजाड़ने और राक्षसियों को डराने में
इसका क्या प्रयोजन था?

SUBTITLE Question this wretch.
Where is he from? Why is he here?
Why break my grove,
and terrify the rakshasis?

प्रहस्त PRAHASTA

वाल्मीकि समाश्वसिहि भद्रं ते न भीः कार्या त्वया कपे ।
यदि तावत् त्वम् इन्द्रेण प्रेषितो रावणालयम् ।
तत्त्वम् आख्याहि मा ते भूद् भयं वानर मोक्ष्यसे ॥

TRANSLATION *Take heart, blessings on you;
you need have no fear, monkey.
If it was Indra
who sent you to Ravana's house,
tell the truth; have no fear,
monkey: you will be set free.*

लीला धीरज रखो, वानर, डरो मत। यदि तुम्हें इन्द्र ने
रावण के भवन में भेजा है, तो सच-सच बता दो।
भय न करो, तुम्हें छोड़ दिया जाएगा।

SUBTITLE Take heart, monkey; don't be afraid.
If Indra sent you to Ravana's house,
tell the truth,
and you will go free.

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि एवम् उक्तो हरिवरस् तदा रक्षोगणेश्वरम् ।
अब्रवीन् नास्मि शक्रस्य यमस्य वरुणस्य वा ।
धनदेन न मे सख्यं विष्णुना नास्मि चोदितः ।
जातिर् एव मम त्व् एषा वानरोऽहम् इहागतः ।
दर्शने राक्षसेन्द्रस्य दुर्लभे तद् इदं मया ।
वनं राक्षसराजस्य दर्शनार्थे विनाशितम् ॥

TRANSLATION *Spoken to so, the best of monkeys
then said to the lord of the rakshasa hosts:
“I am not Indra’s,
nor Yama’s, nor Varuna’s.
I have no friendship with Kubera,
nor was I sent by Vishnu.
This is simply what I am by birth:
a monkey, I have come here.
Since the lord of rakshasas
was hard to see,
I laid waste this grove of the king
in order to see him.”*

लीला मैं न इन्द्र का भेजा हूँ, न यम का, न वरुण का, न
कुबेर मेरा मित्र है, न विष्णु ने मुझे भेजा है। मैं जन्म
से वानर ही हूँ। राक्षसराज के दर्शन दुर्लभ हैं। उन्हीं
के दर्शन के लिए मैंने उनका उपवन उजाड़ा।

SUBTITLE No god sent me:
not Indra, Yama, Varuna or Vishnu.
I am a monkey born.
To see the king, I broke his grove.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (5.48.10-12) में है; दृश्य की पंक्ति आरंभ के शब्द छोड़ देती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (5.48.10-12); the scene's line leaves out the opening words.

॥ 5.50.15, 17–
18 ॥

CrEd 5.48.13, 15

condensed
from 5.50.15,
17–18

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि ततस् ते राक्षसाः प्राप्ता बलिनो युद्धकाङ्क्षिणः ।
रक्षणार्थं च देहस्य प्रतियुद्धा मया रणे ।
राजानं द्रष्टुकामेन मयास्त्रम् अनुवर्तितम् ।
विमुक्तो अहम् अस्त्रेण राक्षसैस् त्व् अतिपीडितः ॥

TRANSLATION *Then those rakshasas came,
strong, eager for battle,
and to protect my body
I fought them back on the field.
Wishing to see the king,
I yielded to the weapon;
I am free of the weapon,
but sorely tormented by the rakshasas.*

लीला तब आपके बलवान राक्षस युद्ध की इच्छा से आए।
अपने शरीर की रक्षा के लिए ही मैंने उनसे युद्ध
किया। राजा के दर्शन की इच्छा से ही मैंने अस्त्र को
स्वीकार किया।

SUBTITLE Your strong rakshasas came to fight;
I fought only to save my body.
To see the king,
I let the weapon hold me.

॥ 5.50.19 ॥
CrEd 5.48.16

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि दूतोऽहम् इति विज्ञेयो राघवस्यामितौजसः ।
श्रूयतां चापि वचनं मम पथ्यम् इदं प्रभो ॥

TRANSLATION *Know that I am a messenger
of Raghava, whose might has no measure;
and hear, my lord,
these words of mine, for your good.*

लीला मुझे अमित तेजस्वी राघव का दूत जानिए। प्रभु,
मेरी यह हितकर बात भी सुनिए।

SUBTITLE Know me as the envoy of Raghava,
whose might has no measure.
Hear my words, lord:
they are for your good.

॥ 5.51.2 ॥
CrEd 5.49.2

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अहं सुग्रीवसंदेशाद् इह प्राप्तस् तवालयम् ।
राक्षसेन्द्र हरीशस् त्वां भ्राता कुशलम् अब्रवीत् ॥

TRANSLATION *I have come here to your house
with a message from Sugriva;
lord of rakshasas, the king of monkeys,
your brother, asks after your welfare.*

लीला मैं सुग्रीव के संदेश से आपके भवन में आया हूँ।
राक्षसेन्द्र, वानरराज, आपके भाई, आपकी कुशल
पूछते हैं।

SUBTITLE I come at Sugriva's bidding.
King of rakshasas,
the lord of the monkeys, your brother king,
asks after your welfare.

॥ 5.51.16-17 ॥
CrEd 5.49.15

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि तद् भवान् दृष्टधर्मार्थस् तपः कृतपरिग्रहः ।
परदारान् महाप्राज्ञ नोपरोद्धुं त्वम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *So you, who have seen dharma and gain,
who have taken up austerity,
should not hold another's wife captive,
you who are so wise.*

लीला आप धर्म और अर्थ को जानने वाले हैं, आपने तप
का व्रत लिया है। महाप्राज्ञ, पराई स्त्री को बंदी
रखना आपको शोभा नहीं देता।

SUBTITLE You know dharma and wealth;
you have taken up austerity.
Wise as you are,
you should not hold another man's wife.

॥ 5.51.21 ॥
CrEd 5.49.19

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि तत् त्रिकालहितं वाक्यं धर्म्यम् अर्थानुबन्धि च ।
मन्यस्व नरदेवाय जानकी प्रतिदीयताम् ॥

TRANSLATION *So heed these words, good for all three times,
true to dharma, and bound up with gain:
to the god among men
let Janaki be given back.*

लीला इसलिए यह बात मानिए, जो तीनों कालों में
हितकर है, धर्मसंगत है और लाभकारी भी, जानकी
को नरदेव राम को लौटा दीजिए।

SUBTITLE Heed these words, good for all time,
true to dharma and to your gain:
give Janaki back
to the king of men.

॥ 5.51.34-35 ॥
CrEd 5.49.33-34

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यां सीतेत्य् अभिजानासि येयं तिष्ठति ते वशे ।
कालरात्रीति तां विद्धि सर्वलङ्काविनाशिनीम् ।
तद् अलं कालपाशेन सीता विग्रहरूपिणा ।
स्वयं स्कन्धावसक्तेन क्षमम् आत्मनि चिन्त्यताम् ॥

TRANSLATION *She whom you know as Sita,
she who is here in your power:
know her for the Night of Doom,
destroyer of all Lanka.
So, enough of this noose of Death
in the bodily form of Sita,
hung on your own shoulder by yourself;
think what is good for yourself.*

लीला जिन्हें आप सीता समझते हैं, जो आपके वश में हैं,
उन्हें समस्त लंका का विनाश करने वाली कालरात्रि
जानिए। सीता के रूप में यह कालपाश आपने स्वयं
अपने गले में डाला है। अपना हित सोचिए।

SUBTITLE She you call Sita
is the Night of Doom for all Lanka.
You have hung Death's noose on your
own neck.
Think of yourself.

॥ 5.52.1-5 ॥
CrEd 5.50.1-4

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.52.6 ॥
CrEd 5.50.5

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि राजन् धर्मविरुद्धं च लोकवृत्तेश् च गर्हितम् ।
तव चासदृशं वीर कपेर् अस्य प्रमापणम् ॥

TRANSLATION *King, against dharma,
condemned by the ways of the world,
and unworthy of you, hero,
is the killing of this monkey.*

लीला राजन्, इस वानर का वध धर्म के विरुद्ध है, और
लोक-व्यवहार में निंदित भी। वीर, यह आपको
शोभा नहीं देता।

SUBTITLE King, killing this monkey
goes against dharma,
and the world condemns it.
It is unworthy of you, hero.

॥ 5.52.11 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

रावण RAVANA

वाल्मीकि न पापानां वधे पापं विद्यते शत्रुसूदन ।
तस्माद् एनं वधिष्यामि वानरं पापचारिणम् ॥

TRANSLATION *There is no sin in the slaying
of sinners, slayer of foes;
so I will slay this monkey,
this doer of evil.*

लीला पापियों के वध में कोई पाप नहीं, शत्रुसूदन।
इसलिए मैं इस पापी वानर का वध करूँगा।

SUBTITLE There is no sin
in killing sinners.
So I will kill this monkey,
this doer of evil.

॥ 5.52.14 ॥
CrEd 5.50.6

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि असंशयं शत्रुर् अयं प्रवृद्धः कृतं ह्य् अनेनाप्रियम् अप्रमेयम् ।
न दूतवध्यां प्रवदन्ति सन्तो दूतस्य दृष्टा बहवो हि दण्डाः ॥

TRANSLATION *No doubt he is an enemy, grown strong,
for he has done us harm beyond measure;
but the good do not speak of killing an envoy;
many punishments for an envoy are known.*

लीला निःसंदेह यह शत्रु है, और इसने हमारा बहुत अहित
किया है। पर सज्जन दूत का वध कभी उचित
नहीं बताते।

SUBTITLE He is our enemy, no doubt,
and has done us great harm.
But the good say:
an envoy is never killed.

॥ 5.52.15 ॥
CrEd 5.50.7

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि वैरूप्यम् अङ्गेषु कशाभिघातो मौण्ड्यं तथा लक्ष्मणसंनिपातः ।
एतान् हि दूते प्रवदन्ति दण्डान् वधस् तु दूतस्य न
नः श्रुतोऽपि ॥

TRANSLATION *Disfigurement of the limbs, a flogging with whips,
shaving the head, the branding of a mark:
these are the punishments named for an envoy;
but an envoy's killing we have never even heard of.*

लीला दूत के लिए और भी दण्ड हैं, अंग-भंग, कोड़ों की
मार, सिर मुँडाना, दाग देना। पर दूत का वध तो
हमने सुना तक नहीं।

SUBTITLE For an envoy, other punishments:
maiming, the lash, a shaven head, a brand.
But killing an envoy
we have never even heard of.

॥ 5.52.21, 23 ॥

CrEd 5.50.12, 14

condensed
from 5.52.21,
23

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि अपि चास्मिन् हते राजन् नान्यं पश्यामि स्वेचरम् ।
इह यः पुनर् आगच्छेत् परं पारं महोदधेः ।
अस्मिन् विनष्टे न हि दूतम् अन्यं पश्यामि यस्
तौ नरराजपुत्रौ ।
युद्धाय युद्धप्रियदुर्विनीताव् उद्योजयेद् दीर्घपथावरुद्धौ ॥

TRANSLATION *And besides, king, if he is slain,
I see no other sky-ranger
who could come here again
from beyond the great ocean.
With him destroyed, I see no other envoy
who could stir those two princes,
war-loving and untamed, held back by the
long road,
to come to battle.*

लीला और राजन्, यदि यह मारा गया, तो मुझे कोई और
आकाशचारी नहीं दिखता जो महासागर पार जाकर
उन दोनों राजकुमारों को युद्ध के लिए उकसाए।

SUBTITLE If he dies, King,
who else can fly back over the ocean
and rouse those two princes
to fight you?

रावण RAVANA

वाल्मीकि सम्यग् उक्तं हि भवता दूतवध्या विगर्हिता ।
अवश्यं तु वधाद् अन्यः क्रियताम् अस्य निग्रहः ।
कपीनां किल लाङ्गूलम् इष्टं भवति भूषणम् ।
तद् अस्य दीप्यतां शीघ्रं तेन दग्धेन गच्छतु ॥

TRANSLATION *You have spoken rightly:
the killing of an envoy is condemned.
But surely some punishment other than death
must be dealt him.
A monkey's tail, they say,
is the ornament he loves;
so let it be set alight at once,
and let him go with it burnt.*

लीला तुमने ठीक कहा, दूत का वध निंदित है। पर इसे वध के सिवा कोई दण्ड अवश्य मिले। कहते हैं, पूँछ वानरों का प्यारा आभूषण होती है। इसकी पूँछ में अभी आग लगाओ, और यह जली पूँछ लेकर ही जाए।

SUBTITLE You are right: killing an envoy is condemned.
But punish him.
A monkey prizes his tail:
set it alight, and let him go burnt.

॥ 5.53.4-5 ॥
CrEd 5.51.4-5

रावण RAVANA

वाल्मीकि ततः पश्यन्त्स् इमं दीनम् अङ्गवैरूप्यकर्शितम् ।
समित्रा ज्ञातयः सर्वे बान्धवाः ससुहृज्जनाः ।
आज्ञापयद् राक्षसेन्द्रः पुरं सर्वं सचत्वरम् ।
लाङ्गूलेन प्रदीप्तेन रक्षोभिः परिणीयताम् ॥

TRANSLATION *Then let them see him wretched,
wasted by the disfigurement of his limb,
all his kin, with his friends,
relations and well-wishers.
The lord of rakshasas commanded:
“Through all the city and its squares,
with his tail ablaze,
let him be led round by the rakshasas.”*

॥ 5.53.6-8 ॥
CrEd 5.51.6-8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.53.5 ॥
CrEd 5.51.5

SILENT MOMENT मौन क्षण

लीला फिर इसके सब मित्र, जाति-बंधु और हितैषी इसे
अंग-भंग से दीन-हीन देखें। जलती पूँछ के साथ
इसे पूरे नगर में, हर चौराहे पर घुमाओ।

SUBTITLE Let his friends and kin all see him,
wretched and disfigured.
Lead him through the city, every square,
with his tail ablaze!



Lanka burns

Valmiki 5.53.10–5.55.34 (CrEd 5.51.10–5.53.28)

VALMIKI

THE LEELA

॥ 5.53.17–18 ॥
CrEd 5.51.15–16

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.53.22 ॥
CrEd 5.51.19

पहरेदार GUARDS

वाल्मीकि चत्वरेषु चतुष्केषु राजमार्गे तथैव च ।
घोषयन्ति कपिं सर्वे चारीक इति राक्षसाः ॥

TRANSLATION *In the crossroads, in the squares,
and likewise on the royal road,
all the rakshasas proclaim the monkey:
“A spy!”*

लीला गुप्तचर! गुप्तचर!

SUBTITLE A spy!
A spy!

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि कामं खलु न मे शक्ता निबद्धस्यापि राक्षसाः ।
छित्त्वा पाशान् समुत्पत्य हन्याम् अहम् इमान् पुनः ।
सर्वेषाम् एव पर्याप्तो राक्षसानाम् अहं युधि ।
किं तु रामस्य प्रीत्यर्थं विषहिष्येऽहम् ईदृशम् ॥

TRANSLATION *In truth, these rakshasas have no power over me,
bound though I am;
I could cut the cords, leap up,
and slay them all over again.
I am a match in battle
for all the rakshasas;
but for Rama's pleasure
I will bear this.*

लीला बँधा होने पर भी ये राक्षस मेरा कुछ नहीं बिगाड़
सकते। चाहूँ तो ये फंदे तोड़कर, उछलकर इन
सबको मार डालूँ। पर राम की प्रसन्नता के लिए मैं
यह सब सह लूँगा।

SUBTITLE Bound, I am still too much for them.
I could snap these ropes and kill them all.
For Rama's sake,
I will bear it.

॥ 5.53.15 ॥
CrEd 5.51.13

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि रात्रौ न हि सुदृष्टा मे दुर्गकर्मविधानतः ।
अवश्यम् एव द्रष्टव्या मया लङ्का निशाक्षये ॥

TRANSLATION *By night I did not see it well,
how its defences are laid out;
I must surely see Lanka
as the night comes to its end.*

लीला रात में मैं इस दुर्ग की रचना ठीक से नहीं देख पाया
था। रात ढलते हुए लंका को फिर से देखना मेरे
लिए आवश्यक है।

SUBTITLE By night I could not see
how this fort is built.
I must see Lanka again,
now, as the night ends.

॥ 5.53.32–33 ॥
CrEd 5.51.28

SILENT MOMENT मौन क्षण

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि दह्यमाने च लाङ्गूले चिन्तयाम् आस वानरः ।
प्रदीप्तोऽग्निर् अयं कस्मान् न मां दहति सर्वतः ।
दृश्यते च महाज्वालः करोति च न मे रुजम् ।
शिशिरस्येव संपातो लाङ्गूलाग्रे प्रतिष्ठितः ॥

TRANSLATION *As his tail burned,
the monkey thought:
“This fire is blazing; why
does it not burn me all over?
Great flames are seen,
yet it gives me no pain,
as if a fall of cool dew
had settled on my tail’s tip.”*

लीला यह अग्नि चारों ओर धधक रही है, फिर मुझे जलाती
क्यों नहीं? इतनी बड़ी ज्वालाएँ, और कोई पीड़ा
नहीं, मानो पूँछ की नोक पर हिम रखा हो।

SUBTITLE The fire is blazing:
why does it not burn me?
Great flames, and no pain,
as if snow lay on my tail.

॥ 5.53.38 ॥
CrEd 5.51.33

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि सीतायाश् चानृशंस्येन तेजसा राघवस्य च ।
पितुश् च मम सख्येन न मां दहति पावकः ॥

TRANSLATION *Through Sita's kindness,
through Raghava's power,
and through his friendship with my father,
the fire does not burn me.*

लीला सीता की करुणा से, राघव के तेज से, और मेरे
पिता पवन से अग्नि की मित्रता के कारण यह पावक
मुझे नहीं जलाता।

SUBTITLE Sita's kindness,
Raghava's power,
my father's friendship with Fire:
that is why the fire does not burn me.

॥ 5.53.40–43,
5.54.6 ॥
CrEd 5.51.35–38,
5.52.6

SILENT MOMENT मौन क्षण

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि किं नु खल्व् अविशिष्टं मे कर्तव्यम् इह साम्प्रतम् ।
यद् एषां रक्षसां भूयः संतापजननं भवेत् ।
वनं तावत् प्रमथितं प्रकृष्टा राक्षसा हताः ।
बलैकदेशः क्षपितः शेषं दुर्गविनाशनम् ॥

TRANSLATION *What is left for me
to do here now,
that would bring these rakshasas
still more torment?
The grove is already laid waste,
the foremost rakshasas are slain,
part of their army destroyed;
what remains is the fortress's ruin.*

लीला अब यहाँ ऐसा क्या शेष है, जिससे इन राक्षसों को
और संताप हो? उपवन उजड़ गया, बड़े-बड़े राक्षस
मारे गए, सेना का एक भाग नष्ट हुआ। अब दुर्ग का
विनाश ही शेष है।

SUBTITLE What is left, to grieve them more?
The grove is broken, their
champions killed,
part of their army gone.
Only the fort remains.

॥ 5.54.5 ॥
CrEd 5.52.5

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यो ह्य् अयं मम लाङ्गूले दीप्यते हव्यवाहनः ।
अस्य संतर्पणं न्याय्यं कर्तुम् एभिर् गृहोत्तमैः ॥

TRANSLATION *This bearer of offerings
that blazes on my tail:
it is only right to sate it
with these splendid houses.*

लीला मेरी पूँछ पर जो यह अग्नि धधक रही है, इसे इन
उत्तम भवनों से तृप्त करना ही उचित है।

SUBTITLE This fire blazing on my tail:
it is only right
to give it a feast
of these fine houses.

॥ 5.54.6, 21–22 ॥
CrEd 5.52.6–9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.54.23, 27 ॥
CrEd 5.52.10, 12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.55.1–2 ॥
CrEd 5.53.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.55.2 ॥
CrEd 5.53.2

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि लङ्कां प्रदहता कर्म किंस्वित् कृतम् इदं मया ॥

TRANSLATION *What is this deed I have done,
burning Lanka?*

लीला लंका जलाकर यह मैंने क्या कर डाला?

SUBTITLE What have I done,
burning Lanka?

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यदि दग्धा त्व् इयं लङ्का नूनम् आर्यापि जानकी ।
दग्धा तेन मया भर्तुर् हतं कार्यम् अजानता ।
यद् अर्थम् अयम् आरम्भस् तत् कार्यम् अवसादितम् ।
मया हि दहता लङ्कां न सीता परिरक्षिता ॥

TRANSLATION *If this Lanka is burnt,
surely noble Janaki too
is burnt; and so I have ruined
my master's task, unknowing.
The task for which this venture was begun
has come to nothing,
for while I burned Lanka
I did not protect Sita.*

लीला यदि यह लंका जल गई, तो आर्या जानकी भी निश्चय
ही जल गई होंगी। लंका जलाते समय मैंने सीता
की रक्षा नहीं की। अनजाने में मैंने स्वामी का काम
नष्ट कर दिया।

SUBTITLE If Lanka is burnt,
then noble Janaki is burnt too.
I never guarded Sita.
Blindly, I have ruined my master's work.

॥ 5.55.11 ॥
CrEd 5.53.7

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि विनष्टा जानकी व्यक्तं न ह्य् अदग्धः प्रदृश्यते ।
लङ्कायाः कश्चिद् उद्देशः सर्वा भस्मीकृता पुरी ॥

TRANSLATION *Janaki has surely perished,
for no corner of Lanka
can be seen unburnt;
the whole city is turned to ash.*

लीला लंका का कोई कोना बिना जला नहीं दिखता। पूरी
नगरी भस्म हो गई। जानकी निश्चय ही नष्ट हो गई।

SUBTITLE Not one corner of Lanka is left unburnt.
The whole city is ash.
Janaki is surely lost.

॥ 5.55.17 ॥
CrEd 5.53.13

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि विनष्टायां तु सीतायां ताव् उभौ विनशिष्यतः ।
तयोर् विनाशे सुग्रीवः सबन्धुर् विनशिष्यति ॥

TRANSLATION *If Sita has perished,
those two will both perish;
and when they perish, Sugriva
will perish with his kin.*

लीला सीता के न रहने पर वे दोनों भाई भी न रहेंगे। और
उनके न रहने पर सुग्रीव भी अपने बंधु-बांधवों
समेत नष्ट हो जाएँगे।

SUBTITLE If Sita is gone,
those two brothers will die;
and when they die,
Sugriva dies, with all his kin.

॥ 5.55.12-16 ॥
CrEd 5.53.8-12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.55.21 ॥
CrEd 5.53.17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 5.55.22 ॥
CrEd 5.53.18

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि अथ वा चारुसर्वाङ्गी रक्षिता स्वेन तेजसा ।
न नशिष्यति कल्याणी नाग्निर् अग्नौ प्रवर्तते ॥

TRANSLATION *Or else, lovely in every limb,
she is guarded by her own fire;
the blessed lady will not perish:
fire has no power over fire.*

लीला या फिर, वे कल्याणी अपने ही तेज से रक्षित
हैं। उनका नाश नहीं होगा। अग्नि अग्नि को
नहीं जलाती।

SUBTITLE Or else: that lovely lady
is guarded by her own radiance.
She will not perish.
Fire does not burn fire.

॥ 5.55.26 ॥
CrEd 5.53.22

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि यद् वा दहनकर्मायं सर्वत्र प्रभुर् अव्ययः ।
न मे दहति लाङ्गूलं कथम् आर्या प्रधक्ष्यति ॥

TRANSLATION *Or again: this fire, whose work is burning,
master everywhere, unfailing,
does not burn my tail;
how would it burn the noble lady?*

लीला जिस अग्नि का काम ही जलाना है, जो सर्वत्र समर्थ
है, वह मेरी पूँछ को नहीं जलाती। तो वह आर्या
सीता को कैसे जलाएगी?

SUBTITLE This fire, whose work is burning,
master everywhere,
does not burn my tail:
how could it burn that noble lady?

॥ 5.55.32 ॥
CrEd 5.53.26

चारण CHARANAS

वाल्मीकि दग्धेयं नगरी लङ्का साट्टप्राकारतोरणा ।
जानकी न च दग्धेति विस्मयोऽद्भुत एव नः ॥

TRANSLATION *This city of Lanka is burnt,
with its towers, walls and gates,
and yet Janaki is not burnt:
to us this is a marvel and a wonder.*

लीला अटारियों, परकोटों और तोरणों समेत लंका नगरी
जल गई, पर जानकी नहीं जलीं। यह तो अद्भुत
आश्चर्य है!

SUBTITLE Lanka is burnt,
its towers, walls and gates,
yet Janaki is not burnt.
A marvel, a wonder!

॥ 5.55.33–34 ॥
CrEd 5.53.27–28

SILENT MOMENT मौन क्षण

In other Hindu scriptures

♦ Angada's foot that no one could lift

Tulsidas, Ramcharitmanas 6.33.4–7, dohas 34a–b · not in Valmiki

Valmiki: Angada leaps onto the palace roof and it cracks under him (CrEd 6.31.75–78)

६

युद्धकाण्ड

Yuddha Kanda

5 STORIES

YUDDHA KANDA · युद्धकाण्ड

The bridge

सेतु

—❖ Valmiki · Yuddha Kanda ❖—

6.21.1–6.22.87 (CrEd 6.14.1–6.15.33)

तीन रातों तक राम तट पर कुश पर लेटकर सागर से राह माँगते हैं, और सागर नहीं आता। क्रोध में वे सागर को मथ देने के लिए धनुष उठाते हैं, और सागर प्रकट होता है: वह अपने स्वभाव के विरुद्ध नहीं जा सकता, पर सेतु को धारण करेगा, और विश्वकर्मा के पुत्र नल उसे बना सकते हैं। वानर सेतु बनाते हैं, और देवता राम को आशीर्वाद देते हैं।

For three nights Rama lies on kusha grass by the shore, asking the ocean for a way,
and the ocean does not come. In anger he takes up his bow to churn the sea,
and the Ocean rises: he cannot go against his nature, but he will bear a bridge,
and Nala, son of Vishvakarma, can build it. The monkeys build it, and the gods
bless Rama.

१



PART 1 · भाग 1

Three nights

Valmiki 6.21.1–35, 6.22.1–7 (CrEd 6.14.1–21)

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.21.33–35

Lakshmana's plea is in the popular text only. There the sages in the sky cry out "No more!" as well.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.22.1–16

In the popular text Rama speaks harshly to the ocean once more and sets the Brahma weapon to his bow; darkness covers the world and the mountains shake. The CrEd says only that he had an arrow in hand when the Ocean rose (6.15.3).

॥ 6.21.1–11 ॥
CrEd 6.14.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 6.21.5

The popular text adds that the arm Rama lay on by the sea had once pillowed Sita's head.

॥ 6.21.12–13 ॥
CrEd 6.14.3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.21.13–14 ॥
CrEd 6.14.4

राम R A M A

वाल्मीकि पश्य तावद् अनार्यस्य पूज्यमानस्य लक्ष्मण ।
अवलेपं समुद्रस्य न दर्शयति यत् स्वयम् ॥

TRANSLATION *Just see, Lakshmana,
the arrogance of this ignoble ocean:
honoured as he is,
he does not show himself.*

लीला लक्ष्मण, इस अनार्य समुद्र का घमंड तो देखो ।
मैंने इसका पूजन किया, फिर भी यह स्वयं प्रकट
नहीं होता ।

SUBTITLE See, Lakshmana,
the pride of this ignoble ocean:
honoured,
and still he will not show himself.

॥ 6.21.14 ॥
CrEd 6.14.5

राम R A M A

वाल्मीकि प्रशमश् च क्षमा चैव आर्जवं प्रियवादिता ।
असामर्थ्यं फलन्त्य् एते निर्गुणेषु सतां गुणाः ॥

TRANSLATION *Calm, and patience too,
straightness, kindness of speech:
among the virtueless they bear the fruit
of weakness,
these virtues of the good.*

लीला शान्ति, क्षमा, सरलता और मधुर वाणी, सज्जनों के
ये गुण गुणहीनों के आगे असमर्थता का ही फल
देते हैं।

SUBTITLE Calm, patience, straightness, kind words:
shown to those without virtue,
the virtues of the good
bear only the fruit of weakness.

॥ 6.21.16 ॥
CrEd 6.14.7

राम R A M A

वाल्मीकि न साम्रा शक्यते कीर्तिर् न साम्रा शक्यते यशः ।
प्राप्तुं लक्ष्मण लोकेऽस्मिञ् जयो वा रणमूर्धनि ॥

TRANSLATION *Not by conciliation is fame won,
not by conciliation glory,
in this world, Lakshmana,
nor victory at the head of battle.*

लीला लक्ष्मण, इस संसार में केवल सामनीति से न कीर्ति
मिलती है, न यश, न रणभूमि में विजय।

SUBTITLE Not by gentle words, Lakshmana,
is fame won in this world,
nor glory,
nor victory at the head of battle.

॥ 6.21.20 ॥
CrEd 6.14.11

राम R A M A

वाल्मीकि क्षमया हि समायुक्तं माम् अयं मकरालयः ।
असमर्थं विजानाति धिक् क्षमाम् ईदृशे जने ॥

TRANSLATION *For, since I am joined with patience,
this home of sea monsters
takes me for one without power.
Shame on patience toward such as this!*

लीला मुझे क्षमाशील देखकर यह मकरालय मुझे असमर्थ
समझता है। ऐसों के प्रति क्षमा को धिक्कार है!

SUBTITLE Because I am patient,
this home of sea-monsters takes me
for powerless.
Shame on patience
shown to such as him!

॥ 6.21.22-23 ॥
CrEd 6.14.12

राम R A M A

वाल्मीकि चापम् आनय सौमित्रे शरांश् चाशीविषोपमान् ।
अद्याक्षोभ्यम् अपि क्रुद्धः क्षोभयिष्यामि सागरम् ॥

TRANSLATION *Bring my bow, Saumitri,
and arrows like venomous snakes;
today, in anger, I will stir the ocean,
though it cannot be stirred.*

लीला सौमित्र, धनुष लाओ, और विषधर सर्पों-जैसे बाण
भी। आज क्रोध में मैं इस अक्षोभ्य सागर को भी
क्षुब्ध कर दूँगा।

SUBTITLE Bring my bow, Saumitri,
and my arrows like venomous snakes!
Today, in my anger,
I will churn the unchurnable sea.

॥ 6.21.23-24 ॥
CrEd 6.14.13

राम R A M A

वाल्मीकि वेलासु कृतमर्यादं सहसोर्मिसमाकुलम् ।
निर्मर्यादं करिष्यामि सायकैर् वरुणालयम् ॥

TRANSLATION *Held within bounds by its shores,
heaving with a thousand waves,
this home of Varuna I will drive
beyond its bounds with my arrows.*

लीला सहस्रो तरंगों से भरा यह वरुणालय अपने तटों की
मर्यादा में बँधा है। अपने बाणों से मैं इसे
मर्यादाहीन कर दूँगा।

SUBTITLE He keeps to his shores,
thronged with a thousand waves.
With my arrows I will make Varuna's home
a sea without shores.

॥ 6.21.25 ॥
CrEd 6.14.14

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.21.26-32 ॥
CrEd 6.14.15-21

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.21.33-34 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

लक्ष्मण L A K S H M A N A

वाल्मीकि एतद् विनापि ह्य् उदधेस् तवार्य सम्पत्स्यते
वीरतमस्य कार्यम् ।
भवद्विधाः क्रोधवशं न यान्ति दीर्घं भवान् पश्यतु साधुवृत्तम् ॥

TRANSLATION *Even without the ocean's ruin, noble one,
your task will be done, most heroic of all.
Such as you do not fall into anger's power;
look to a good course, and a lasting one.*

लीला आर्य, समुद्र का नाश किए बिना भी आपका
प्रयोजन सिद्ध होगा। आप-जैसे पुरुष क्रोध के वश
में नहीं होते। कोई स्थायी, उत्तम उपाय देखिए।

SUBTITLE Noble one, your task will be done
even without destroying the sea.
Men like you are not ruled by anger.
Look to the long, good way.

॥ 6.22.1-7 ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण



Nala's bridge

Valmiki 6.22.17–87 (CrEd 6.15.1–33)

VALMIKI

THE LEELA

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.22.29–43

In the popular text the Ocean asks Rama to loose his drawn arrow at Drumakulya in the north; where it falls becomes the desert of Maru, and Rama blesses that land.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.22.66–70

The popular text counts the building in five days: fourteen yojanas the first day, then twenty, twenty-one, twenty-two and twenty-three, to the far shore.

॥ 6.22.17 ॥
CrEd 6.15.1

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.22.17–24 ॥
CrEd 6.15.1–3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.22.25 ॥
CrEd 6.15.4

सागर SAGARA

वाल्मीकि पृथिवी वायुर् आकाशम् आपो ज्योतिश् च राघव ।
स्वभावे सौम्य तिष्ठन्ति शाश्वतं मार्गम् आश्रिताः ॥

TRANSLATION *Earth, wind and sky,
waters and light, Raghava,
abide in their own nature, gentle one,
holding to their eternal course.*

लीला सौम्य राघव, पृथ्वी, वायु, आकाश, जल और तेज,
सब अपने-अपने स्वभाव में स्थित रहते हैं, अपने
सनातन मार्ग पर।

SUBTITLE Earth, wind, sky, water and light,
gentle Raghava,
keep to their own natures,
on their eternal path.

॥ 6.22.26 ॥
CrEd 6.15.5

सागर SAGARA

वाल्मीकि तत् स्वभावो ममाप्य् एष यद् अगाधोऽहम् अप्लवः ।
विकारस् तु भवेद् गाध एतत् ते प्रवदाम्य् अहम् ॥

TRANSLATION *So this too is my nature,
that I am fathomless, not to be crossed;
to become shallow would go against it:
this I tell you plainly.*

लीला मेरा भी यही स्वभाव है कि मैं अथाह हूँ, पार न
किया जा सकूँ। उथला होना मेरा विकार होगा। यह
मैं आपसे स्पष्ट कहता हूँ।

SUBTITLE And this is mine:
I am fathomless, not to be forded.
To be shallow would go against my nature.
I tell you plainly.

GRETIL के CrEd ई-पाठ में दूसरी पंक्ति (6.15.5c) में भूल से “राध” छपा है; हम “गाध” (उथला, पार करने योग्य) पढ़ते हैं, जो अर्थ से सिद्ध है।

The GRETIL CrEd e-text misprints rādha in the second line (6.15.5c); we read gādha, “shallow, fordable”, which the sense requires.

॥ 6.22.27 ॥
CrEd 6.15.6

सागर SAGARA

वाल्मीकि न कामान् न च लोभाद् वा न भयात् पार्थिवात्मज ।
ग्राहनक्राकुलजलं स्तम्भयेयं कथं चन ॥

TRANSLATION *Not for desire, nor yet for greed,
nor for fear, son of a king,
could I ever hold still my waters,
teeming with crocodiles and sharks.*

लीला राजकुमार, न कामना से, न लोभ से, न भय से, मैं
मगरों और घड़ियालों से भरे अपने जल को किसी
प्रकार स्थिर नहीं कर सकता।

SUBTITLE Not for desire, not for greed, not for
fear, prince,
could I ever make my waters stand still,
crowded with crocodiles.

॥ 6.22.28 ॥
CrEd 6.15.7

सागर SAGARA

वाल्मीकि विधास्ये राम येनापि विषहिष्ये ह्य् अहं तथा ।
ग्राहा न प्रहरिष्यन्ति यावत् सेना तरिष्यति ॥

TRANSLATION *I will provide, Rama, a way
by which I can bear it so:
the crocodiles will not strike
while the army is crossing.*

लीला पर राम, मैं ऐसा उपाय करूँगा जिससे आप पार जा
सकें, और मैं उसे सहूँगा। जब तक आपकी सेना
पार होगी, कोई जल-जन्तु प्रहार नहीं करेगा।

SUBTITLE But I will make a way, Rama,
and I will bear it.
While your army crosses,
no sea-beast will strike.

॥ 6.22.44-45 ॥
CrEd 6.15.8-9

सागर SAGARA

वाल्मीकि अयं सौम्य नलो नाम तनुजो विश्वकर्मणः ।
पित्रा दत्तवरः श्रीमान् प्रतिमो विश्वकर्मणः ।
एष सेतुं महोत्साहः करोतु मयि वानरः ।
तम् अहं धारयिष्यामि तथा ह्य् एष यथा पिता ॥

TRANSLATION *This one, gentle one, named Nala,
is the son of Vishvakarma;
granted a boon by his father, splendid,
the very image of Vishvakarma.
Let this monkey, full of zeal,
build a bridge across me;
I will bear it up,
for he is just as his father was.*

लीला सौम्य, यह नल है, विश्वकर्मा का पुत्र, पिता से वर
पाया हुआ, उन्हीं के समान। यह उत्साही वानर मुझ
पर सेतु बनाए। मैं उसे धारण करूँगा।

SUBTITLE Here is Nala, son of Vishvakarma,
blessed by his father, his equal.
Let him build a bridge on me:
I will bear it up.

॥ 6.22.46 ॥
CrEd 6.15.10

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.22.47 ॥
CrEd 6.15.11

नल NALA

वाल्मीकि अहं सेतुं करिष्यामि विस्तीर्णे वरुणालये ।
पितुः सामर्थ्यम् आस्थाय तत्त्वम् आह महोदधिः ॥

TRANSLATION *I will build a bridge
across the wide home of Varuna,
relying on my father's power;
the great ocean has spoken the truth.*

लीला मैं पिता के सामर्थ्य का आश्रय लेकर इस विस्तृत
वरुणालय पर सेतु बनाऊँगा। महासागर ने सत्य
कहा है।

SUBTITLE I will build the bridge
across this wide sea,
by my father's skill.
The great ocean spoke the truth.

॥ 6.22.49-50 ॥
CrEd 6.15.12-13a

नल NALA

वाल्मीकि मम मातुर् वरो दत्तो मन्दरे विश्वकर्मणा ।
औरसस् तस्य पुत्रोऽहं सदृशो विश्वकर्मणा ।
न चाप्य् अहम् अनुक्तो वै प्रब्रूयाम् आत्मनो गुणान् ॥

TRANSLATION *A boon was given to my mother
on Mandara by Vishvakarma;
I am his own son,
the equal of Vishvakarma.
And unless I am asked,
I would not speak of my own gifts.*

लीला मन्दराचल पर विश्वकर्मा ने मेरी माता को वर दिया
था। मैं उनका अपना पुत्र हूँ, उन्हीं के समान। बिना
पूछे मैं अपने गुण नहीं कहता।

SUBTITLE On Mandara, Vishvakarma gave my mother
a boon.
I am his own son, his equal.
Unasked,
I would not speak of my own gifts.

॥ 6.22.51 ॥
CrEd 6.15.13b

नल NALA

वाल्मीकि कामम् अद्यैव बध्नन्तु सेतुं वानरपुंगवाः ॥

TRANSLATION *Let the bulls among monkeys
build the bridge this very day.*

लीला श्रेष्ठ वानर आज ही सेतु बाँधना आरम्भ करें!

SUBTITLE Let the best of the monkeys
start building the bridge
this very day!

॥ 6.22.52–67 ॥
CrEd 6.15.14–21

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.22.68–78 ॥
CrEd 6.15.20–26

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.22.82 ॥
CrEd 6.15.28

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.22.86–87 ॥
CrEd 6.15.32–33

देवता GODS

वाल्मीकि जयस्व शत्रून् नरदेव मेदिनीं ससागरां पालय शाश्वतीः समाः ॥

TRANSLATION *Conquer your foes, god among men;
rule the earth with its oceans
for years without end.*

लीला नरदेव, शत्रुओं को जीतिए! सागरों समेत इस पृथ्वी
का अनन्त वर्षों तक पालन कीजिए!

SUBTITLE Conquer your enemies, king of men!
Rule the earth and its seas
for endless years!

॥ 6.22.82–85 ॥
CrEd 6.15.28–31

SILENT MOMENT मौन क्षण

In other Hindu scriptures

♦ The squirrels who helped build the bridge

Tondaradippodi Alvar, Tirumalai 27 · not in Valmiki

Valmiki: the monkeys bring trees and rocks; Nala builds the bridge (CrEd 6.15.14–22)

Both brothers fall; the mountain of herbs

दोनों भाई गिरे; ओषधियों का पर्वत

—❖ Valmiki · Yuddha Kanda ❖—

6.73–74 (CrEd 6.60–61)

आकाश में अदृश्य इन्द्रजित सेना पर ब्रह्मास्त्र छोड़ता है, और राम-लक्ष्मण उस अस्त्र का मान रखते हुए स्वयं को गिर जाने देते हैं। उस रात विभीषण और हनुमान रणभूमि में खोजते हैं, और घायल जाम्बवान सबसे पहले पूछते हैं कि हनुमान जीवित हैं या नहीं। वे हनुमान को ऋषभ और कैलास के बीच ओषधियों के पर्वत पर भेजते हैं।

Indrajit, unseen in the sky, looses Brahma's weapon on the army, and Rama and Lakshmana, honouring the weapon, let themselves fall. That night Vibhishana and Hanuman search the field, and wounded Jambavan asks first whether Hanuman lives. He sends Hanuman to the mountain of herbs between Rishabha and Kailasa.

१



PART 1 · भाग 1

The unseen archer

Valmiki 6.73 (CrEd 6.60)

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.73.30–53

The popular text adds a first sortie before the arrows from the sky: the rakshasa army charges, and Indrajit fights openly before he hides himself.

॥ 6.73.2–3 ॥
CrEd 6.60.2–3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.73.4 ॥
CrEd 6.60.4

इन्द्रजित् INDRAJIT

वाल्मीकि न तात मोहं प्रतिगन्तुम् अर्हसि यत्रेन्द्रजिज्
जीवति राक्षसेन्द्र ।
नेन्द्रारिबाणाभिहतो हि कश् चित् प्राणान्
समर्थः समरेऽभिधर्तुम् ॥

TRANSLATION *Father, you must not sink into a swoon,
lord of rakshasas, while Indrajit lives;
for none struck by the arrows of Indra's foe
can hold on to life in battle.*

लीला तात, इन्द्रजित के जीते जी आप शोक में न डूबें। मेरे
बाणों से बिंधकर रण में कोई प्राण नहीं बचा पाता।

SUBTITLE Father, do not faint with grief
while Indrajit lives.
No one my arrows strike
keeps his life in battle.

॥ 6.73.5 ॥
CrEd 6.60.5

इन्द्रजित् INDRAJIT

वाल्मीकि पश्याद्य रामं सहलक्ष्मणेन मद्बाणनिर्भिन्नविकीर्णदेहम् ।
गतायुषं भूमितले शयानं शरैः शितैर् आचितसर्वगात्रम् ॥

TRANSLATION *See Rama today, with Lakshmana,
his body pierced and torn by my arrows,
his life gone, lying on the ground,
every limb thick with sharp shafts.*

लीला आज आप देखेंगे, राम और लक्ष्मण धरती पर पड़े
हैं, मेरे बाणों से छिन्न-भिन्न, अंग-अंग तीखे बाणों से
भरा, प्राणहीन।

SUBTITLE Today you will see Rama and Lakshmana
torn by my arrows,
lying on the ground,
lifeless, shafts in every limb.

॥ 6.73.18 ॥
CrEd 6.60.17

रावण RAVANA

वाल्मीकि त्वम् अप्रतिरथः पुत्र जितस् ते युधि वासवः ।
किं पुनर् मानुषं धृष्यं न वधिष्यसि राघवम् ॥

TRANSLATION *You have no rival, son;
Indra was beaten by you in battle.
How much more will you slay Raghava,
a man, and one who can be overcome?*

लीला पुत्र, रण में तुम्हारा कोई जोड़ नहीं। तुमने इन्द्र को
भी जीता है। फिर राघव तो एक साधारण मनुष्य है,
उसे तुम क्यों न मारोगे?

SUBTITLE You have no equal, son;
you conquered Indra in battle.
Raghava is a mere man:
how will you not kill him?

॥ 6.73.20–29 ॥
CrEd 6.60.19–28

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.73.54–67 ॥
CrEd 6.60.29–42

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.73.68 ॥
CrEd 6.60.43

राम R A M A

वाल्मीकि असौ पुनर् लक्ष्मण राक्षसेन्द्रो ब्रह्मास्त्रम् आश्रित्य सुरेन्द्रशत्रुः ।
निपातयित्वा हरिसैन्यम् उग्रम् अस्माञ् शरैर्
अर्दयति प्रसक्तम् ॥

TRANSLATION *Again, Lakshmana, that rakshasa lord,
foe of the king of gods, relying on
Brahma's weapon,
has struck down the fierce monkey army,
and harries us with arrows without pause.*

लीला लक्ष्मण, इन्द्र का वह शत्रु फिर ब्रह्मास्त्र का आश्रय
लेकर आया है। वानर-सेना को गिराकर अब वह
लगातार हम पर बाण बरसा रहा है।

SUBTITLE Lakshmana, again Indra's enemy
has taken up Brahma's weapon.
He has felled the monkey host,
and now his arrows beat on us, unceasing.

॥ 6.73.69 ॥
CrEd 6.60.44

राम R A M A

वाल्मीकि स्वयम्भुवा दत्तवरो महात्मा खम्
आस्थितोऽन्तर्हितभीमकायः ।
कथं नु शक्यो युधि नष्टदेहो निहन्तुम्
अद्येन्द्रजिद् उद्यतास्तः ॥

TRANSLATION *Granted a boon by the Self-born, the mighty one
stands in the sky, his dread body hidden;
how can Indrajit be slain in battle today,
his body vanished, his weapon raised?*

लीला स्वयंभू ब्रह्मा से उसे वर मिला है। वह आकाश में
खड़ा है, उसका भयंकर शरीर छिपा है। अस्त्र उठाए
उस अदृश्य इन्द्रजित को आज रण में कैसे मारे?

SUBTITLE The Self-born gave him a boon.
In the sky, his dread body hidden,
bodiless, his weapon raised:
how can we kill him today?

॥ 6.73.70 ॥
CrEd 6.60.45

राम R A M A

वाल्मीकि मन्ये स्वयम्भूर् भगवान् अचिन्त्यो यस्यैतद् अस्त्रं प्रभवश्
च योऽस्य ।
बाणावपातांस् त्वम् इहाद्य धीमन् मया
सहाव्यग्रमनाः सहस्व ॥

TRANSLATION *I think it is the blessed Self-born, beyond thought,
whose weapon this is, and who is its source.
So, wise one, bear this fall of arrows here today
with me, with an untroubled mind.*

लीला यह अस्त्र उन अचिन्त्य भगवान् स्वयंभू का है।
इसलिए, बुद्धिमान, आज यहाँ मेरे साथ शांत मन से
इन बाणों का प्रहार सहो।

SUBTITLE This weapon is the Self-born's,
the lord beyond thought.
Bear these arrows here with me, wise one,
with a steady mind.

॥ 6.73.72 ॥
CrEd 6.60.47

राम R A M A

वाल्मीकि आवां तु दृष्ट्वा पतितौ विसंज्ञौ निवृत्तयुद्धौ हतरोषहर्षौ ।
ध्रुवं प्रवेक्ष्यत् अमरारिवासं असौ समादाय रणाग्रलक्ष्मीम् ॥

TRANSLATION *Seeing us two fallen, senseless,
out of the fight, our anger and joy struck down,
he will surely enter the home of the gods' foe,
taking with him the glory of the battlefront.*

लीला हम दोनों को अचेत, रण से विरत गिरा देखकर
वह निश्चय ही रण की विजयश्री लेकर अपने नगर
लौट जाएगा।

SUBTITLE When he sees us fallen, senseless,
out of the fight,
he will surely go home to his city
with the glory of the battle.

॥ 6.73.73-74 ॥
CrEd 6.60.48-49

SILENT MOMENT मौन क्षण



The mountain of herbs

Valmiki 6.74 (CrEd 6.61)

VALMIKI

THE LEELA

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.74.75–76

The popular text adds that from the first day Ravana had the rakshasa dead thrown into the sea, so the herbs raised none of them.

॥ 6.74.1–2 ॥
CrEd 6.61.1–2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.74.3-4 ॥

CrEd 6.61.3-4

condensed
from 6.74.3-4

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि मा भैष्ट नास्त्य् अत्र विषादकालो यद् आर्यपुत्राव्
अवशौ विषण्णौ ।
स्वयम्भुवो वाक्यम् अथोद्वहन्तौ यत्
सादिताव् इन्द्रजिदस्त्रजालैः ।
तस्मै तु दत्तं परमास्त्रम् एतत् स्वयम्भुवा
ब्राह्मम् अमोघवेगम् ।
तन् मानयन्तौ यदि राजपुत्रौ निपातितौ कोऽत्र विषादकालः ॥

TRANSLATION *Do not be afraid; this is no time for despair,
that the two princes lie helpless and limp;
it is bearing the Self-born's word
that they were felled by Indrajit's net of weapons.
The Self-born gave him this supreme weapon,
Brahma's own, whose force never fails;
if, honouring it, the princes have fallen,
what time is this for despair?*

लीला डरो मत। यह विषाद का समय नहीं। दोनों
राजकुमार स्वयंभू के अस्त्र का मान रखते हुए
विवश पड़े हैं। फिर विषाद कैसा?

SUBTITLE Do not fear; this is no time to despair.
The Self-born gave him this weapon.
The princes fell honouring it:
why despair?

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (6.61.3-4) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (6.61.3-4).

॥ 6.74.6 ॥
CrEd 6.61.6

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि एतस्मिन् निहते सैन्ये वानराणां तरस्विनाम् ।
यो यो धारयते प्राणांस् तं तम् आश्वासयावहे ॥

TRANSLATION *Now that this army
of swift monkeys is struck down,
whoever still holds on to life,
let us two comfort each one.*

लीला पराक्रमी वानरों की इस गिरी हुई सेना में जो-जो
अभी साँस ले रहा है, चलिए, हम दोनों उसे जाकर
आश्वासन दें।

SUBTITLE In this struck-down army
of mighty monkeys,
whoever still holds on to breath,
let us go and comfort him.

॥ 6.74.7-13 ॥
CrEd 6.61.7-13

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.74.15 ॥
CrEd 6.61.15

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि कच्चिद् आर्य शरैस् तीक्ष्णैर् न प्राणा ध्वंसितास् तव ॥

TRANSLATION *Noble one, have these sharp arrows
not destroyed your life?*

लीला आर्य, इन तीखे बाणों ने आपके प्राण तो नहीं
हर लिए?

SUBTITLE Noble one,
have these sharp arrows
not taken your life?

GRETIL के CrEd ई-पाठ में “आर्यशरैस् तीक्ष्णैर्” छपा है (6.61.15c); यहाँ इसे प्रचलित पाठ के साथ “आर्य शरैस् तीक्ष्णैर्” पढ़ा गया है।

The GRETIL CrEd e-text prints āryaśarais tīkṣṇair (6.61.15c); it is read here as ārya śarais tīkṣṇair, with the popular text.

॥ 6.74.17 ॥
CrEd 6.61.17

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि नैर्ऋतेन्द्रमहावीर्यस्वरेण त्वाभिलक्षये ।
पीड्यमानः शितैर् बाणैर् न त्वां पश्यामि चक्षुषा ॥

TRANSLATION *Lord of the Nairritas, mighty one,
I know you by your voice;
tormented by sharp arrows,
I cannot see you with my eyes.*

लीला महाबली राक्षसराज, मैं तुम्हें स्वर से पहचान रहा हूँ। तीखे बाणों की पीड़ा से मैं आँखों से तुम्हें देख नहीं पाता।

SUBTITLE Mighty lord of rakshasas,
I know you by your voice.
Racked by sharp arrows,
I cannot see you with my eyes.

॥ 6.74.18 ॥
CrEd 6.61.18

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि अञ्जना सुप्रजा येन मातरिश्वा च नैर्ऋत ।
हनूमान् वानरश्रेष्ठः प्राणान् धारयते क्व चित् ॥

TRANSLATION *He through whom Anjana is blessed in a son,
and Matarishvan too, Nairrita:
Hanuman, best of monkeys,
does he hold on to life somewhere?*

लीला बताओ, नैर्ऋत, वानरश्रेष्ठ हनुमान, जिसे पाकर अंजना और पवनदेव धन्य हुए, क्या वह कहीं जीवित है?

SUBTITLE Tell me, Nairrita:
does Hanuman live,
best of monkeys,
the noble son of Anjana and the Wind?

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि आर्यपुत्राव् अतिक्रम्य कस्मात् पृच्छसि मारुतिम् ।
नैव राजनि सुग्रीवे नाङ्गदे नापि राघवे ।
आर्य संदर्शितः स्नेहो यथा वायुसुते परः ॥

TRANSLATION *Passing over the two princes,
why do you ask after Maruti?
Not for King Sugriva,
not for Angada, nor for Raghava,
noble one, have you shown such love
as for the son of the Wind.*

लीला आर्य, दोनों राजकुमारों को छोड़कर आप पवनपुत्र
के विषय में क्यों पूछते हैं? न राजा सुग्रीव, न
अंगद, न राघव के प्रति आपने ऐसा स्नेह दिखाया।

SUBTITLE Why pass over the princes
and ask for the Wind's son?
Not for Sugriva, Angada or Raghava
have you shown such love.

॥ 6.74.21-22 ॥
CrEd 6.61.21-22

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि शृणु नैर्ऋतशार्दूल यस्मात् पृच्छामि मारुतिम् ।
तस्मिञ् जीवति वीरे तु हतम् अप्य् अहतं बलम् ।
हनूमत् उज्झितप्राणे जीवन्तोऽपि वयं हताः ॥

TRANSLATION *Hear, tiger among the Nairritas,
why I ask after Maruti.
While that hero lives,
the army, though slain, is not slain;
if Hanuman has given up his life,
we, though living, are slain.*

लीला सुनो, मैं उसके विषय में क्यों पूछता हूँ। उस वीर के
जीते जी यह मरी हुई सेना भी मरी नहीं। और यदि
हनुमान ने प्राण त्याग दिए, तो हम जीते हुए भी मरे
हुए हैं।

SUBTITLE Hear why I ask.
While that hero lives,
the slain army is not slain.
If he is gone, we living are dead.

॥ 6.74.23 ॥
CrEd 6.61.23

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि ध्रियते मारुतिस् तात मारुतप्रतिमो यदि ।
वैश्वानरसमो वीर्ये जीविताशा ततो भवेत् ॥

TRANSLATION *If Maruti lives, my son,
who is like the Wind,
like Fire in valour,
then there may be hope of life.*

लीला तात, यदि पवन-सा वेगवान, अग्नि-सा पराक्रमी
पवनपुत्र जीवित है, तो जीवन की आशा है।

SUBTITLE If the Wind's son lives, my son,
swift as the wind, fierce as fire,
then there is hope of life.

॥ 6.74.24-25 ॥
CrEd 6.61.24-25

SILENT MOMENT मौन क्षण

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि आगच्छ हरिशार्दूल वानरांस् त्रातुम् अर्हसि ।
नान्यो विक्रमपर्याप्तस् त्वम् एषां परमः सखा ।
त्वत्पराक्रमकालोऽयं नान्यं पश्यामि कञ् चन ॥

TRANSLATION *Come, tiger among monkeys;
it is for you to save the monkeys.
No other has the valour for it;
you are their greatest friend.
This is the hour for your might;
I see no one else.*

लीला आओ, वानरश्रेष्ठ, तुम्हें ही वानरों की रक्षा करनी है।
किसी और में इतना पराक्रम नहीं। तुम इनके परम
सखा हो। यह तुम्हारे पराक्रम की घड़ी है।

SUBTITLE Come, tiger among monkeys,
save the monkeys.
No one else has the strength.
This is your hour; I see no other.

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि ऋक्षवानरवीराणाम् अनीकानि प्रहर्षय ।
विशल्यौ कुरु चाप्य् एतौ सादितौ रामलक्ष्मणौ ।
गत्वा परमम् अध्वानम् उपर्य् उपरि सागरम् ।
हिमवन्तं नगश्रेष्ठं हनूमन् गन्तुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *Gladden the ranks
of the bear and monkey heroes,
and draw the arrows from these two,
Rama and Lakshmana, laid low.
Travelling the farthest way,
high, high above the ocean,
to Himavan, best of mountains,
you must go, Hanuman.*

लीला रीछों और वानरों की सेनाओं में फिर हर्ष भरो, और
राम-लक्ष्मण को बाणों से मुक्त करो। हनुमान,
सागर के ऊपर-ऊपर लंबी राह तय करके पर्वतराज
हिमालय जाओ।

SUBTITLE Gladden the bear and monkey armies;
draw the arrows from Rama
and Lakshmana.
Go the long road over the ocean
to Himavat, king of mountains.

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि ततः काञ्चनम् अत्युग्रम् ऋषभं पर्वतोत्तमम् ।
कैलासशिखरं चापि द्रक्ष्यस्य् अरिनिषूदन ।
तयोः शिखरयोर् मध्ये प्रदीप्तम् अतुलप्रभम् ।
सर्वौषधियुतं वीर द्रक्ष्यस्य् औषधिपर्वतम् ॥

TRANSLATION *There you will see golden Rishabha,
towering, finest of mountains,
and the peak of Kailasa too,
slayer of foes.
Between those two peaks,
ablaze, of matchless light,
filled with every herb, hero,
you will see the mountain of herbs.*

लीला वहाँ तुम स्वर्णिम ऋषभ पर्वत और कैलास का
शिखर देखोगे। उन दोनों शिखरों के बीच, अनुपम
प्रभा से दमकता, सब औषधियों से भरा औषधि-
पर्वत दिखेगा।

SUBTITLE You will see golden Rishabha
and the peak of Kailasa.
Between the two peaks, blazing, matchless,
stands the mountain of all herbs.

॥ 6.74.32-34 ॥

CrEd 6.61.32-34

condensed
from 6.74.32-
34

जाम्बवान JAMBAVAN

वाल्मीकि तस्य वानरशार्दूल चतस्रो मूर्ध्नि संभवाः ।
द्रक्ष्यस् ओषधयो दीप्ता दीपयन्त्यो दिशो दश ।
मृतसंजीवनीं चैव विशल्यकरणीम् अपि ।
सौवर्णकरणीं चैव संधानीं च महौषधीम् ।
ताः सर्वा हनुमन् गृह्य क्षिप्रम् आगन्तुम् अर्हसि ।
आश्वासय हरीन् प्राणैर् योज्य गन्धवहात्मज ॥

TRANSLATION *On its summit, tiger among monkeys,
you will see four herbs growing,
shining, lighting up
the ten directions:
the reviver of the dead,
the healer of arrow wounds,
the restorer of colour,
and the great herb that joins.
Take them all, Hanuman,
and come back quickly;
son of the Wind, give the monkeys
back their lives, and comfort them.*

लीला उसके शिखर पर चार ओषधियाँ उगती हैं, जो दसों
दिशाएँ आलोकित करती हैं, मृतसंजीवनी,
विशल्यकरणी, सौवर्णकरणी और संधानी। हनुमान,
उन सबको लेकर शीघ्र लौटो!

SUBTITLE Four herbs glow on its summit,
lighting the ten directions:
the reviver of the dead, the arrow-healer,
the restorer, the joiner.
Bring them all, quickly!

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (6.61.32-34) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (6.61.32-34).

॥ 6.74.35–49 ॥
CrEd 6.61.35–45

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 6.74.42–45

The popular text has Hanuman climb Mount Malaya, sixty yojanas high, and grow there before he presses it down and leaps.

॥ 6.74.50–63 ॥
CrEd 6.61.46–57

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.74.66 ॥
CrEd 6.61.60

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि किम् एतद् एवं सुविनिश्चितं ते यद् राघवे नासि कृतानुकम्पः ।
पश्याद्य मद्बाहुबलाभिभूतो विकीर्णम् आत्मानम्
अथो नगेन्द्र ॥

TRANSLATION *Is this, then, so firmly settled by you,
that you show no pity to Raghava?
Then see yourself today, overpowered by my
arms' strength,
scattered in pieces, king of mountains!*

लीला पर्वतराज, क्या तुमने यही ठान लिया है कि राघव
पर दया न करोगे? तो देखो, आज मेरी भुजाओं के
बल से तुम उखड़कर बिखर जाओगे!

SUBTITLE Is this your resolve, king of mountains:
no pity for Raghava?
Then see yourself today
torn loose by the strength of my arms!

॥ 6.74.67–71 ॥
CrEd 6.61.61–65

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.74.72-74 ॥
CrEd 6.61.66-67

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 6.74.74

All of them, free of arrows and pain in a moment like sleepers waking at night's end (6.74.74),
is the popular text's; the CrEd has the princes and the monkey heroes rise (6.61.66-67).

॥ 6.74.77 ॥
CrEd 6.61.68

SILENT MOMENT मौन क्षण

YUDDHA KANDA · युद्धकाण्ड

Ravana falls

रावण का पतन

—❖ Valmiki · Yuddha Kanda ❖—

6.101.6–6.111.104 (CrEd 6.89.1–6.99.44)

गिरे हुए लक्ष्मण पर्वत की ओषधि से फिर जी उठते हैं, और इन्द्र राम के लिए मातलि के साथ अपना रथ भेजते हैं। द्वन्द्व चलता रहता है, जब तक मातलि राम को ब्रह्मास्त्र की याद नहीं दिलाते, और रावण गिर जाता है। जब विभीषण अपने भाई का अंतिम संस्कार करने से मना करते हैं, तो राम उनसे कहते हैं कि वैर मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता है।

Lakshmana, struck down, is revived with the herb from the mountain, and Indra sends Rama his chariot with Matali to drive it. The duel runs on until Matali reminds Rama of Brahma's weapon, and Ravana falls. When Vibhishana will not give his brother the last rites, Rama tells him that enmity ends with death.

१



PART 1 · भाग 1

Indra's chariot

Valmiki 6.101.6–57, 6.102–103 (CrEd 6.89, 6.90–92)

the CrEd and the popular text Valmiki 6.100–101 (CrEd 6.88–89)

Ravana's spear and the second flight for the herbs are sargas 6.100-101 of the popular text (CrEd 6.88-89). Sushena names four herbs: vishalyakarani, which draws out arrows; savarnyakarani, which restores the skin; sanjivani, which revives; and sandhani, which joins.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.102.6–9

In the popular text Indra hears the gods cry "no equal fight" and sends Matali with his chariot and a speech. The CrEd goes straight to the chariot coming down.

॥ 6.101.1–8 ॥

CrEd 6.88.36–39,
6.89.2–8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.101.6 ॥

CrEd 6.89.5

राम R A M A

वाल्मीकि लज्जतीव हि मे वीर्यं भ्रश्यतीव कराद् धनुः ।
सायका व्यवसीदन्ति दृष्टिर् बाष्पवशं गता ॥

TRANSLATION *My valour seems to shrink in shame,
my bow seems to slip from my hand,
my arrows sink and falter,
my sight is given over to tears.*

लीला मेरा पराक्रम जैसे लज्जित है, धनुष हाथ से छूटा जा रहा है। बाण शिथिल पड़ रहे हैं, और आँखें आँसुओं से भर आई हैं।

SUBTITLE My strength seems ashamed,
the bow slips from my hand,
my arrows falter,
my eyes are lost in tears.

॥ 6.101.26, 29 ॥

CrEd 6.89.9, 11

condensed
from 6.101.26,
29

सुषेण SUSHENA

वाल्मीकि न मृतोऽयं महाबाहुर् लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धनः ।
मा विषादं कृथा वीर सप्राणोऽयम् अरिंदम ॥

TRANSLATION *He is not dead, this strong-armed one,
Lakshmana, who adds to the glory of his house.
Do not despair, hero:
he still has life, tamer of foes.*

लीला महाबाहु लक्ष्मण मरे नहीं हैं। वीर, विषाद मत
कीजिए। इनमें अभी प्राण हैं।

SUBTITLE He is not dead,
this strong-armed Lakshmana.
Do not despair, hero:
he breathes, tamer of foes.

प्रचलित पाठ में “मा विषादं कृथा” (विषाद मत कीजिए) है; CrEd के ई-पाठ में यहाँ “मां विषादं कृत्वा” है (6.89.11e)।

The popular text reads mā viṣādaṃ kṛthā, “do not despair”; the CrEd e-text reads māṃ viṣādaṃ kṛtvā here (6.89.11e).

॥ 6.101.31-32 ॥
CrEd 6.89.14-15

सुषेण SUSHENA

वाल्मीकि सौम्य शीघ्रम् इतो गत्वा शैलम् ओषधिपर्वतम् ।
पूर्वं हि कथितो योऽसौ वीर जाम्बवता शुभः ।
दक्षिणे शिखरे तस्य जाताम् ओषधिम् आनय ॥

TRANSLATION *Gentle one, go quickly from here
to the mountain of herbs,
the fair one, hero, of which
Jambavan told before,
and bring the herb
that grows on its southern peak.*

लीला सौम्य, यहाँ से शीघ्र उस ओषधि-पर्वत पर जाओ,
जिसके बारे में जाम्बवान ने बताया था, और उसके
दक्षिणी शिखर पर उगी ओषधि ले आओ।

SUBTITLE Go quickly, friend,
to the mountain of herbs Jambavan told of,
and bring the herb
that grows on its southern peak.

॥ 6.101.34-43 ॥
CrEd 6.89.17-21

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.101.44-47 ॥
CrEd 6.89.22-25

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.101.48-49 ॥
CrEd 6.89.26-27

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.101.54-56 ॥
CrEd 6.89.32, 34

condensed
from 6.101.54-
56

लक्ष्मण LAKSHMANA

वाल्मीकि नैराश्यम् उपगन्तुं ते तद् अलं मत्कृतेऽनघ ।
वधेन रावणस्याद्य प्रतिज्ञाम् अनुपालय ।
अहं तु वधम् इच्छामि शीघ्रम् अस्य दुरात्मनः ।
यावद् अस्तं न यात्य् एष कृतकर्मा दिवाकरः ॥

TRANSLATION *Enough, then, of falling into despair
for my sake, sinless one;
keep your vow today
by slaying Ravana.
And I want this evil one
slain quickly,
before the sun, his work done,
goes down to his setting.*

लीला मेरे लिए निराश मत होइए। आज रावण का वध
करके अपनी प्रतिज्ञा निभाइए। मैं चाहता हूँ, यह
दुष्ट जल्दी मारा जाए, इससे पहले कि सूरज अपना
काम पूरा करके डूब जाए।

SUBTITLE Enough of despair for my sake.
Keep your vow: kill Ravana today.
I want him dead, and soon,
before the sun, its work done, goes down.

॥ 6.102.1-4 ॥
CrEd 6.90.1-3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.102.5-6 ॥
CrEd 6.90.4

देवता GODS

वाल्मीकि भूमिस्थितस्य रामस्य रथस्थस्य च रक्षसः ।
न समं युद्धम् इत्य् आहुर् देवगन्धर्वदानवाः ॥

TRANSLATION *Rama standing on the ground,
the rakshasa in a chariot:
“This is no even fight,” they said,
the gods, gandharvas and danavas.*

लीला राम धरती पर, और राक्षस रथ पर, यह युद्ध बराबरी
का नहीं!

SUBTITLE Rama on the ground,
the rakshasa in his chariot:
this is no equal fight!

॥ 6.102.10-14 ॥
CrEd 6.90.5-7

SILENT MOMENT मौन क्षण

मातलि MATALI

वाल्मीकि सहस्राक्षेण काकुत्स्थ रथोऽयं विजयाय ते ।
दत्तस् तव महासत्त्व श्रीमाञ् शत्रुनिबर्हणः ।
इदम् ऐन्द्रं महद्बाणं कवचं चाग्निसंनिभम् ।
शराश् चादित्यसंकाशाः शक्तिश् च विमला शिता ॥

TRANSLATION *Kakutstha, by the thousand-eyed one
this chariot is given you for victory,
mighty one, splendid,
destroyer of foes.
Here is Indra's great bow,
and armour like fire,
arrows like the sun,
and a spear, spotless and keen.*

लीला काकुत्स्थ, सहस्राक्ष इन्द्र ने आपकी विजय के लिए
यह रथ भेजा है, और यह इन्द्र का महान धनुष,
अग्नि-सा कवच, सूर्य-से दमकते बाण और निर्मल,
तीखी शक्ति भी।

SUBTITLE Kakutstha, thousand-eyed Indra sends you
this chariot for victory,
his great bow, armour like fire,
arrows bright as the sun,
and a shining spear.

॥ 6.102.17 ॥
CrEd 6.90.11

मातलि MATALI

वाल्मीकि आरुह्येमं रथं वीर राक्षसं जहि रावणम् ।
मया सारथिना राम महेन्द्र इव दानवान् ॥

TRANSLATION *Mount this chariot, hero,
and slay the rakshasa Ravana,
with me as your charioteer, Rama,
as great Indra slew the danavas.*

लीला वीर राम, इस रथ पर आरूढ़ होइए, और मुझे
सारथि बनाकर राक्षस रावण का वध कीजिए, जैसे
महेन्द्र दानवों का करते हैं।

SUBTITLE Mount this chariot, hero,
with me to drive it,
and kill Ravana, Rama,
as great Indra kills the danavas.

॥ 6.102.18 ॥
CrEd 6.90.12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.102.40-44 ॥
CrEd 6.91.1-4

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.102.47 ॥
CrEd 6.91.8

असुर ASURAS

वाल्मीकि दशग्रीवं जयेत्य् आहुर् असुराः समवस्थिताः ।
देवा रामम् अथोचुस् ते त्वं जयेति पुनः पुनः ॥

TRANSLATION *“Victory, Ten-necked one!” cried
the asuras gathered there;
and the gods said to Rama,
“Victory to you!” again and again.*

लीला जय हो, दशग्रीव!

SUBTITLE Victory, Dashagriva!

॥ 6.102.47 ॥
CrEd 6.91.8

देवता GODS

वाल्मीकि दशग्रीवं जयेत् आहुर् असुराः समवस्थिताः ।
देवा रामम् अथोचुस् ते त्वं जयेति पुनः पुनः ॥

TRANSLATION *“Victory, Ten-necked one!” cried
the asuras gathered there;
and the gods said to Rama,
“Victory to you!” again and again.*

लीला राम, आपकी जय हो! जय हो!

SUBTITLE Be victorious, Rama!
Be victorious!

॥ 6.102.57 ॥
CrEd 6.91.18

रावण RAVANA

वाल्मीकि शूलोऽयं वज्रसारस् ते राम रोषान् मयोद्यतः ।
तव भ्रातृसहायस्य सद्यः प्राणान् हरिष्यति ॥

TRANSLATION *This trident, hard as the thunderbolt,
raised by me in fury against you, Rama,
will take your life at once,
and your brother’s at your side.*

लीला राम, वज्र-सा कठोर यह त्रिशूल, जो मैंने क्रोध
में उठाया है, भाई के सहारे खड़े तेरे प्राण अभी
हर लेगा।

SUBTITLE This trident, hard as a thunderbolt,
raised in my rage,
will take your life at once, Rama,
you and the brother at your side.

॥ 6.102.58–59 ॥
CrEd 6.91.19–20

रावण RAVANA

वाल्मीकि रक्षसाम् अद्य शूराणां निहतानां चमूमुखे ।
त्वां निहत्य रणश्लाघिन् करोमि तरसा समम् ।
तिष्ठेदानीं निहन्मि त्वाम् एष शूलेन राघव ॥

TRANSLATION *For the rakshasa heroes
slain today at the head of the army,
I will kill you, braggart of battle,
and swiftly square the account.
Stand now! I strike you down
with this trident, Raghava.*

॥ 6.102.60–65 ॥
CrEd 6.91.21–26

SILENT MOMENT मौन क्षण

लीला रण में डींग हाँकने वाले! आज मोर्चे पर जो राक्षस-
वीर मारे गए, तुझे मारकर मैं उनका बदला
चुकाऊँगा। अब खड़ा रह, राघव! इस त्रिशूल से
तुझे मारता हूँ!

SUBTITLE Boaster! For the rakshasa heroes
killed today
I will pay you back.
Stand still now, Raghava:
this trident is for you!

राम R A M A

वाल्मीकि मम भार्या जनस्थानाद् अज्ञानाद् राक्षसाधम ।
हृता ते विवशा यस्मात् तस्मात् त्वं नासि वीर्यवान् ।
मया विरहितां दीनां वर्तमानां महावने ।
वैदेहीं प्रसभं हृत्वा शूरोऽहम् इति मन्यसे ॥

TRANSLATION *Lowest of rakshasas, since my wife,
helpless, from Janasthana
was carried off by you without my knowing,
you are no man of valour.
Vaidehi, parted from me,
wretched, in the great forest:
you seized her by force,
and you think, "I am a hero."*

लीला राक्षसाधम, मेरी अनुपस्थिति में तुमने जनस्थान से
मेरी असहाय पत्नी का हरण किया। महावन में
अकेली वैदेही को बलपूर्वक उठाकर तुम अपने को
शूर मानते हो?

SUBTITLE Vilest of rakshasas,
you stole my helpless wife while I was away,
seized her alone in the great forest,
and think yourself a hero?

राम R A M A

वाल्मीकि स्त्रीषु शूर विनाथासु परदाराभिमर्शके ।
कृत्वा कापुरुषं कर्म शूरोऽहम् इति मन्यसे ।
भिन्नमर्याद निर्लज्ज चारित्रेष्व् अनवस्थित ।
दर्पान् मृत्युम् उपादाय शूरोऽहम् इति मन्यसे ॥

TRANSLATION *Hero against women with no protector,
toucher of other men's wives,
you do a coward's deed
and think, "I am a hero."
Breaker of bounds, shameless,
unsteady in conduct,
taking death upon yourself out of pride,
you think, "I am a hero."*

लीला अनाथ स्त्रियों पर शूरवीर! मर्यादा तोड़ने वाले,
निर्लज्ज! कायरों का काम करके, घमंड में मृत्यु को
गले लगाकर, तुम अपने को शूर मानते हो।

SUBTITLE Hero against unguarded women!
A coward's deed, and you call yourself
a hero.
Shameless, lawless,
you court death in pride, and call yourself
a hero.

॥ 6.103.18 ॥
CrEd 6.92.18

राम R A M A

वाल्मीकि यदि मत्संनिधौ सीता धर्षिता स्यात् त्वया बलात् ।
भ्रातरं तु खरं पश्येस् तदा मत्सायकैर् हतः ॥

TRANSLATION *Had Sita, in my presence,
been seized by you by force,
then, slain by my arrows,
you would be looking on your brother Khara.*

लीला यदि मेरे सामने तुमने सीता पर बलात् हाथ डाला
होता, तो मेरे बाणों से मरकर तुम अपने भाई खर से
जा मिलते।

SUBTITLE Had you dared to touch Sita
in my presence,
my arrows would have sent you
to see your brother Khara.

॥ 6.103.19 ॥
CrEd 6.92.19

राम R A M A

वाल्मीकि दिष्ट्यासि मम दुष्टात्मंश् चक्षुर्विषयम् आगतः ।
अद्य त्वां सायकैस् तीक्ष्णैर् नयामि यमसादनम् ॥

TRANSLATION *By good fortune, evil one,
you have come within my sight;
today with sharp arrows
I lead you to Yama's house.*

लीला दुष्टात्मा, सौभाग्य से तुम मेरी दृष्टि के सामने
आ गए हो। आज मेरे तीखे बाण तुम्हें
यमलोक पहुँचाएँगे।

SUBTITLE By good fortune, wicked one,
you have come within my sight.
Today my sharp arrows
take you to Yama's house.

॥ 6.103.22-30 ॥
CrEd 6.92.23-30

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.103.30 ॥
CrEd 6.92.30

SILENT MOMENT मौन क्षण



The heads that grow back

Valmiki 6.104.25–6.107 (CrEd 6.93.25–6.96)

VALMIKI

THE LEELA

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.105

The Aditya Hridaya, "the heart of the Sun", is sarga 6.105 of the popular text; the CrEd runs from Ravana's return (6.93) straight to the charge (6.94). Agastya, come with the gods to watch, teaches the weary Rama the hymn. "One who sings it in danger, in hardship, in the wilds or in fear, does not sink, Raghava" (6.105.25). Rama recites it three times, looking at the sun, and turns to Ravana in joy; the Sun, among the gods, says: "Hurry!"

the CrEd and the popular text Valmiki 6.107.65 (CrEd 6.96.30)

How long the last duel lasts: the CrEd says the whole night (sarvarātram); the popular text says seven nights (saptarātram). Raam Leela follows the CrEd.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.107.60, 64

In the popular text Rama also remembers the arrows that pierced the sal trees and the hills, killed Vali and troubled the ocean, and the duel moves through the sky, the ground and the mountain tops.

॥ 6.104.25 ॥
CrEd 6.93.25

रावण RAVANA

वाल्मीकि रथं शीघ्रम् इमं सूत राघवाभिमुखं कुरु ।
नाहत्वा समरे शत्रून् निवर्तिष्यति रावणः ॥

TRANSLATION *Quickly, charioteer, turn this chariot
to face Raghava;
Ravana will not turn back from battle
without slaying his foes.*

लीला सूत, शीघ्र इस रथ का मुख राघव की ओर करो।
शत्रुओं को मारे बिना रावण रण से नहीं लौटेगा।

SUBTITLE Charioteer, quick,
turn this chariot to face Raghava.
Ravana will not come back from battle
without killing his enemies.

॥ 6.105.1-2 ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.105.3-4 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

अगस्त्य AGASTYA

वाल्मीकि राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम् ।
येन सर्वान् अरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ।
आदित्यहृदयं पुण्यं ॥

TRANSLATION *Rama, Rama, mighty-armed,
hear the eternal secret,
by which, my child, you will conquer
all your foes in battle:
the holy Heart of the Sun...*

लीला राम, राम, महाबाहु! वत्स, वह सनातन रहस्य
सुनो, जिससे तुम रण में सब शत्रुओं को जीत लोगे:
पवित्र आदित्यहृदय।

SUBTITLE Rama, Rama, mighty-armed,
hear the eternal secret, my son,
by which you will conquer every foe:
the holy Heart of the Sun.

॥ 6.105.6 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

अगस्त्य AGASTYA

वाल्मीकि रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥

TRANSLATION *The one rich in rays, rising,
honoured by gods and asuras:
worship him, Vivasvan,
Bhaskara, lord of the worlds.*

लीला उगते हुए, किरणों वाले, देवों और असुरों से वंदित
विवस्वान की पूजा करो, प्रकाश देने वाले भास्कर
की, जो भुवनों के स्वामी हैं।

SUBTITLE Worship the Sun,
rayed and rising,
to whom gods and asuras bow:
Vivasvan, maker of light, lord of the worlds.

॥ 6.105.27-31 ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.106.9-10 ॥
CrEd 6.94.4

राम RAMA

वाल्मीकि मातले पश्य संरब्धम् आपतन्तं रथं रिपोः ।
यथापसव्यं पतता वेगेन महता पुनः ।
समरे हन्तुम् आत्मानं तथानेन कृता मतिः ॥

TRANSLATION *Matali, see the enemy's chariot
bearing down on us in fury;
from the way it rushes again,
keeping us on its left, at such great speed,
he has set his mind
on his own death in battle.*

लीला मातलि, देखिए, शत्रु का रथ क्रोध में कितने वेग से
बाईं ओर से फिर झपटा आ रहा है। उसने रण में
मरने की ठान ली है।

SUBTITLE Matali, see the enemy's chariot
rushing on us again in fury,
fast, and on the left:
he has set his mind on dying.

राम R A M A

वाल्मीकि तद् अप्रमादम् आतिष्ठ प्रत्युद्गच्छ रथं रिपोः ।
विध्वंसयितुम् इच्छामि वायुर् मेघम् इवोत्थितम् ।
अविक्लवम् असंभ्रान्तम् अव्यग्रहृदयेक्षणम् ।
रश्मिसंचारनियतं प्रचोदय रथं द्रुतम् ॥

TRANSLATION *So stand alert, and drive out
to meet the enemy's chariot;
I mean to scatter it
as the wind scatters a rising cloud.
Unshaken, unhurried,
heart and eye steady,
the reins held firm in hand,
drive the chariot fast.*

लीला सावधान रहिए, और उसके रथ की ओर बढ़िए।
जैसे वायु उठते मेघ को छितरा देता है, वैसे ही मैं
उसे छितरा दूँगा। हृदय और दृष्टि स्थिर रखकर,
लगाम साधकर, रथ वेग से हाँकिए।

SUBTITLE Be alert; drive to meet him.
I will scatter him as wind a rising cloud.
Steady of heart and eye,
reins firm, drive fast.

॥ 6.106.13 ॥
CrEd 6.94.7

राम R A M A

वाल्मीकि कामं न त्वं समाधेयः पुरंदररथोचितः ।
युयुत्सुर् अहम् एकाग्रः स्मारये त्वां न शिक्षये ॥

TRANSLATION *True, you need no instruction,
you who are used to Indra's chariot;
intent, eager to fight,
I remind you; I do not teach you.*

लीला आप तो इन्द्र के रथ के सारथि हैं। आपको सिखाने की आवश्यकता नहीं। मैं युद्ध के लिए एकाग्र हूँ, इसलिए केवल स्मरण करा रहा हूँ, सिखा नहीं रहा।

SUBTITLE You drive Indra's own chariot;
you need no teaching.
I am all intent on battle:
I remind you, I do not teach you.

॥ 6.106.14–31 ॥
CrEd 6.94.14–29

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.107.1–5 ॥
CrEd 6.95.2–5

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.107.45–48 ॥
CrEd 6.96.15–17

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.107.49–50 ॥
CrEd 6.96.18–19

देवता G O D S

वाल्मीकि स्वस्ति गोब्राह्मणेभ्योऽस्तु लोकास् तिष्ठन्तु शाश्वताः ।
जयतां राघवः संख्ये रावणं राक्षसेश्वरम् ॥

TRANSLATION *May it be well with cows and brahmins;
may the worlds endure for ever;
may Raghava conquer in battle
Ravana, lord of the rakshasas.*

लीला गौओं और ब्राह्मणों का कल्याण हो! लोक सदा बने रहें! राघव रण में राक्षसराज रावण पर विजय पाएँ!

SUBTITLE May all be well with cows and brahmins!
May the worlds endure forever!
May Raghava conquer Ravana,
lord of the rakshasas!

॥ 6.107.54–59 ॥
CrEd 6.96.20–24

॥ 6.107.60 ॥
CrEd 6.96.26

6.107.60ef:
popular text
only · not in
the CrEd

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम RAMA

वाल्मीकि मारीचो निहतो यैस् तु खरो यैस् तु सुदूषणः ।
क्रौञ्चारण्ये विराधस् तु कबन्धो दण्डका वने ॥

TRANSLATION *The arrows by which Maricha was slain,
by which Khara, and Dushana too,
Viradha in the Krauncha forest,
and Kabandha in the Dandaka woods:*

लीला इन्हीं बाणों से मारीच मारा गया, दूषण समेत खर,
क्रौंच वन में विराध, और दण्डक वन में कबन्ध।

SUBTITLE The arrows that killed Maricha,
Khara and Dushana,
Viradha in the Krauncha forest,
Kabandha in the Dandaka woods:

प्रचलित पाठ के श्लोक में एक तीसरी पंक्ति (6.107.60ef) है, उन बाणों के बारे में जिन्होंने साल वृक्ष और पर्वत तोड़े, वाली को मारा और सागर को मथा; वह CrEd में नहीं है, और दृश्य की पंक्ति उसे छोड़ देती है। CrEd के ई-पाठ में “क्रौञ्चारण्ये” की जगह “क्रञ्चारण्ये” छपा है (6.96.26c)।

The popular verse has a third line (6.107.60ef), on the arrows that broke the sal trees and the hills, struck Vali and stirred the ocean; it is not in the CrEd, and the line leaves it out. The CrEd e-text prints krañcāraṇye for krauñcāraṇye (6.96.26c).

॥ 6.107.61 ॥
CrEd 6.96.27

राम R A M A

वाल्मीकि त इमे सायकाः सर्वे युद्धे प्रत्ययिका मम ।
किं नु तत् कारणं येन रावणे मन्दतेजसः ॥

TRANSLATION *these are all those arrows*
I have trusted in battle.
What then can be the reason
that against Ravana their fire is dull?

लीला युद्ध में इन बाणों ने मुझे कभी धोखा नहीं दिया।
फिर क्या कारण है कि रावण पर ये निस्तेज हो
गए हैं?

SUBTITLE these arrows have never failed me in battle.
What can the reason be
that on Ravana
they have no force?

॥ 6.107.62–66 ॥
CrEd 6.96.28–31

SILENT MOMENT मौन क्षण



Brahma's arrow

Valmiki 6.108, 6.110.1–5, 6.111.93–104 (CrEd 6.97, 6.98.1–6, 6.99.30–44)

VALMIKI

THE LEELA

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.109

In the popular text Vibhishana first laments his brother and praises him, and Rama answers him with the same words, "enmity ends with death" (6.109.25). The CrEd has only the scene where Vibhishana first refuses the rites.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.111.105–124

The popular text gives a long funeral: the sacred fires carried out, carts of sandalwood, the priests, the pyre, the offerings of water. The CrEd gives two verses: he gave him the rites and the fire, and consoled the women.

Mandodari (C9) Valmiki 6.111.1–92 (CrEd 6.99.1–29)

While Rama speaks with Vibhishana, Mandodari laments over Ravana. Her lament is told in C9.

॥ 6.107.66 ॥
CrEd 6.96.31

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.108.1-2 ॥
CrEd 6.97.1-2

मातलि MATALI

वाल्मीकि अजानन् इव किं वीर त्वम् एनम् अनुवर्तसे ।
विसृजास्मै वधाय त्वम् अस्त्रं पैतामहं प्रभो ।
विनाशकालः कथितो यः सुरैः सोऽद्य वर्तते ॥

TRANSLATION *Why, hero, as though you did not know,
do you go along with him?
Loose at him, to slay him,
the Grandsire's weapon, lord.
The time of his ruin, foretold by the gods,
has come today.*

लीला वीर, आप जैसे अनजान हों, वैसे उसका अनुसरण
क्यों कर रहे हैं? प्रभु, उसके वध के लिए पितामह
का अस्त्र छोड़िए। देवताओं ने उसके विनाश की जो
घड़ी बताई थी, वह आज आ गई है।

SUBTITLE Why follow his lead, hero,
as if you did not know?
Loose Brahma's weapon, lord:
the hour the gods foretold for his end
is here.

॥ 6.108.3-15 ॥
CrEd 6.97.3-14

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.108.16-26 ॥
CrEd 6.97.15-25

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.108.27-28 ॥
CrEd 6.97.26-27

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.108.29 ॥
CrEd 6.97.28

देवता GODS

वाल्मीकि राघवस्तवसंयुक्ता गगने च विशुश्रुवे ।
साधु साध्व् इति वाग् अग्न्या देवतानां महात्मनाम् ॥

TRANSLATION *And in the sky was heard,
joined with praise of Raghava,
“Well done, well done!”, the noble voice
of the great-souled gods.*

लीला साधु! साधु!

SUBTITLE Well done!
Well done!

॥ 6.110.1–5 ॥
CrEd 6.98.1–6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.111.93–94 ॥
CrEd 6.99.30

राम RAMA

वाल्मीकि संस्कारः क्रियतां भ्रातुः स्त्रियश् चैता निवर्तय ॥

TRANSLATION *Let your brother's rites be done,
and send these women back.*

लीला अपने भाई का अंतिम संस्कार करो, और इन स्त्रियों
को लौटा ले जाओ।

SUBTITLE Let your brother's rites be done,
and lead these women home.

॥ 6.111.95-96 ॥
CrEd 6.99.32

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि त्यक्तधर्मव्रतं क्रूरं नृशंसम् अनृतं तथा ।
नाहम् अर्होऽस्मि संस्कर्तुं परदाराभिमर्शकम् ॥

TRANSLATION *One who forsook dharma and his vows,
cruel, pitiless and false,
a toucher of other men's wives:
it is not fit for me to give him rites.*

लीला उसने धर्म और व्रत त्याग दिए थे। वह क्रूर था,
निर्दयी और असत्यवादी, पराई स्त्रियों को हाथ
लगाने वाला। मैं उसका संस्कार नहीं कर सकता।

SUBTITLE He cast off dharma and his vows:
cruel, pitiless, false,
a toucher of other men's wives.
I am not fit to give him rites.

॥ 6.111.96-97 ॥
CrEd 6.99.33

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि भ्रातृरूपो हि मे शत्रुर् एष सर्वाहिते रतः ।
रावणो नार्हते पूजां पूज्योऽपि गुरुगौरवात् ॥

TRANSLATION *For he was my enemy in a brother's form,
bent on harm to all;
Ravana does not deserve honour,
though honour is due to an elder.*

लीला वह भाई के रूप में मेरा शत्रु था, सबके अहित में
लगा रहा। बड़ा होने के नाते पूज्य होकर भी रावण
सम्मान के योग्य नहीं।

SUBTITLE He was my enemy in a brother's form,
bent on harming all.
Ravana deserves no honour,
though an elder is owed it.

॥ 6.111.97-98 ॥
CrEd 6.99.34

विभीषण VIBHISHANA

वाल्मीकि नृशंस इति मां राम वक्ष्यन्ति मनुजा भुवि ।
श्रुत्वा तस्य गुणान् सर्वे वक्ष्यन्ति सुकृतं पुनः ॥

TRANSLATION *“Heartless,” Rama, they will call me,
the people of the earth;
but when they all hear what he was,
they will say again I did well.*

लीला राम, संसार के लोग मुझे निष्ठुर कहेंगे, पर
उसके गुण-अवगुण सुनकर सब कहेंगे कि मैंने
ठीक किया।

SUBTITLE Men on earth will call me heartless, Rama.
But when they hear what he was,
they will all say
I did right.

राम R A M A

वाल्मीकि तवापि मे प्रियं कार्यं त्वत्प्रभवाच् च मे जितम् ।
अवश्यं तु क्षमं वाच्यो मया त्वं राक्षसेश्वर ।
अधर्मानृतसंयुक्तः कामम् एष निशाचरः ।
तेजस्वी बलवाञ् शूरः संग्रामेषु च नित्यशः ॥

TRANSLATION *What is dear to you I must do,
for by your power I have won;
yet I must surely tell you
what is right, lord of the rakshasas.
Granted, this night-walker
was bound to adharmā and falsehood;
yet he was splendid, strong and brave
in battles, always.*

लीला राक्षसेश्वर, तुम्हारी सहायता से ही मेरी विजय हुई।
पर जो उचित है, वह तुमसे कहना ही होगा। हाँ, वह
अधर्मी था, असत्यवादी था, फिर भी तेजस्वी,
बलवान, हर संग्राम में शूर।

SUBTITLE I won through you;
yet hear what is right, lord of the rakshasas.
Unrighteous and false he was,
yet fiery, strong, brave in every battle.

॥ 6.111.101-102 ॥
CrEd 6.99.38

राम R A M A

वाल्मीकि शतक्रतुमुखैर् देवैः श्रूयते न पराजितः ।
महात्मा बलसंपन्नो रावणो लोकरावणः ॥

TRANSLATION *Even by the gods led by Indra
he was never defeated, we hear:
great-souled, full of strength,
Ravana, who made the worlds cry out.*

लीला सुनते हैं, इन्द्र आदि देवता भी उसे कभी पराजित न
कर सके। महात्मा, महाबली था रावण, जिसने
लोकों को रुलाया।

SUBTITLE Not even Indra and the gods,
they say, ever defeated him.
Great-souled and mighty was Ravana,
who made the worlds cry out.

॥ 6.111.102-
103 ॥
CrEd 6.99.39

राम R A M A

वाल्मीकि मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयोजनम् ।
क्रियताम् अस्य संस्कारो ममाप्य् एष यथा तव ॥

TRANSLATION *Enmities end with death;
our purpose is accomplished.
Let his rites be done;
he is mine, as he is yours.*

लीला वैर मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता है। हमारा
प्रयोजन पूरा हुआ। इसका संस्कार किया जाए। अब
यह जैसे तुम्हारा है, वैसे ही मेरा भी है।

SUBTITLE Enmity ends with death.
Our purpose is done.
Let his rites be performed:
he is mine, as he is yours.

॥ 6.111.103–
104 ॥

CrEd 6.99.40

राम R A M A

वाल्मीकि त्वत्सकाशान् महाबाहो संस्कारं विधिपूर्वकम् ।
क्षिप्रम् अर्हति धर्मज्ञ त्वं यशोभाग् भविष्यसि ॥

TRANSLATION *From you, strong-armed one,
he deserves the rites, in due form,
and quickly, knower of dharma;
you will have a share in the glory.*

लीला महाबाहु, वह तुम्हारे ही हाथों शीघ्र विधिपूर्वक
संस्कार पाने योग्य है। तुम धर्मज्ञ हो, इसमें तुम्हारा
ही यश होगा।

SUBTITLE From your hands, strong-armed one,
he deserves the rites the law lays down,
and soon.
You know dharma:
the glory will be yours.

॥ 6.111.105 ॥

CrEd 6.99.41

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.111.104–105,
6.111.123–125 ॥

CrEd 6.99.41–42

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.111.122–126 ॥

CrEd 6.99.43–44

SILENT MOMENT मौन क्षण

In other Hindu scriptures

♦ Sita as Kali slays the thousand-headed Ravana

Adbhuta Ramayana 23.7–13 · not in Valmiki

Valmiki: no thousand-headed Ravana; Rama's arrow splits Ravana's heart (CrEd 6.97.15–17)

YUDDHA KANDA · युद्धकाण्ड

The fire

अग्नि

—❖ Valmiki · Yuddha Kanda ❖—

6.114–119 (CrEd 6.102–107)

विजय के बाद राम सीता को सेना के सामने बुलवाते हैं और कठोरता से कहते हैं कि उन्होंने अपने नाम का कलंक धोने के लिए युद्ध किया, उनके लिए नहीं, और वे जहाँ चाहें जा सकती हैं। सीता उन्हें उत्तर देती हैं, लक्ष्मण से चिता बनवाती हैं, और अग्नि में प्रवेश करती हैं। अग्निदेव उन्हें बिना आँच के बाहर लाकर लौटा देते हैं; राम कहते हैं कि वे उनका हृदय जानते थे और यह तीनों लोकों के विश्वास के लिए किया, और स्वर्ग से दशरथ प्रकट होते हैं।

After the victory Rama has Sita brought before the army and tells her, harshly, that he fought to clear his name and not for her, and that she may go where she likes. Sita answers him, has Lakshmana build a pyre, and walks into the fire. Agni brings her out unharmed and gives her back; Rama says he knew her heart and did it for the trust of the three worlds, and Dasharatha appears from heaven.

१



PART 1 · भाग 1

Before the army

Valmiki 6.114–116 (CrEd 6.102–104)

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.114.30

In the popular text Rama says: "Let her leave the palanquin and come on foot; let the forest-dwellers see Vaidehi near me." The CrEd has "bring her near; let Sita see me among my friends" (6.102.29).

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.115.11

The popular text says that, seeing her near, Rama's heart was split in two for fear of what people would say. The CrEd has his anger rising like a fire fed with ghee (6.103.11).

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.115.23

In the popular text Rama's list of those she might turn to adds Shatrughna.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.116.26–29

Sita's prayer at the fire is longer in the popular text: "As I have never strayed from Raghava in deed, in mind or in word, so may Agni protect me" (6.116.27), and she calls on the sun, the wind, the directions, the moon, day and night, the two twilights and the earth as witnesses who know her conduct. Agni's own witness answers it in the CrEd: "not by word, mind, thought or glance has she strayed from you" (6.106.5).

D8 Valmiki 6.114–119 (CrEd 6.102–107)

Sita's own story of the fire (D8) is told here, in A31: her answer is given in full, and Dasharatha's word to her closes it (A31-2).

॥ 6.114.28-30 ॥

CrEd 6.102.27-29

condensed
from 6.114.28-
30

राम R A M A

वाल्मीकि व्यसनेषु न कृच्छ्रेषु न युद्धे न स्वयंवरे ।
न क्रतौ नो विवाहे च दर्शनं दुष्यते स्त्रियः ।
सैषा युद्धगता चैव कृच्छ्रे महति च स्थिता ।
दर्शनेऽस्या न दोषः स्यान् मत्समीपे विशेषतः ।
तद् आनय समीपं मे शीघ्रम् एनां विभीषण ।
सीता पश्यतु माम् एषा सुहृद्गणवृतं स्थितम् ॥

TRANSLATION *In calamities, in hardships,
in war, at a bride's own choosing,
at a sacrifice, at a wedding,
no fault lies in a woman's being seen.
She is here in the midst of war,
and stands in great distress;
no fault can lie in her being seen,
and least of all in my presence.
So bring her near to me,
quickly, Vibhishana;
let Sita look on me, standing here
surrounded by my friends.*

लीला विपत्ति में, युद्ध में, स्त्री का दिखना दोष नहीं ।
विभीषण, उसे शीघ्र मेरे पास लाओ । सीता मुझे मेरे
मित्रों के बीच खड़ा देखे ।

SUBTITLE No woman is shamed by being seen
in calamity or in war.
Bring her near me, Vibhishana:
let Sita see me among my friends.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (6.102.27-29) में है। प्रचलित 6.114.30 का पाठ अलग है: वह पालकी छोड़कर पैदल आए, और
वनवासी उसे मेरे पास देखें।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (6.102.27-29). The popular 6.114.30 reads otherwise: let her leave the palanquin and come on foot, and let the forest-dwellers see her near me.

॥ 6.114.31–34 ॥
CrEd 6.102.30–33

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.114.34–35 ॥
CrEd 6.102.34

सीता SITA

वाल्मीकि सा वस्त्रसंरुद्धमुखी लज्जया जनसंसदि ।
रुरोदासाद्य भर्तारम् आर्यपुत्रेति भाषिणी ॥

लीला आर्यपुत्र!

SUBTITLE Aryaputra!

TRANSLATION *Her face hidden in her garment
for shame before the gathering,
she came to her husband and wept,
crying, "Aryaputra!"*

यह श्लोक CrEd का है (6.102.34); प्रचलित पाठ उनके पास आने की बात (6.114.34-35) इसके बिना कहता है।

This verse is the CrEd's (6.102.34); the popular text tells of her coming to him (6.114.34-35) without it.

॥ 6.114.35–36 ॥
CrEd 6.102.35–36

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.115.2 ॥
CrEd 6.103.2

राम R A M A

वाल्मीकि एषासि निर्जिता भद्रे शत्रुं जित्वा मया रणे ।
पौरुषाद् यद् अनुष्ठेयं तद् एतद् उपपादितम् ॥

TRANSLATION *Here you are, won back, good lady,
for I have beaten the enemy in battle.
What manhood had to accomplish,
that I have brought about.*

लीला भद्रे, रण में शत्रु को जीतकर मैंने तुम्हें जीत लिया
है। पुरुषार्थ से जो करना था, वह मैंने कर दिया।

SUBTITLE Here you are, lady, won back:
I have beaten the enemy in battle.
What a man's valour had to do,
I have done.

॥ 6.115.10,
6.115.12 ॥
CrEd 6.103.10-12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.115.15 ॥
CrEd 6.103.15

राम R A M A

वाल्मीकि विदितश् चास्तु भद्रं ते योऽयं रणपरिश्रमः ।
स तीर्णः सुहृदां वीर्यान् न त्वदर्थं मया कृतः ॥

TRANSLATION *Let it be known to you, and fortune be with you:
this toil of war that I
have crossed by my friends' valour
was not undertaken for your sake.*

लीला यह जान लो, तुम्हारा कल्याण हो, मित्रों के पराक्रम
से पार किया गया यह युद्ध का परिश्रम मैंने तुम्हारे
लिए नहीं किया।

SUBTITLE Know this, and may it go well with you:
this labour of war, won by my
friends' valour,
was not done for your sake.

राम R A M A

वाल्मीकि रक्षता तु मया वृत्तम् अपवादं च सर्वशः ।
प्रख्यातस्यात्मवंशस्य न्यङ्गं च परिमार्जता ।
प्राप्तचारित्रसंदेहा मम प्रतिमुखे स्थिता ।
दीपो नेत्रातुरस्येव प्रतिकूलासि मे दृढम् ॥

TRANSLATION *It was done to guard my conduct
and ward off reproach on every side,
and to wipe away the slur
upon my own illustrious line.
With doubt fallen on your conduct
you stand before my face,
and, like a lamp to one with ailing eyes,
you are deeply painful to me.*

लीला अपने आचरण की रक्षा के लिए, अपने प्रसिद्ध वंश
का कलंक धोने के लिए मैंने यह किया। तुम्हारे
चरित्र पर संदेह है। मेरे सामने खड़ी तुम मुझे वैसे
ही चुभती हो जैसे दुखती आँखों को दीपक।

SUBTITLE I did it to guard my honour,
to clear the stain on my famous house.
Your conduct is in doubt:
a lamp to sore eyes.

॥ 6.115.18 ॥
CrEd 6.103.18

राम R A M A

वाल्मीकि तद् गच्छ ह्य् अभ्यनुज्ञाता यथेष्टं जनकात्मजे ।
एता दश दिशो भद्रे कार्यम् अस्ति न मे त्वया ॥

TRANSLATION *So go, then, with my leave,
wherever you wish, daughter of Janaka.
Here are the ten directions, lady;
I have no use for you.*

लीला इसलिए, जनकनन्दिनी, जहाँ चाहो जाओ, मेरी
अनुमति है। भद्रे, ये दसों दिशाएँ खुली हैं। मुझे
तुमसे कोई प्रयोजन नहीं।

SUBTITLE So go where you will, daughter of Janaka:
you have my leave.
Here are the ten directions, lady.
I have no use for you.

राम R A M A

वाल्मीकि कः पुमान् हि कुले जातः स्त्रियं परगृहोषिताम् ।
तेजस्वी पुनर् आदद्यात् सुहृल्लेखेन चेतसा ।
रावणाङ्कपरिभ्रष्टां दृष्टां दुष्टेन चक्षुषा ।
कथं त्वां पुनर् आदद्यां कुलं व्यपदिशन् महत् ॥

TRANSLATION *For what man of spirit,
born in a noble house,
would take back, with a fond heart,
a woman who has lived in another's home?
Fallen from Ravana's lap,
looked upon by his wicked eye,
how could I take you back,
I who claim a great house?*

लीला कौन कुलीन, तेजस्वी पुरुष पराए घर में रही स्त्री को
फिर अपनाएगा? रावण ने तुम्हें अपनी भुजाओं में
जकड़ा, उसकी दुष्ट दृष्टि तुम पर पड़ी। अपने महान
कुल का नाम लेकर मैं तुम्हें फिर कैसे अपनाऊँ?

SUBTITLE What man of good birth takes back
a wife who lived in another's house?
Held in Ravana's arms, seen by his evil eye,
how could I?

राम R A M A

वाल्मीकि इति प्रव्याहृतं भद्रे मयैतत् कृतबुद्धिना ।
लक्ष्मणे भरते वा त्वं कुरु बुद्धिं यथासुखम् ।
सुग्रीवे वानरेन्द्रे वा राक्षसेन्द्रे विभीषणे ।
निवेशय मनः सीते यथा वा सुखम् आत्मनः ॥

TRANSLATION *This I have spoken, lady,
with my mind made up.
Turn your thoughts to Lakshmana,
or to Bharata, as you please;
or on Sugriva, lord of monkeys,
or Vibhishana, lord of rakshasas,
set your heart, Sita,
or as best pleases you yourself.*

लीला भद्रे, यह मैंने सोच-समझकर कहा है। चाहो तो
लक्ष्मण या भरत में मन लगाओ, या वानरराज
सुग्रीव में, या राक्षसराज विभीषण में, सीते, जहाँ
तुम्हें सुख मिले।

SUBTITLE I say this with my mind made up.
Set your heart on Lakshmana or Bharata,
on Sugriva or Vibhishana, Sita,
wherever you find your ease.

प्रचलित पाठ शत्रुघ्न का नाम भी लेता है (6.115.23); CrEd में लक्ष्मण, भरत, सुग्रीव और विभीषण के नाम हैं।

The popular text names Shatrughna as well (6.115.23); the CrEd names Lakshmana, Bharata, Sugriva and Vibhishana.

॥ 6.115.24 ॥
CrEd 6.103.24

राम R A M A

वाल्मीकि न हि त्वां रावणो दृष्ट्वा दिव्यरूपां मनोरमाम् ।
मर्षयते चिरं सीते स्वगृहे परिवर्तिनीम् ॥

TRANSLATION *For Ravana, seeing you,
of heavenly form, delighting the heart,
would not long have borne it, Sita,
with you living in his house.*

॥ 6.115.25,
6.116.1-3 ॥
CrEd 6.103.25,
6.104.1-3

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.116.4 ॥
CrEd 6.104.4

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.116.5 ॥
CrEd 6.104.5

सीता S I T A

वाल्मीकि किं माम् असदृशं वाक्यम् ईदृशं श्रोत्रदारुणम् ।
रूक्षं श्रावयसे वीर प्राकृतः प्राकृताम् इव ॥

TRANSLATION *Why do you make me hear such words,
unfit for me, cruel to the ear,
harsh words, hero, as a common man
might speak to a common woman?*

लीला सीते, तुम्हारा दिव्य, मनोहर रूप देखकर, अपने घर
में रहती तुम्हें रावण ने देर तक छोड़ा न होगा।

SUBTITLE Seeing your beauty, Sita,
lovely as a goddess's,
Ravana would not have let you be for long,
living in his house.

लीला वीर, आप मुझे ऐसे अनुचित, कानों को चीरते कठोर
वचन क्यों सुना रहे हैं, जैसे कोई साधारण पुरुष
किसी साधारण स्त्री से कहता है?

SUBTITLE Why, hero, do you make me hear
words so unworthy, harsh, cruel to the ear,
as a common man
to a common woman?

॥ 6.116.6 ॥
CrEd 6.104.6

सीता SITA

वाल्मीकि न तथास्मि महाबाहो यथा त्वम् अवगच्छसि ।
प्रत्ययं गच्छ मे स्वेन चारित्र्येणैव ते शपे ॥

TRANSLATION *I am not as you take me,
mighty-armed one.
Have faith in me: by my own conduct
I swear it to you.*

लीला महाबाहु, मैं वैसी नहीं हूँ जैसा आप समझते हैं।
मुझ पर विश्वास कीजिए, मैं अपने चरित्र की शपथ
लेती हूँ।

SUBTITLE I am not what you take me for,
strong-armed one.
Trust me:
I swear it by my own conduct.

॥ 6.116.7 ॥
CrEd 6.104.7

सीता SITA

वाल्मीकि पृथक् स्त्रीणां प्रचारेण जातिं त्वं परिशङ्कसे ।
परित्यजेमां शङ्कां तु यदि तेऽहं परीक्षिता ॥

TRANSLATION *From the ways of other women
you suspect all womankind.
Cast off this doubt, if ever
you have tried me and known me.*

लीला कुछ स्त्रियों के आचरण से आप सारी स्त्री-जाति पर
संदेह करते हैं। यदि आपने मुझे कभी परखा है, तो
यह संदेह छोड़ दीजिए।

SUBTITLE For the ways of a few women
you suspect us all.
If you have ever truly known me,
put this doubt away.

सीता SITA

वाल्मीकि यद्य् अहं गात्रसंस्पर्शं गतास्मि विवशा प्रभो ।
कामकारो न मे तत्र दैवं तत्रापराध्यति ।
मदधीनं तु यत् तन् मे हृदयं त्वयि वर्तते ॥

TRANSLATION *If I came to be touched in body,
I came to it helpless, my lord;
it was not by my own will:
fate is the one at fault there.
What lay in my power, my heart,
that dwells with you.*

लीला प्रभु, यदि मेरे शरीर का स्पर्श हुआ, तो मैं विवश
थी। उसमें मेरी इच्छा न थी, दोष दैव का है। जो मेरे
वश में था, मेरा हृदय, वह सदा आप में ही रहा।

SUBTITLE If my body was touched, lord,
I was helpless: fate, not my will.
My heart, the one thing in my power,
was always with you.

सीता SITA

वाल्मीकि प्रेषितस् ते यदा वीरो हनूमान् अवलोककः ।
लङ्कास्थाहं त्वया वीर किं तदा न विसर्जिता ।
प्रत्यक्षं वानरेन्द्रस्य त्वद्वाक्यसमनन्तरम् ।
त्वया संत्यक्तया वीर त्यक्तं स्याज् जीवितं मया ॥

TRANSLATION *When you sent the hero Hanuman
to look for me,
why, hero, did you not cast me off then,
while I was still in Lanka?
Before the eyes of that monkey lord,
the moment I heard your word,
cast off by you, hero,
I would have given up my life.*

लीला जब आपने वीर हनुमान को मुझे खोजने लंका
भेजा था, तभी मुझे क्यों नहीं त्याग दिया? आपका
वचन सुनते ही मैं उन वानरश्रेष्ठ के सामने ही प्राण
त्याग देती।

SUBTITLE When you sent Hanuman to find me
in Lanka,
why not cast me off then?
Before his very eyes
I would have given up my life.

॥ 6.116.14 ॥
CrEd 6.104.14

सीता SITA

वाल्मीकि त्वया तु नरशार्दूल क्रोधम् एवानुवर्तता ।
लघुनेव मनुष्येण स्त्रीत्वम् एव पुरस्कृतम् ॥

TRANSLATION *But you, tiger among men,
following your anger alone,
like a petty man have set
my womanhood alone before you.*

लीला पर नरशार्दूल, आपने किसी ओछे मनुष्य की भाँति
क्रोध के वश होकर मुझमें केवल एक स्त्री देखी।

SUBTITLE But you, tiger among men,
gave way to anger
like a lesser man,
and saw in me only a woman.

सीता SITA

वाल्मीकि अपदेशेन जनकान् नोत्पत्तिर् वसुधातलात् ।
मम वृत्तं च वृत्तज्ञ बहु ते न पुरस्कृतम् ।
न प्रमाणीकृतः पाणिर् बाल्ये बालेन पीडितः ।
मम भक्तिश् च शीलं च सर्वं ते पृष्ठतः कृतम् ॥

TRANSLATION *That I am called Janaka's in name alone,
that my birth was from the earth,
and my conduct, you who know conduct,
you have not weighed for much.
The hand you pressed in childhood,
yourself a child, you have not honoured;
my devotion and my nature,
all of it you have put behind you.*

लीला आपने न यह सोचा कि मेरा जन्म धरती से हुआ, न
बचपन में थामा मेरा हाथ, न मेरी भक्ति, न मेरा
शील। सब आपने पीछे छोड़ दिया।

SUBTITLE My birth from the earth,
the hand you took when we were young,
my devotion, my character:
you have put it all behind you.

॥ 6.116.18-19 ॥

CrEd 6.104.18-19

condensed
from 6.116.18-
19

सीता SITA

वाल्मीकि चितां मे कुरु सौमित्रे व्यसनस्यास्य भेषजम् ।
मिथ्यापवादोपहता नाहं जीवितुम् उत्सहे ।
अप्रीतस्य गुणैर् भर्तुस् त्यक्तया जनसंसदि ।
या क्षमा मे गतिर् गन्तुं प्रवेक्ष्ये हव्यवाहनम् ॥

TRANSLATION *Build me a pyre, Saumitri,
the cure for this calamity.
Struck down by a false charge,
I have no heart to live.
Cast off before the assembly
by a husband not pleased with my virtues,
I will go the way that is fitting:
I will enter the fire.*

लीला सौमित्र, मेरे लिए चिता बनाओ, इस दुख की यही
औषधि है। झूठे कलंक से आहत होकर मैं जीना
नहीं चाहती। मैं अग्नि में प्रवेश करूँगी।

SUBTITLE Build me a pyre, Saumitri:
the only cure for this sorrow.
Struck by a false charge, I will not live.
I will enter the fire.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (6.104.18-19) में है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (6.104.18-19).

॥ 6.116.21 ॥

CrEd 6.104.20-21

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.116.21–22 ॥
CrEd 6.104.21

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 6.116.22

No friend could plead with Rama, who looked like Death at the end of time, or speak to him,
or even look at him.

॥ 6.116.23–24 ॥
CrEd 6.104.22–23

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.116.25 ॥
CrEd 6.104.24

सीता SITA

वाल्मीकि यथा मे हृदयं नित्यं नापसर्पति राघवात् ।
तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वतः पातु पावकः ॥

TRANSLATION *As my heart never once
strays away from Raghava,
so may Fire, witness of the world,
protect me on every side.*

लीला जैसे मेरा हृदय कभी राघव से विमुख नहीं हुआ,
वैसे ही लोक के साक्षी अग्निदेव मेरी सब ओर से
रक्षा करें।

SUBTITLE As my heart has never once
turned from Raghava,
so may Agni, the world's witness,
guard me on every side.

॥ 6.116.29–36 ॥
CrEd 6.104.25–27

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 6.116.31–35

The popular text adds that she shone like new-molten gold as she fell into the fire, and that the
three worlds watched her fall like an oblation of ghee.



PART 2 · भाग 2

Agni

Valmiki 6.117–119 (CrEd 6.105–107)

VALMIKI

THE LEELA

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.117.1

The popular text says that Rama, hearing the cry as she entered the fire, stood a moment in thought, his eyes full of tears.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.118.11

Before he answers Agni, the popular text again has Rama stand a moment in thought, his eyes full of tears, now glad at heart.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.119.34, 6.119.36

In the popular text Sita stands with joined palms as Dasharatha speaks to her; he calls her "daughter", and tells her that her deed, so hard to do, will outshine the fame of all other women.

CrEd Valmiki 6.119.37 (CrEd 6.107.35)

Dasharatha's last words to Sita, "You need no teaching about serving your husband, but I must say it: he is your highest god," are in the CrEd, and are not staged here.

CrEd Valmiki 6.120 (CrEd 6.108)

Next, at Rama's asking, Indra brings the fallen monkeys and bears back to life, whole, as if from sleep.

॥ 6.117.1 ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.117.2-5 ॥

CrEd 6.105.1-4

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.117.5-7 ॥

CrEd 6.105.5

देवता GODS

वाल्मीकि कर्ता सर्वस्य लोकस्य श्रेष्ठो ज्ञानवतां वरः ।
उपेक्षसे कथं सीतां पतन्तीं हव्यवाहने ।
कथं देवगणश्रेष्ठम् आत्मानं नावबुध्यसे ॥

TRANSLATION *Maker of the whole world,
highest, best of those who know,
how can you look on unmoved at Sita
as she falls into the fire?
How do you not know yourself,
the best of all the hosts of gods?*

लीला सारे लोक के कर्ता, ज्ञानियों में श्रेष्ठ, आप अग्नि में
गिरती सीता की उपेक्षा कैसे कर रहे हैं? देवताओं में
श्रेष्ठ अपने आप को आप क्यों नहीं पहचानते?

SUBTITLE *Maker of all the world, first of the wise,
how can you stand by
as Sita falls into the fire?
How can you not know yourself?*

॥ 6.117.9-10 ॥
CrEd 6.105.8

देवता GODS

वाल्मीकि अन्ते चादौ च लोकानां दृश्यसे त्वं परंतप ।
उपेक्षसे च वैदेहीं मानुषः प्राकृतो यथा ॥

TRANSLATION *At the end and at the beginning
of the worlds, scorcher of foes, you are seen;
and you look past Vaidehi
like some common mortal man.*

लीला लोकों के आदि और अंत में आप ही दिखते हैं, और
आप वैदेही को एक साधारण मनुष्य की भाँति देख
रहे हैं!

SUBTITLE You are seen at the end of the worlds
and at their beginning,
and you look on Vaidehi
like an ordinary man!

॥ 6.117.11-12 ॥
CrEd 6.105.10

राम RAMA

वाल्मीकि आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् ।
योऽहं यस्य यतश् चाहं भगवांस् तद् ब्रवीतु मे ॥

TRANSLATION *I think of myself as a man,
Rama, the son of Dasharatha.
Who I am, whose I am, and from where,
let the Blessed One tell me that.*

लीला मैं तो अपने को मनुष्य ही मानता हूँ, दशरथ का पुत्र
राम। मैं कौन हूँ, किसका हूँ, कहाँ से आया हूँ, यह
भगवान ही मुझे बताएँ।

SUBTITLE I think of myself as a man,
Rama, son of Dasharatha.
Who I am, whose, and from where:
let the lord tell me.

ब्रह्मा BRAHMA

वाल्मीकि इति ब्रुवाणं काकुत्स्थं ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ।
अब्रवीच् छृणु मे राम सत्यं सत्यपराक्रम ।
भवान् नारायणो देवः श्रीमांश् चक्रायुधो विभुः ।
एकशृङ्गो वराहस् त्वं भूतभव्यसपत्नजित् ॥

TRANSLATION *To Kakutstha, speaking so,
Brahma, best of those who know Brahman,
said: “Hear the truth from me, Rama,
you whose valour is truth.
You are the god Narayana,
glorious, discus-armed, the lord;
you are the one-tusked Boar,
conqueror of foes past and to come.”*

लीला सत्यपराक्रमी राम, मुझसे सत्य सुनिए।
आप भगवान नारायण हैं, श्रीमान्, चक्रधारी,
सर्वव्यापी प्रभु।

SUBTITLE Hear the truth from me, Rama,
true in valour:
you are Narayana, the glorious god,
who bears the discus.

संस्कृत यहाँ पूरी दी गई है, जैसी CrEd (6.105.11-12) में है; दृश्य की पंक्ति “सुनिए” से शुरू होती है।

The Sanskrit is given in full as the CrEd has it (6.105.11-12); the scene's line begins at “hear”.

॥ 6.117.28–29 ॥
CrEd 6.105.25–26

ब्रह्मा BRAHMA

वाल्मीकि सीता लक्ष्मीर् भवान् विष्णुर् देवः कृष्णः प्रजापतिः ।
वधार्थं रावणस्येह प्रविष्टो मानुषीं तनुम् ॥

TRANSLATION *Sita is Lakshmi, and you are Vishnu,
the god, the dark one, lord of creatures;
to slay Ravana you have entered
here into a human body.*

लीला सीता लक्ष्मी हैं, और आप विष्णु हैं, श्यामवर्ण देव,
प्रजापति, जो रावण के वध के लिए यहाँ मनुष्य-देह
में आए हैं।

SUBTITLE Sita is Lakshmi,
and you are Vishnu, the dark god,
who entered a human body here
to slay Ravana.

॥ 6.118.1–4 ॥
CrEd 6.106.1–3

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only · not in the CrEd 6.118.2

In the popular text the fire god shakes off the pyre and rises in bodily form, holding Janaki.

अग्नि AGNI

वाल्मीकि एषा ते राम वैदेही पापम् अस्या न विद्यते ।
नैव वाचा न मनसा नानुध्यानान् न चक्षुषा ।
सुवृत्ता वृत्तशौण्डीरा न त्वाम् अतिचचार ह ॥

TRANSLATION *Here is your Vaidehi, Rama;
no sin is found in her.
Not by word, nor by mind,
nor by thought, nor by eye
has she, so good, so proud in goodness,
ever strayed from you.*

लीला राम, ये रहीं तुम्हारी वैदेही। इनमें कोई पाप नहीं। न
वाणी से, न मन से, न विचार से, न दृष्टि से इन्होंने
कभी तुम्हारा अतिक्रमण किया।

SUBTITLE Here is your Vaidehi, Rama.
There is no sin in her.
Not by word, mind, thought or glance
has she ever strayed from you.

॥ 6.118.9-10 ॥
CrEd 6.106.8-9

अग्नि AGNI

वाल्मीकि प्रलोभ्यमाना विविधं भर्त्स्यमाना च मैथिली ।
नाचिन्तयत तद् रक्षस् त्वद्गतेनान्तरात्मना ।
विशुद्धभावां निष्पापां प्रतिगृहीष्व राघव ।
न किं चिद् अभिधातव्यम् अहम् आज्ञापयामि ते ॥

TRANSLATION *Tempted in many ways
and threatened, Maithili
gave that rakshasa no thought,
her inmost soul gone to you.
Pure in heart, without sin,
take her back, Raghava.
Nothing need be said;
I command you.*

लीला अनेक प्रलोभनों और धमकियों के बीच भी मैथिली
ने उस राक्षस का विचार तक नहीं किया। इनका
अन्तर्मन तुममें ही लगा रहा। राघव, इन निष्पाप,
शुद्धहृदया को स्वीकार करो। कुछ कहने की
आवश्यकता नहीं। यह मेरी आज्ञा है।

SUBTITLE *Tempted and threatened, she never gave
that rakshasa a thought:
her heart was yours.
Take her back, pure and sinless.
Say nothing: I command it.*

॥ 6.118.11 ॥

SILENT MOMENT मौन क्षण

राम R A M A

वाल्मीकि अवश्यं त्रिषु लोकेषु सीता पावनम् अर्हति ।
दीर्घकालोषिता चेयं रावणान्तःपुरे शुभा ।
बालिशः खलु कामात्मा रामो दशरथात्मजः ।
इति वक्ष्यन्ति मां सन्तो जानकीम् अविशोध्य हि ॥

TRANSLATION *Surely, before the three worlds,
Sita had to be shown pure,
for this good lady dwelt long
in Ravana's inner palace.
"A fool indeed, ruled by desire,
is Rama, son of Dasharatha":
so the good would say of me,
had I not proved Janaki pure.*

लीला सीता बहुत समय रावण के अन्तःपुर में रहीं। तीनों
लोकों के सामने इनका शुद्ध होना आवश्यक था।
नहीं तो सज्जन कहते, दशरथपुत्र राम कामी है,
मूर्ख है।

SUBTITLE She lived long in Ravana's palace:
she had to be cleared before the worlds,
or the good would call Rama
a fool ruled by desire.

॥ 6.118.15,
6.118.17 ॥

CrEd 6.106.13–14

condensed
from 6.118.15,
6.118.17

राम R A M A

वाल्मीकि अनन्यहृदयां भक्तां मच्चित्तपरिरक्षणीम् ।
अहम् अप्य् अवगच्छामि मैथिलीं जनकात्मजाम् ।
प्रत्ययार्थं तु लोकानां त्रयाणां सत्यसंश्रयः ।
उपेक्षे चापि वैदेहीं प्रविशन्तीं हुताशनम् ॥

TRANSLATION *I too know that Maithili,
Janaka's daughter, has no heart for another,
that she is devoted to me
and keeps faith with my heart.
But for the trust of the three worlds,
I, who hold to truth,
looked on and let Vaidehi
enter the fire.*

लीला मैं भी जानता हूँ कि मैथिली का हृदय केवल मेरा है,
मुझमें ही अनुरक्त। तीनों लोकों के विश्वास के लिए
ही, सत्य का आश्रय लेकर, मैंने इन्हें अग्नि में प्रवेश
करते देखा और रोका नहीं।

SUBTITLE I too know Maithili's heart
is mine alone.
For the trust of the three worlds
I stood by as she entered the fire.

CrEd में ये श्लोक साथ-साथ हैं (6.106.13-14); प्रचलित पाठ इनके बीच 6.118.16 रखता है।

The CrEd has these verses together (6.106.13-14); the popular text puts 6.118.16 between them.

॥ 6.118.19-20 ॥
CrEd 6.106.17-18

राम R A M A

वाल्मीकि अनन्या हि मया सीता भास्करेण प्रभा यथा ।
विशुद्धा त्रिषु लोकेषु मैथिली जनकात्मजा ।
न हि हातुम् इयं शक्या कीर्तिर् आत्मवता यथा ॥

TRANSLATION *Sita is not apart from me,
as light is not apart from the sun;
Maithili, Janaka's daughter,
is pure throughout the three worlds.
She can no more be given up
than fame by a man who is master of himself.*

लीला जैसे सूर्य से उसकी प्रभा अलग नहीं, वैसे ही सीता
मुझसे अलग नहीं। तीनों लोकों में शुद्ध
जनकनन्दिनी को मैं वैसे ही नहीं त्याग सकता, जैसे
आत्मवान पुरुष अपनी कीर्ति नहीं त्यागता।

SUBTITLE Sita is no more apart from me
than light from the sun.
I could no more give her up
than my own good name.

॥ 6.118.22 ॥
CrEd 6.106.20

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.119.7-8 ॥
CrEd 6.107.7-8

शिव SHIVA

वाल्मीकि एष राजा विमानस्थः पिता दशरथस् तव ।
काकुत्स्थ मानुषे लोके गुरुस् तव महायशः ।
इन्द्रलोकं गतः श्रीमांस् त्वया पुत्रेण तारितः ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा त्वम् एनम् अभिवादय ॥

TRANSLATION *Here, in the sky-chariot, is the king,
Dasharatha, your father,
your elder in the world of men,
Kakutstha, of great renown.
Saved by you, his son, the glorious one
has gone to Indra's world.
Together with your brother Lakshmana,
bow down to him.*

लीला काकुत्स्थ, वह देखो, विमान में तुम्हारे पिता राजा
दशरथ हैं, जिन्हें तुमने पुत्र होकर इन्द्रलोक
पहुँचाया। भाई लक्ष्मण के साथ उन्हें प्रणाम करो।

SUBTITLE Kakutstha, there in his vimana is
your father,
King Dasharatha,
whom you, his son, carried to
Indra's heaven.
Bow to him, with Lakshmana.

॥ 6.119.9-12 ॥
CrEd 6.107.9-12

SILENT MOMENT मौन क्षण

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि कैकेय्या यानि चोक्तानि वाक्यानि वदतां वर ।
तव प्रव्राजनार्थानि स्थितानि हृदये मम ।
त्वां तु दृष्ट्वा कुशलिनं परिष्वज्य सलक्ष्मणम् ।
अद्य दुःखाद् विमुक्तोऽस्मि नीहाराद् इव भास्करः ॥

TRANSLATION *The words that Kaikeyi spoke,
best of speakers,
to send you into exile
have stayed fixed in my heart.
But seeing you safe and well,
embracing you with Lakshmana,
today I am freed from sorrow,
as the sun is from the mist.*

लीला तुम्हें वन भेजने के लिए कैकेयी ने जो वचन कहे थे,
वे मेरे हृदय में गड़े रहे। आज तुम्हें कुशल देखकर,
लक्ष्मण सहित गले लगाकर, मैं दुख से वैसे ही
मुक्त हूँ, जैसे कुहासे से सूर्य।

SUBTITLE Kaikeyi's words that sent you away
stayed in my heart.
Holding you safe, with Lakshmana,
I am free of grief, like the sun from mist.

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि सिद्धार्था खलु कौसल्या या त्वां राम गृहं गतम् ।
वनान् निवृत्तं संहृष्टा द्रक्ष्यते शत्रुसूदन ।
सिद्धार्थाः खलु ते राम नरा ये त्वां पुरीं गतम् ।
जलार्द्रम् अभिषिक्तं च द्रक्ष्यन्ति वसुधाधिपम् ॥

TRANSLATION *Blessed indeed is Kausalya,
who, full of joy, will see you, Rama,
come home, back from the forest,
slayer of foes.
Blessed indeed are those people, Rama,
who will see you in the city,
wet with the waters of anointing,
lord of the earth.*

लीला धन्य है कौसल्या, जो तुम्हें वन से लौटकर घर आया
देखेगी। धन्य हैं वे लोग, राम, जो तुम्हें नगर में
अभिषेक के जल से भीगा, पृथ्वीपति बना देखेंगे।

SUBTITLE Blessed is Kausalya:
she will see you home from the forest.
Blessed the people who will see you
king, wet with the anointing waters.

प्रचलित पाठ में है कि वे उन्हें राज्य पर अभिषिक्त देखेंगे (6.119.20); CrEd में “जलार्द्रम्” (अभिषेक के जल से भीगे) है (6.107.19)।

The popular text reads that they will see him anointed in the kingdom (6.119.20); the CrEd reads jalārdram, “wet with the waters of anointing” (6.107.19).

॥ 6.119.25-26 ॥
CrEd 6.107.24-25

राम R A M A

वाल्मीकि कुरु प्रसादं धर्मज्ञ कैकेय्या भरतस्य च ।
सपुत्रां त्वां त्यजामीति यद् उक्ता कैकयी त्वया ।
स शापः कैकयीं घोरः सपुत्रां न स्पृशेत् प्रभो ॥

TRANSLATION *Be gracious, knower of dharma,
to Kaikeyi and to Bharata.
"I cast you off, with your son":
so you said to Kaikeyi.
Let that terrible curse, my lord,
not touch Kaikeyi or her son.*

लीला धर्मज्ञ, कैकेयी और भरत पर कृपा कीजिए। आपने
कैकेयी से कहा था, "मैं तुम्हें पुत्र सहित त्यागता
हूँ।" प्रभु, वह भयंकर शाप पुत्र सहित कैकेयी को
न छुए।

SUBTITLE Be gracious to Kaikeyi and Bharata,
knower of dharma.
"I cast you off, and your son," you told her:
let that terrible curse not touch them.

॥ 6.119.27 ॥
CrEd 6.107.26

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.119.35 ॥
CrEd 6.107.34

6.119.34:
popular text
only · not in
the CrEd

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि कर्तव्यो न तु वैदेहि मन्युस् त्यागम् इमं प्रति ।
रामेण त्वद्विशुद्ध्यर्थं कृतम् एतद् धितैषिणा ॥

TRANSLATION *You must not hold anger, Vaidehi,
over this casting off;
Rama did this to show you pure,
he who wishes you well.*

लीला वैदेही, इस त्याग के प्रति मन में क्रोध न रखना ।
तुम्हारा हित चाहने वाले राम ने तुम्हारी शुद्धि के
लिए ही यह किया ।

SUBTITLE Vaidehi, do not hold anger
over this rejection.
Rama did it for your purification,
wishing you well.

प्रचलित पाठ में इससे ठीक पहले का श्लोक (6.119.34), जिसमें वे हाथ जोड़े खड़ी हैं और दशरथ उन्हें “पुत्री” कहते हैं, केवल प्रचलित पाठ में है। यहाँ दी गई संस्कृत CrEd का श्लोक (6.107.34) है।

The verse just before in the popular text (6.119.34), where she stands with joined palms and he calls her “daughter”, is the popular text's only. The Sanskrit shown is the CrEd verse (6.107.34).

॥ 6.119.36 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

दशरथ DASHARATHA

वाल्मीकि सुदुष्करम् इदं पुत्रि तव चारित्रलक्षणम् ।
कृतं यत् तेऽन्यनारीणां यशो ह्य् अभिभविष्यति ॥

TRANSLATION *This was most hard to do, daughter,
the very mark of your character;
what you have done will outshine
the fame of all other women.*

लीला पुत्री, तुमने जो किया, वह बहुत कठिन था। यह
तुम्हारे चरित्र की पहचान है। इसका यश दूसरी सब
स्त्रियों के यश से बढ़कर होगा।

SUBTITLE Daughter, what you have done
was very hard to do:
the mark of your character.
Its fame will outshine all other women's.

॥ 6.119.38,
6.118.22 ॥
CrEd 6.107.36,
6.106.20

SILENT MOMENT मौन क्षण

YUDDHA KANDA · युद्धकाण्ड

The coronation

राज्याभिषेक

—❖ Valmiki · Yuddha Kanda ❖—

6.127.16–6.128.106 (CrEd 6.115.14–6.116.90)

भरत राम की प्रतीक्षा करते हैं, और हनुमान उन्हें दूर से आता पुष्पक दिखाते हैं; नगर पुकार उठता है कि ये राम हैं। भरत धरोहर की तरह सँभाला हुआ राज्य लौटा देते हैं, और राम, जिन्होंने चित्रकूट में उसे लेने से मना किया था, अब स्वीकार कर लेते हैं। उनका अभिषेक होता है, सीता अपना हार हनुमान को देती हैं, और राम लक्ष्मण से युवराज बनकर राज्य में साथ देने को कहते हैं।

Bharata waits for Rama, and Hanuman shows him the Pushpaka coming from afar; the city cries out that this is Rama. Bharata gives back the kingdom he has kept as a trust, and Rama, who refused it at Chitrakuta, now accepts it. He is crowned, Sita gives her necklace to Hanuman, and Rama asks Lakshmana to share the rule as heir.

१



PART 1 · भाग 1

The coronation

Valmiki 6.127.16–6.128.106 (CrEd 6.115.14–6.116.90)

popular text only · not in the CrEd Valmiki 6.128.64–67

The popular text crowns him: Vasishtha sets on Rama's head the jewelled crown that Brahma made, with which Manu and the kings of his line were consecrated. In the CrEd the consecration is with waters alone.

Uttara · later layer Valmiki 7.1–7.36 (CrEd 7.1–7.36)

After the coronation the sages of the four quarters, led by Agastya, come to greet the crowned Rama. Rama asks how Indrajit could be stronger than Ravana, and Agastya tells the history of Ravana's line, and then Hanuman's boyhood. These tales are the Uttara Kanda's; the Yuddha Kanda of the CrEd ends with the reign.

॥ 6.127.16–20 ॥
CrEd 6.115.14–15

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.127.23 ॥
CrEd 6.115.17

भरत BHARATA

वाल्मीकि कच्चिन् न खलु कापेयी सेव्यते चलचित्तता ।
न हि पश्यामि काकुत्स्थं रामम् आर्य परंतपम् ॥

TRANSLATION *Is it not, perhaps, a monkey's
fickleness of mind at play?
For I do not see Kakutstha,
noble Rama, scorcher of foes.*

लीला कहीं यह वानरों की चंचलता तो नहीं? मुझे
काकुत्स्थ, शत्रुओं को तपाने वाले आर्य राम कहीं
दिखाई नहीं देते।

SUBTITLE Can this be
a monkey's fickle mind at play?
For I do not see
noble Rama, scourge of his foes.

॥ 6.127.29 ॥
CrEd 6.115.23

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि तद् एतद् दृश्यते दूराद् विमलं चन्द्रसंनिभम् ।
विमानं पुष्पकं दिव्यं मनसा ब्रह्मनिर्मितम् ॥

TRANSLATION *There it is, seen from afar,
spotless, like the moon:
the heavenly chariot Pushpaka,
made by Brahma with his mind.*

लीला वह देखिए, दूर, चन्द्रमा-सा निर्मल, दिव्य पुष्पक
विमान, जिसे ब्रह्मा ने मन से रचा था।

SUBTITLE There, far off,
clear as the moon:
the divine Pushpaka,
made by Brahma's mind.

॥ 6.127.31 ॥
CrEd 6.115.25

हनुमान HANUMAN

वाल्मीकि एतस्मिन् भ्रातरौ वीरौ वैदेह्या सह राघवौ ।
सुग्रीवश् च महातेजा राक्षसेन्द्रो विभीषणः ॥

TRANSLATION *In it are the two hero brothers,
the Raghavas, with Vaidehi,
and Sugriva of great splendour,
and Vibhishana, lord of rakshasas.*

लीला उसमें दोनों वीर भाई राघव हैं, वैदेही के साथ, और
महातेजस्वी सुग्रीव, और राक्षसराज विभीषण।

SUBTITLE In it, the two heroes of Raghu's line,
with Vaidehi;
mighty Sugriva,
and Vibhishana, lord of the rakshasas.

॥ 6.127.32 ॥
CrEd 6.115.26

नगरवासी CITIZENS

वाल्मीकि ततो हर्षसमुद्भूतो निस्वनो दिवम् अस्पृशत् ।
स्त्रीबालयुववृद्धानां रामोऽयम् इति कीर्तितः ॥

TRANSLATION *Then a cry born of joy
rose up and touched the sky,
from women, children, young and old:
“This is Rama!” they proclaimed.*

लीला ये राम हैं!

SUBTITLE It is Rama!

॥ 6.127.33–36 ॥
CrEd 6.115.27–30

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.127.38–39 ॥
CrEd 6.115.31–32

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.127.48 ॥
CrEd 6.115.38

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.127.49 ॥
CrEd 6.115.39

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.127.50 ॥
CrEd 6.115.40

नगरवासी CITIZENS

वाल्मीकि स्वागतं ते महाबाहो कौसल्यानन्दवर्धन ।
इति प्राञ्जलयः सर्वे नागरा रामम् अब्रुवन् ॥

TRANSLATION *“Welcome, mighty-armed one,
who make Kausalya’s joy grow!”
So, with joined palms, all the citizens
spoke to Rama.*

लीला महाबाहो, कौसल्या का आनन्द बढ़ाने वाले,
आपका स्वागत है!

SUBTITLE Welcome, mighty-armed one,
joy of Kausalya!

॥ 6.127.51 ॥
CrEd 6.115.41

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.127.52 ॥
CrEd 6.115.42

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.127.53 ॥
CrEd 6.115.43

भरत BHARATA

वाल्मीकि एतत् ते रक्षितं राजन् राज्यं निर्यातितं मया ॥

TRANSLATION *Here is your kingdom, king, kept safe;
I give it back to you.*

लीला राजन्, आपका यह राज्य, जिसकी मैंने रक्षा की,
अब आपको लौटाता हूँ।

SUBTITLE This kingdom, O king,
I kept safe for you.
Now I give it back.

॥ 6.127.54 ॥
CrEd 6.115.44

भरत BHARATA

वाल्मीकि अद्य जन्म कृतार्थं मे संवृत्तश् च मनोरथः ।
यस् त्वां पश्यामि राजानम् अयोध्यां पुनर् आगतम् ॥

TRANSLATION *Today my birth has found its purpose,
and my heart's wish has come to pass,
for I see you, my king,
returned again to Ayodhya.*

लीला आज मेरा जन्म सफल हुआ, मेरा मनोरथ पूरा हुआ,
कि मैं आपको, अपने राजा को, फिर अयोध्या लौटा
देख रहा हूँ।

SUBTITLE Today my birth has its meaning,
my heart's wish is granted:
I see you, my king,
home in Ayodhya.

॥ 6.127.55 ॥
CrEd 6.115.45

भरत BHARATA

वाल्मीकि अवेक्षतां भवान् कोशं कोष्ठागारं पुरं बलम् ।
भवतस् तेजसा सर्वं कृतं दशगुणं मया ॥

TRANSLATION *Look over the treasury,
the granaries, the city and the army;
by your power I have made
all of it tenfold.*

लीला आप कोष, अन्न-भण्डार, नगर और सेना देख
लीजिए। आपके तेज से मैंने सब कुछ दस गुना कर
दिया है।

SUBTITLE Look over the treasury, the granaries,
the city and the army.
By your power
I have made them all ten times greater.

॥ 6.127.56 ॥
CrEd 6.115.46

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.127.59 ॥
CrEd 6.115.49

राम RAMA

वाल्मीकि अब्रवीच् च तदा रामस् तद्विमानम् अनुत्तमम् ।
वह वैश्रवणं देवम् अनुजानामि गम्यताम् ॥

TRANSLATION *And then Rama said
to that peerless chariot:
“Carry the god Vaishravana.
I give you leave: go.”*

लीला जाओ, अपने स्वामी वैश्रवण देव को वहन करो। मैं
तुम्हें अनुमति देता हूँ, जाओ।

SUBTITLE Carry Vaishravana, your god.
You have my leave: go.

॥ 6.128.2 ॥
CrEd 6.116.2

भरत BHARATA

वाल्मीकि पूजिता मामिका माता दत्तं राज्यम् इदं मम ।
तद् ददामि पुनस् तुभ्यं यथा त्वम् अददा मम ॥

TRANSLATION *My mother was honoured,
and this kingdom was given to me;
I give it back to you again,
just as you gave it to me.*

लीला मेरी माता का मान रखा गया, और यह राज्य मुझे
दिया गया। अब मैं इसे आपको वैसे ही लौटाता हूँ,
जैसे आपने मुझे दिया था।

SUBTITLE *My mother was honoured;
this kingdom was given to me.
I give it back to you,
as you gave it to me.*

॥ 6.128.3 ॥
CrEd 6.116.3

भरत BHARATA

वाल्मीकि धुरम् एकाकिना न्यस्ताम् ऋषभेण बलीयसा ।
किशोरवद् गुरुं भारं न वोढुम् अहम् उत्सहे ॥

TRANSLATION *The yoke a mighty bull
once carried all alone,
that heavy load, like a young colt,
I have not the strength to bear.*

लीला जिस जुए को एक बलवान बैल अकेला ढोता
था, उस भारी बोझ को मैं बछड़े की तरह नहीं
उठा सकता।

SUBTITLE *A yoke a mighty bull
carried alone:
like a young calf,
I cannot bear the weight.*

॥ 6.128.9 ॥
CrEd 6.116.9

भरत BHARATA

वाल्मीकि जगद् अद्याभिषिक्तं त्वाम् अनुपश्यतु सर्वतः ।
प्रतपन्तम् इवादित्यं मध्याह्ने दीप्ततेजसम् ॥

TRANSLATION *Let the world, on every side,
look on you anointed today,
blazing in splendour like the sun
burning at midday.*

लीला आज सारा संसार आपको अभिषिक्त देखे, मध्याह्न
के सूर्य-सा दीप्त।

SUBTITLE Let the whole world see you
consecrated today,
blazing like the sun
at noon.

॥ 6.128.11 ॥
CrEd 6.116.11

भरत BHARATA

वाल्मीकि यावद् आवर्तते चक्रं यावती च वसुंधरा ।
तावत् त्वम् इह सर्वस्य स्वामित्वम् अभिवर्तय ॥

TRANSLATION *As long as the wheel turns,
and as far as the earth extends,
so long, here, hold
lordship over all.*

लीला जब तक चक्र घूमता है, और जहाँ तक पृथ्वी है, तब
तक आप यहाँ सबके स्वामी रहें।

SUBTITLE As long as the wheel turns,
as far as the earth reaches,
be lord here
of all.

॥ 6.128.12 ॥
CrEd 6.116.12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.128.12 ॥
CrEd 6.116.12

राम R A M A

वाल्मीकि भरतस्य वचः श्रुत्वा रामः परपुरंजयः ।
तथेति प्रतिजग्राह निषसादासने शुभे ॥

TRANSLATION *Hearing Bharata's words,
Rama, conqueror of enemy cities,
accepted, saying "So be it,"
and sat down on the auspicious seat.*

लीला तथास्तु।

SUBTITLE So be it.

॥ 6.128.12 ॥
CrEd 6.116.12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.128.60–63 ॥
CrEd 6.116.54–58

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.128.79–80 ॥
CrEd 6.116.69–70

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.128.81-82 ॥
CrEd 6.116.71-72a

राम R A M A

वाल्मीकि ताम् इङ्गितज्ञः संप्रेक्ष्य बभाषे जनकात्मजाम् ।
प्रदेहि सुभगे हारं यस्य तुष्टासि भामिनि ।
पौरुषं विक्रमो बुद्धिर् यस्मिन् एतानि नित्यदा ॥

TRANSLATION *He who could read her looks gazed at her,
Janaka's daughter, and said:
"Give the necklace, fortunate one,
to him you are pleased with, lovely lady,
in whom manliness, valour and wisdom
are always to be found."*

॥ 6.128.83-84 ॥
CrEd 6.116.72-73

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.128.93 ॥
CrEd 6.116.78

राम R A M A

वाल्मीकि आतिष्ठ धर्मज्ञ मया सहेमां गां पूर्वराजाध्युषितां बलेन ।
तुल्यं मया त्वं पितृभिर् धृता या तां यौवराज्ये धुरम् उद्वहस्व ॥

TRANSLATION *Take your stand with me, knower of dharma,
on this earth the kings of old
held by their strength; my equal,
take up as heir the yoke our fathers bore.*

लीला सुभगे, यह हार उसे दे दो, जिससे तुम प्रसन्न हो,
भामिनी, जिसमें पौरुष, पराक्रम और बुद्धि सदा
बसते हैं।

SUBTITLE Give the necklace, fortunate one,
to the one who has pleased you,
in whom courage, daring and wisdom
always live.

लीला धर्मज्ञ, मेरे साथ इस पृथ्वी पर स्थित हो, जिसे पूर्वज
राजाओं ने बल से धारण किया। मेरे समान होकर
युवराज-पद का भार उठाओ।

SUBTITLE Stand with me, knower of dharma,
on this earth our forefathers ruled.
As my equal,
take up the heir's yoke.

॥ 6.128.94 ॥
CrEd 6.116.79

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 6.128.95–106 ॥
CrEd 6.116.80–90

SILENT MOMENT मौन क्षण

popular text only, a later addition Valmiki 6.128.107–125

The popular text closes the Yuddha Kanda with the fruit of hearing it. Whoever reads or hears this ancient, righteous epic, which gives fame and long life, is freed from misfortune. Whoever hears of Rama's consecration gains what he wishes: sons and wealth; a king wins the earth, and a traveller fares well. Whoever listens with care, and holds back anger, crosses every difficulty and meets again the kin who were far away. It names Rama as Vishnu, and Lakshmana as Shesha. It brings long life, health, fame, brotherhood, wisdom, welfare and splendour. The CrEd has none of this: its Yuddha Kanda ends with the reign.

७

उत्तरकाण्ड

Uttara Kanda

1 STORY

UTTARA KANDA · उत्तरकाण्ड

The earth opens

धरती फटती है

—❧ Valmiki · Uttara Kanda ❧—

7.93.1–7.97.27 (CrEd 7.84.1–7.88.20)

राम के अश्वमेध यज्ञ में वाल्मीकि दो बालकों, कुश और लव, को राजा के सामने रामायण गाने भेजते हैं; राम अपनी ही कथा सुनते हैं और उनके चेहरों में अपना चेहरा देखते हैं। वे संदेश भेजते हैं कि सीता सभा के सामने अपनी शुद्धता प्रमाणित करें। वाल्मीकि उन्हें लाते हैं और उनकी निर्दोषता तथा जुड़वाँ बालकों के जन्म की शपथ लेते हैं, और सीता धरती को पुकारती हैं, जो उनके लिए खुल जाती है।

At Rama's horse sacrifice, Valmiki sends two boys, Kusha and Lava, to sing the Ramayana before the king; Rama hears his own story and sees his own face in theirs. He sends word that Sita may prove her purity before the assembly. Valmiki brings her and swears to her innocence and to the twins' birth, and Sita calls on the Earth, which opens for her.

१



PART 1 · भाग 1

The song in the court

Valmiki 7.93.1–7.95.17 (CrEd 7.84.1–7.86.16)

Uttara · later layer Valmiki 7.93–7.95 (CrEd 7.84–7.86)

This story is the Uttara Kanda's. Most scholars take the Uttara, like much of the Bala, to be later than books 2 to 6: the Yuddha Kanda closes with its own blessing on its hearers. Here Valmiki himself comes into his poem, and his pupils sing it to its hero.

the Bala Kanda Valmiki 1.4.13–36 (CrEd 1.4)

The Bala Kanda tells the song another way: the boys sing in the streets and the assemblies, and Rama brings them into his house to hear it with his brothers. That is its own story in Raam Leela.

॥ 7.93.14 ॥
CrEd 7.84.12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 7.93.5, 7 ॥

CrEd 7.84.3, 5

Uttara · later
layer

condensed
from 7.93.5, 7

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि स शिष्याव् अब्रवीद् धृष्टो युवां गत्वा समाहितौ ।
कृत्स्नं रामायणं काव्यं गायतां परया मुदा ।
रामस्य भवनद्वारि यत्र कर्म च वर्तते ।
ऋत्विजाम् अग्रतश् चैव तत्र गेयं विशेषतः ॥

TRANSLATION *Delighted, he said to his two pupils:
“Go, the two of you, attentive,
and sing the whole Ramayana poem
with the highest joy.
At the door of Rama’s palace,
where the rite is under way,
and before the priests:
there above all it should be sung.”*

लीला तुम दोनों जाओ, और पूरे आनन्द से सम्पूर्ण
रामायण काव्य गाओ। विशेष रूप से राम के भवन-
द्वार पर, ऋत्विजों के सामने गाना।

SUBTITLE Go, both of you,
and sing the whole Ramayana with joy,
above all at Rama's door,
before the priests.

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (7.84.3 और 5) में है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (7.84.3 and 5).

॥ 7.93.12 ॥

CrEd 7.84.10

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि लोभश् चापि न कर्तव्यः स्वल्पोऽपि धनकाङ्क्षया ।
किं धनेनाश्रमस्थानां फलमूलोपभोगिनाम् ॥

TRANSLATION *Nor should you be greedy,
even a little, from desire for wealth;
what use is wealth to those in a hermitage,
who live on fruit and roots?*

लीला धन का तनिक भी लोभ मत करना। फल-मूल
खाकर आश्रम में रहने वालों को धन से क्या काम?

SUBTITLE Do not crave wealth, not even a little.
What is gold to those
who live in a hermitage
on fruit and roots?

॥ 7.93.13 ॥

CrEd 7.84.11

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि यदि पृच्छेत् स काकुत्स्थो युवां कस्येति दारकौ ।
वाल्मीकेर् अथ शिष्यौ हि ब्रूताम् एवं नराधिपम् ॥

TRANSLATION *If Kakutstha should ask you,
“Whose are you, boys?”,
then say this to the king:
“We are Valmiki’s pupils.”*

लीला यदि काकुत्स्थ पूछें कि तुम किसके बालक हो,
तो राजा से इतना ही कहना, ‘हम वाल्मीकि के
शिष्य हैं।’

SUBTITLE If Kakutstha asks
whose boys you are,
tell the king only this:
'We are Valmiki's pupils.'

॥ 7.93.15 ॥
CrEd 7.84.13

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि आदिप्रभृति गेयं स्यान् न चावज्ञाय पार्थिवम् ।
पिता हि सर्वभूतानां राजा भवति धर्मतः ॥

TRANSLATION *Sing it from the beginning,
and do not slight the king;
for by dharma the king
is the father of all beings.*

लीला आरम्भ से गाना, और राजा का अनादर कभी मत
करना। धर्म के अनुसार राजा सभी प्राणियों का
पिता होता है।

SUBTITLE Sing from the beginning,
and never slight the king.
By dharma, a king
is the father of all beings.

॥ 1.1.2 ॥
CrEd 1.1.2

Uttara · later
layer

कुश KUSHA

वाल्मीकि को न्व् अस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश् च वीर्यवान् ।
धर्मज्ञश् च कृतज्ञश् च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥

TRANSLATION *Who in this world now
is virtuous, and who is valiant,
who knows dharma, who is grateful,
true in speech, and firm in his vows?*

लीला इस संसार में आज कौन गुणवान है, और कौन
पराक्रमी? कौन धर्मज्ञ है, कौन कृतज्ञ, सत्यवादी
और दृढव्रती?

SUBTITLE Who in the world today is virtuous,
and who is valiant?
Who knows dharma, who is grateful,
true in speech, firm in his vows?

॥ 1.1.8 ॥
CrEd 1.1.8

Uttara · later
layer

लव LAVA

वाल्मीकि इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः ।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी ॥

TRANSLATION *Born of the line of Ikshvaku,
known among the people as Rama:
self-mastered, of great valour,
radiant, steadfast, in command of himself.*

लीला इक्ष्वाकु-वंश में जन्मे एक पुरुष हैं, लोग उन्हें
राम के नाम से जानते हैं, संयमी, महापराक्रमी,
तेजस्वी, धैर्यवान।

SUBTITLE One born of Ikshvaku's line,
known to men as Rama:
master of himself, mighty,
radiant, steadfast.

॥ 7.94.11 ॥
CrEd 7.85.6

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 7.94.12-13 ॥
CrEd 7.85.7-8

Uttara · later
layer

ऋषि SAGES

वाल्मीकि उभौ रामस्य सदृशौ बिम्बाद् बिम्बम् इवोद्धृतौ ।
जटिलौ यदि न स्यातां न वल्कलधरौ यदि ।
विशेषं नाधिगच्छामो गायतो राघवस्य च ॥

TRANSLATION *Both are like Rama,
like images lifted from an image.
If they did not wear matted locks,
if they were not dressed in bark,
we could find no difference
between the singers and Raghava.*

लीला दोनों राम जैसे हैं, मानो एक ही बिम्ब से उतारे
गए प्रतिबिम्ब। यदि इनकी जटाएँ और वल्कल न
होते, तो इन गायकों और राघव में हम कोई भेद न
कर पाते।

SUBTITLE Both are like Rama,
as image is struck from image.
But for their matted hair and bark,
we could not tell them from Raghava.

॥ 7.94.17-18 ॥

CrEd 7.85.12-13

Uttara · later
layer

राम RAMA

वाल्मीकि अष्टादश सहस्राणि सुवर्णस्य महात्मनोः ।
ददस्व शीघ्रं काकुत्स्थ बालयोर् मा वृथा श्रमः ॥

TRANSLATION *Eighteen thousand pieces of gold
for these two noble boys
give quickly, Kakutstha;
let their labour not be in vain.*

लीला भरत, इन दोनों महात्मा बालकों को शीघ्र अठारह
सहस्र स्वर्ण-मुद्राएँ दो। इनका श्रम व्यर्थ न जाए।

SUBTITLE Bharata, give these two great-souled boys
eighteen thousand in gold, at once.
Their labour must not go unrewarded.

॥ 7.94.18-19 ॥

CrEd 7.85.13-14

॥ 7.94.19-20 ॥

CrEd 7.85.14-15

Uttara · later
layer

SILENT MOMENT मौन क्षण

कुश KUSHA

वाल्मीकि ऊचतुश् च महात्मानौ किम् अनेनेति विस्मितौ ।
वन्येन फलमूलेन निरतौ स्वो वनौकसौ ।
सुवर्णेन हिरण्येन किं करिष्यावहे वने ॥

TRANSLATION *And the two great-souled ones said,
amazed: "What is this to us?
On wild fruit and roots
we live content, dwellers in the forest;
with gold and with riches
what would we do in the forest?"*

लीला यह किसलिए? हम वनवासी हैं, वन के फल-मूल
से ही सन्तुष्ट। वन में हम सोने का क्या करेंगे?

SUBTITLE What is this for?
We live in the forest, happy on fruit
and roots.
What would we do with gold in the forest?

॥ 7.94.23 ॥

CrEd 7.85.18

Uttara · later
layer

राम R A M A

वाल्मीकि किंप्रमाणम् इदं काव्यं का प्रतिष्ठा महात्मनः ।
कर्ता काव्यस्य महतः को वासौ मुनिपुंगवः ॥

TRANSLATION *How great is this poem in measure?
What is its ground, this tale of a great soul?
And who is the maker of the great poem,
that bull among sages?*

लीला यह काव्य कितना बड़ा है? इसका आधार क्या
है? और इस महान काव्य के रचयिता वे मुनिश्रेष्ठ
कौन हैं?

SUBTITLE How long is this poem?
What is its ground?
And who is the great sage who made it?

॥ 7.94.25, 27-
28 ॥

CrEd 7.85.19-20

Uttara · later
layer

condensed
from 7.94.25,
27-28

लव LAVA

वाल्मीकि पृच्छन्तं राघवं वाक्यम् ऊचतुर् मुनिदारकौ ।
वाल्मीकिर् भगवान् कर्ता संप्राप्तो यज्ञसंनिधिम् ।
येनेदं चरितं तुभ्यम् अशेषं संप्रदर्शितम् ।
आदिप्रभृति राजेन्द्र पञ्चसर्गशतानि च ।
प्रतिष्ठा जीवितं यावत् तावद् राजञ् शुभाशुभम् ॥

TRANSLATION *To Raghava, who asked,
the sage's boys spoke these words:
“The blessed Valmiki is its maker,
who has come here to the sacrifice,
by whom this story of yours
has been shown in full.
From the beginning, king of kings,
there are five hundred sargas;
its ground, king, is your life, as long as it lasts,
the good of it and the ill.”*

लीला इसके रचयिता भगवान् वाल्मीकि हैं, जो आपके
यज्ञ में पधारे हैं। इसमें आपका सम्पूर्ण चरित है,
राजन्, शुभ भी और अशुभ भी।

SUBTITLE The blessed Valmiki made it,
and he has come to your sacrifice.
It tells your whole life, king,
the good and the ill.

संस्कृत यहाँ वैसी दी गई है, जैसी CrEd (7.85.19-20) में है।

The Sanskrit is given as the CrEd has it (7.85.19-20).

॥ 7.94.29 ॥
CrEd 7.85.21

Uttara · later
layer

कुश KUSHA

वाल्मीकि यदि बुद्धिः कृता राजञ् श्रवणाय महारथ ।
कर्मान्तरे क्षणीभूतस् तच् छृणुष्व सहानुजः ॥

TRANSLATION *If you have set your mind, king,
on hearing it, great warrior,
then, at leisure between the rites,
listen to it with your brothers.*

लीला महारथी राजन्, यदि सुनने का मन हो, तो यज्ञ-कर्म
के बीच अवकाश में अपने भाइयों के साथ सुनिए।

SUBTITLE If you have a mind to hear it, great king,
listen with your brothers,
between the rites.

॥ 7.94.30 ॥
CrEd 7.85.22

Uttara · later
layer

राम RAMA

वाल्मीकि बाढम् इत्य् अब्रवीद् रामः ॥

TRANSLATION *“Very well,” said Rama.*

लीला अवश्य।

SUBTITLE Very well.

॥ 7.95.1-2 ॥
CrEd 7.86.1-2

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 7.95.3-4 ॥

CrEd 7.86.3-4

Uttara · later
layer

राम R A M A

वाल्मीकि मद्रुचो ब्रूत गच्छध्वम् इति भगवतोऽन्तिकम् ।
यदि शुद्धसमाचारा यदि वा वीतकल्मषा ।
करोत् इहात्मनः शुद्धिम् अनुमान्य महामुनिम् ॥

TRANSLATION *“Go into the blessed one’s presence
and give him my word:
if her conduct is pure,
if she is free of every stain,
let her prove her purity here,
with the great sage’s leave.”*

लीला भगवान् वाल्मीकि के पास जाओ और मेरी बात
कहो, यदि उसका आचरण शुद्ध है, यदि वह निष्पाप
है, तो महामुनि की अनुमति से वह यहाँ अपनी
शुद्धता प्रमाणित करे।

SUBTITLE Tell the blessed sage from me:
if she is pure in conduct, free of sin,
let her prove it here,
with his leave.

॥ 7.95.6 ॥

CrEd 7.86.6

Uttara · later
layer

राम R A M A

वाल्मीकि श्वः प्रभाते तु शपथं मैथिली जनकात्मजा ।
करोतु परिषन्मध्ये शोधनार्थं ममेह च ॥

TRANSLATION *Tomorrow at dawn let Maithili,
Janaka’s daughter, take an oath
in the midst of the assembly,
to clear herself, and me, here.*

लीला कल प्रातः जनकनन्दिनी मैथिली सभा के बीच शपथ
ले, अपनी और मेरी भी शुद्धि के लिए।

SUBTITLE Tomorrow at dawn let Maithili,
Janaka’s daughter,
swear an oath before the assembly,
to clear herself, and me.

॥ 7.95.10 ॥
CrEd 7.86.10

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि एवं भवतु भद्रं वो यथा तुष्यति राघवः ।
तथा करिष्यते सीता दैवतं हि पतिः स्त्रियाः ॥

TRANSLATION *So be it, and blessings on you.*

*As pleases Raghava,
so Sita will do;
for a woman's husband is her god.*

लीला ऐसा ही हो, तुम्हारा कल्याण हो। जिससे राघव
सन्तुष्ट हों, सीता वैसा ही करेगी, क्योंकि स्त्री के
लिए पति ही देवता है।

SUBTITLE So be it; may all be well with you.
Sita will do what pleases Raghava,
for a husband is a woman's god.

प्रचलित पाठ में “यथा वदति” (जैसा राघव कहते हैं) है; CrEd में “यथा तुष्यति” (जिससे राघव संतुष्ट हों) है (7.86.10)।

The popular text reads yathā vadati, “as Raghava says”; the CrEd reads yathā tuṣyati, “as pleases Raghava” (7.86.10).

॥ 7.95.11–12 ॥
CrEd 7.86.11–12

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 7.95.13 ॥
CrEd 7.86.13

Uttara · later
layer

राम RAMA

वाल्मीकि भगवन्तः सशिष्या वै सानुगश् च नराधिपाः ।
पश्यन्तु सीताशपथं यश् चैवान्योऽभिकाङ्क्षते ॥

TRANSLATION *Let the revered sages with their pupils,
the kings with their followers,
and whoever else desires it,
come and see Sita's oath.*

लीला शिष्यों सहित पूज्य मुनिगण, अनुचरों सहित
राजागण, और जो भी चाहे, सब सीता की
शपथ देखें।

SUBTITLE Let the blessed sages and their pupils,
the kings and their followers,
and all who wish,
witness Sita's oath.



The earth opens

Valmiki 7.96.1–7.97.27 (CrEd 7.87.1–7.88.20)

VALMIKI

THE LEELA

Uttara · later layer Valmiki 7.96–7.97 (CrEd 7.87–7.88)

This story is the Uttara Kanda's. Most scholars take the Uttara, like much of the Bala, to be later than books 2 to 6: the Yuddha Kanda closes with its own blessing on its hearers.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 7.97.16–17

The CrEd has one oath (7.88.10). The popular text has three, each ending "so may the goddess Madhavi open for me": the CrEd's, then "as I worship Rama in mind, in deed and in word", then "as this is true, that I know no one beyond Rama". Raam Leela speaks all three, the CrEd's first.

popular text only · not in the CrEd Valmiki 7.98

The popular text goes on. Rama weeps long, his head bowed: "Before my eyes Sita is gone, like Shri herself." In grief and anger he asks the Earth to give her back, or he will lay waste her mountains and forests. Brahma, with the gods, bids him remember who he is: Sita is pure, and he will meet her again in heaven; the rest of his life is told in Valmiki's poem, the best of poems, and he will hear it. The CrEd has none of this: the rite ends, and Rama takes no other wife (7.89).

॥ 7.96.10 ॥
CrEd 7.87.8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 7.96.11–12 ॥
CrEd 7.87.9–10

॥ 7.96.14 ॥
CrEd 7.87.12

Uttara · later
layer

॥ 7.96.15–16 ॥
CrEd 7.87.13–14

Uttara · later
layer

SILENT MOMENT मौन क्षण

राजा KINGS

वाल्मीकि साधु सीतेति के चित् तु साधु रामेति चापरे ।
उभाव् एव तु तत्रान्ये साधु साध्व् इति चाब्रुवन् ॥

TRANSLATION “Well done, Sita!” some cried,
and others, “Well done, Rama!”;
and others there, for both of them,
cried, “Well done, well done!”

लीला धन्य सीता! धन्य राम! दोनों धन्य हैं!

SUBTITLE Blessed be Sita!
Blessed be Rama!
Blessed be both!

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि इयं दाशरथे सीता सुव्रता धर्मचारिणी ।
अपापा ते परित्यक्ता ममाश्रमसमीपतः ॥

TRANSLATION Son of Dasharatha, this is Sita,
true to her vows, walking in dharma,
sinless, whom you cast off
near my hermitage.

लीला दशरथनन्दन, यह वही सुव्रता, धर्मचारिणी सीता है,
जिसे निष्पाप होते हुए भी तुमने मेरे आश्रम के पास
त्याग दिया था।

SUBTITLE Son of Dasharatha, this is Sita,
true to her vows, walking in dharma.
Sinless, she was abandoned by you
near my hermitage.

CrEd में “अपापा ते परित्यक्ता” (निष्पाप होकर भी तुमसे त्यागी गई) है (7.87.14); प्रचलित पाठ में “अपवादैः परित्यक्ता” (अपवादों के कारण त्यागी गई) है।

The CrEd reads apāpā te parityaktā, “sinless, abandoned by you” (7.87.14); the popular text reads apavādaiḥ parityaktā, “abandoned for slanders”.

॥ 7.96.17 ॥
CrEd 7.87.15

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि लोकापवादभीतस्य तव राम महाव्रत ।
प्रत्ययं दास्यते सीता ताम् अनुज्ञातुम् अर्हसि ॥

TRANSLATION *To you, who fear the world's reproach,
Rama, great in your vows,
Sita will give proof;
you should give her leave.*

लीला राम, तुम लोकापवाद से डरते हो। सीता तुम्हें
विश्वास दिलाएगी। उसे अनुमति दो।

SUBTITLE You fear the world's blame, Rama,
you of great vows.
Sita will give you proof.
Give her your leave.

॥ 7.96.18 ॥
CrEd 7.87.16

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि इमौ च जानकी पुत्राव् उभौ च यमजातकौ ।
सुतौ तवैव दुर्धर्ष सत्यम् एतद् ब्रवीमि ते ॥

TRANSLATION *And these two sons of Janaki,
the two of them born as twins,
are your own sons, unconquerable one;
this I tell you truly.*

लीला ये दोनों जुड़वाँ जानकी के पुत्र हैं, और तुम्हारे ही पुत्र
हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ।

SUBTITLE These twins are Janaki's sons,
and they are yours.
I tell you the truth.

॥ 7.96.19 ॥
CrEd 7.87.17

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन ।
न स्मराम्य् अनृतं वाक्यं तथेमौ तव पुत्रकौ ॥

TRANSLATION *I am the tenth son of Prachetas,
joy of the Raghus;
I do not recall a false word spoken;
so these two are your sons.*

लीला मैं प्रचेता का दसवाँ पुत्र हूँ। मुझे स्मरण नहीं कि
मैंने कभी असत्य कहा हो। ये तुम्हारे ही पुत्र हैं।

SUBTITLE I am the tenth son of Prachetas,
and I do not remember
ever speaking a lie.
These are your sons.

॥ 7.96.20–21 ॥
CrEd 7.87.18

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि बहुवर्षसहस्राणि तपश्चर्या मया कृता ।
तस्याः फलम् उपाश्रीयाम् अपापा मैथिली यथा ॥

TRANSLATION *For many thousands of years
I have practised austerity;
may I taste its fruit
as surely as Maithili is sinless.*

लीला सहस्रों वर्षों तक मैंने तप किया है। जैसे मैथिली
निष्पाप है, वैसे ही मुझे उस तप का फल मिले।

SUBTITLE For thousands of years
I have done penance.
As surely as Maithili is sinless,
may I enjoy its fruit.

प्रचलित पाठ यह शपथ उलटी तरह कहता है: यदि वह दोषी हो, तो मुझे अपने तप का फल न मिले (7.96.20)।

The popular text puts the oath the other way: may I not have the fruit of my penance if she is guilty (7.96.20).

॥ 7.96.22 ॥

CrEd 7.87.19

Uttara · later
layer

वाल्मीकि VALMIKI

वाल्मीकि अहं पञ्चसु भूतेषु मनःषष्ठेषु राघव ।
विचिन्त्य सीतां शुद्धेति न्यगृह्णां वननिझरि ॥

TRANSLATION *Through the five senses, Raghava,
with the mind as the sixth,
I weighed it, and knowing Sita pure,
I took her in by the forest stream.*

लीला राघव, पाँचों इन्द्रियों और छठे मन से विचारकर मैंने
सीता को शुद्ध जाना, तभी वन के झरने के पास उसे
शरण दी।

SUBTITLE With my five senses and my mind
I weighed Sita, and knew her pure.
Then I took her in,
by the forest stream.

॥ 7.97.2-3 ॥

CrEd 7.88.2-3ab

Uttara · later
layer

राम R A M A

वाल्मीकि एवम् एतन् महाभाग यथा वदसि धर्मवित् ।
प्रत्ययो हि मम ब्रह्मंस् तव वाक्यैर् अकल्मषैः ।
प्रत्ययो हि पुरा दत्तो वैदेह्या सुरसंनिधौ ॥

TRANSLATION *It is just as you say, fortunate one,
knower of dharma;
your spotless words, brahmin,
are proof to me.
Proof was given long ago
by Vaidehi, before the gods.*

लीला महाभाग, जैसा आप कहते हैं, वैसा ही है। आपके
निर्मल वचन ही मेरे लिए प्रमाण हैं। वैदेही ने तो
पहले ही देवताओं के सामने प्रमाण दे दिया था।

SUBTITLE It is as you say, knower of dharma.
Your spotless words are proof enough
for me.
And she gave proof long ago,
before the gods.

प्रचलित पाठ यहाँ (7.97.3) यह जोड़ता है कि तब उन्होंने शपथ ली थी, और इसलिए राम उन्हें घर ले आए।

The popular text adds here (7.97.3) that she swore then, and so he took her home.

॥ 7.97.4 ॥

CrEd 7.88.3c-f

Uttara · later
layer

राम R A M A

वाल्मीकि सेयं लोकभयाद् ब्रह्मन् अपापेत् अविजानता ।
परित्यक्ता मया सीता तद् भवान् क्षन्तुम् अर्हति ॥

TRANSLATION *Yet, brahmin, though I knew she was sinless,
for fear of the world
I cast off Sita;
you must forgive me for it.*

लीला ब्रह्मन्, मैं जानता था कि वह निष्पाप है, फिर भी
लोकभय से मैंने सीता को त्याग दिया। इसके लिए
आप मुझे क्षमा करें।

SUBTITLE I knew she was sinless,
and still, for fear of the world,
I sent Sita away.
Forgive me for it, brahmin.

॥ 7.97.5 ॥

CrEd 7.88.4

Uttara · later
layer

राम R A M A

वाल्मीकि जानामि चेमौ पुत्रौ मे यमजातौ कुशीलवौ ।
शुद्धायां जगतो मध्ये मैथिल्यां प्रीतिर् अस्तु मे ॥

TRANSLATION *And I know these twins,
Kusha and Lava, are my sons;
let my love be with Maithili,
proved pure in the midst of the world.*

लीला मैं जानता हूँ, ये जुड़वाँ कुश और लव मेरे ही पुत्र हैं।
संसार के सामने मैथिली शुद्ध सिद्ध हो, तो मेरा प्रेम
फिर उसका हो।

SUBTITLE I know these twins, Kusha and Lava,
are my sons.
Once Maithili is proved pure before
the world,
let my love be hers.

॥ 7.97.6–9, 12–
13 ॥

CrEd 7.88.5–8

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 7.97.14 ॥

CrEd 7.88.9

SILENT MOMENT मौन क्षण

॥ 7.97.15 ॥

CrEd 7.88.10

Uttara · later
layer

सीता SITA

वाल्मीकि यथाहं राघवाद् अन्यं मनसापि न चिन्तये ।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुम् अर्हति ॥

TRANSLATION *As I think of no one
but Raghava, not even in my mind,
so may the goddess Madhavi
open a place for me.*

लीला जैसे मैंने राघव के सिवा किसी और का मन से भी
चिन्तन नहीं किया, वैसे ही देवी माधवी, यह धरती,
मेरे लिए खुल जाएँ।

SUBTITLE As I have never thought, even in my mind,
of anyone but Raghava,
so may the goddess Madhavi, the Earth,
open for me.

॥ 7.97.16 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

Uttara · later
layer

सीता SITA

वाल्मीकि मनसा कर्मणा वाचा यथा रामं समर्चये ।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुम् अर्हति ॥

TRANSLATION *As in mind, in deed and in word
I worship Rama,
so may the goddess Madhavi
open a place for me.*

लीला जैसे मैं मन से, कर्म से, वचन से राम को पूजती हूँ,
वैसे ही देवी माधवी मेरे लिए खुल जाएँ।

SUBTITLE As I worship Rama
in mind, in deed and in word,
so may the goddess Madhavi
open for me.

॥ 7.97.17 ॥

popular text
only · not in
the CrEd

Uttara · later
layer

॥ 7.97.18 ॥

CrEd 7.88.11

॥ 7.97.18–21 ॥

CrEd 7.88.11–14

॥ 7.97.22 ॥

CrEd 7.88.15

Uttara · later
layer

॥ 7.97.24–27 ॥

CrEd 7.88.16–20

॥ 7.98.2 ॥

सीता SITA

वाल्मीकि यथैतत् सत्यम् उक्तं मे वेद्मि रामात् परं न च ।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुम् अर्हति ॥

TRANSLATION *As this I speak is true,
that I know no one beyond Rama,
so may the goddess Madhavi
open a place for me.*

SILENT MOMENT मौन क्षण

SILENT MOMENT मौन क्षण

देवता GODS

वाल्मीकि साधुकारश् च सुमहान् देवानां सहसोत्थितः ।
साधु साध्व् इति वै सीते यस्यास् ते शीलम् ईदृशम् ॥

TRANSLATION *And a mighty cry of praise
rose at once from the gods:
“Well done, well done, Sita,
you whose character is such!”*

SILENT MOMENT मौन क्षण

SILENT MOMENT मौन क्षण

लीला जैसे यह सत्य है कि मैं राम से बढ़कर किसी
को नहीं जानती, वैसे ही देवी माधवी मेरे लिए
खुल जाएँ।

SUBTITLE As this I say is true,
that I know no one beyond Rama,
so may the goddess Madhavi
open for me.

लीला साधु, साधु, सीते! ऐसा है तुम्हारा शील!

SUBTITLE Well done, well done, Sita,
whose virtue is such as this!



Read the full Valmiki Ramayana · पूरी वाल्मीकि रामायण पढ़ें

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (गीता प्रेस, भाग 1-2)

Shrimad Valmikiya Ramayan, Gita Press (Sanskrit with Hindi, Parts 1-2)

वाल्मीकि रामायण: बिबेक देब्रॉय का अंग्रेज़ी अनुवाद (3 खंड)

The Valmiki Ramayana, tr. Bibek Debroy (Penguin, 3 vols; translated from the Critical Edition)

आलोचनात्मक संस्करण (ओरिएंटल इंस्टीट्यूट, बड़ौदा): निःशुल्क पढ़ें

The Critical Edition (Oriental Institute, Baroda): read free

As an Amazon Associate we earn from qualifying purchases.

CREDITS · श्रेय

..❧ Translation: Raam Leela ❧..

The Sanskrit is the popular text of Valmiki's Ramayana, as each scene cites it, checked against the Critical Edition (CrEd, Baroda; GRETIL e-text). The Critical Edition is published by the Oriental Institute, Vadodara.

Verse numbers give the popular text first and the CrEd in brackets. Every translation here is written fresh from the Sanskrit for Raam Leela; none is copied from a published translation.

Voices are made with computer tools; the music comes from our own stage productions.

© 2026 Nolabel Immersive Experiences Pvt Ltd